लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–10

# पंजाब की लोक कथाऐं

## फ्लोरा ऐनी स्टील

**1894**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

**2022**

Series Title: Lok Kathaon Ki  Classic Pustaken Series-10
Book Title: Punjab Ki Lok Kathayen (Tales of the Punjab)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail:  hindifolktales@gmail.com
Website:  www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

# Map of Punjab

विंडसर, कैनेडा

2022

## Contents


लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें ........ 5

पंजाब की लोक कथाऐं ........ 7

1 मिस्टर बज़ ........ 9

2 चूहे की शादी ........ 26

3 वफ़ादार राजकुमार ........ 40

4 भालू का बुरा सौदा ........ 59

5 राजकुमार शेरदिल और उसके तीन दोस्त ........ 70

6 मेमना ........ 102

7 बोपोलूची ........ 107

8 राजकुमारी बैंगन ........ 115

9 बहादुर विकी बहादुर जुलाहा ........ 130

10 सात मॉओं का बेटा ........ 144

11 एक चिड़िया और एक कौआ ........ 164

12 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़ ........ 168

13 मगरों का राजा ........ 175

14 एक छोटी टखने की हड्डी ........ 185

15 करीबी साथ ........ 192

16 दो भाई ........ 200

17 एक गीदड़ और एक गोह ........ 222

18 एक गरीब चिड़िया की मौत और दफ़न ........ 227

19 राजकुमारी पैपैरीना ........ 240

20 पीज़ी और बीन्ज़ी ........ 253

21 गीदड़ और तीतर ........ 262

22 सॉप स्त्री और अली मरदान खान ........ 269

23 जादुई ॲगूठी ........ 279

24 एक गीदड़ और एक मोरनी ........ 295

25 मक्का का दाना ........ 298

26 एक किसान और एक सेठ ........ 303
27 मौत का देवता ........ 308
28 कुश्तीबाज ........ 314
29 बर्फीले दिल वाली रानी ग्वाशब्रारी ........ 321
30 नाई की चतुर पत्नी ........ 326
31 गीदड़ और मगर ........ 342
32 राजा रसालू कैसे पैदा हुआ ........ 348
33 राजा रसालू दुनियॉ में कैसे आया ........ 354
34 राजा रसालू के दोस्तों ने उसे कैसे छोड़ा ........ 359
35 राजा रसालू ने राक्षसों को कैसे मारा ........ 363
36 राजा रसालू जोगी कैसे बना ........ 369
37 राजा रसालू की राजा सरकप के शहर की यात्रा ........ 376
38 राजा रसालू ने राजा की सत्तर बेटियों को कैसे झुलाया ........ 379
39 राजा रसालू ने राजा सरकप के साथ चौपड़ कैसे खेली ........ 386
40 राजा जो तला गया ........ 393
41 राजकुमार आधा बेटा ........ 406
42 मॉ बेटी जिन्होंने सूरज की पूजा की ........ 418
43 राजकुमार लालजी ........ 425

# लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाॅ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
**2022**

# पंजाब की लोक कथाऐं

"लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की इस सीरीज़ की यह पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है भारत के पंजाब प्रान्त की लोक कथाओं की। यह पंजाब की लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी जिसे फ्लोरा ऐनी स्टील ने पहली बार **1894** में प्रकाशित किया था। इसमें उन्होंने **43** लोक कथाऐं लिखी थीं।[2] उस पुस्तक का दूसरा संस्करण **1912** में प्रकाशित किया गया था। उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत में बहुत सारे प्रान्त हैं जिनमें सब में अलग अलग भाषाऐं बोली जाती हैं। अपने अपने प्रान्तों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। एक दूसरे की भाषा पढ़ना समझना बहुत कठिन है इसलिये वे भी एक दूसरे के लिये विदेशी भाषा जैसी ही हो जाती हैं। उन दूसरे भाषा वाले प्रान्तों की लोक कथाओं को हिन्दी भाषा भाषी लोगों के पढ़ने के लिये यह प्रयास किया गया है।

तो लीजिये पढ़िये ये लोक कथाऐं भारत के पंजाब प्रान्त की अब पहली बार हिन्दी में।

---

[2] "Tales of the Punjab", by Flora Annie Steel. London, Macmillan & Co Limited. 1894. 43 Tales. This book is available in English at the Web Site : http://digital.library.upenn.edu/women/steel/punjab/punjab-1.html

# 1 मिस्टर बज़[3]

एक बार की बात है कि एक सिपाही अपनी एक पत्नी और एक बेटे को छोड़ कर मर गया। वे बहुत ही ज़्यादा गरीब थे और बाद में तो उनकी हालत इतनी खराब हो गयी कि उनके पास खाने के लिये भी कुछ नहीं बचा था।

बेटे ने अपनी माँ से कहा — "माँ मुझे चार शिलिंग[4] दो। मैं बाहर जा कर दुनियाँ में अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूँ।"

माँ बहुत दुखी होते हुए बोली — "बड़े अफसोस की बात है कि मेरे पास खाने के लिये तो कुछ है नहीं मैं तेरे लिये चार शिलिंग कहाँ से लाऊँ।"

बेटा बोला — "माँ पिता जी का यह पुराना कोट है ज़रा इसकी जेबें देखो अगर तुमको इनमें से किसी जेब में कुछ मिल जाये तो।"

सो उसने उस कोट की जेबें टटोलनी शुरू कीं तो लो उसमें से एक नीचे वाली जेब में उसे छह शिलिंग मिल गये।

बेटा खुशी से चिल्लाया — "अरे ये तो मुझे जितने चाहिये थे उससे भी ज़्यादा हैं। लो यह लो माँ ये दो शिलिंग तुम रख लो और इससे अपना काम चलाओ जब तक मैं वापस आता हूँ।"

---

[3] Mr Buzz (Tale No 1)

[4] British currency was in use in India in those times – Pound, Shilling and Pence

सो उसने वे चार शिलिंग लिये और अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। रास्ते में उसको एक मादा चीता[5] मिली। वह कराहती जा रही थी और अपना एक पंजा चाटती जा रही थी।

उसको देख कर वह डर गया और उस भयानक जीव से दूर भाग जाने वाला था कि उसने मादा चीते की बहुत ही धीमी आवाज सुनी — “ओ मेरे अच्छे लड़के। अगर तुम मेरे इस पंजे में से यह कॉटा निकाल दोगे तो मैं तुम्हारा यह उपकार ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगी।”

लड़का बोला — “ओह मैं नहीं। अगर जब मैं तुम्हारा यह कॉटा निकाल रहा होऊँगा और तब तुम्हें दर्द होगा तो तुम अपना पंजा मार कर मुझे मार दोगी तो।”

मादा चीता बोली — “नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा। मैं अपना मुँह इस पेड़ की तरफ फेर लूँगी और जब मुझे दर्द होगा तो मैं अपना पंजा इस पेड़ में मारूँगी। इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।”

सिपाही का बेटा यह सुन कर उसके पंजे का कॉटा निकालने पर राजी हो गया। उसने उसका पंजा अपने हाथ में लिया और उसमें लगा कॉटा बाहर खींच दिया। कॉटा खींचने से जो उसको दर्द हुआ तो उसने पेड़ को अपने पंजे से इतनी ज़ोर का धक्का मारा कि वह पेड़ ही टूट कर गिर गया।

---

[5] Translated for the word “Tigress”. See its picture above.

उसके बाद वह सिपाही के बेटे की तरफ मुड़ी और कृतज्ञतापूर्वक उसे एक डिब्बा देते हुए बोली — "बेटे। लो इनाम के तौर पर यह डिब्बा लो पर इसे तुम तब तक नहीं खोलना जब तक तुम यहॉ से नौ मील दूर न पहॅुच जाओ।"

सिपाही के बेटे ने मादा चीते को धन्यवाद दिया और वह डिब्बा उससे ले कर फिर से अपनी यात्रा पर चल दिया। जब वह पॉच मील चल लिया तो उसको यह निश्चित रूप से लगा कि उसका वह डिब्बा पहले से ज़्यादा भारी हो गया है। और हर कदम पर वह और ज़्यादा भारी होता जा रहा था।

हालॉकि उसके पास ले कर चलने के लिये केवल वह एक डिब्बा ही था फिर भी उसे ले जाने के लिये उसे बड़ी मेहनत लग रही थी। वह उसको सवा आठ मील तक तो किसी तरह ले गया पर फिर उसका धीरज जवाब दे गया।

वह ज़ोर से बोला — "ओह लगता है कि यह मादा चीता तो कोई जादूगरनी थी जो मुझ पर अपना जादू चलाने की कोशिश कर रही है। पर अब मैं इसको और नहीं झेल सकता। ओ नीच कमीने डिब्बे चल तू यहॉ बैठ। भगवान जानता है कि इसके अन्दर क्या है और मुझे इसकी चिन्ता भी नहीं है कि इसके अन्दर क्या है।"

ऐसा कहते हुए उसने वह डिब्बा नीचे जमीन पर पटक दिया। इस पटकने से उस डिब्बे को धक्का लगा और वह खुल गया। उसमें से एक छोटा सा बूढ़ा निकल आया।

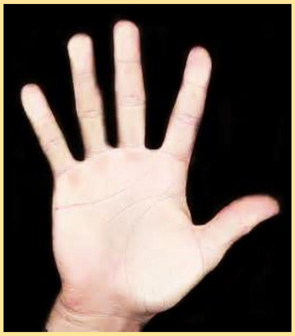

वह खुद तो केवल एक बालिश्त[6] ऊँचा था पर उसकी दाढ़ी एक बालिश्त से भी ज़्यादा लम्बी थी सो वह जमीन पर घिसट रही थी। उसने डिब्बे से बाहर निकलते ही पैर पटकना शुरू कर दिया और लड़के को उसके उस डिब्बे को इस तरह से झटके से जमीन पर रखने पर डॉटना शुरू कर दिया।

सिपाही के बेटे ने उसकी बात को उससे हॅसते हुए और टालते हुए कहा — "ओ भले आदमी। तुम मेरे लिये अपने साइज़ से कहीं ज़्यादा भारी थे। और तुम्हारा नाम क्या है?"

बालिश्त भर के लम्बे आदमी ने पैर पटकते हुए जवाब दिया — "सर बज़।"

सिपाही का बेटा बोला — "मैं कसम खाता हूॅ कि अगर केवल तुम ही इस डिब्बे में बन्द थे तो अच्छा हुआ कि मैं तुम जैसे को और आगे नहीं ले गया।"

बूढ़ा गुस्से से बोला — "बड़ों से ऐसे बात करते हैं क्या? अगर तुम मुझे पूरे नौ मील तक ले जाते तो तुम्हें शायद कुछ और अच्छी चीज़ मिल जाती। पर अब तो न यहॉ है न वहॉ है और किसी भी तरह से मैं तुम्हारे लिये बहुत अच्छा हूॅ और अपनी मालकिन के हुक्म के अनुसार तुम्हारी भरसक सेवा करूॅगा।"

---

[6] Distance between the tip point of the smallest finger to the tip point of the thumb when a hand is spread on something – paper or cloth or any other material. A measurement of distance used in olden days. Normally it measures 8"-9" depending on size. See its picture above.

लड़का बोला — "तो करो मेरी सेवा। इस समय मुझे बहुत भूख लगी है मेरे लिये कहीं से खाना ले कर आओ। खाना खरीदने के लिये मेरे पास केवल चार शिलिंग हैं। ये लो।"

जैसे ही सिपाही के बेटे ने यह कहा और उस बूढ़े को पैसे दिये तो बस एक पल में ही वह बूढ़ा ज़ज़ज़ज़ की आवाज के साथ हवा में उड़ा और सबसे पास वाले शहर की एक बिस्किट की दूकान पर चला गया।

वहाँ वह एक बालिश्त भर का बूढ़ा खड़ा था जिसकी एक बालिश्त से भी ज़्यादा लम्बी दाढ़ी जमीन पर घिसट रही थी। वहाँ पहुँच कर वह एक बर्तन के सामने खड़ा हो गया और अपनी सबसे ऊँची आवाज में चिल्ला कर बोला — "हो हो सर बेकर। मुझे कुछ मिठाई दो।"

बेकर ने अपनी दूकान में चारों तरफ देखा दूकान के दरवाजे के बाहर देखा गली में इधर उधर देखा तो उसको तो कोई नजर ही नहीं आया क्योंकि सर बज़ तो बहुत छोटा सा था और बर्तन के पीछे छिपा खड़ा था।

यह देख कर सर बज़ और ज़ोर से बोला — "हो हो सर बेकर। मुझे कुछ मिठाई दो।"

बेकर ने फिर एक बार अपने खरीदार को देखने की कोशिश की पर सब बेकार। अब सर बज़ को गुस्सा आ गया तो उसने दौड़ कर बेकर की टॉगों में नोच लिया और उसके पैर में ठोकर मारी।

वह फिर बोला — "ओ दूसरे की बेइज़्ज़ती करने वाले। क्या तेरा यह मतलब है कि तू मुझे देख नहीं सकता। क्यों? मैं तो इतनी देर से तेरे बर्तन के पास खड़ा हूँ।"

तब बेकर ने देखा तो अफसोस के साथ कहा — "माफ कीजिये सर मैं अभी ले कर आया।" और वह अपने छोटे से नाराज खरीदार के लिये अपनी दूकान की सबसे अच्छी मिठाई लाने चला गया।

उस छोटे से बूढ़े ने उसमें से करीब अस्सी पौंड मिठाई ले ली और बोला — "जाओ और जल्दी से इसे किसी चीज़ में बाँध दो और मेरे हाथ में पकड़ा दो मैं इसे घर ले जाऊँगा।"

बेकर मुस्कुरा कर बोला — "मगर सर यह तो आपके लिये बहुत सारा बोझ हो जायेगा।"

सर बज़ चिल्लाया — "इससे तुम्हें मतलब? तुम वैसा ही करो जैसा तुमसे करने के लिये कहा गया है। और हॉ ये रहे तुम्हारे पैसे।" ऐसा कह कर उसने अपनी जेब में चार शिलिंग हिला कर खनखनाये।

बेकर खुश होते हुए बोला — "जैसी आपकी मर्जी सर।" कह कर उसने उन सब मिठाइयों को एक बड़े से गट्ठर में बॉध दिया और उस गट्ठर को उस बूढ़े के फैले हुए हाथ पर रख दिया। और लो वह एक ज़ज़ज़ की आवाज के साथ वहॉ से उड़ गया। पैसे तो

अभी भी उसकी जेब में ही थे। वे तो उसने बेकर को दिये ही नहीं थे।

वहॉ से उड़ कर वह एक मक्का के आटे वाले की दूकान पर उतरा और मक्का के आटे से भरी एक टोकरी के पीछे खड़े हो कर बोला — "सर मुझे थोड़ा सा मक्का का आटा चाहिये।"

और जब मक्का बेचने वाले ने अपनी दूकान में इधर उधर देखा खिड़की से बाहर देखा गली में चारों तरफ देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया। अब वह एक बालिश्त का आदमी उसको कहॉ और कैसे दिखायी देता।

यह देख कर सर बज़ फिर बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "सर मुझे थोड़ा आटा चाहिये।"

उसको फिर कोई जवाब नहीं मिला तो वह गुस्से से भर गया और उसने पहले की तरह से मक्का बेचने वाले के पैर में काटा और ठोकर मारी और ज़ोर से बोला — "तुम बहाने मत बनाओ कि तुमने मुझे देखा ही नहीं। मैं तो तुम्हारे पास तुम्हारे मक्का के आटे के बरतन के पीछे ही तो खड़ा था।"

मक्का बेचने वाले ने नम्रता से उससे माफी मॉगी और उससे पूछा कि उसे कितना आटा चाहिये। सर बज़ बोला — "एक सौ साठ पौंड। एक सौ साठ पौंड – न कम न ज़्यादा। उसे किसी गट्ठर में बॉध दो और मैं उसे घर ले जाऊॅगा।"

दूकानदार ने कहा — "शायद आपके पास कोई गाड़ी या जानवर होगा जिसके ऊपर आप उसको रख कर ले जायेंगे क्योंकि एक सौ साठ पौंड तो काफी भारी बोझा होता है।"

सर बज़ ने अपना पैर जमीन पर मार कर कहा — "इससे तुम्हें क्या। क्या यह काफी नहीं है कि मैं तुम्हें उसका पैसा दे रहा हूॅ।" कह कर उसने फिर से अपने जेब में रखे सिक्के खनखनाये।

सो दूकानदार ने एक सौ साठ पौंड आटा एक गठरी में बॉधा और सर बज़ के फैले हुए हाथ पर रख दिया। उसको यकीन था कि सर बज़ उसके बोझ तले दब कर जरूर कुचल जायेगा। कि उसको एक ज़्ज़्ज़्ज़ की आवाज आयी और वह बालिश्त भर का बूढ़ा तो वहॉ से उड़ गया। पैसे अभी भी उसकी जेब में ही रखे हुए थे।

सिपाही का बेटा अभी यह सोच ही रहा था कि इस बालिश्त भर के नौकर को क्या हुआ कि उसको एक ज़्ज़्ज़्ज़ की आवाज आयी और लो वह बूढ़ा तो उसके सामने अपना चेहरे का पसीना रूमाल से पोंछते हुए ऐसे आ खड़ा हुआ जैसे कि वह गर्मी से बहुत बुरी तरह से थक गया हो।

वह बोला — "मुझे आशा है कि यह सब तुम्हारे लिये काफी होगा। वैसे भी तुम आदमी लोग बहुत खाते हो।"

लड़के ने उन दोनों गठरियों की तरफ देखा और हॅस कर बोला — "ओह यह तो मेरी जरूरत से भी ज़्यादा है।"

सर बज़ ने अँगीठी पर रोटी बनायी और उस लड़के ने तीन रोटियाँ खायीं और एक मुट्ठी भर मिठाई खायी पर वह बालिश्त भर का बूढ़ा बाकी बचा हुआ सारा खाना खा गया।

हर कौर खाने के बाद वह यही कहता कि तुम आदमी लोगों की भूख बहुत ज़्यादा होती है। खाना खाने के बाद सिपाही का बेटा और वह बूढ़ा अपने आगे के सफर पर चल दिये।

अब वे एक राजा के शहर में आ गये थे। इस राजा के एक बेटी थी जिसका नाम था फूली। यह राजकुमारी बहुत सुन्दर और बहुत ही कोमल थी। पतली दुबली थी और गोरी थी। उसका वजन केवल पाँच फूलों के बराबर था।

हर सुबह उसको एक सोने की तराजू में तौला जाता था। जब भी उसके एक पलड़े पर पाँचवाँ फूल रखा जाता तो वह अपने दूसरे पलड़े के बराबर हो जाता।

अब इत्तफाक ऐसा हुआ कि सिपाही के बेटे ने उस सुन्दर, कोमल, पतली दुबली, गोरी राजकुमारी को देख लिया तो वह उसके प्रेम में पड़ गया। अब न उसको नींद आती थी और न उसको खाना अच्छा लगता था। वह सारा दिन कुछ नहीं करता सिवाय उस बूढ़े से यही कहता रहता — "ओह मेरे प्यारे सर बज़। मुझे राजकुमारी फूली के पास ले चलो ताकि मैं उसे देख सकूँ और उससे बात कर सकूँ।"

उस छोटे सर बज़ ने उसे डॉटते हुए कहा — "मैं तुम्हें वहॉ तक ले कर जाऊॅ? यह तो एक कहानी जैसी है। तुम मुझसे दस गुना बड़े हो तो बताओ कि मैं तुम्हें उठा कर ले जाऊॅ या तुम मुझे उठा कर ले जाओगे?"

खैर जब सिपाही के बेटे ने उससे बहुत प्रार्थना की और वह राजकुमारी के बारे में सोचते सोचते पीला पड़ गया तो सर बज़ ने जो एक बहुत दयालु आदमी था उससे अपने हाथ पर बैठ जाने के लिये कहा।

फिर एक बहुत तेज़ बूम बिंग बौंग की आवाज के साथ वे दोनों वहॉ से उड़ चले। एक पल में ही वे राजमहल में पहुॅच गये। उस समय रात हो रही थी तो राजकुमारी सो रही थी पर इस बूम बूम की आवाज ने उसे जगा दिया।

एक नौजवान को अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठे देख कर वह बहुत डर गयी। वह उसको देख कर चिल्लाने वाली थी कि रुक गयी क्योंकि सिपाही को बेटे ने बड़ी नम्रता से और बहुत ही अच्छी भाषा में उससे कहा कि वह डरे नहीं।

उसके बाद वे दोनों बहुत देर तक खुशी की बातें करते रहे जबकि सर बज़ दरवाजे पर सन्तरी की तरह खड़ा रहा। पर वह एक ईंट की ओट में खड़ा हुआ था ताकि किसी को ऐसा न लगे कि वह उन दोनों जवानों के ऊपर कोई जासूसी कर रहा है।

सिपाही का बेटा और राजकुमारी दोनों सुबह होने तक बात करते रहे। अब वे बात करते करते थक थक गये थे सो वे सो गये।

सर बज़ ने एक वफादार नौकर की तरह से सोचते हुए अपने मन में कहा "अब मैं क्या करूँ। अगर मेरे मालिक यहाँ सोये रह जाते हैं तो कोई न कोई उनको यहाँ देख लेगा और जैसे मेरा नाम बज़ है उतनी ही निश्चितता से वह उनको मार देगा। पर अगर मैं उनको उठा कर चलने के लिये कहता हूँ तो वह जाने से मना कर देंगे।"

सो बिना किसी हिचक के उसने अपना हाथ पलंग के नीचे रखा और बूम बिंग बौंग वह उसको ले कर वहाँ से उड़ गया और शहर के बाहर एक बड़े से बागीचे में एक घने पेड़ के नीचे ले जा कर रख दिया।

फिर उसने पास में से एक और बड़ा पेड़ जड़ से उखाड़ा और उसको अपने कन्धे पर रखा और उसको ले कर वह उनकी चौकीदारी करता हुआ इधर से उधर घूमने लगा।

जल्दी ही शहर के सारे लोग जाग गये तो क्योंकि राजकुमारी महल से भगा ली गयी थी सो सारा देश और राजा और रानी उसको ढूँढने में लगे हुए थे। धीरे धीरे एक कॉइयाँ काना[7] कोतवाल उस बागीचे की तरफ आ निकला।

---

[7] Translated for the word "One-eyed" – means cunning also

सर बज़ ने अपना पेड़ उसके सामने हिलाते हुए उससे पूछा — “तुम्हें क्या चाहिये।”

कोतवाल को अपनी एक ऑख से अपने सामने सिवाय पेड़ की शाखाओं के कुछ और दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी उसने कहा — “मुझे राजकुमारी फूली चाहिये।”

बालिश्त भर का सर बज़ अपनी एक बालिश्त से लम्बी दाढ़ी जमीन पर घिसटाते हुए बोला — “मैं देता हूं तुझे राजकुमारी फूली। जा चला जा मेरे बागीचे से।” इसके साथ ही उसने कोतवाल के टट्टू को अपने पेड़ के तने से ऐसा मारा कि वह बेकाबू हो गया और कोतवाल को ले कर वहॉ से भाग गया।

बेचारा कोतवाल सीधा राजा के पास गया और बोला — “योर मैजेस्टी मुझे पूरा यकीन है कि राजकुमारी फूली आपके बागीचे में ही है जो शहर के बाहर है। क्योंकि वहॉ एक पेड़ है जो बहुत ही भयानक तरीके से लड़ता है।”

यह सुन कर राजा ने अपने सारे सिपाहियों और घोड़ों को बुलवाया और बागीचे की तरफ जा कर उस बागीचे घुसने की कोशिश की। पर सर बज़ ने उन सबको अपने पेड़ के तने की सहायता से दूर भगा दिया। उनमें से आधे तो मारे गये और बाकी आधे वहॉ से भाग गये।

इस लड़ाई के शोर से सिपाही के बेटे और राजकुमारी दोनों की ऑख खुल गयी। दोनों को अब तक यह विश्वास हो गया था कि

वे दोनों एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते सो उन्होंने वहॉ से एक साथ भाग जाने का विचार किया। जब लड़ाई खत्म हो गयी तो सिपाही का बेटा राजकुमारी फूली और सर बज़ तीनों दुनियॉ देखने निकल पड़े।

सिपाही का बेटा तो राजकुमारी मिलने की खुशी में इतना खुश था कि उसने सर बज़ से कहा — "मेरी किस्मत तो पहले ही बन चुकी है सो अब मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है। तुम अगर जाना चाहो तो अपनी मालकिन के पास जा सकते हो।"

सर बज़ कुछ नाराज हो कर बोला — "उँह तुम नौजवान लोग इसी तरह से सोचते हो। खैर जैसा तुम चाहो। पर तुम मेरी दाढ़ी का यह बाल रख लो। अगर कभी तुम किसी मुश्किल में फॅस जाओ और तुम्हें मेरी जरूरत आ पड़े तो इस बाल को आग में जला देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जाऊॅगा।"

इतना कह कर सर बज़ तो बौम बिंग बूम की आवाज के साथ वहॉ से चला गया और सिपाही का बेटा और राजकुमारी आनन्द से घूमते रहे।

घूमते घूमते वे जंगल में रास्ता भूल गये और काफी देर तक खाने की खोज में इधर उधर घूमते रहे। वे लोग बहुत भूखे थे कि उन्हें एक ब्राह्मण मिल गया। उसने उनकी कहानी सुनी तो बोला — "अफसोस मेरे प्यारे बच्चों कि तुम इस तरह से भूखे घूम रहे हो। आओ मेरे साथ आओ मैं तुम्हें खाना खिलाता हूॅ।"

अब अगर उसने यह कहा होता कि मैं तुम्हें खाऊँगा तो बात कुछ और होती पर वह कोई ब्राह्मण तो था नहीं वह तो एक गुल[8] था जो सुन्दर और जवान लड़के लड़कियों को खाने की तलाश में घूमता रहता था। पर सिपाही के बेटे और राजकुमारी को तो इस बात का पता नहीं था सो वे उसके साथ खुशी खुशी चल दिये।

वह ब्राह्मण उनसे बहुत ही नम्रता से बात कर रहा था। जब वे उसके घर पहुँचे तो वह उनसे बोला — "तुम लोग जो कुछ भी खाना चाहते हो उसे बनाने के लिये तैयार हो जाओ क्योंकि मेरे पास कोई रसोइया नहीं है। ये लो मेरी सब चाभियाँ लो और इनसे तुम मेरे सारी आलमारियाँ खोल सकते हो सिवाय एक आलमारी के जो सोने की चाभी से खुलती है। इस बीच आग जलाने के लिये मैं कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कर के लाता हूँ।"

राजकुमारी फूली ने खाना बनाने की तैयारी शुरू की जबकि सिपाही के बेटे ने आलमारियों को खोलना शुरू किया। उन आलमारियों में उसको बहुत सारे सुन्दर कपड़े जवाहरात प्याले प्लेटें सोने चाँदी से भरे थैले मिले।

इस सब ने उसकी उत्सुकता को इतना ज़्यादा बढ़ा दिया कि ब्राह्मण की चेतावनी के बावजूद वह यह सोचने लगा कि वह उस आलमारी को खोल कर जरूर देखेगा जो सोने की चाभी से खुलती है।

[8] Translated for the word "Vampire" who eats human beings.

सो उसने वह आलमारी खोल दी। लो उसमें तो आदमियों की बहुत सारी खोपड़ियाँ रखी थीं साफ चमकदार सुन्दर तरीके से पालिश की हुई। यह देख कर सिपाही का बेटा तो बहुत डर गया और डर के मारे राजकुमारी के पास भागा आया और बोला — "हम तो लुट गये हम तो लुट गये। यह आदमी ब्राह्मण नहीं है यह तो गुल है हमें खा जायेगा।"

उसी समय उन्होंने दरवाजे पर किसी के आने की आहट सुनी तो राजकुमारी जो बहुत बहादुर थी और साथ में बहुत अक्लमन्द भी इससे पहले कि गुल अपने तेज़ दाँत और भयानक आँखों से उन्हें देखता हुआ अन्दर आता उसने सर बज़ की दाढ़ी का बाल आग में डाल दिया। बस तुरन्त ही बूम बिंग बौम की आवाज के साथ सर बज़ वहाँ प्रगट हो गया।

गुल को पता चल गया था कि उसका दुश्मन कौन था सो इस आशा में कि वह सर बज़ को अच्छी तरह भिगो देगा वह मूसलाधार बारिश बन कर बरस गया। पर सर बज़ भी कुछ कम नहीं था। वह तेज़ तूफान बन गया और बारिश को रोकने लगा।

यह देख कर गुल एक फाख्ता[9] बन गया तो सर बज़ एक बाज़ बन गया और उसका इतनी ज़ोर से पीछा किया कि बड़ी मुश्किल से वह अपने आपको एक गुलाब के फूल में बदल सका और जा कर

[9] Translated for the word "Dove". See its picture above.

देवताओं के राजा इन्द्र[10] की गोद में जा कर गिर गया जहॉ वह अपनी सभा में बैठे गाना सुन रहे थे और नाच देख रहे थे।

यह देख कर सर बज़ ने अपने आपको जैसे विचार जल्दी जल्दी आते हैं उतनी ही जल्दी से अपने आपको एक बूढ़े बाजा बजाने वाले में बदल लिया और गिटार बजाने वाले के पास जा कर बोला — "भाई तुम थक गये होगे लाओ अब यह गिटार मैं बजाता हूॅ।"

गिटार वाले ने गिटार उसको दे दिया और उसने वह गिटार इतना मीठा बजाया कि राजा इन्द्र ने खुश हो कर उससे पूछा — "तुम्हारे इतना अच्छा गिटार बनाने के बदले में मैं तुम्हें क्या दूॅ। जो मॉगना चाहो मॉग लो।"

सर बज़ बोला — "सरकार मुझे आपकी गोद में पड़ा वह गुलाब का फूल चाहिये बस।"

राजा इन्द्र बोले — "अरे मैं तो समझ रहा था कि तुम मुझसे कुछ और ज़्यादा मॉगोगे पर तुमने तो केवल एक गुलाब का फूल ही मॉगा। पर क्योंकि यह आसमान से गिरा है इसलिये यह तुम्हारा है।"

ऐसा कह कर उन्होंने वह गुलाब का फूल उस बाजा बजाने वाले की तरफ फेंक दिया। पर लो उस फूल की पंखुरियॉ तो रास्ते में ही झड़ कर नीचे जमीन पर बिखर गयीं।

---

[10] King Indra – the king of gods, beneficent of Heaven and Giver of Rains etc.

सर बज़ ने तुरन्त ही उठ कर और घुटनों के बल बैठ कर वे सब पंखुरियॉ इकट्ठी कर लीं पर फिर भी उसके हाथ से एक पंखुरी बच गयी सो वह एक चूहे में बदल गयी। यह देख कर सर बज़ बिजली की सी तेज़ी के साथ एक बिल्ली बन गया जिसने चूहे को पकड़ कर खा लिया।

इतने समय सिपाही का बेटा और राजकुमारी दोनों गुल के मकान में खड़े खड़े कॉपते रहे और गुल और सर बज़ की लड़ाई का फल जानने का इन्तजार करते रहे।

कि अचानक उनको बूम बिंग बौम की आवाज आयी और सर बज़ वहॉ प्रगट हो गया और आ कर बोला — "अब तुम लोग अपने घर जाओ क्योंकि तुम लोग अपनी देखभाल अपने आप नहीं कर सकते।"

उसके बाद उसने गुल का सारा खजाना अपने एक हाथ में लिया और सिपाही के बेटे और राजकुमारी को दूसरे हाथ में रखा और उन्हें उनके घर पहुँचा आया जहॉ उसकी बूढ़ी गरीब मॉ दो शिलिंग में अपना गुजारा कर रही थी। वह उन दोनों को देख कर बहुत खुश हुई।

और तभी बूम बिंग बूम की एक बहुत तेज़ आवाज हुई और सर बज़ वहॉ से बिना धन्यवाद लिये ही चला गया। उन लोगों ने फिर उसे कभी कहीं नहीं देखा। पर सिपाही का बेटा और फूली फिर आराम से बहुत दिनों तक हॅसी खुशी रहे।

# 2 चूहे की शादी[11]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार एक मोटा लम्बा चूहा भारी बारिश में फॅस गया। वह अपने घर से बहुत दूर था सो उसने बारिश से बचने के लिये कुछ करना शुरू किया।

जल्दी ही उसने एक अच्छा सा बिल खोद लिया। बस वह उसमें घुस गया और सूखा सूखा बैठा रहा जबकि बाहर बारिश की बूॅदें टप टप गिरती रहीं और सड़क पर छोटे छोटे तालाब बनाती रहीं।

जब वह अपना बिल खोद रहा था तो उसको एक बहुत ही सूखी जड़ का टुकड़ा मिल गया जो जलाने के लिये बहुत ही ठीक था। क्योंकि चूहे बहुत ही सोच समझ कर खर्च करने वाले होते है सो उसने वह टुकड़ा अपने मुॅह मे दबा लिया ताकि जब वह अपने घर जाये तो वह उसको अपने घर ले जाये।

बारिश खत्म होने के बाद वह अपने घर चला। उसके मुॅह में वह जड़ का टुकड़ा था और वह पानी के छोटे छोटे तालाबों से बच कर चला जा रहा था।

रास्ते में उसने देखा कि एक बूढ़ा आग जलाने की कोशिश कर रहा है और कुछ बच्चे एक गोले में खड़े खड़े रो रहे हैं। चूहा बहुत

[11] The Rat’s Wedding (Tale No 2)

ही दयालु था वह बोला — “हे भगवान यह ऐसी भयानक आवाज कहॉ से आ रही है और यह मामला क्या है।”

सो वह उस बूढ़े के पास गया और उससे पूछा कि क्या बात है। बूढ़ा बोला — “ये बच्चे भूखे हैं और अपने नाश्ते के लिये रो रहे हैं। पर ये लकड़ियॉ सीली हुई हैं इसलिये इनसे आग ही नहीं जल पा रही है और इसी लिये मैं इनके लिये रोटी भी नहीं बना पा रहा हूॅ।”

अच्छे स्वभाव वाला चूहा बोला — “अगर केवल यही आपकी परेशानी है तो शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूॅ। आप मुझसे यह सूखी हुई जड़ ले लीजिये और मैं दावे के साथ कह सकता हूॅ कि यह सूखी हुई जड़ जल जायेगी फिर आप इस पर अपने बच्चों के लिये रोटी बना पायेंगे।”

गरीब आदमी ने उसको बहुत धन्यवाद दिया उससे सूखी हुई जड़ ले ली और उसकी मेहरबानी और जड़ के बदले में उसको मले हुए आटे का एक कौर दिया।

चूहा अपना इनाम ले कर वहॉ से यह सोचता हुआ चला गया “ओह मैं भी कितना खुशकिस्मत हूॅ और चतुर भी कि एक पुरानी सड़ी हुई लकड़ी के बदले में मैंने पॉच दिन का खाना ले लिया। वाह वाह। अगर किसी के दिमाग हो तो बस कहना ही क्या है।”

उसने अपने उस खाने को अपनी छाती से लगा लिया और चलता गया। चलते चलते वह एक कुम्हार के पास से गुजरा जहॉ

कुम्हार अपना चाक अपने आप ही घूमता छोड़ कर अपने तीन बच्चों को चुप करने की कोशिश कर रहा था जो इतना चीख चीख कर रो रहे थे जैसे कि वे फट जायेंगे।

चूहे ने यह देखा तो उसके मुँह से निकला — "हे भगवान। कितना शोर है। भगवान के लिये आप मुझे बतायें कि ये बच्चे क्यों रो रहे हैं।"

कुम्हार ने कुछ परेशान हो कर कहा — "शायद ये भूखे हैं। इनकी माँ आटा खरीदने के लिये बाजार गयी है क्योंकि हमारे घर में बिल्कुल भी आटा नहीं है। अब जब तक वह आटा ले कर नहीं आती मैं न तो काम कर सकता हूँ और न आराम कर सकता हूँ।"

चूहा बड़ी शान से बोला — "बस इतनी सी बात है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। लो यह मला हुआ आटा लो और जल्दी से इसकी रोटी बना लो और बच्चों को खिला दो। बच्चे चुप हो जायेंगे।"

वह आटा पा कर कुम्हार तो बहुत खुश हो गया। उसने उसकी मेहरबानी के लिये उसे धन्यवाद दिया और उसे बदले में एक बहुत अच्छा पका हुआ घड़ा दे दिया। चूहा अपने आटे के बदले में इतना बड़ा घड़ा ले कर बहुत खुश हुआ।

हालाँकि उसको घड़ा ले कर जाने में कुछ अजीब सा लग रहा था फिर भी वह उसको अपने सिर पर ले कर धीरे धीरे सावधानी से ले कर जाने में सफल हो गया। उसने इस डर से कि कहीं वह

अपनी पूँछ में अटक कर गिर न जाये उसे अपनी एक बॉह पर डाला हुआ था।

वह बराबर यह कहता चला जा रहा था "मैं भी कितना खुशकिस्मत हूँ और चतुर भी। यह कितना अच्छा सौदा था। एक छोटी सी सूखी लकड़ी के बदले मे पॉच दिन का खाना।"

चलते चलते वह एक ऐसी जगह आया जहॉ चरवाहे अपने जानवर चरा रहे थे। उनमें से एक चरवाहा अपनी भैंस का दूध दुह रहा था। क्योंकि उसके पास कोई बालटी नहीं थी तो वह अपने जूते में ही उसका दूध दुह रहा था।

सफाई पसन्द चूहा उसको इस तरह भैंस का दूध अपने जूते में दुहता देख कर चिल्ला पड़ा — "अरे। यह क्या कर रहे हो। कितने गन्दे तरीके से दूध दुह रहे हो। दूध दुहने के लिये तुम कोई बालटी क्यों नहीं इस्तेमाल करते।"

चरवाहे ने शिकायत भरी आवाज में कहा — "क्योंकि हमारे पास कोई बालटी नहीं है।" उसने यह देखा ही नहीं कि चूहा उसके काम में दखल क्यों दे रहा है।

चूहा बोला — "अरे क्या इसी लिये। लो तुम मेरा यह घड़ा ले लो और इसमें दूध दुह लो क्योंकि मैं यह गन्दगी बिल्कुल सहन नहीं कर सकता।"

चरवाहे ने चूहे से उसका घड़ा ले लिया और उसमें दूध दुहने लगा जब तक वह ऊपर तक लबालब नहीं भर गया। फिर वह चूहे

की तरफ घूमा जो उसके बराबर में ही खड़ा था और बोला — "लो चूहे बदले में तुम इसका दूध पी सकते हो।"

लेकिन चूहा अच्छे स्वभाव का होने के साथ साथ बहुत ही समझदार भी था। वह बोला — "नहीं नहीं मेरे दोस्त केवल इससे काम नहीं चलेगा। तुम क्या समझते हो कि मैं अपना घड़ा देने के बदले में केवल एक घूँट दूध से काम चला लूँगा। नहीं जनाब नहीं। मैं यह नहीं कर सकता। मेरे घड़े के बदले में तुम मुझे अपनी एक भैंस दे दो जो दूध देती है।"

चरवाहा चिल्लाया — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो – एक घड़े के बदले में एक भैंस? ऐसी कीमत तो हमने पहले कभी नहीं सुनी। और ज़रा यह तो बताओ कि अगर मैं तुम्हें भैंस दे भी दूँ तो भैंस का तुम करोगे क्या? तुमसे तो घड़ा भी ठीक से उठाया नहीं जा रहा था।"

चूहा अपने साइज़ के बारे में कुछ भी सुनने के लिये तैयार नहीं था सो उसने बड़ी शान से अपने आपको फुलाया और बोला — "यह मेरा अपना मामला है तुम्हारा नहीं। तुम्हारा काम केवल मुझे भैंस दे देना है।"

इस पर चरवाहे को मजाक सूझा और चूहे से मजाक करने के लिये उसने अपनी भैंस की रस्सी ढीली की और उसको चूहे की पूँछ में बाँधने लगा। चूहा जल्दी से चिल्लाया — "नहीं नहीं ऐसे नहीं। अगर इस जानवर ने मेरी पूँछ खींची तो मेरी तो खाल ही निकल

आयेगी और फिर मैं कहाँ होऊँगा। मेहरबानी कर के अगर तुम बाँध सकते हो तो इसे तुम मेरे गले में बाँध दो।"

चरवाहा उसकी इस बात बहुत जोर से हँस पड़ा और हँसते हुए उसने भैंस की रस्सी चूहे के गले में बाँध दी। चूहे ने नम्रता से उससे विदा ली और उस रस्सी को अपने गले में बाँधे अपने घर की तरफ चल दिया।

उस रास्ते पर कुछ देर चलने के बाद ही एक मोड़ आया। भैंस अपना सिर नीचे कर के घास चरती जा रही थी। अब वह जब तक वहाँ से हिलने का नाम ही न ले जब तक वह अपना वह घास खाने का कोटा ही खत्म न कर ले। और अगर उसे फिर कहीं दूसरी जगह घास दिखायी दे जाये तो वह उसकी तरफ चल दे।

उसके खींचे जाने से बचने के लिये चूहे को बड़ी धीरे धीरे उसके पीछे पीछे चलना पड़ रहा था। पर वह सच्चाई को अपने घमंड की वजह से स्वीकार नहीं करना चाहता था सो वह अपने पीछे देख कर चरवाहे से बोला — "बाई बाई। मैं इस रास्ते से अपने घर जा रहा हूँ। यह रास्ता थोड़ा लम्बा है पर इसमें छाया बहुत है।"

चरवाहे उसकी यह बात सुन कर बहुत हँसे पर उसने उनके हँसने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपनी शान से उस भैंस के पीछे पीछे चलता रहा।

उसने अपने आपको समझाया कि जब किसी को भैंस रखनी होती है तो उसके खाने का भी तो ख्याल रखना पड़ता है। जानवर

को अगर ठीक से दूध देना है तो उसे पेट भर घास तो खानी ही चाहिये। और फिर मेरे पास तो समय ही समय है उसकी मेरे पास क्या कमी चाहे वह सारा दिन घास खाती रहे।

सो सारा दिन वह भैंस के पीछे पीछे चलता रहा पर शाम आते आते वह बुरी तरह से थक चुका था। वह उसका बहुत ही कृतज्ञ हुआ जब वह खा पी कर एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये बैठ गयी और जुगाली करने लगी।

इत्तफाक से तभी एक दुलहिन की बारात आयी। दुलहा और उसके दोस्त दूसरे गॉव की तरफ चले गये थे और दुलहिन की डोली पीछे पीछे आ रही थी। पालकी उठाने वाले कहार थोड़े सुस्त थे सो छायादार पेड़ देख कर उनहोंने वह पालकी तो वहॉ रख दी और खुद कुछ खाना पकाने लगे।

उनमें से एक बोला — "उफ़ यह कैसे अमीर की शादी है कि खाने के लिये केवल चावल ही चावल है और कुछ नहीं। मॉस का एक टुकड़ा भी नहीं। न तो मीठा और न नमकीन। अगर हम दुलहिन को किसी गड्ढे में फेंक दें तो हमको थोड़ा सा मॉस मिल जायेगा।"

यह सुन कर अपनी मुश्किल से बचने के लिये चूहा एकदम चिल्लाया — "अरे यह तो बड़े शर्म की बात है। मैं तुम्हारी भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकता हूॅ। अगर तुम राजी हो तो

मैं तुम्हें अपनी भैंस दे सकता हूँ। तुम उसे मार कर पका कर खा सकते हो।”

असन्तुष्ट कहारों के मुँह से निकला — “तुम्हारी भैंस? तुम्हारे पास भैंस है? यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो? क्या कभी किसी ने किसी चूहे के पास भी भैंस सुनी है?”

चूहे ने घमंड से फूलते हुए कहा — “मैं मानता हूँ कि अक्सर ऐसा नहीं होता पर मेरे पास है। तुम खुद ही देख लो। क्या तुमको दिखायी नहीं दे रहा कि मैं एक भैंस को अपने गले में रस्सी बॉध कर खींच रहा हूँ।”

भूखा कहार चिल्लाया — “मुझे रस्सी से कोई मतलब नहीं भैंस किसी की भी हो मुझे तो खाने के लिये मॉस चाहिये।”

सो उन लोगों ने भैंस को मारा और उसका मॉस पकाया। बड़ा स्वाद ले ले कर उन्होंने अपना खाना खाया। भैंस का बचा हुआ मॉस उन्होंने चूहे को दे कर लापरवाही से कहा — “लो ओ छोटे चूहे यह तुम्हारे लिये।”

उस मॉस को देख कर चूहा गुस्से से चिल्लाया — “देखो न तो मैं तुम्हारे बर्तन में से कोई मॉस लूँगा और न तुम्हारी दाल लूँगा। क्या तुमको नहीं लगता कि मैंने अपनी सबसे अच्छी भैंस तुम्हें दे दी जो कई सेर दूध देती है। वह भैंस जिसको मैं दिन भर चराता रहा हूँ क्या इस थोड़े से चावल के लिये?

नहीं नहीं। मैंने एक रोटी ली एक ज़रा से लकड़ी के टुकड़े के लिये। उस छोटी सी रोटी को दे कर मैंने एक घड़ा लिया। घड़ा दे कर मैंने यह भैंस ली और अब यह भैंस दे कर मुझे दुलहिन चाहिये – केवल दुलहिन और कुछ भी नहीं।"

अब तक कहारों का पेट भर चुका था अब वे सोचने लगे कि यह उन्होंने क्या किया। इसका नतीजा सोच कर तो वे परेशान हो गये। फिर उन्होंने सोचा कि यही सबसे अक्लमन्दी का काम होगा कि वे वहाँ से जल्दी ही भाग जायें। उन्होंने दुलहिन को पालकी में बैठे वहीं छोड़ा और वहाँ से अलग अलग दिशाओं में भाग गये।

चूहे ने सोचा कि अब तो वह मालिक हो गया वह पालकी की तरफ बढ़ा और उसका परदा एक तरफ खिसका कर कई बार उसको सामने झुक कर अपनी सबसे मीठी आवाज में उससे पालकी में से बाहर आने के लिये कहा।

उसने बाहर झाँक कर जो देखा तो उसकी तो समझ में ही नहीं आया कि वह हँसे या रोये। पर इस समय इस जंगल में उसके लिये कोई भी साथ चाहे वह चूहे का ही क्यों न हो अकेले रहने से कहीं अच्छा था।

सो वह बाहर निकल आयी और अपने गाइड के पीछे पीछे चल दी। चूहा उसको ले कर जल्दी जल्दी अपने बिल की तरफ चल दिया।

जब वह अपनी सुन्दर दुलहिन को अपने घर लिये जा रहा था जो अपनी कीमती पोशाक और चमकते गहनों में किसी राजा की बेटी जैसी लग रही थी। वह अपने मन में सोचता जा रहा था "मैं कितना चतुर हूँ। मैंने कितना अच्छा सौदा किया।"

जब वह अपने बिल के पास पहुँचा चूहा तो वह बड़ी इज़्ज़त के साथ दो कदम आगे जा कर दुलहिन से बोला — "आइये मैम मेरे गरीबखाने पर पधारें। आइये अन्दर आइये। रास्ता थोड़ा ॲधेरा है मैं आपको रास्ता दिखाता हूँ।"

यह कह कर वह घर के अन्दर पहले घुसा। कुछ दूर जाने के बाद जब उसने देखा कि दुलहिन उसके पीछे नहीं आयी तो वह उसको चिढ़ाते हुए बोला — "अरे आप मेरे पीछे पीछे क्यों नहीं आयीं। क्या आपको यह नहीं मालूम कि इस तरह से पति को इन्तजार करवाना कितनी खराब बात है।"

वह सुन्दर दुलहिन मुस्कुरा कर बोली — "मगर जनाब मैं इस छोटे से छेद में नहीं आ सकती।"

यह सुन कर चूहा थोड़ा खॉसा और एक पल सोच कर बोला — "आपके कहने में कुछ सच्चाई तो है। आप बहुत बड़ी हैं। मुझे लगता है कि मुझे आपके लिये किसी जगह छप्पर डालना पड़ेगा। आज की रात आप किसी तरह उस जंगली अलूचे के पेड़ के नीचे गुजार लें मैं कल आपका इन्तजाम कर दूँगा।"

दुलहिन ने कहा — "पर मुझे तो भूख भी बहुत लगी है।"

चूहा बोला — "ओह ओह लगता है आज सभी भूखे हैं। पर यह काम मैं आपके लिये बहुत जल्दी कर सकता हूँ। एक पल में मैं आपके लिये खाने का इन्तजाम करता हूँ।"

कह कर वह तुरन्त ही अपने बिल में घुस गया और एक पल में ही बाजरे का एक भुट्टा और सूखी हुई मटर का एक दाना ले कर बाहर आया और बोला — "देखिये कितना बढ़िया खाना है।"

दुलहिन ने भुनभुनाते हुए कहा — "मैं यह नहीं खा सकती। यह तो मेरे एक कौर के बराबर भी नहीं है। मुझे एक बर्तन भर कर चावल चाहिये केक चाहिये मीठे अंडे चाहिये और साथ में मिठाई चाहिये। अगर मुझे यह सब नहीं मिला तो मैं तो मर जाऊँगी।"

यह सुन कर चूहा गुस्से में चिल्ला कर बोला — "आप कैसी परेशान करने वाली दुलहिन हैं। आप कुछ जंगली अलूचे क्यों नहीं खा लेतीं।"

दुलहिन रोते हुए बोली — "मैं जंगली अलूचे नहीं खा सकती। कोई भी उन्हें खा कर नहीं रह सकता। इसके अलावा वे अभी पके भी नहीं हैं और मैं उन तक पहुँच भी नहीं सकती।"

चूहा चिल्लाया — "यह सब बेकार की बात है। वे कच्चे हैं या पके हैं जैसे भी हैं आज की रात तो आपको वही खाने पड़ेंगे। कल

आप उन्हें टोकरी भर कर तोड़ लेना और बाजार में बेच कर उस पैसे से मन भर कर मीठे अंडे और मिठाई खरीद लेना।"

सो अगली सुबह चूहा पेड़ पर चढ़ा और फल लगी डंडियों को कुतर कुतर कर तोड़ता रहा जब तक फल उस डंडी से टूट कर नीचे दुलहिन के दुपट्टे में नहीं गिर जाता। उन अधकचरे फलों को ले कर दुलहिन बाजार गयी और वहाँ आवाज लगा कर बेचती फिरी —

हरे अलूचे ले लो हरे अलूचे ले लो। मैं राजकुमारी हूँ और चूहे की पत्नी भी हूँ

ऐसी आवाज लगाते हुए जब वह राजा के महल के पास पहुँची तो उसकी माँ रानी ने उसकी यह आवाज सुनी तो उसने अपनी बेटी की आवाज पहचान ली।

वह तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी और फिर अपनी बेटी को भी पहचान लिया। महल में उसके मिल जाने की बहुत खुशियाँ मनायी गयीं क्योंकि हर आदमी यही सोचता था कि उसको कोई जंगली जानवर खा गया है।

इस खुशी के बीच चूहा जो अब तक राजकुमारी का पीछा कर रहा था उसको कुछ देर तक कुछ दिखायी नहीं दिया तो चिन्ता करने लगा और महल के दरवाजे तक पहुँच गया। वहाँ जा कर उसने एक छोटी सी डंडी उठायी और उससे दरवाजे को पीटना शुरू किया।

वह गुस्से से चिल्लाया — "मेरी पत्नी को वापस करो। इसको मैंने न्यायपूर्वक सौदा कर के खरीदा है। एक डंडी दे कर मैंने एक रोटी खरीदी। एक रोटी दे कर मैंने एक घड़ा खरीदा। एक घड़ा दे कर मैंने एक भैंस खरीदी और एक भैंस दे कर मैंने यह दुलहिन खरीदी। अब यह दुलहिन मेरी है मेरी पत्नी मुझे वापस करो।"

बूढ़ी रानी हॅस कर दरवाजे में से बोली — "ओ मेरे दामाद जी यह सब तुमने क्या शोर मचा रखा है और वह भी बिना किसी बात के। तुम्हारी पत्नी को कौन ले कर भागना चाहता है बल्कि हम तो तुम्हें पा कर बहुत गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

मैंने तो तुम्हें दरवाजे के बाहर इसलिये इन्तजार करवाया क्योंकि मैं तुम्हारे स्वागत के लिये कालीन बिछवा रही थी ताकि हम सब तुम्हारा शान से स्वागत कर सकें।"

यह सुन कर चूहे का गुस्सा थोड़ा ठंडा पड़ गया और वह धीरज से बाहर इन्तजार करने लगा और चालाक रानी उसके स्वागत की तैयारी करने लगी। उसने एक स्टूल के बीच में एक छेद करवाया और उस स्टूल के नीचे एक गर्म लाल पत्थर रख दिया। फिर उस सबको एक कसीदाकारी किये गये कपड़े से ढक दिया।

यह सब कर के वह बाहर दरवाजे पर गयी और उसने चूहे का बड़ी इज़्ज़त के साथ स्वागत किया। वह उसको अन्दर ले कर आयी और स्टूल की तरफ ले जाते हुए उससे उस स्टूल पर बैठने के लिये कहा।

चूहा मन ही मन खुश होते हुए स्टूल पर चढ़ते हुए बोला "ओह मैं कितना होशियार हूँ। मैं तो रानी जी का दामाद हूँ। अब मेरे पड़ोसी मेरे बारे में क्या सोचेंगे कि मैं कितना बड़ा आदमी हूँ।"

पहले तो वह स्टूल के किनारे पर बैठा पर वह जगह भी उसको काफी गर्म लगी। उसके बाद वह कुछ इधर उधर होते हुए बोला — "सासू जी। आपका घर कितना गर्म है। मैं जो भी चीज़ छूता हूँ वह मुझे जलती हुई सी लगती है।"

चालाक रानी बोली — "तुम वहाँ हवा से बचे हुए हो मेरे बेटे इसलिये। तुम स्टूल पर थोड़ा बीच की तरफ बैठो तब तुम्हें कुछ ठंडी हवा लगेगी।"

पर उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि वहाँ गर्मी इतनी बढ़ गयी थी कि उसकी पूँछ और पूँछ के बाल काफी गर्म हो गये थे। वह तुरन्त ही वहाँ से कूदा और यह कहते हुए भाग गया कि अब आगे से वह कभी कोई सौदा नहीं करेगा।

# 3 वफादार राजकुमार[12]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक जगह एक राजा रहता था जिसके एक ही बेटा था और जिसका नाम था बहरामगोर।[13] वह शानदार धूप की तरह चमकीला था और आधी रात के चॉद की तरह सुन्दर था।

एक दिन यह राजकुमार शिकार खेलने के लिये गया। पहले वह उत्तर की ओर गया पर वहॉ उसे कोई शिकार नहीं मिला। फिर वह दक्षिण की ओर गया वहॉ भी उसको कोई शिकार नहीं मिला। फिर वह पूर्व की ओर गया वहॉ भी उसको कोई शिकार नहीं मिला।

फिर वह डूबते हुए सूरज की तरफ चल दिया तो अचानक उसे जंगली झाड़ी में से निकलता हुआ एक सुनहरी हिरन दिखायी दे गया। उसके सींग और खुर चमकीले सोने के बने हुए थे और उसका सारा शरीर सोने का बना हुआ था।

यह दृश्य देख कर उसकी ऑखें चौंधियॉ गयीं। आश्चर्य में भर कर उसने अपने साथ आने वालों को उस सुन्दर अजीब जानवर के

---

[12] The Faithful Prince (Tale No 3)

[13] Baharamgor – This tale is a variant in a way of a popular story published in the Punjab in various forms in the vernacular under the title of "The Story of Baharamgor and the Fairy Hasan Bano". The person meant is no doubt Baharamgor, the Sessanian King of Persia, known to the Greeks as Varanes V who reigned 420-438 AD. The modern stories however colored with local folklore represent the well-known tale in India through the Persian – Baharamgor and Dilaaraam.

चारों ओर एक गोला बनाने के लिये कहा ताकि वह उसे घेर कर सुरक्षित रख सके।

राजकुमार उनसे बोला — “याद रखना मैं उसको उसी तरफ पकड़ कर रखूँगा जिस तरफ भी वह बच कर भाग जाने की कोशिश करेगा।”

धीरे धीरे सिपाहियों का वह गोला अन्दर की तरफ को सिमटने लगा और उसके बीच में खड़ा था वह सुनहरा हिरन। कि अचानक वह हिरन राजकुमार की ओर बहुत ही तेज़ भागा पर राजकुमार उससे भी ज़्यादा तेज़ था। उसने उसको उसके सुनहरे सींगों से पकड़ लिया।

हिरन को आदमी की आवाज मिल गयी और वह चिल्लाया — “मुझे जाने दो मुझे जाने दो ओ राजकुमार बहरामगोर। मैं तुम्हें बदले में बहुत सारा खजाना दूँगा।”

पर राजकुमार हँसा और बोला — “नहीं मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता। खजाना तो मेरे पास बहुत सारा है पर मेरे पास तुम जैसा कोई सुनहरा हिरन नहीं है।”

हिरन बेचारा फिर बोला — “मेहरबानी कर के मुझे जाने दो राजकुमार। मैं तुमको खजाने से भी और ज़्यादा कुछ दूँगा।”

राजकुमार अभी भी हँस रहा था। वह हँसते हुए बोला — “और वह क्या चीज़ है जो तुम मुझे दोगे।”

हिरन बोला — "अपने ऊपर सवारी जैसी कि इस दुनियाँ के कभी किसी आदमी ने नहीं की होगी।"

राजकुमार खुशी से चिल्लाया "ठीक है।" और धीरे से उस हिरन की पीठ पर बैठ गया। तुरन्त ही जैसे किसी झाड़ी में से कोई चिड़िया उड़ जाती है वैसे ही वह हिरन भी वहाँ से उड़ लिया। हवा में ऊपर उड़ते हुए वह आसमान में जा कर गायब हो गया।

सात दिन सात रात वह राजकुमार को अपनी पीठ पर लिये दुनियाँ घुमाता रहा और राजकुमार भी अपने नीचे की दुनियाँ वहाँ से एक तस्वीर की तरह देखता रहा।

सातवें दिन की शाम को हिरन जमीन पर उतरा और राजकुमार को उतार कर गायब हो गया। उस जगह को देख कर राजकुमार बहरामगोर ने आश्चर्य से अपनी आँखें मलीं क्योंकि इससे पहले वह किसी ऐसे देश में कभी नहीं गया था। उसको वहाँ हर चीज़ नयी और अनजानी लग रही थी।

वह वहाँ कुछ देर तक किसी घर या फिर किन्हीं पैरों के निशानों को ढूँढने के लिये इधर उधर टहलता रहा। जब वह ऐसा कर रहा था तो अचानक एक अजीब सा छोटा सा बूढ़ा उसके पैरों के पास खड़ा हो गया।

उसने राजकुमार से बड़ी नम्रता से — "तुम यहाँ कैसे आये मेरे बच्चे और तुम किसकी तलाश कर रहे हो।"

राजकुमार बहरामगोर बोला कि वह एक सुनहरे हिरन पर चढ़ कर यहाँ आया था जो उसको यहाँ छोड़ने के बाद यहाँ से गायब हो गया और अब वह इस अजीब देश में खो गया है।

वह छोटा अजीब बूढ़ा बोला — "तुम डरो नहीं मेरे बच्चे। यह सच है कि तुम राक्षसों की दुनियाँ में हो पर तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा क्योंकि मैं राक्षस जसद्रूल[14] हूँ जिसकी तुमने जमीन पर तब एक बार जान बचायी थी जब मैं सुनहरे हिरन के रूप में था।"

तब जसद्रूल राजकुमार बहरामगोर को अपने घर ले गया और उसके साथ बड़ा अच्छा बर्ताव किया। उसने उसको 100 चाभियाँ दीं और कहा ये मेरे महल और बागीचे की चाभियाँ हैं।

उनको देखो और उनका आनन्द उठाओ। और यह भी हो सकता है कि तुमको कोई ऐसा खजाना हाथ लग जाये जिसको तुम लेना चाहो।

सो बहरामगोर रोज उसका एक बागीचा और एक नया महल देखता। एक महल में उसको सोने चाँदी जवाहरातों से भरे कई कमरे दिखायी दे गये। असल में उसने वह सब देखा जिसकी उसके दिल को इच्छा थी। फिर वह 100वें महल में आया तो उसने देखा कि वह महल तो सुनसान पड़ा था। वहाँ केवल जहरीले जानवर कीड़े मकोड़े और पौधे थे।

---

[14] Jasdrul

पर वह बागीचा जिसमें वह महल बना हुआ था वह अब तक के उसके देखे बागीचों में सबसे सुन्दर था। वह उस महल के सात मील इधर था और सात मील उधर था।

उसमें सारे में ऊँचे ऊँचे पेड़ लगे हुए थे फूल खिले हुए थे। छोटी छोटी नदियॉ थीं फव्वारे थे और गर्मियों में रहने वाले मकान[15] बने हुए थे। रंग बिरंगी तितलियॉ इधर उधर उड़ रही थीं और चिड़ियें दिन रात गाती थीं।

राजकुमार उसकी सुन्दरता से मुग्ध हुआ उसके चारों तरफ सात मील इधर और सात मील उधर घूमता रहा जब तक कि वह थक नहीं गया। थक जाने पर वह एक संगमरमर के बने गर्मी में रहने वाले मकान में आराम करने के लिये चला गया। वहॉ उसको सोने का एक पलंग मिल गया था जिस पर रेशम की चादरें बिछी हुई थीं। वह उसी पर जा कर लेट गया।

जब वह वहॉ सोया हुआ था तो वहॉ एक परी राजकुमारी शाहपसन्द एक कबूतर के रूप में सैर करने के लिये वहॉ आयी तो उसने सुन्दर नौजवान राजकुमार को देखा तो वह तो आश्चर्य से उसको देखती ही रह गयी।

जैसा कि दूसरी परियॉ करती हैं जब वह नीचे उतरी तो अपने असली रूप में उतरी। वह नौजवान राजकुमार के ऊपर झुकी और उसने उसको चूम लिया।

[15] Translated for the words "Summer Houses"

इससे राजकुमार की ऑख खुल गयी और वह इतनी सुन्दर राजकुमारी को अपने पास घुटनों पर बैठे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। राजकुमारी उसके हाथ पकड़ कर खुशी से बोली — “अरे मैं तो तुम्हें कबसे सब जगह ढूँढती फिर रही थी।”

जो परी राजकुमारी का हाल था वही हाल राजकुमार बहरामगोर का भी था। जैसे ही उन्होंने एक दूसरे को देखा तो वे एक दूसरे से प्यार करने लगे।

उन्होंने आपस में तय किया कि वे एक दूसरे से जल्दी से जल्दी शादी कर लेंगे। राक्षसों की दुनियाँ में राक्षस जसदूल की ताकत का अन्दाजा लगाते हुए राजकुमार ने सोचा कि अच्छा होगा अगर वह इस बारे में पहले अपने मेजबान राक्षस जसदूल से पूछ ले।

राजकुमार की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा जब उसने उसको न केवल इस बात की इजाज़त दे दी बल्कि उसको लगा कि वह उससे बहुत खुश है। उसने उससे अपने हाथ मिलाते हुए कहा — “अच्छा है अब तुम मेरे पास ही रहोगे और इतने खुश रहोगे कि तुम फिर कभी अपने घर वापस जाने की सोचोगे भी नहीं।”

इसके बाद राजकुमार बहरामगोर और राजकुमारी शाहपसन्द की शादी हो गयी और वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

आखिर एक दिन राजकुमार के मन में अपने घर जाने का विचार आया जिसे वह बहुत दिन पहले छोड़ आया था। उसे अपने

राजा पिता और रानी मॉ और अपने प्यारे घोड़े और कुत्ते की याद सताने लगी।

और यह सोचते सोचते वह इतना परेशान हुआ कि उसने यह बात अपनी पत्नी राजकुमारी से कही और आहें भरते हुए खाना खाने से इनकार कर दिया। उसने कई दिनों तक खाना नहीं खाया जिससे वह पीला और बीमार पड़ गया।

राक्षस जसदूल रोज रात को एक छोटे से कमरे में बैठा करता था जिसमें आवाज गूँजती थी। यह कमरा राजकुमार और राजकुमारी के कमरे के नीचे था। वह यहॉ से यह जानने के लिये उन दोनों की बातें सुना करता था कि वे खुश हैं कि नहीं।

जब उसने सुना कि राजकुमार दूर अपने देश धरती पर जाना चाहता था तो उसने एक लम्बी सॉस खींची। वह एक नर्मदिल राक्षस था और सुन्दर नौजवान राजकुमार को बहुत प्यार करता था।

आखिर उसने राजकुमार से उसके पीले और बीमार पड़ने की और लम्बी लम्बी सॉसें लेने की वजह पूछी। पर वह राजकुमार इतना प्यारा था कि वह दुख से मर जाना ज़्यादा पसन्द करता बजाय इसके कि वह अपने दयालु मेजबान को यह बताता कि वह वहॉ से अपने घर बहुत दूर जाना चाहता था।

पर जब उसने पूछ ही लिया तो वह बोला — "ओ भले राक्षस। मेहरबानी कर के मुझे घर जाने दो ताकि मैं अपनी रानी मॉ राजा पिता घोड़े और कुत्ते को देख सकूँ क्योंकि मैं उनके बिना बहुत

दुखी हूँ। मुझे और राजकुमारी को मेरे घर जाने दो नहीं तो मैं मर जाऊँगा।"

पहले तो राक्षस ने उसे मना कर दिया पर फिर उसको राजकुमार पर दया आ गयी। वह बोला — "ठीक है तुम जाओ। पर ध्यान रखना कि तुम बहुत जल्दी ही पछताओगे और राक्षसों के देश में आना चाहोगे।

क्योंकि जबसे तुमने दुनियाँ छोड़ी है तबसे अब तक में वह बहुत बदल गयी है और तुमको वहाँ बहुत मुश्किल होगी। इसलिये तुम यह बाल लो और जब भी तुम्हें किसी सहायता की जरूरत हो तो तुम इसे आग में डाल देना तो मैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जाऊँगा।"

उसके बाद राक्षस जसदूल ने उसे बड़े दुख के साथ विदा कहा और लो वह तो तुरन्त ही अपनी सुन्दर पत्नी के साथ जमीन पर अपने शहर में खड़ा था।

पर अफसोस जैसा कि उस अच्छे स्वभाव वाले राक्षस ने उससे कहा था वहाँ तो वाकई सब कुछ बदल गया था। उसके पिता और माता दोनों मर गये थे। कोई दूसरा ही राजा राजगद्दी पर बैठा हुआ था। उसने घोषणा कर रखी थी कि अगर बहरामगोर अपनी इस अनजानी यात्रा से वापस आ जाये तो उसका सिर काट कर लाने वाले को इनाम दिया जायेगा।

खुशकिस्मती से किसी ने राजकुमार को पहचाना नहीं क्योंकि राक्षसों की दुनियॉ में रह कर वह काफी बदल गया था। पर उसके साथ के एक पुराने शिकारी ने उसे पहचान लिया।

वह एक बार फिर से अपने मालिक को देख कर बहुत खुश हुआ और बोला कि वह तो राजकुमार को शरण देने के लिये अपनी जान भी दे सकता था। सो वह एक वफादार नौकर की तरह से राजकुमार और उसकी पत्नी को अपने घर ठहराने के लिये ले गया।

उसने कहा कि उसकी बूढ़ी मॉ जो अन्धी है उसका वहॉ आना कभी नहीं जान पायेगी और क्योंकि उसे शिकार खेलना बहुत पसन्द है तो वह उसे शिकार में सहायता कर दिया करेगा जैसे कि पहले वह उसको करता था।

इस तरह शानदार राजकुमार बहरामगोर और परी राजकुमारी दोनों उसके घर में उसकी ऐटिक[16] में रहने लगे और किसी को पता भी नहीं चला कि वे लोग वहॉ रह रहे हैं।

एक दिन जब राजकुमार अपने मेजबान शिकारी का नौकर बन कर शिकार के लिये गया हुआ था तो राजकुमारी शाहपसन्द ने अपने सुनहरे बाल धोने की सोची जो उसकी हाथी दॉत की सी सफेद गर्दन से ले कर नीचे उसकी एड़ी तक लटकते थे। उनको देख कर ऐसा लगता था जैसे धूप की बारिश हो रही हो।

---

[16] Attic – a small conical room on the top floor of a house. See its picture above.

जब उसने उनको धो लिया और उनमें कंघी कर ली तो उसने खिड़की खोल दी ताकि ठंडी हवा आ कर उसके बालों को जल्दी सुखा दे। तभी इत्तफाक से शहर का कोतवाल वहाँ से गुजर रहा था। खिड़की के खुलने की आवाज सुन कर उसने ऊपर देखा तो सुन्दर शाहपसन्द को और उसके चमकते हुए सुनहरे बालों को देखा।

वह उसकी सुन्दरता को देख कर ऐसा बेहोश हुआ कि वहीं पास की एक नाली में गिर पड़ा। उसके नौकरों को लगा कि उसको कोई दौरा पड़ गया है सो उन्होंने उसे उठाया और उसके घर ले गये। वहाँ भी वह उस सुन्दर सुनहरे बालों वाली परी को भूल नहीं सका। इससे लोगों को लगा कि शायद किसी ने उस पर जादू टोना कर दिया है।

यह कहानी राजा के कानों तक पहुँची तो उसने शिकारी के घर की जाँच पड़ताल के लिये अपने कुछ सिपाही भेजे।

शिकारी की बूढ़ी माँ ने कहा — “यहाँ कोई नहीं रहता। न कोई सुन्दर लड़की और न कोई बदसूरत लड़की। बल्कि यहाँ तो मेरे और मेरे बेटे के अलावा कोई और रहता भी नहीं। खैर तुम लोग ऐटिक में जा कर देखना चाहो तो जा कर देख सकते हो।”

बुढ़िया के ये शब्द सुन कर परी राजकुमारी शाहपसन्द ने अपने दरवाजे की कुंडी चढ़ा दी और एक चाकू ले कर लकड़ी की छत में एक छेद काट लिया। फिर उसने एक कबूतर का रूप रखा और

उसमें से बाहर उड़ गयी। जब सिपाहियों ने ऐटिक का दरवाजा खोला और उसके अन्दर झॉका तो वहॉ कोई नहीं था।

बेचारी राजकुमारी इस तरह से अपने सुन्दर नौजवान राजकुमार को अकेला छोड़ कर जाने पर बहुत दुखी थी। पर उनसे बचने का उसके पास और कोई चारा नहीं था। वह क्या करती।

जब वह अन्धी बुढ़िया के पास से गुजरी तो उसके कान में फुसफुसा कर कहती गयी "मैं अपने पिता के घर "पन्ने के पहाड़"[17] पर जा रही हूॅ।"

शाम को जब बहरामगोर घर वापस आया और अपना ऐटिक खाली पाया तो वह बहुत दुखी हुआ। वह अन्धी बुढ़िया भी उसके बार में कुछ ज़्यादा नहीं बता सकी क्योंकि उसे तो उन लोगों के बारे में कुछ पता ही नहीं था। बस उसने केवल इतना बताया कि उसने एक आवाज सुनी थी "मैं अपने पिता के घर "पन्ने के पहाड़" पर जा रही हूॅ।"

यह सुन कर राजकुमार को कुछ तसल्ली हुई पर जब उसने सोचा कि उसको तो यही नहीं पता कि पन्ने का पहाड़ है कहॉ तो वह फिर से दुखी हो गया। वह जमीन पर बैठ गया और सुबक सुबक कर रोने लगा। उसने खाना खाने से भी मना कर दिया और बस रोता ही रहा "ओह मेरी प्यारी राजकुमारी ओह मेरी प्यारी राजकुमारी।"

---

[17] Emerald Mountain – emerald is one of the nine precious gems.

काफी देर रो लेने के बाद उसको राक्षस के दिये हुए बाल की याद आयी तो उसने वह बाल निकाला और आग में डाल दिया। वह बस जलने ही वाला था कि लो राक्षस जसद्रूल वहाँ एकदम से प्रगट हो गया। आते ही उसने पूछा कि उसे क्या चाहिये।

राजकुमार बोला — "मेहरबानी कर के मुझे पन्ने के पहाड़ का रास्ता दिखाओ।"

वह दयालु राक्षस अपना सिर ना में हिला कर बड़े दुख से बोला — "तुम वहाँ तक कभी ज़िन्दा नहीं पहुँच पाओगे। मेरी मानो तो बीती हुई बातों को भूल जाओ और अपनी ज़िन्दगी एक नये सिरे से शुरू करो।"

वफादार राजकुमार बोला — "मेरी बस एक ही पत्नी है और अगर मैंने वह खो दी तो समझे कि मेरी तो ज़िन्दगी ही चली गयी। मुझे तो मरना ही है तो क्यों न मैं उसे ढूँढते हुए ही मरूँ। इसलिये तुम मुझे वहाँ ले चलो।"

राक्षस जसद्रूल का दिल सुन्दर नौजवान राजकुमार की इस बात से बहुत पिघल गया और उसने उससे वायदा किया कि वह उसकी भरसक सहायता करेगा।

वह उसको राक्षसों के देश में वापस ले गया। वहाँ जा कर उसने उसको एक जादू की छड़ी दी और उसको ले कर देश में चारों तरफ घूमने के लिये कहा जब तक कि वह उसके बड़े भाई नानक चन्द के घर न पहुँच जाये।

जसदूल बोला — "तुम्हारे रास्ते में बहुत खतरे आयेंगे पर तुम अपनी यह जादू की छड़ी दिन रात साथ रखना। इससे तुमको कोई खतरा या नुकसान नहीं पहुँचा पायेगा। मैं तुम्हारे लिये बस इतना ही कर सकता हूँ। पर मेरा बड़ा भाई नानक चन्द तुम्हें तुम्हारे रास्ते पर दूर तक ले जायेगा।"

सो राजकुमार बहरामगोर उस जादू की छड़ी को दिन रात साथ लिये राक्षसों की दुनियाँ में चारों तरफ घूमता फिरा इसलिये किसी खतरे से उसे कोई नुकसान भी नहीं पहुँचा। आखिर वह नानक चन्द के घर आ पहुँचा।

जैसा कि राक्षसों के साथ होता है कि वे 12 साल तक सोते हैं तो वह 12 साल सो कर उसी समय नींद से जागा था। तो अब यह साफ जाहिर था कि क्योंकि वह अभी अभी सो कर उठा था तो उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी सो जैसे ही उसने राजकुमार को देखा तो उसने सोचा कि वह तो उसके लिये क्या ही स्वादिष्ट नाश्ता रहेगा।

ऐसा सोच कर उसके मुँह में पानी आ गया फिर भी जब उसने उसके हाथ में जादू की छड़ी देखी तो उसने अपनी भूख को रोक लिया और राजकुमार से बड़ी नम्रतापूर्वक पूछा कि उसे क्या चाहिये।

राजकुमार ने उसे अपनी कहानी सुनायी तो उसने भी अपना सिर ना में हिलाया और बोला — "तुम पन्ने के पहाड़ पर कभी नहीं

पहुँच सकते मेरे बच्चे। मेरी बात मानो तो पुरानी बातों को भूल जाओ और अपनी ज़िन्दगी एक नये सिरे से शुरू करो।”

यह सुन कर उस शानदार नौजवान राजकुमार ने उसको भी वही जवाब दिया — “मेरी बस एक ही पत्नी है और अगर मैंने वह खो दी तो समझो कि मेरी तो ज़िन्दगी ही चली गयी। मुझे तो मरना ही है तो क्यों न मैं उसे ढूँढते हुए ही मरूँ।”

उसका यह जवाब नानक चन्द राक्षस के दिल को छू गया। उसने उसे सुरमे[18] का एक डिब्बा निकाल कर दिया और उससे राक्षसों के देश में घूमने के लिये कहा जब तक वह सफेद नाम के राक्षस जो कि उसका भी बड़ा भाई था उसके घर न पहुँच जाये।

उसने आगे कहा — “सफेद मेरा बड़ा भाई है। जो तुम चाहते हो अगर उस बारे में कोई कुछ कर सकता है तो बस वही कर सकता है।

अगर तुम्हें जरूरत पड़े तो इस पाउडर को अपनी ऑखों में लगा लेना। इससे जिस किसी को तुम पास देखना चाहोगे तो वह तुम्हारे पास आ जायेगी और जिस किसी को तुम दूर देखना चाहोगे वह दूर चली जायेगी।”

राजकुमार ने उससे सुरमा लिया उसको धन्यवाद दिया और फिर से खतरों और मुश्किलों का सामना करते हुए राक्षसों की दुनियॉ में

---

[18] There are two things to apply to eyes – Kaajal and Surmaa. Kaajal is made from collecting the blackishness through burning a string of cotton with the help of oil; while Surmaa is made by grinding some materials very finely. Kaajal normally is applied daily in everyday life, while Surmaa normally sometimes cures some eye diseases too. In India Surmaa from Bareilly (UP) is very famous.

निकल पड़ा। वह सफेद राक्षस के घर आ पहुँचा और आ कर उसे अपनी कहानी सुनायी। उसने उसे जादू की छड़ी और जादुई सुरमा भी दिखाया जो वह अपनी सुरक्षा के लिये लिये हुए घूम रहा था।

उस बड़े राक्षस ने उस लड़के की बहुत बड़ाई की और उसकी हिम्मत की दाद दी और कहा — "तुम एक बहादुर बच्चे हो। मुझे तुम्हारे लिये वह सब करना चाहिये जो कुछ भी मैं तुम्हारे लिये कर सकता हूँ। लो यह याच टोपी[19] लो। इसको तुम जब भी पहनोगे तुम किसी को दिखायी नहीं दोगे।

तुम यहाँ से दूर उत्तर की तरफ चले जाओ वहाँ काफी दूर जा कर तुम्हें पन्ने का पहाड़ दिखायी देगा। उस समय तुम यह सुरमा अपनी आँखों में लगाना और यह इच्छा करना कि वह तुम्हारे पास आ जाये तो वह तुम्हारे पास आ जायेगा।

ऐसा इसलिये क्योंकि वह एक जादुई पहाड़ है इसलिये जितनी दूर तुम उस पहाड़ पर चढ़ोगे वह उतना ही ऊँचा होता जायेगा। उसी की चोटी पर पन्ने का शहर बसा हुआ है।

वहाँ पहुँच कर तुम अपनी यह टोपी पहन लेना इससे तुम बिना किसी के देखे उस शहर के अन्दर जा सकोगे। वहाँ जा कर तुम

---

[19] For a detailed account of "yech"or "yach" of Kashmir see "Indian Antiquary. Vol ix, pp 260-261 and footnotes. Shortly it is humorous though powerful sprite in the shape of an animal, smaller than a cat, of a dark color, with a white cap on his head. Its feet are so small as to be almost invisible. When in this shape it has a peculiar cry – chot, chot, chu-u-ot. All this probably refers to some night animalof the squirrel tribe. It can assume any shape and if its white cap can be got possession of, it becomes servant of the possessor. The cap renders the human wearer invisible. Mythologically speaking the "yech" is the descendent of the classical Hindu Yaksha, usually described as an inoffensive, harmless sprite but also as a malignant imp.

अपनी राजकुमारी को ढूँढने की कोशिश करना अगर तुम कर सकते हो तो।"

राजकुमार ने उससे टोपी ली उसको धन्यवाद दिया और खुशी खुशी उत्तर की तरफ चल पड़ा। वह तब तक चलता रहा जब तक उसको दूर एक हरा चमकता पहाड़ दिखायी नहीं दे गया। ऐसा लगता था जैसे कि वह पत्थर के एक ही टुकड़े में से काट कर बनाया गया हो।

पर राजकुमार तो केवल अपनी राजकुमारी के बारे में ही सोच रहा था। वह वहाँ अपनी टोपी पहन कर इधर उधर नीचे ऊपर राजकुमारी को ढूँढता हुआ सुरक्षित घूमने लगा। पर वह उसको कहीं दिखायी ही नहीं दे रही थी।

असल में हुआ क्या था कि राजकुमारी शाहपसन्द के पिता ने उसको जेल में सात तालों में बन्द कर के रखा हुआ था ताकि वह कहीं फिर से न उड़ जाये।

इस तरह से वह उस पर अपनी नजर जमाये हुए था कि कहीं ऐसा न हो कि वह उड़ कर फिर से धरती पर अपने राजकुमार के पास न चली जाये जिससे वह हमेशा बातें करती रहती है।

राजा ने उससे कह रखा था "अगर तुम्हारा पति यहाँ आ जाये तो बहुत अच्छा है पर तुम वहाँ अब कभी नहीं जाओगी।"

सो राजकुमारी उन सात जेलों में बन्द अब दिन रात रोती रहती थी कि वह अब अपने राजकुमार से कैसे मिल पायेगी क्योंकि धरती का कोई आदमी यहाँ इस पन्ने के पहाड़ पर कैसे पहुँच सकता था।

अब जब राजकुमार बड़ी नाउम्मीदी से पन्ने के इस शहर में घूम रहा था तो उसने देखा कि एक दासी रोज एक खास समय पर एक खास दरवाजे से अपने सिर पर मिठाई की एक थाली ले कर अन्दर जाया करती थी।

उत्सुकतावश उसने अपनी टोपी का फायदा उठाया और जब वह दासी अगली बार उस दरवाजे में घुसी तो वह भी उसके पीछे पीछे बिना किसी के देखे उस दरवाजे में घुस गया।

उसके आगे एक बहुत बड़े दरवाजे के सिवा वहाँ और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। वह दरवाजा भी जब दासी ने पहले वाला दरवाजा बन्द करके ताला लगा दिया तब उसने उसे खोला। राजकुमार बहरामगोर फिर से उस दासी के पीछे पीछे उस दरवाजे के अन्दर घुस गया।

इस तरह से वह जेल के सात दरवाजों के अन्दर घुस कर सातवीं जेल में आया। वहाँ उसने देखा कि उसकी प्यारी राजकुमारी शाहपसन्द दुखी बैठी हुई थी और उसकी आँखों से नमकीन आँसू बह रहे थे।

यह देख कर वह बड़ी मुश्किल से अपने आपको उसके पैरों पर गिरने से रोक सका। पर यह याद करते हुए कि उसको तो कोई

देख नहीं सकता था उसने तब तक इन्तजार किया जब तक वह दासी मिठाई की थाली उसके पास रख कर चली नहीं गयी। जाते जाते वह सातों जेलों के दरवाजों को ताला लगा कर बन्द करना नहीं भूली।

फिर वह राजकुमारी के पास बैठ गया और उसी थाली में से मिठाई खाने लगा। पर उस बेचारी को तो चिड़िया की भूख जितनी भूख भी नहीं थी। उसने मिठाई की थाली को छुआ तक नहीं।

पर जब उसने उस थाली में से मिठाई गायब होती देखी तो उसको लगा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रही थी पर जब उसकी थाली की सारी मिठाई खत्म हो गयी तब उसको यह विश्वास हो गया कि उसके साथ उसके कमरे में कोई दूसरा मौजूद था जो उसकी मिठाई खा गया।

यह सोचते ही उसके मुँह से हल्की सी एक चीख निकल गयी। वह बोली — "यह कौन है जो मेरी थाली में से खा रहा है।"

तब राजकुमार बहरामगोर ने अपने सिर से अपनी टोपी थोड़ी सी हटायी जिससे अब वह कुछ कुछ दिखायी देने लगा था जैसे सुबह के धुँधलके में कोई आदमी दिखायी देता है।

उसको इस तरह देख कर राजकुमारी उसका नाम ले कर बहुत ज़ोर से रो पड़ी क्योंकि उसको लगा कि उसका राजकुमार मर गया है और वह जो वहाँ है वह शायद उसका कोई भूत है।

यह देख कर राजकुमार ने अपनी टोपी अपने सिर से बिल्कुल उतार दी इससे अब राजकुमारी उसको बिल्कुल साफ साफ देख सकती थी। वह अब अपने असली शरीर में आ गया था। उसने उसको अपनी बॉहों में ले लिया। राजकुमारी अब बहुत खुश थी।

अगले दिन जब दासी राजकुमारी के लिये मिठाई की थाली ले कर आयी तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गयी क्योंकि एक सुन्दर नौजवान राजकुमार राजकुमारी के पास बैठा हुआ था।

वह यह बात राजा को बताने के लिये तुरन्त ही भागी चली गयी। राजा ने जब यह सारी कहानी अपनी बेटी के मुँह से खुद सुनी तो उसकी खुशी का पारावार न रहा। वह राजकुमार बहरामगोर की हिम्मत और लगन से बहुत खुश हुआ और राजकुमारी शाहपसन्द को तुरन्त ही आजाद करने का हुक्म सुना दिया।

फिर वह बोला — "क्योंकि अब उसके पति ने उसको पाने का रास्ता ढूँढ लिया है तो अब मेरी बेटी उसके साथ जाना नहीं चाहती।"

उसने राजकुमार बहरामगोर को अपना वारिस घोषित कर दिया और राजकुमार बहरामगोर और राजकुमारी शाहपसन्द फिर पन्ने के पहाड़ पर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

# 4 भालू का बुरा सौदा[20]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत बूढ़ा लकड़हारा अपनी बहुत ही बूढ़ी पत्नी के साथ एक अमीर आदमी के बागीचे के पास एक बहुत छोटे से मकान में रहता था।

वह उसके इतना पास रहता था कि उसके बागीचे के एक नाशपाती के पेड़ की शाखें उसके मकान तक आती थीं।

इसलिये दोनों में यह तय हुआ कि अगर उस पेड़ का कोई फल उस लकड़हारे के घर के ऑगन में गिरा तो उसको उस लकड़हारे और उसकी पत्नी को खाने का अधिकार होगा।

अब तुम लोग सोच सकते हो कि उस लकड़हारे का परिवार तो बस उस पेड़ पर लगी नाशपातियॉ पक कर नीचे गिरने का ही इन्तजार करता रहता होगा।

उन फलों के गिराने के लिये वह तूफान आने की या फिर उड़ती हुई लोमड़ियों[21] के आने की या फिर किसी और चीज़ की जिससे भी वे फल नीचे गिर जाते उसकी भी प्रार्थना करता रहता होगा।

[20] Bear's Bad Bargain (Tale No 4)
[21] Translated for the words "Flying Foxes"

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। लकड़हारे की बूढ़ी पत्नी अपने बूढ़े पति से हमेशा इस बात की शिकायत करती रहती या उसे डॉटती रहती कि इस तरह से तो वे यकीनन भिखारी बन जायेंगे। उसने अपने पति को केवल सूखी रोटी देना शुरू कर दिया और उससे ज़िद की कि वह और ज़्यादा मेहनत से काम करे।

इस तरह से वह बूढ़ा दुबला और और दुबला होता चला गया। और यह सब इसलिये हो रहा था क्योंकि नाशपातियाँ उस पेड़ से टूट कर उनके ऑगन में नहीं गिर रही थीं।

आखिर एक दिन लकड़हारे ने अपनी पत्नी से साफ साफ कह दिया कि वह और ज़्यादा काम नहीं करेगा जब तक कि वह उसको खाने में खिचड़ी[22] नहीं देगी।

सो बुढ़िया ने मुँह बनाते हुए दाल और चावल निकाले, कुछ घी और मसाले निकाले और नमकीन खिचड़ी बनाना शुरू किया। उसकी तो खुशबू से ही भूख बढ़ जाती थी। लकड़हारा तो बस उसके तैयार होने का इन्तजार ही कर रहा था कि कब वह तैयार हो और कब वह उसे खाये।

पर उसकी लालची पत्नी बोली — "नहीं नहीं, अभी नहीं जब तक तुम मुझे लकड़ी का एक और गट्ठर ला कर नहीं दे दोगे तब तक मैं तुम्हें खिचड़ी नहीं दूँगी। और ध्यान रखना कि वह अच्छा

[22] Khichdi is a dish cooked by mixing rice with pulse, normally equal parts, in water with salt and butter.

बड़ा गट्ठर होना चाहिये। तुमको खाने के लिये काम करना चाहिये।"

यह सुन कर बेचारा लकड़हारा जंगल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने इतनी लगन और मेहनत से काम किया कि उसके पास जल्दी ही लकड़ियों का एक बड़ा सा गट्ठर जमा हो गया। हर कुल्हाड़ी पेड़ पर मारने से उसको खिचड़ी की खुशबू आती और वह उस स्वादिष्ट खाने के बारे में ही सोचता रहा।

वह अपना गट्ठर उठा कर वहाँ से घर की तरफ चलने ही वाला था कि कहीं से एक भालू वहाँ आ गया। उसकी नाक हवा में इधर उधर कुछ सूँघ रही थी और उसकी छोटी छोटी आँखें कुछ देखने की कोशिश कर रही थीं। क्योंकि वैसे तो भालू लोग कुल मिला कर बहुत अच्छे होते हैं पर उनकी जानने की इच्छा बहुत तेज़ होती है।

सो भालू बोला — "भगवान तुम्हें सुखी रखे मेरे दोस्त। तुम इतने बड़े लकड़ी के गट्ठर का क्या करने वाले हो।"

लकड़हारा बोला — "यह मेरी पत्नी के लिये है।" कह कर वह अपने होठ चाटते हुए धीरे से आगे बोला — "असल में बात क्या है कि आज उसने मेरे लिये इतनी बढ़िया खिचड़ी बनायी है कि बस कुछ पूछो मत।

और उसने मुझसे यह भी कहा है कि अगर में काफी सारी लकड़ी उसके लिये काट कर ले जाऊँ तो वह मुझे बहुत सारी खिचड़ी खाने के लिये देगी। ओह तुमको उस खिचड़ी की खुशबू

सूँघनी चाहिये। बहुत ही बढ़िया बनती है वह।" यह सुन कर भालू के मुँह में पानी आ गया। उसको तो उसके नाम से ही भूख लग आयी थी।

भालू भी अपने होठ चाटते हुए बोला — "क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी पत्नी मुझे भी थोड़ी सी खिचड़ी खिलायेगी?"

लकड़हारा चालाकी से बोला — "शायद। अगर ये लकड़ी बहुत सारी हुई तो खिलायेगी न।"

भालू बोला — "क्या 320 पौंड[23] लकड़ी काफी होगी?"

लकड़हारा ना में सिर हिलाते हुए बोला — "मुझे डर है कि नहीं। तुम्हें पता है कि खिचड़ी एक बहुत ही मँहगा खाना है। उसमें चावल पड़ता है बहुत सारा घी पड़ता है दाल पड़ती है और. . . "

भालू बोला — "तो फिर क्या 640 पौंड ठीक रहेगा?"

लकड़हारे ने सौदा किया — "आधा टन ठीक रहेगा। चलो सौदा पक्का।"

भालू बोला — "आधा टन तो बहुत होता है।"

लकड़हारा फिर बोला — "और उसमें केसर[24] भी तो पड़ती है।"

---

[23] Translated for the words "Four Hundred-weight". Hundred weight normally equals to one man's weight which is normally 80 pounds, so four hundred-weight should equal to roughly 320 pounds.
[24] Translated for the word "Saffron". Saffron is the dried filaments of saffron flowers. A few strands give nice color and flavor to the dish. Saffron is famous from Kashmir.

भालू ने एक बार फिर से अपने होठ चाटे और लालच और खुशी से अपनी ऑखें चमकायीं। फिर बोला — "तो ठीक है सौदा पक्का। तुम अब जल्दी से घर चले जाओ और अपनी पत्नी से कहना कि वह खिचड़ी तैयार कर के गर्म रखे मैं भी बस तुम्हारे पीछे पीछे ही पहुॅचता हूॅ।"

लकड़हारा बहुत खुश होता हुआ तुरन्त ही अपने घर की तरफ दौड़ गया। घर पहुॅच कर वह अपनी पत्नी से बोला कि किस तरह उसने एक भालू से आधा टन लकड़ी के लिये उसको खिचड़ी खिलाने का सौदा किया है।

अब उसकी पत्नी तो इस इतने अच्छे सौदे के बारे में कुछ कर नहीं सकती थी पर अपने जुआरी स्वभाव के अनुसार वह इस सौदे से खुश नहीं थी।

सो उसने अपने पति को डॉटना शुरू किया कि उसने इस बात का सौदा तो किया ही नहीं कि वह भालू कितनी खिचड़ी खायेगा। क्योंकि इससे पहले कि हम लोग पहली बार ही अपनी खिचड़ी लें वह तो एक दो बार में ही सारी खिचड़ी खा जायेगा।

अब यह बात तो लकड़हारे के दिमाग में आयी ही नहीं थी। यह सुन कर तो वह पीला पड़ गया। अब वह क्या करे। उसने कुछ सोच कर कहा — "तो ऐसा करते हैं कि हम लोग खिचड़ी पहले खा लेते हैं।"

सो दोनों खिचड़ी खाने के लिये जमीन पर बैठ गये। खिचड़ी का पीतल का बर्तन जिसमें उसने खिचड़ी बनायी थी अपने दोनों के बीच में रख लिया और जितनी जल्दी जल्दी हो सकता था खिचड़ी खानी शुरू कर दी।

लकड़हारे ने अपने मुॅह में खिचड़ी भरते हुए बोला — "इसमें से कुछ खिचड़ी भालू के लिये भी छोड़ने की याद रखना।"

लकड़हारे की पत्नी ने भी अपने मुॅह में खिचड़ी भरते हुए कहा — "हॉ हॉ यकीनन।"

उसने फिर से अपने मुॅह में खिचड़ी भरते हुए कहा — "भालू को याद रखना।"

बूढ़ा भी फिर से मुॅह भर कर खिचड़ी खाते हुए बोला — "हॉ हॉ बिल्कुल। उसे हम कैसे भूल सकते हैं।"

इस तरह से वे दोनों एक दूसरे को भालू को न भूलने की याद दिलाते हुए खिचड़ी खाते रहे जब तक कि खिचड़ी का पीतल का बर्तन बिल्कुल खाली नहीं हो गया।

खा पी कर लकड़हारा बोला — "अब क्या करें। यह सब तुम्हारी गलती है तुम कितना सारा खाती हो।"

पत्नी ने गुस्से से डॉटा — "क्या कहा तुमने। यह सब मेरी गलती है? अरे तुमने मुझसे दोगुनी खिचड़ी खायी है।"

"नहीं मैंने नहीं खायी।"

“हॉ हॉ तुम्हीं ने खायी है। आदमी औरतों से हमेशा ही ज़्यादा खाते हैं।”

“नहीं वे नहीं खाते।”

“हॉ वे खाते हैं।”

लकड़हारा बोला — “खैर अब लड़ने से कोई फायदा नहीं। खिचड़ी तो सारी की सारी खत्म हो गयी अब भालू तो बहुत नाराज होगा।”

लालची बुढ़िया बोली — “अब इससे तो क्या फर्क पड़ता है कि भालू लकड़ियॉ ले कर आता है या नहीं। पर मैं तुम्हें बताती हूँ कि अब तुम क्या करो।

हमको अपने घर में खाने का सब सामान ताले में रख देना चाहिये खिचड़ी का बर्तन आग के पास छोड़ देना चाहिये और हम लोगों को अपने ऐटिक[25] में छिप जाना चाहिये। जब भालू हमारे घर आयेगा तो वह सोचेगा कि हम लोग तो बाहर गये हैं और उसके लिये खाना यहॉ छोड़ गये हैं।

फिर वह लकड़ियों का गठ्ठर नीचे रखेगा और घर के अन्दर आयेगा। और यह भी ठीक है कि जब वह अन्दर आ कर खिचड़ी

[25] Translated for the word “Garret”. Attic is a small room on the top floor of the house – see its picture above.

का बर्तन खाली देखेगा तो घर में कुछ चीज़ों को इधर उधर करेगा तोड़ेगा फोड़ेगा। पर वह कुछ ज़्यादा शरारत नहीं कर सकता।

और मुझे लगता नहीं कि वह इतना भारी लकड़ियों का गट्ठर वापस ले जाने की भी परेशानी मोल लेगा।”

सो इस प्लान के अनुसार उन्होंने अपना सारा खाना ताले में बन्द किया खिचड़ी का बर्तन चूल्हे के पास रखा और जा कर ऐटिक में छिप गये।

इस बीच बेचारे भालू को उतने बड़े लकड़ी के गट्ठर के बोझ को इकट्ठा करने में ही काफी देर लग गयी। आखिर वह उसको ले कर लुढ़कता पुड़कता किसी तरह लकड़हारे के घर की तरफ चला आ रहा था।

वह उसके घर में घुसा तो उसने देखा कि खिचड़ी का पीतल का बर्तन चूल्हे के पास रखा है। यह देख कर उसने अपना बोझ उतार कर नीचे रख दिया और जा कर उस बर्तन में झॉका। उफ़ वह कितना नाराज हुआ जब उसने देखा होगा कि बर्तन तो खाली पड़ा है।

उसमें एक भी दाना चावल का नहीं था। एक छोटा सा टुकड़ा दाल का भी नहीं था। पर उसमें से खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी जैसी कि उसने पहले कभी नहीं सूँघी थी। वह गुस्से और नाउम्मीदी की वजह से रो पड़ा।

वह वहाँ से बहुत नाराज हो कर सारे घर में इस उम्मीद में घूम आया कि शायद उसको कोई और खाना कहीं हाथ लग जाये। पर ऐसा नहीं हुआ। लकड़हारे और उसकी पत्नी ने पहले से ही सारी खाने की चीज़ें ताले में बन्द कर के अन्दर रख दी थीं।

सो उसने पहले तो यह सोचा कि वह अपना लकड़ी का गट्ठर वहाँ से लिये चलता है पर जैसा कि उस चालाक पत्नी ने सोचा था जब वह उसको उठाने लगा तो बदला लेने के लिये उसकी ज़रा भी परवाह नहीं की।

लेकिन उसने खिचड़ी का बर्तन उठाते हुए अपने आपसे कहा "मैं यहाँ से खाली हाथ वापस नहीं जाऊँगा अगर मैं खिचड़ी नहीं खा सका तो क्या हुआ कम से कम मैं उसकी खुशबू तो सूँघता रहूँगा।"

सो जैसे ही वह बर्तन उठा कर बाहर जाने लगा तो उसकी निगाह पास में खड़े सुनहरी नाशपाती के पेड़ पर पड़ गयी। उनको देख कर उसके मुँह में पानी भर आया क्योंकि उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी और वे नाशपातियाँ मौसम की पहली पहली नाशपातियाँ थीं।

एक पल में ही वह लकड़हारे के मकान के चारों तरफ लगी दीवार पर चढ़ गया और वहाँ से फिर वह पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ जा कर उसने उस पेड़ की सबसे पकी और सबसे बड़ी नाशपातियाँ

तोड़ कर उन्हें खाना शुरू कर दिया कि उसके दिमाग में एक विचार कौंधा।

"अगर मैं इन नाशपातियों को तोड़ कर घर ले जाऊँ तो मैं इनको दूसरे भालुओं को भी दे सकता हूँ और उससे आये पैसे से खिचड़ी खरीद सकता हूँ। यह तो मेरे लिये सबसे अच्छा सौदा रहेगा।" बस यह बात दिमाग में आते ही उसने जल्दी जल्दी पकी नाशपातियाँ तोड़नी शुरू कर दीं।

नाशपातियाँ तोड़ तोड़ कर वह खिचड़ी वाले बर्तन में रखता जाता था। पर जब भी वह किसी कच्ची नाशपाती को देखता तो वह अपना सिर ना में हिलाता और कहता कि "इसे कौन खरीदेगा पर फिर भी इसे बर्बाद क्यों करना।" और कह कर उसे वह अपने मुँह में डाल कर बुरा सा मुँह बना कर खा जाता चाहे वह कितनी भी खट्टी क्यों न होती हो।

इतनी देर से लकड़हारे की पत्नी अपने दरवाजे की झिरी से भालू के कारनामों को देख रही थी। इस डर से कि कहीं उसका वहाँ छिपे रहने का भेद न खुल जाये वह वहाँ साँस रोके खड़ी थी।

पर अफसोस उसे अस्थमा की बीमारी थी और उसको जुकाम भी था सो वह अपने आपको बहुत देर तक न रोक सकी। जैसे ही खिचड़ी का बर्तन सुनहरी नाशपातियों से ऊपर तक लबालब भरा कि उसको एक बहुत ज़ोर की छींक आयी। आक छीं।

भालू को लगा जैसे किसी ने उसके ऊपर बन्दूक चला दी हो उसने वह बर्तन उसके मकान के ऑगन में छोड़ा और जितनी तेज़ वहॉ से भाग सकता था जंगल की तरफ भाग गया।

इस तरह से लकड़हारे की पत्नी को लकड़ी भी मिल गयी खिचड़ी भी मिल गयी और ढेर सारी पकी हुई पीली पीली बड़ी बड़ी नाशपातियॉ भी मिल गयीं।

# 5 राजकुमार शेरदिल और उसके तीन दोस्त[26]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा और रानी रहते थे और वे हमेशा खुश रहते थे सिवाय इसके कि उनको केवल एक दुख था। वह यह कि उनके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक फकीर या कोई भक्त उनके महल में आया। उसने रानी से मिलने की इच्छा प्रगट की। रानी बाहर आयी तो उसने कुछ जौ की बाल[27] उसको दीं और उससे कहा कि वह रोये नहीं। उनको खा ले तो उसके एक सुन्दर सा बेटा पैदा हो जायेगा।

रानी ने वे जौ की बालें खा लीं। नौ महीने बाद यकीनन उसके एक बहुत सुन्दर सा छोटा सा बेटा हो गया। उसका नाम उन्होंने शेरदिल[28] रख दिया क्योंकि वह बहुत बहादुर और ताकतवर था।

जब वह आदमी जितना बड़ा हो गया तो वह कुछ बेचैन सा हो गया। वह हमेशा अपने पिता से दुनियाँ घूमने की इजाज़त माँगता रहता। तब राजा अपना सिर ना में हिलाता और कहता कि अकेले बेटों को इस तरह से इधर उधर घूमने फिरने नहीं दिया जा सकता।

पर जब राजकुमार ने बहुत जिद की तो वह फिर कुछ और न सोच सका और राजकुमार को दुनियाँ घूमने की इजाज़त दे दी।

---

[26] Prince Lionheart and His Three Friends (Tale No 5)

[27] Translated for the word "Barley corns". See its picture above.

[28] Translated for the word "Lionheart"

राजकुमार इजाज़त पा कर बहुत खुश हुआ और जल्दी ही अपनी यात्रा की तैयारी में लग गया। उसने केवल अपने तीन साथियों को अपने साथ लिया – एक धार रखने वाला[29], एक लोहार और एक बढ़ई।

जब ये चारों कुछ दूर चल लिये तो एक बड़े शानदार शहर में आ पहुँचे। पर वहाँ कोई नहीं रहता था वहाँ बिल्कुल जंगल सा पड़ा हुआ था। जब वे उसमें से गुजर रहे थे तो उन्होंने वहाँ बहुत ऊँचे ऊँचे मकान देखे चौड़े चौड़े बाजार देखे खाने की चीज़ों से भरी दूकानें देखीं।

ये सब चीज़ें यह बताती थीं कि वह कोई बहुत ही शानदार खुशहाल और अमीर लोगों का शहर रहा होगा। पर वहाँ किसी भी मकान में किसी भी दूकान में किसी भी सड़क पर कोई आदमी नजर नहीं आया।

यह देख कर उनको बड़ा आश्वर्य हुआ। तभी धार रखने वाले ने अपना हाथ अपने माथे पर मारते हुए कहा — "अब मुझे याद आया। यह शहर वह होगा जिसके बारे में मैंने सुना था कि यहाँ एक राक्षस रहता है जो किसी को भी शान्ति से नहीं रहने देता। हमको यहाँ से तुरन्त ही भाग जाना चाहिये।"

[29] Translated for the word "Knifegrinder" – people who sharpen the knives, scissors etc

राजकुमार शेरदिल ज़ोर से बोला — "नहीं नहीं कभी नहीं। मैं यहाँ से किसी भी हालत में नहीं जाऊँगा जब तक मैं यहाँ खाना न खा लूँ क्योंकि मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।"

सो चारों दूकानों की तरफ चल दिये और दूकानों की तरफ देखने लगे। वहाँ से उन्होंने जो उनको चाहिये था वह खरीदा। जिस चीज़ की जितनी कीमत लिखी थी उतनी कीमत उन्होंने दूकान पर रखी जैसे कि अगर वहाँ पर दूकानदार होता तो वह उनसे लेता।

फिर वे महल की तरफ चल दिये जो शहर के बीच में बना हुआ था। राजकुमार शेरदिल ने धार रखने वाले को खाना बनाने के लिये कहा और बाकी के तीनों फिर से शहर देखने चले गये।

उनके जाने के बाद वह धार रखने वाला खाना बनाने के लिये रसोईघर की तरफ चला गया। उसके खाना बनाने से नमकीन खुशबू हवा में तैर गयी। धार रखने वाले को यह सोच कर ही अच्छा लग रहा था कि जब उस खाने की खुशबू इतनी अच्छी है तो उसका बनाया हुआ खाना कितना स्वादिष्ट होगा।

वह अपने खाने की खुशबू का आनन्द ले ही रहा था कि उसको अपने पास जिरहबख्तर[30] में लिपटी एक शक्ल खड़ी दिखायी दी।

[30] Translated for the word "Armor" – it is made of iron and is normally worn in war to protect the body.

उसके एक हाथ में तलवार थी और दूसरे हाथ में भाला था। वह एक सजे धजे चूहे पर सवार था।

वह छोटा सा बौना अपने भाले को इधर उधर हिलाता हुआ बोला — "लाओ मेरा खाना दो।"

धार रखने वाला बोला — "खाना? कैसा खाना? क्या तुम मजाक कर रहे हो?"

वह छोटा योद्धा गुस्से से चिल्लाया — "मुझे जल्दी से खाना दो वरना मैं तुम्हें पास के पीपल के पेड़ पर टॉग दूँगा।"

धार रखने वाला फिर बोला — "अरे वाह रे मेरे छोटे से योद्धा। ज़रा मेरे और पास तो आओ तो मैं तुम्हें अपनी उॅगली और ॲगूठे के बीच रख कर तुम्हारा चूरा कर देता हूॅ।"

यह सुनते ही वह छोटा सा राक्षस बहुत तेज़ी से बढ़ कर एक बहुत ही भयानक रूप से लम्बा राक्षस बन गया। यह देख कर धार रखने वाले की हिम्मत तो जाती रही और वह बहुत डर गया। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे दया की भीख मॉगने लगा।

लेकिन उसकी चीखों का उस राक्षस के ऊपर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि उसने एक पल में ही उसको पीपल के पेड़ की सबसे ऊॅची शाख पर लटका दिया था।

राक्षस चिल्लाया "मैं सिखाता हूॅ इनको अपनी रसोईघर में खाना बनाना।" और वह वहॉ रखी रोटी और दाल खाने लगा।

जब उसने वहाँ रखा सारा खाना खा लिया तो वह वहाँ से गायब हो गया।

इधर धार रखने वाला उस पेड़ की शाख से छूटने के लिये बहुत कोशिश करता रहा तो उस पेड़ की तो वह शाख ही टूट गयी जिस पर वह लटका हुआ था और वह पेड़ की दूसरी शाखाओं से टकराता हुआ नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसको चोट तो कुछ ज़्यादा नहीं आयी केवल थोड़ा सा जख्मी ही हुआ था पर वह डर बहुत गया था।

खैर वह इतना डर गया था कि वह वहाँ से तुरन्त ही भागा और भागा भागा सोने के कमरे में गया और रजाई में दुबक कर लेट गया। वह पूरा का पूरा सिर से पैर तक काँप रहा था जैसे उसको मलेरिया चढ़ गया हो।

धीरे धीरे राजकुमार और उसके साथी आने लगे और वे इतने ही भूखे थे जैसे शिकारी होते हैं। आ कर उन्होंने आवाज लगायी — "अरे भाई हमारा खाना कहाँ है।"

आवाज सुन कर धार रखने वाला रजाई में से ही काँपते काँपते बोला — "मेहरबानी कर के गुस्सा न हो क्योंकि इसमें किसी की भी गलती नहीं है। क्योंकि जैसे ही मैं खाना बना कर चुका तो मुझे मलेरिया से काँपने लगा। मैं यहाँ आ कर लेटा तो एक कुत्ता आया और वह सारा खाना खा कर चला गया।"

असल में उसको डर था कि अगर उसने सच बोला तो उसके दोस्त उसे राक्षस से न लड़ पाने के लिये डरपोक समझेंगे।

राजकुमार बोला — "कितनी बुरी बात है। पर तब हमको खाने के लिये कुछ और बनाना चाहिये। अच्छा तो लोहार अबकी बार तुम खाना बनाओगे। तब तक मैं और बढ़ई फिर से शहर देखने के लिये जाते हैं।" जैसे ही वे गये बढ़ई खाना बनाने बैठ गया।

जब उसका खाना बन गया और उसकी सौंधी सौंधी खुशबू हवा में उड़ी तो बढ़ई को भी लगा कि उसका बना खाना कितना स्वादिष्ट होगा कि तभी वह छोटा योद्धा उसके सामने आ कर खड़ा हो गया। वह भी धार रखने वाले की तरह से पहले तो बहादुर बना रहा फिर जल्दी ही डर गया और उससे उसे छोड़ देने की माफी माँगने लगा।

असल में उसके साथ भी वैसा ही हुआ जैसा कि धार रखने वाले के साथ हुआ था। उसको भी राक्षस ने पीपल के पेड़ से टाँग दिया और वह भी जब पेड़ से नीचे गिर गया तो वह भी सोने वाले कमरे की तरफ भागा और रजाई ओढ़ कर उसमें काँपने लगा।

सो जब राजकुमार शेरदिल और बढ़ई घूम कर लौट कर आये तो शिकारियों की तरह से भूखे थे पर उनके लिये अभी भी खाना नहीं था।

इस बार बढ़ई खाना बनाने के लिये रुक गया और केवल राजकुमार शेरदिल अकेला ही घूमने चला गया। पर उसके साथ भी वही हुआ जो पहले दो आदमियों के साथ हुआ था।

जब राजकुमार शेरदिल घूम कर आया तो तीन लोग बिस्तर में पड़े पड़े कॉप रहे थे और किसी के लिये खाना नहीं था। सो राजकुमार बेचारा खाना खुद ही बनाने बैठा।

जैसे ही उसका खाना बन कर तैयार होने लगा उसके खाने की भी सौंधी सौंधी खुशबू उड़ने लगी। बस तभी वह छोटा योद्धा अपने चूहे पर सवार हो कर वहाँ प्रगट हो गया – भयानक भी और शानदार भी।

राजकुमार उसको देख कर बोला — "अरे तुम तो बहुत ही प्यारे छोटे से साथी हो। बताओ तुम्हें क्या चाहिये।"

वह बोला — "मुझे मेरा खाना दो।"

राजकुमार हॅस कर बोला — "पर यह खाना तुम्हारा नहीं है यह खाना तो मेरा है। पर झगड़ा मिटाने के लिये हम दोनों आपस में लड़ लें। जो जीतेगा वही इस खाने का मालिक होगा।"

यह सुन कर चूहे वाले योद्धा ने अपना शरीर बढ़ाना शुरू किया और इतना बढ़ाया कि वह भयानक रूप से लम्बा हो गया। पर बजाय अपने घुटनों पर बैठ कर उससे दया की भीख मॉगने के राजकुमार तो बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मेरे अच्छे जनाब। हर किसी की एक बीच की चीज़ होती है।

जैसे अभी आप बहुत छोटे थे और अभी आप इतने लम्बे हो गये पर जैसा कि मैंने देखा कि आप बिना किसी परेशानी के अपना साइज़ बदल सकते हैं। पर अगर एक बार आप मेरे जितने बड़े साइज़ के हो जायें – न बड़े और न छोटे, तब इस खाने के बारे में यह फैसला हो सकता है कि यह किसका है।"

राक्षस की समझ में राजकुमार की बात कुछ समझ में नहीं आयी फिर भी वह छोटा हो कर उसके बराबर के साइज़ का हो गया। उसने राजकुमार को मारने के लिये की राजकुमार की ओर झुकना शुरू किया पर शानदार राजकुमार अपनी जगह से एक इंच भी नहीं हिला।

पर आखिर काफी लड़ाई के बाद उसने अपनी तेज़ धार वाली तलवार से उस राक्षस को मार डाला। तब सच को भॉपते हुए उसने अपने तीनों दोस्तों को उठाया और मुस्कुरा कर कहा — "ओ मेरे दोस्तों उठो मैंने तुम्हारे मलेरिया को मार डाला है।"

वे लोग डरने का बहाना बनाते हुए उठे और उसकी बहादुरी की बड़ाई करते हुए उसके पैरों पर गिर पड़े।

इसके बाद राजकुमार शेरदिल ने शहर के सारे लोगों को जिनको नीच राक्षस ने शहर के बाहर भेज दिया था यह सन्देश भेज दिया कि वे अब सुरक्षित रूप से अपने अपने घरों को वापस लौट सकते थे और आराम से रह सकते थे।

उसकी बस यही एक शर्त थी कि उनको धार रखने वाले को अपना राजा मानना पड़ेगा और उसको अपनी सबसे अमीर और सुन्दर बेटी देनी होगी।

यह उन्होंने बड़ी खुशी से किया पर जब शादी हो गयी तो राजकुमार शेरदिल फिर एक बार अपनी साहसिक यात्रा पर निकल पड़ा। धार रखने वाला अपने मालिक के पैरों पर गिर पड़ा और उससे प्रार्थना की कि वह उसे भी अपने साथ ले चले।

राजकुमार ने उसकी प्रार्थना को नहीं माना। उसने कहा कि वह वहीं रह कर अपने राज्य को देखे भाले और राज करे। उसने उसको जौ का एक पौधा दिया और उससे उसको बोने और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा।

उसने कहा कि जब तक यह जौ का पौधा ज़िन्दा और हरा भरा है उसका मालिक भी तन्दुरुस्त और खुश है। अगर वह मुरझा जाये तो वह समझे कि राजकुमार के ऊपर कोई मुसीबत आ पड़ी है और अगर वह चाहे तो उसकी सहायता के लिये आ सकता है।

सो धार रखने वाला तो उसी शहर में रह गया और राजकुमार अपने दूसरे साथियों लोहार और बढ़ई के साथ अपनी यात्रा पर चल दिया।

चलते चलते वे एक और वीरान शहर में आ गये जो बिल्कुल जंगल जैसा पड़ा था। और जैसे पहले की तरह से वे उसमें घूम रहे

थे उसमें उनको ऊँचे ऊँचे मकान खाली सड़कें खाली दूकानें दिखायी दीं जिनमें कोई आदमी नहीं था।

लोहार को अचानक कुछ याद आया तो उसने कहा — "अच्छा तो लगता है कि यह वह शहर है जिसमें एक भूत रहता है जो हर एक को मार देता है। हमको यहाँ से चले जाना चाहिये।"

पर राजकुमार शेरदिल को तो भूख लगी थी सो वह बोला हम यहाँ से खाना खाने के बाद ही जायेंगे। सो पहले की तरह से उन्होंने बाजार से खाने का सामान खरीदा दूकान पर उनकी कीमत रखी और वे वहाँ के महल पहुँचे। वहाँ पहुँच कर लोहार को खाना बनाने का काम सौंप कर राजकुमार और बढ़ई दोनों शहर घूमने चले गये।

जैसे ही खाने की सौंधी सौंधी खुशबू उड़ी तो वह भूत एक बुढ़िया का रूप रख कर वहाँ आया। उसको देखने से ही उसको डर लग रहा था। उसकी काली खाल झुर्रियों से भरी हुई थी और उसके पैर उलटे थे।

यह देख कर तो लोहार डर के मारे जम सा गया फिर भी वह वहाँ एक पल भी नहीं ठहर सका और दूसरे कमरे में भाग गया और जा कर दरवाजा बन्द कर लिया। यह देख कर भूत ने वह सारा खाना खुद खाया और गायब हो गया।

जब राजकुमार शेरदिल और बढ़ई शिकारियों की तरह से भूखे घर वापस लौटे तो न तो वहाँ पर खाना था और न ही लोहार। सो

इस बार राजकुमार ने बढ़ई को खाना बनाने का काम सौंपा और खुद शहर घूमने चला गया।

पर बढ़ई का भी समय कुछ अच्छा नहीं गुजरा। भूत उसके सामने भी आया और उसको देख कर वह भी एक दूसरे कमरे में जा कर घुस गया और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। सो जब राजकुमार शहर से लौटा तो न वहॉ पर खाना था और न बढ़ई।

राजकुमार बोला — "यह तो बड़ी खराब बात है।" सो उसने अपने लिये खाना खुद ही बनाना शुरू कर दिया। जैसे ही उसके खाने की सौंधी सौंधी खुशबू उड़नी शुरू हुई तो भूत एक सुन्दर नौजवान को देख कर एक बुढ़िया के रूप में नहीं बल्कि एक सुन्दर लड़की का रूप रख कर वहॉ आ पहुॅचा।

पर राजकुमार उसके धोखे में नहीं आया क्योंकि उसने उसके पैर पहले ही देख लिये थे कि वे उलटे थे। उसको तुरन्त ही पता चल गया कि वह कौन थी। सो उसने तुरन्त ही अपनी तेज़ तलवार निकाल कर उससे कहा — "तुम अब अपनी असली शक्ल में आ जाओ। मुझे सुन्दर लड़कियों का मारने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।"

यह सुन कर भूत गुस्से से चीख कर अपनी असली शक्ल में आ गया। पर उसी समय राजकुमार ने अपनी तलवार के एक ही वार से उसे मार डाला।

उसके बाद लोहार और बढ़ई अपने अपने कमरों में बाहर निकल आये और राजकुमार ने वहॉ के रहने वालों को यह सन्देश भेज दिया कि भूत मारा जा चुका है और अब वे बेहिचक अपने अपने घरों को लौट सकते हैं और सुरक्षित रह सकते हैं।

ऐसा वे इस शर्त पर कर सकते हैं कि वे लोहार को अपना राजा मानें और अपनी सबसे अमीर और सुन्दर लड़की की शादी उससे कर दें। यह उन्होंने खुशी से मान लिया।

यहॉ भी शादी होने के बाद राजकुमार ने लोहार को वहॉ का राज्य दे कर बढ़ई के साथ आगे जाने का प्लान बनाया। लोहार भी उनको आगे अकेले जाने देना नहीं चाहता था पर उसके मालिक ने उसको भी एक जौ का एक पौधा दिया और कहा कि वह उसे बो दे और उसकी ठीक से देखभाल करे।

अगर वह हरा भरा रहेगा तो वह समझे कि राजकुमार भी तन्दुरुस्त और खुश है और अगर वह मुरझाया तो समझे कि राजकुमार पर कोई मुसीबत आयी है। फिर अगर वह चाहे तो उसकी सहायता के लिये आ सकता है।

राजकुमार और बढ़ई कुछ दूर ही आगे चले थे कि वे एक बहुत बड़े शहर में आ गये। वहॉ वे आराम करने के लिये रुक गये। अब किस्मत कुछ ऐसी थी कि बढ़ई वहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की के प्रेम में पड़ गया। वह लड़की चॉद सितारों की तरह सुन्दर थी।

वह उसको देख कर लम्बी लम्बी साँसें लेने लगा और धार रखने वाले और लोहार की किस्मत से जलने लगा। उसकी भी इच्छा होने लगी कि इसकी भी शादी हो जाये और उसको भी एक राज्य राज करने को मिल जाये।

राजकुमार को उस पर दया आ गयी। उसने उस शहर के कुछ बड़े लोगों को बुलाया और बताया कि वह कौन था और उनको हुकुम दिया कि वे बढ़ई को अपना राजा मान लें और उसकी पसन्द की लड़की से शादी कर दें।

राजकुमार दूसरे देशों में भी मशहूर था और वे उसको नाखुश करने से भी डरते थे सो उसकी बात मान ली गयी। इस तरह बढ़ई की भी शादी हो गयी और वह वहाँ का राजा बन कर रहने लगा। बढ़ई की शादी हो जाने के बाद अब राजकुमार अकेला रह गया।

उसने बढ़ई को भी जौ का एक पौधा दिया और उसकी ठीक से देखभाल करने के लिये कहा। और यह कह कर कि वह उसके सुख दुख का पता देगा वह आगे अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक नदी के पास आया। वह उस नदी के किनारे आराम करने के लिये बैठ गया। वह ऐसे ही नदी की तरफ देख रहा था कि उसने एक बहुत बड़ा लाल[31] नदी में बहते जाते देखा जिसको देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

---

[31] Translated for the word “Ruby”. See its picture above. It is one of the nine precious gems.

और वहाँ वह केवल एक ही लाल नहीं था। उनकी तो लाइन लगी हुई थी क्योंकि इसने देखा कि फिर दूसरा लाल आया फिर तीसरा लाल आया। हर लाल का साइज़ बहुत बड़ा था और वह बहुत चमक रहा था। उसने सोचा कि वह इस बात का पता लगा कर ही रहेगा कि वे लाल कहाँ से आ रहे थे।

यह सोच कर वह नदी की ऊपर की तरफ चल दिया। उन लालों को नदी की धारा के साथ बहते हुए देखता हुआ वह दो दिन और दो रात चलता रहा। आखिर वह नदी के किनारे बने एक बहुत ही शानदार महल के पास आ पहुँचा।

वह महल चमकीले बागीचों से घिरा हुआ था। उस महल से संगमरमर की बनी सीढ़ियाँ नदी तक जा रही थीं। वहीं उसके पास एक बहुत बड़ा पेड़ खड़ा था जिसकी शाखें पानी के ऊपर तक जा रही थीं। उनमें से एक शाख पर एक सोने की टोकरी लटक रही थी।

राजकुमार तो पहले से ही बहुत आश्चर्यचकित था और यह देख कर तो और भी ज़्यादा आशचर्यचकित हो गया कि उस सोने की टोकरी में एक बहुत ही सुन्दर बहुत ही प्यारी लड़की का सिर रखा हुआ था जो बिल्कुल किसी राजकुमारी का सिर लग रहा था।

उस सिर की आँखें बन्द थीं। उसके सुनहरे बाल ठंडी ठंडी हवा में इधर उधर उड़ रहे थे और उसके पतली लम्बी गर्दन से हर मिनट

खून की एक बूँद पानी में गिर रही थी जो पानी में पड़ते ही एक लाल बन जाती थी। वे ही लाल उस नदी में बहते चले जा रहे थे।

राजकुमार शेरदिल को यह दृश्य देख कर दया आ गयी। उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने इस भेद का कुछ अता पता पाने के लिये महल के अन्दर जाने का विचार किया।

वह महल के अन्दर चला गया और जा कर उसके संगमरमर के बने हुए कमरों में घूमने लगा। वे कमरे बहुत ज़्यादा अच्छी तरह से सजे हुए थे। वह खुदायी का काम की गयी गैलरियों में गया वह बड़े बड़े चौड़े बरामदों में घूमा पर वहाँ उसको कोई ज़िन्दा जीव दिखायी नहीं दिया।

फिर वह एक सोने वाले कमरे में आया जहाँ उसने एक सफेद साटन के बिस्तर पर एक लड़की का बिना सिर वाला शरीर देखा जो चाँदी के तारों से लटका हुआ था।

उस पर एक नजर डालते ही उसको विश्वास हो गया कि यह शरीर उसी लड़की का था जिसका कटा सिर उसने बाहर नदी के किनारे सोने की टोकरी में झूलता रखा देखा था। यह देखते ही उसके मन में इच्छा जागी कि वह इन दोनों को मिला कर देखे।

वह तुरन्त ही बाहर नदी की तरफ दौड़ पड़ा। वहाँ से वह वह सोने की टोकरी ले कर अन्दर आया और उसमें से कटा हुआ सिर निकाल कर धीरे से उस शरीर पर लगा दिया। लो वह तो उससे जुड़ गया और धीरे धीरे उसमें जान पड़ने लगी।

यह देख कर राजकुमार की खुशी की तो कोई हद ही नहीं रही वह तुरन्त उससे बोला कि वह उसको यह बताये कि वह कौन है और इस अकेली जगह में अकेली कहाँ से और कैसे आयी है।

राजकुमारी ने बताया कि वह एक राजा की बेटी है जिसको एक जिन्न प्यार करने लगा था। अपने इस प्यार के जुनून में वह उसको उठा कर यहाँ इस जादुई जगह ले आया था।

यहाँ भी वह उससे इतना जलता था कि वह अपने जादू से उसका गला काटे बिना और उसको सोने की टोकरी में रख कर बाहर पेड़ से लटकाये बिना महल से बाहर भी नहीं जाता था। और वह इस हालत में तब तक रहती थी जब तक वह शाम को घर वापस आता था तभी वह आ कर वह उसको ज़िन्दा करता था।

राजकुमार शेरदिल ने उसकी जब यह दर्दनाक कहानी सुनी तो उसने राजकुमारी से कहा कि वह उसके साथ तुरन्त भाग चले। पर राजकुमारी ने उसे बताया कि पहले उसे जिन्न को मारना ही पड़ेगा नहीं तो वे लोग वहाँ से भागने में कामयाब नहीं हो पायेंगे।

राजकुमारी ने उससे वायदा किया कि वह उसकी ज़िन्दगी का भेद जानने की कोशिश करेगी कि उसकी आत्मा कहाँ रहती है और वे लोग उसे कैसे मार पायेंगे। इस बीच राजकुमार को उसका सिर फिर से काट कर वैसे ही रख देना चाहिये जैसा कि वह छोड़ कर गया था ताकि उसके बेदर्द मालिक को कोई शक न हो।

हालाँकि राजकुमार बेचारे को यह बेदर्द काम करने में बहुत तकलीफ हुई पर उसको यह काम करना तो था ही सो उसने अपनी आँखें बन्द कर के उसकी गर्दन काट कर उसके सिर को एक बार फिर सोने की टोकरी में रखा और वापस उसे वहीं उसी पेड़ पर ले जा कर टाँग दिया। खुद वह उसके सोने के कमरे की एक पास वाली आलमारी में जा कर छिप गया।

शाम को जिन्न जब वापस आया तो उसने सोने की टोकरी में रखा सिर निकाला और उसको राजकुमारी के कटे शरीर पर चिपका दिया। राजकुमारी ज़िन्दा हो गयी।

लेकिन तुरन्त ही वह इधर उधर कुछ सूँघते हुए बोला — "अरे यह आदमी की खुशबू कहाँ से आ रही है।"

यह सुन कर राजकुमारी ने बनावटी रोना शुरू कर दिया और बोली — "ओ भले जिन्न। तुम मुझसे गुस्सा न हो। मुझे किसी भी बात का पता कैसे हो सकता है। जब तुम बाहर जाते हो तो क्या तुम मुझे मार कर नहीं जाते? तुम अगर मुझे खाना चाहते हो तो खा सकते हो पर तुम मुझसे गुस्सा न हो।"

यह सुन कर जिन्न जो उसको बहुत प्यार करता था बोला कि वह उसको मारने की बजाय खुद मर जाना ज़्यादा पसन्द करेगा।

राजकुमारी बोली — "यह तो मेरे लिये और भी खराब बात है। क्योंकि जब तुम बाहर चले जाते हो तो अगर तुम वहाँ मर गये

तो यह तो मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा। क्योंकि उस समय न तो मैं मरे हुओं लोगों में गिनी जाऊँगी और न ज़िन्दा लोगों में।"

जिन्न बोला — "तुम इतना परेशान न हो। मेरे मरने का कोई मौका नहीं है क्योंकि मुझे कोई नहीं मार सकता। मेरी आत्मा एक बड़ी सुरक्षित जगह रखी है।"

राजकुमारी बोली — "मुझे यकीन है कि ऐसा ही होगा पर मैं तुम्हारा विश्वास तभी करूँगी जब तुम मुझे यह बताओगे कि वह कहाँ रखी है। जब तक तुम मुझे यह बताओगे नहीं मुझे सन्तोष नहीं मिल सकता क्योंकि तभी मैं यह जान पाऊँगी कि वह सुरक्षित है या नहीं।"

पहले तो जिन्न ने बताने से मना कर दिया पर राजकुमारी ने उसे यह बात बताने के लिये इतने सुन्दर तरीके से मजबूर किया कि उसको नींद आने लगी। और नींद में ही वह बोला — "मुझे केवल एक राजकुमार ही मार सकता है जिसका नाम राजकुमार शेरदिल है।

और वह भी मुझे ऐसे ही नहीं मार सकता जब तक कि उसको एक अकेला पेड़ न मिल जाये जिस पर एक कुत्ता और एक घोड़ा दिन रात पहरा न देते हों।

इसके बाद भी वह उन्हें बिना कोई नुकसान पहुँचाये उस पेड़ तक आये और ऊपर चढ़ कर एक मैना[32] के पेट को फाड़ कर जो वहाँ गाती हुई एक पिंजरे में बन्द बैठी है और वह पिंजरा उस पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर है उसमें रह रहे एक भौंरे को न मारे।

इसलिये मैं सुरक्षित हूँ क्योंकि यह सब करने के लिये यानी पेड़ तक पहुँचने के लिये फिर जानवरों को बिना कोई नुकसान पहुँचाये हुए पेड़ पर चढ़ने के लिये फिर उस मैना तक पहुँचने के लिये और फिर मैना के पेट से भौंरा निकाल कर मारने के लिये शेर का दिल चाहिये या फिर बहुत अक्लमन्दी चाहिये।"

राजकुमारी बोली — "और उन दोनों जानवरों पर कैसे काबू पाया जा सकता है। तुम मुझे यह और बता दो फिर मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगी।"

जिन्न अब तक आधा सो रहा था और राजकुमारी के सवाल पूछने की वजह से बहुत अनमना था सो सोते सोते बोला — "घोड़े के सामने हड्डियों का एक ढेर पड़ा है और कुत्ते के सामने घास का एक ढेर। बस उनको आपस में बदलना है।

हड्डियों के ढेर को कुत्ते के सामने रखना है और घास के ढेर को घोड़े के सामने। जो कोई कोई लम्बा डंडा ले कर यह काम कर देगा वही उन्हें जीत पायेगा और वही पेड़ के पास पहुँच जायेगा

[32] Translated for the word "Starling". See its picture above.

क्योंकि तब दोनों के सामने अपना अपना खाना होगा – घोड़े के सामने घास होगी और कुत्ते के सामने हड्डियाँ।"

जैसे ही राजकुमार ने यह सब सुना वह तुरन्त ही उस अकेले पेड़ की खोज में चल दिया। उसने उसे जल्दी ही ढूँढ भी लिया। उाने देखा कि उसके आगे एक जंगली घोड़ा और एक गुस्सैल कुत्ता उसका पहरा दे रहा था।

जब उसने उनको उनका अपना अपना खाना दे दिया तब वे बहुत ही सीधे हो गये। राजकुमार बिना किसी मुश्किल के पेड़ पर चढ़ गया और मैना को उसके पिंजरे में से निकाल कर उसकी गर्दन मरोड़ने लगा।

इसी समय राक्षस की आँख खुल गयी और वह जान गया कि क्या हो रहा था सो वह तुरन्त ही उठा और वहाँ से अपनी जान बचाने के लिये पेड़ की तरफ भागा।

राजकुमार ने भी उसको आते देख लिया तो तुरन्त ही चिड़िया का पेट काट डाला और उसमें से भौंरा निकाल लिया और जैसे ही जिन्न पेड़ पर चढ़ रहा था उसने उसके पंख तोड़ दिये।

जिन्न एक चीख के साथ नीचे गिर पड़ा पर अपने दुश्मन को मारने का इरादा ले कर उसने फिर से पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। तब राजकुमार ने उसकी टाँगें मरोड़ दीं जिससे जिन्न की भी टाँगें टूट गयीं। और जब भौंरे का उसने सिर तोड़ा तब तो जिन्न बिल्कुल ही मर गया।

जिन्न को मार कर राजकुमार जीत की खुशी के साथ राजकुमारी के पास लौटा। राजकुमारी उसकी मौत के ऊपर इस जीत से बहुत खुश हुई।

वह तो वहॉ से राजकुमारी के साथ तुरन्त ही अपने राज्य लौटने वाला था पर राजकुमारी की इस विनती पर कि उसको अब थोड़ा आराम कर लेना चाहिये और महल में रखा खजाना भी देख लेना चाहिये वह वहीं महल में रुक गया।

एक दिन राजकुमारी नदी में नहाने गयी तो वहॉ उसने नदी में अपने सुन्दर सुनहरे बाल धोये और फिर उनमें कंघी की तो उसके एक दो बाल टूट कर उस कंघी में अटक गये – चमकते सोने जैसे। उसको अपने बालों पर बड़ा नाज़ था सो उसने सोचा "मैं अपने बालों को ऐसे ही नदी की गन्दी कीचड़ में नहीं फेंक दूॅगी।"

सो उसने पीपल के पत्ते का एक दोना बनाया अपने चमकते हुए सुनहरी बाल उसमें रखे और नदी में बहा दिये।

अब हुआ यह कि वह दोना बहता बहता एक राजा की राजधानी से गुजरा जहॉ वहॉ का राजा अपनी नाव में बैठा पानी का आनन्द ले रहा था। तभी उसने पानी के ऊपर चमकता हुआ कुछ तैरता देखा तो अपने नाविक को उसकी तरफ ले चलने के लिये कहा। उसने वह पीपल के पत्ते का दोना उठा लिया तो देखा कि उसमें तो कुछ बाल रखे हुए हैं।

उसको लगा कि उसने तो इससे आधी सुन्दरता भी कहीं नहीं देखी। अब जब तक उसको यह पता न चल जाये कि वे बाल किसके हैं उसको दिन रात चैन नहीं था।

सो उसने अपने राज्य की सबसे ज़्यादा अक्लमन्द स्त्रियों को बुलवाया और उनसे यह पता लगाने के लिये कहा कि वह सुनहरे बालों वाली लड़की कहाँ रहती थी।

पहली स्त्री बोली "अगर वह लड़की इस धरती पर कहीं है तो मैं उसको ढूँढ दूँगी।"

दूसरी स्त्री बोली "अगर वह आसमान मैं है तो मैं उसे आसमान फाड़ कर ढूँढ लाऊँगी।"

पर तीसरी स्त्री हँसी और बोली "अगर तू आसमान को फाड़ेगी तो मैं उसमे ऐसा पैबन्द लगा दूँगी कि आसमान फिर से वैसा ही हो जाये जैसा वह था कोई नये पुराने में भेद न बता सकेगा।"

राजा को लगा कि यह तीसरी स्त्री सबसे ज़्यादा अक्लमन्द है सो उसने उसी से कहा कि वह उस सुनहरे बालों वाली लड़की को ढूँढे।

अब क्योंकि बाल नदी में पाये गये थे तो उस स्त्री ने सोचा कि ये बाल जरूर ही किसी ऐसी लड़की के होंगे जो नदी के ऊपर की तरफ कहीं रहती होगी। सो उसने एक सुन्दर शाही नाव ली और नदी के ऊपर की तरफ चल दी।

नाविक नाव खेता रहा खेता रहा जब तक कि वह जिन्न के संगमरमर के जादुई महल के पास नहीं आ गया। वह चालाक स्त्री

अकेली ही उस महल की सीढ़ियों तक गयी और वहाँ जा कर रोने बिलखने लगी।

इत्तफाक से उस दिन राजकुमार शिकार पर गया हुआ था। राजकुमारी घर में बिल्कुल अकेली थी। वह बहुत दयालु थी सो जैसे ही उसने किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनी तो वह यह देखने के लिये घर में से निकल कर बाहर आयी कि देखूँ बाहर कौन रो रहा है।

उसने उस स्त्री से पूछा — “माँ जी आप क्यों रोती हैं।”

वह अक्लमन्द स्त्री रोते हुए बोली — “बेटी मैं तुम्हारे लिये इसलिये रोती हूँ कि अगर राजकुमार का कहीं कत्ल हो जाये तो तुम क्या करोगी। तुम यहाँ जंगल में अकेली कैसे रहोगी।” क्योंकि वह स्त्री एक जादूगरनी भी थी और राजकुमार के बारे में सब कुछ जानती थी।

राजकुमारी अपने हाथों की मुट्ठियाँ भींचते हुए बोली — “यह तो तुम ठीक कह रही हो। यह तो सचमुच में बहुत बुरा होगा। यह तो मैंने पहले कभी सोचा ही नहीं था।”

वह बेचारी सारा दिन यही सोच सोच कर रोती रही। रात को जब राजकुमार वापस लौट कर आया तो उसने उससे अपना डर कहा तो वह उनको सुन कर हँस दिया और बोला कि उसकी ज़िन्दगी सुरक्षित थी ऐसा मुश्किल से होगा कि ऐसा मौका आये।

फिर उसने राजकुमारी को तसल्ली दी और राजकुमारी ने उससे विनती की कि वह उसे बताये कि उसकी ज़िन्दगी सुरक्षित कैसे थी ताकि वह उसको सुरक्षित रखने में उसकी सहायता कर सके।

राजकुमार बोला — "वह मेरी तलवार की तेज़ धार में है जो मुझे कभी धोखा नहीं देती। अगर कोई मुझे न्यायपूर्ण ढंग से मारेगा तो वह कभी सफल नहीं हो सकता सो प्रिय राजकुमारी तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो। अब तुम आराम से सोओ।"

राजकुमारी बोली — "मुझे लगता है जब तुम शिकार पर जाओ तो तुमको अपनी तलवार घर पर छोड़ कर जाना चाहिये।"

और हालाँकि राजकुमार ने उसे बार बार समझाया कि उसको डरने की कोई जरूरत नहीं थी फिर भी उसने तो अपना मन बना ही लिया था कि जैसे वह चाहेगी वह उससे वैसे ही करवायेगी।

सो अगले दिन जब राजकुमार शिकार के लिये जाने लगा तो उसने उसकी अपनी तलवार तो छिपा कर अपने पास रख ली और उसकी जगह एक दूसरी तलवार रख दी। सो वह तो अव बेवकूफ बन गया था।

इस तरह जब वह अक्लमन्द स्त्री दोबारा वहाँ आयी और संगमरमर की सीढ़ियों पर बैठ कर रोने लगी तो राजकुमारी ने खुश हो कर उसे बुलाया और कहा — "माँ जी अब आप रोइये नहीं। राजकुमार की ज़िन्दगी अब सुरक्षित है। उनकी आत्मा इस तलवार में है और वह तलवार अब मेरी आलमारी में छिपी रखी है।"

यह सुन कर वह नीच बुढ़िया तब तक इन्तजार करती रही जब तक राजकुमारी दोपहर को सो नहीं गयी और सब शान्त नहीं हो गया। वह उस आलमारी के पास गयी जिसमें राजकुमार की तलवार रखी थी। उसने वह तलवार निकाली एक बड़ी सी आग जलायी और उसको उस आग से जलते अंगारों में रख दिया।

जैसे जैसे वह तलवार गर्म होती गयी राजकुमार के शरीर में जलन होने लगी। राजकुमार को अपनी तलवार के जादुई गुणों का पता था सो उसने उसको यह देखने के लिये निकाल लिया कि वह काम करती है या नहीं।

पर लो वह तो उसकी तलवार ही नहीं थी। उसको किसी ने बदल कर कोई दूसरी तलवार उसकी जगह रख दी थी। यह देख कर वह ज़ोर से रोते हुए चिल्ला पड़ा "आह मैं तो मर गया मैं तो मर गया।" और तुरन्त ही घर की तरफ भागा।

उधर उस अक्लमन्द स्त्री ने भी वह आग इतनी जल्दी से तेज़ की कि जब तक राजकुमार शेरदिल नदी के इस पार पहुँचता तलवार बहुत जल्दी ही गर्म हो कर लाल हो गयी। जैसे ही वह नदी के दूसरी तरफ पहुँचा कि तलवार की मूठ का एक पेच निकल कर लुढ़क गया और वैसे ही राजकुमार का सिर भी लुढ़क गया।

तब वह अक्लमन्द स्त्री राजकुमारी के पास गयी और बोली — बेटी सोने के बाद तुम्हारे ये इतने सुन्दर बाल कितने उलझ गये हैं। चलो मैं राजकुमार के आने से पहले इनको धो कर सॅवार देती हूँ।"

सो वे दोनों संगमरमर की सीढ़ियॉ उतर कर नदी में गयीं। वहॉ जा कर वह अक्लमन्द स्त्री बोली — "आओ बेटी तुम मेरी नाव में बैठ जाओ। हम नदी के दूसरी तरफ चलते हैं उधर पानी ज़्यादा साफ है।"

जब राजकुमारी नाव में चढ़ने के लिये झुकी तो उसके लम्बे बालों ने उसके चेहरे को ढक लिया सो वह कुछ देख ही नहीं सकी कि वह बुढ़िया क्या कर रही थी। नीच बुढ़िया ने नाव खोल दी और वह नदी के नीचे की तरफ बह निकली।

यह देख कर राजकुमारी बहुत रोयी बहुत चिल्लायी पर सब बेकार। वह केवल यह कसम ही खा सकी कि "ओ बेशरम बुढ़िया। मुझे मालूम है कि तू मुझे किसी राजा के महल ले जा रही है पर इससे मुझे कोई मतलब नहीं कि वह कौन है। वह चाहे कोई भी हो पर मैं कसम खाती हूॅ कि मैं उसका मुॅह **12** साल तक नहीं देखूॅगी।"

आखिर वे उस शाही शहर में आ पहॅुचे। राजा को यह देख कर बहुत खुशी हुई कि उसकी भेजी हई स्त्री उस लड़की को ढूॅढ कर ले आयी है जिसकी खोज में उसने उसे भेजा था पर जब उसे राजकुमारी की कसम का पता चला तो उसने उसके लिये एक बहुत ही ऊॅची मीनार बनवा दी और उसे उसमें रख दिया।

अब वह वहॉ अकेली रहती थी। केवल लकड़ी काटने वालों और पानी भरने वालों के अलावा उस महल के ऑगन में कोई और

नहीं आ सकता था। बस वह वहाँ अकेली पड़ी पड़ी अपने शेरदिल को खोने के दुख में रोती रहती थी।

उधर जैसे ही राजकुमार का सिर लुढ़क गया तो धार रखने वाले को जो जौ का पौधा राजकुमार ने देखभाल करने के लिये दिया था वह दो टुकड़े हो कर गिर गया और उसका भुट्टा नीचे जा पड़ा।

यह देख कर वफादार धार रखने वाल बहुत दुखी हो गया। उसको तुरन्त ही यह भी समझ में आ गया कि राजकुमार के साथ कुछ बुरा हो गया है। उसने तुरन्त ही अपनी सेना इकट्ठी की और राजकुमार की सहायता के लिये चल दिया।

रास्ते में वह लोहार और बढ़ई राजाओं से भी मिला। वे भी इसी लिये जाने के लिये तैयार थे। जब यह पक्का हो गया कि तीनों जौ के पौधे अपने आप ही एक ही समय पर नीचे गिर पड़े थे तो उन दोस्तों को तो बहुत डर लगा।

उनको इस बात का बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ। वह तुरन्त ही राजकुमार की सहायता के लिये चल दिये।

जब काफी समय चलने के बाद उनको एक नदी के किनारे राजकुमार का सिर कटा शरीर मिल गया। उसके सारे शरीर पर जले के निशान थे और छाले पड़े हुए थे। उसका सिर उसके पास ही पड़ा हुआ था।

उनको भी राजकुमार की तलवार के जादुई गुणों का पता था सो उन्होंने उसको ढूँढना शुरू किया और जब उन्होंने देखा कि

उसकी अपनी तलवार की बजाय तो वहाँ कोई दूसरी तलवार रखी हुई थी तो उन सबका दिल डूब गया।

उन्होंने उसके शरीर को उठाया और उसको महल में ले गये। ढूँढने पर उनको उसकी तलवार मिल गयी। वह तलवार राख में दबी हुई थी और उस तलवार पर भी जले के निशान और छाले पड़े हुए थे। उसकी मूठ वहीं पास में पड़ी हुई थी और उसका एक पेच गायब था।

लोहार राजा बोला "मैं इसको अभी ठीक करता हूँ।" कह कर उसने आग जलायी एक पेच बनाया और उसको उसकी मूठ में लगा कर तलवार में जोड़ दिया।

धार रखने वाला राजा बोला "अब मेरी बारी है।" उसने अपने धार रखने वाले पहिये को तलवार रख कर इतनी ज़ोर से घुमाया कि उसके जले के निशान और छाले सब उस पर से जल्दी ही गायब हो गये। अब वह तलवार पहले जैसी तेज़ और चमकती हुई हो गयी।

और जैसे ही ऐसा हुआ तो राजकुमार के शरीर पर से भी जले के निशान और छाले गायब हो गये और राजकुमार पहले की तरह से सुन्दर और ज़िन्दा हो गया।

ज़िन्दा होते ही वह चिल्लाया "मेरी राजकुमारी कहाँ है।" तो तीनों ने वहाँ जो कुछ हुआ था वह उसको बताया।

बढ़ई राजा बोला "अब मेरी बारी है।" कह कर उसने राजकुमार की तलवार माँगी और कहा कि वह राजकुमारी को बहुत जल्दी ही ढूँढ कर लाता है।

सो वह हाथ में वह चमकीली तलवार ले कर राजकुमारी को ढूँढने निकल पड़ा। कुछ देर के बाद वह उसी शाही शहर में आ गया जिसमें राजकुमारी रहती थी।

उसने देखा कि शहर में एक बड़ी ऊँची सी नयी मीनार बनी है तो उसने पूछताछ की कि उसमें कौन रहता है। शहर के लोगों ने उसे बताया कि उसमें तो एक अजीब सी राजकुमारी रहती है जिसको इतनी सुरक्षित जेल में रखा गया है कि लकड़ी काटने वालों और पानी भरने वालों के अलावा उसके आँगन में कोई और जा ही नहीं सकता।

उसको विश्वास हो गया कि हो न हो यह वही राजकुमारी है जिसको वह ढूँढ रहा है। पर यह पक्का करने के लिये उसने एक लकड़हारे का वेश बनाया और उस मीनार के आँगन में जा कर आवाज लगायी "इस लकड़ी के गट्ठर के 15 सोने के टुकड़े। है कोई खरीदार इसका?"

राजकुमारी जो अपनी छत पर बैठी हुई हवा खा रही थी उसने अपनी एक दासी को बुला कर कहा कि वह उस लकड़हारे से जा कर यह पूछे कि वह ऐसी कौन सी कीमती लकड़ी बेच रहा था जिसकी कीमत इतनी सारी थी।

वेश बदले बढ़ई ने जवाब दिया “नहीं। यह कोई खास लकड़ी तो नहीं है, है तो केवल जलाने वाली लकड़ी ही परन्तु इसकी खासियत यह है कि यह एक चमकती तलवार से काटी गयी है।” कह उसने शेरदिल की तलवार दिखा दी।

यह सुन कर धड़कते दिल से राजकुमारी ने जाली में से बाहर देखा तो वह राजकुमार शेरदिल की तलवार पहचान गयी। उसने अपनी दासी को फिर यह पूछने के लिये बाहर भेजा कि क्या इस लकड़हारे के पास बेचने के लिये कुछ और भी है।

लकड़हारे ने जवाब दिया कि हॉ उसके पास एक उड़ने वाली पालकी है जिसे वह केवल शाम को जब राजकुमारी बागीचे में घूमने आयेगी तब उसी को ही दिखायेगा अगर उसकी इच्छा हुई तो।

राजकुमारी उसकी यह बात मान गयी और बढ़ई सारा दिन वह खूबसूरत पालकी बनाने में लगा रहा। जब शाम हुई और वह मीनार के बागीचे में जाने लगा तो वह उसको साथ लेता गया।

वहॉ जा कर वह राजकुमारी से बोला — “राजकुमारी जी आप इसमें बैठें और इसको उड़ा कर देखें कि यह कितनी अच्छी तरह से उड़ती है।”

पर राजा की बहिन जो उस समय वहॉ थी राजकुमारी से बोली कि उसको उसमें इस तरह अकेले नहीं जाना चाहिये सो वह भी उसी के साथ बैठ गयी और साथ में बैठ गयी वह नीच बुढ़िया भी जो उसको वहॉ ले कर आयी थी।

तब बढ़ई राजा भी उसमें कूद कर बैठ गया और वह पालकी आसमान में ऊँचे और ऊँचे उड़ने लगी एक चिड़िया की तरह। कुछ दूर जाने के बाद राजा की बहिन बोली "अब बस करो बहुत हो गया। अब हमें नीचे उतार दो।"

इस पर बढ़ई राजा ने उसको कमर से पकड़ा और जब वे नदी के ऊपर से उड़ रहे थे तो उसको पालकी से बाहर नीचे फेंक दिया। वह नदी में गिरते ही डूब गयी।

पर उसने उस बुढ़िया को फेंकने के लिये तब तक इन्तजार किया जब तक वह पालकी ऊँची मीनार के ऊपर से नहीं उड़ने लगी। वहाँ जा कर उसने उसको भी फेंक दिया तो वह पत्थरों से टकरा कर मर गयी।

उसके बाद पालकी सीधी जिन्न के जादुई महल की तरफ उड़ चली जहाँ राजकुमार शेरदिल बढ़ई राजा और अपनी राजकुमारी के आने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

दोनों को आया देख कर राजकुमार की खुशी की कोई हद नहीं थी। वे सब तब मिल कर राजकुमार के पिता के राज्य चल पड़े। लेकिन जब राजकुमार के पिता ने चारों को सेना समेत आते देखा तो उसको लगा कि उसके राज्य पर कोई चढ़ाई करने आ रहा है।

क्योंकि राजा जब से राजकुमार उसे छोड़ कर गया था बेचारा बहुत बूढ़ा हो गया था। सो वह उनसे मिलने गया और बोला

“आप लोग मेरा सारा खजाना ले लें पर मेरी जनता को शान्ति से छोड़ दें क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और अब लड़ नहीं सकता।

काश मेरा बेटा राजकुमार शेरदिल इस समय यहॉ होता तो बात कुछ दूसरी ही होती। पर वह हम लोगों को छोड़ कर कई साल पहले ही यहॉ से चला गया और तब से उसकी कोई खबर किसी ने भी नहीं सुनी।”

यह सुन कर राजकुमार शेरदिल अपने पिता के गले लग गया और उससे सारी कहानी सुनायी जो कुछ भी उसके साथ बीती थी। और साथ में वे उसके दोस्त धार रखने वाला लोहार और बढ़ई थे।

जब राजा ने उनके साथ अपनी सुनहरे बालों वाली बहू को देखा तो उसकी खुशी का तो कोई वारापार ही नहीं रहा।

सब लोग बहुत खुश हुए और फिर बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

# 6 मेमना[33]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत बहुत बहुत ही छोटा सा मेमना[34] था जो अपने छोटे छोटे पैरों पर कूदता फिरता था और इसमें बहुत आनन्द का अनुभव करता था।

एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी दादी से मिलने के लिये जाये सो वह कूदता फॉदता उससे मिलने के लिये चला। रास्ते में वह उन सब अच्छी चीज़ों के बारे में सोचता जा रहा था जो उसकी दादी उसे देने वाली थी।

कि रास्ते में उसे एक गीदड़ मिल गया जो किसी मुलायम मीठे खाने की तलाश में निकला हुआ था। उस छोटे से मेमने को देख कर उसके मुँह में पानी आ गया और वह उससे बोला — "ओ मेमने मैं तुझे खाऊँगा।"

पर मेमने ने एक झटके के साथ कहा — "मैं अपनी दादी के घर जा रहा हूँ जहाँ से मैं मोटा हो कर आऊँगा। तब तुम मुझे खा लेना।"

गीदड़ को लगा कि बात तो यह मेमना सच ही कह रहा है सो उसने मेमने को जाने दिया।

---

[33] The Lambikin (Tale No 6)

[34] Translated for the word "Lamb" – son of the goat

आगे चल कर उसको एक गिद्ध मिला। उसने भी उसका मुलायम मीठा मॉस देख कर उससे कहा — “ओ मेमने मैं तुझे खाऊॅगा।”

पर मेमने ने अपने सिर को एक झटका दे कर उससे भी यही कहा — “मैं अपनी दादी के घर जा रहा हूॅ जहॉ से मैं मोटा हो कर आऊॅगा। तब तुम मुझे खा लेना।”

गिद्ध ने भी सोचा कि यह बात तो मेमना ठीक ही कह रहा है सो उसने भी उसे जाने दिया।

आगे चल कर उसे फिर एक चीता मिला एक भेड़िया मिला एक कुत्ता और एक गरुड़ मिले। जब उन सबने इतना मुलायम मीठा खाना देखा तो उन सबने भी यही कहा — “ओ मेमने मैं तुम्हें खाऊॅगा।”

पर मेमने ने उन सभी से यही कहा — “मैं अपनी दादी के घर जा रहा हूॅ जहॉ से मैं मोटा हो कर आऊॅगा। तब तुम मुझे खा लेना।” और सबने उसे छोड़ दिया।

आखिर वह अपनी दादी के घर आ पहुॅचा और बहुत जल्दी से एक सॉस में ही सब कह गया — “मेरी प्यारी दादी। मैंने सबसे

बहुत मोटा होने का वायदा किया है और लोगों को अपना वायदा तो निभाना ही चाहिये सो मुझे तुम एक मक्का[35] के डिब्बे में बन्द कर दो।

[35] Translated for the word “Corn” – in India it is called Maize. See its picture above.

यह सुन कर उसकी दादी बोली — "तुम बहुत ही अच्छे लड़के हो।" और उसको मक्का के एक डिब्बे में रख दिया। वहॉ वह लालची मेमना सात दिन तक रहा।

वह वहॉ खाता रहा खाता रहा खाता रहा जब तक कि वह बिल्कुल भी हिलने डुलने के लायक नहीं रहा। जब उसकी दादी ने उसे देखा तो बोली — "हॉ अब तुम काफी मोटे हो गये हो। अब तुम घर वापस जा सकते हो।"

पर चालाक मेमना बोला कि वह ऐसा कभी नहीं करेगा क्योंकि रास्ते में उसे वे ही जानवर फिर मिलेंगे और उसे खा जायेंगे क्योंकि अब वह काफी मोटा और मुलायम हो गया है।

वह छोटा मेमना फिर बोला — "मैं तुम्हें बताता हूॅ कि इसके लिये तुम क्या करो। तुम मेरे लिये मेरे छोटे भाई की खाल का जो मर गया है एक छोटा सा ढोल[36] बना दो। मैं उसके अन्दर बैठ जाऊॅगा और अच्छे से लुढ़कता हुआ चला जाऊॅगा। क्योंकि मैं तो खुद ही ढोल की तरह कसा हुआ हूॅ।"

सो उसकी दादी ने उसके लिये उसके भाई जो मर गया था की खाल का एक छोटा सा ढोल बना दिया और उसके अन्दर ऊन रख दी। उसके अन्दर छोटा मेमना गर्मी में सिकुड़ कर बैठ गया और वह ढोल धीरे धीरे लुढ़क चला।

---

[36] Called Dhamkeeree in Punjabi – a small drum made by strtching leather across a widen mouthed earthen cup. Jaat make it of by a piece of hollow wood, 6" by 3" with its ends covered by leather.

जल्दी ही उसको रास्ते में गरुड़ मिला तो वह बोला — "ओ छोटे से ढोल क्या तूने छोटा सा मेमना देखा है?"

और छोटे से मेमने ने अपनी गर्म जगह से बैठे बैठे जवाब दिया —

वह तो जंगल में खो गया और तुम भी खो जाओ
चल मेरे छोटे से ढोल ढमका दू

गरुड़ ने एक लम्बी साँस खींची और बोला "ओह यह कितनी खराब बात है कि मैंने उसे जाने दिया।" इस बीच छोटा मेमना गाता हुआ आगे चल दिया "ढमका दू ढमका दू।"

हर जानवर और चिड़िया जो भी उसे रास्ते में मिला उसने उससे वही सवाल पूछा — "ओ छोटे से ढोल क्या तूने छोटा सा मेमना देखा है?"

और छोटे से मेमने ने अपनी गर्म जगह से बैठे बैठे उन सबको वही जवाब दिया —

वह तो जंगल में खो गया और तुम भी खो जाओ
चल मेरे छोटे से ढोल ढमका दू

सभी ने इस बात का अफसोस किया कि उन्होंने इतने मुलायम और मीठे खाने को जाने दिया। आखीर में गीदड़ लँगड़ाता हुआ आया उसके चेहरे पर भी अफसोस का भाव था। उसने भी पुकार कर पूछा — "ओ छोटे से ढोल क्या तूने छोटा सा मेमना देखा है?"

और छोटे से मेमने ने अपनी गर्म जगह से बैठे बैठे उसको भी वही जवाब दिया जो उसने दूसरे जानवरों और चिड़ियों को दिया था —

वह तो जंगल में खो गया और तुम भी खो जाओ
चल मेरे छोटे से ढोल ढमका ढू

पर वह उससे आगे नहीं जा सका क्योंकि गीदड़ ने उसकी आवाज तुरन्त ही पहचान ली थी। वह चिल्लाया — “क्या तुम उलटे हो गये हो? बस अब तुम इसके बाहर आ जाओ।”

कह कर उसने वह छोटा सा ढोल फाड़ डाला और उसमें से छोटे मेमने को निकाल कर खा गया।

# 7 बोपोलूची[37]

एक बार की बात है कि एक जगह गाँव की कुछ लड़कियाँ मिल कर गाँव के कुँए से पानी भरने गयीं। जब वे अपने अपने पानी के घड़े भर रही थीं तो साथ में अपनी अपनी शादी की बातें भी करती जा रही थीं।

एक बोली — "मेरे चाचा जल्दी ही मेरी शादी के लिये भेंट ले कर आने वाले हैं और वह मेरे लिये बहुत ही बढ़िया कपड़े लाने वाले हैं।"

दूसरी बोली — "मेरे चाचा ससुर आने वाले हैं और मुझे मालूम है कि वह मेरे लिये बहुत बढ़िया मिठाई ले कर आने वाले हैं जैसी कि तुम लोगों ने कभी सोची भी नहीं होगी।"

तीसरी बोली — "मेरे मामा तो बस अभी किसी भी वक्त आने वाले हैं और वह मेरे लिये बहुत सुन्दर गहना लाने वाले हैं।"

लेकिन बोपोलूची[38] जो उन सबमें सुन्दर लड़की थी कुछ दुखी सी पानी भर रही थी क्योंकि वह अनाथ थी। उसका कोई नहीं था जो उसकी शादी का इन्तजाम करता। पर वह चुप रहने वालों में से नहीं थी। वह बोली — "मेरे मामू भी आ रहे हैं जो मेरे लिये बढ़िया कपड़े स्वादिष्ट मिठाई और सुन्दर गहने ले कर आ रहे हैं।

---

[37] Bopoluchi (Tale No 7)

[38] Bopoluchi means Trickster.

इत्तफाक से एक फेरीवाला जो गाँव की स्त्रियों के लिये खुशबू और सब तरह का सिंगार का सामान गली गली बेचा करता था वहीं कुँए के पास ही बैठा था। वह उसकी सुन्दरता और इतना साफ बोलने से बहुत प्रभावित हुआ कि उसने उससे खुद शादी करने का विचार किया।

अगले दिन उसने एक अच्छे अमीर किसान का वेश रखा और बोपोलूची के घर चल दिया। उसने उसके लिये कई थालियों में बहुत सुन्दर कपड़े सजा रखे थे और मिठाइयाँ और गहना भी साथ में ले रखा था।

ऐसा इसलिये हो सका क्योंकि वह असल में सामान बेचने वाला नहीं था। वह तो एक डाकू था जो हमेशा से ही चोर था और अमीर था। बोपोलूची ने जब यह सब देखा तो उसको तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि यह तो सब वैसा ही था जैसा उसने पिछले दिन अपनी सहेलियों से कहा था।

डाकू ने आ कर उससे कहा कि वह उसके पिता का भाई था जो सालों पहले घर छोड़ कर दुनियाँ घूमने चला गया था और अब वह उसका रिश्ता अपने बेटे यानी उसके चाचाज़ाद भाई से जोड़ने के लिये आया है।

यह सुन कर बोपोलूची को उसकी बातों पर विश्वास हो गया। यह सुन कर तो वह बहुत खुश हो गयी। उसने अपनी थोड़ी सी चीज़ें बाँधीं और उस डाकू के साथ साथ खुशी खुशी चल दी।

पर जब वे सड़क पर जा रहे थे तो एक कौआ बोला — "बोपोलूची यह बड़ी बुरी बात है कि तुमने अपनी अक्ल का बिल्कुल ही इस्तेमाल नहीं किया। यह तुम्हारा कोई चाचा नहीं है जो तुम्हें सुख दे रहा है यह तो एक डाकू है जो तुम्हें धोखा दे रहा है।"

बोपोलूची बोली — "चाचा जी यह कौआ कैसी अजीब सी बात कर रहा है। यह क्या बोल रहा है।"

डाकू बोला — "उँह। देश में सारे कौए ऐसा ही बोलते हैं।"

वे लोग कुछ दूर और चले तो उनको एक मोर मिला जिसने जैसे ही बोपोलूची को देखा तो बोला — "बोपोलूची यह बड़ी बुरी बात है कि तुमने अपनी अक्ल का बिल्कुल ही इस्तेमाल नहीं किया। यह तुम्हारा कोई चाचा नहीं है जो तुम्हें सुख दे रहा है यह तो एक डाकू है जो तुम्हें धोखा दे रहा है।"

बोपोलूची फिर बोली — "चाचा जी यह मोर तो बहुत ही अजीब तरीके से चिल्ला रहा है। यह क्या कह रहा है।"

डाकू बोला — "उँह। इस देश में सारे मोर ऐसे ही बोलते हैं।"

वे लोग कुछ और आगे चले तो एक गीदड़ ने उनका रास्ता काटा। जब उसने बेचारी सुन्दर बोपोलूची को डाकू के साथ जाते देखा तो वह भी बोला — — "बोपोलूची यह बड़ी बुरी बात है कि तुमने अपनी अक्ल का बिल्कुल ही इस्तेमाल नहीं किया। यह

तुम्हारा कोई चाचा नहीं है जो तुम्हें सुख दे रहा है यह तो एक डाकू है जो तुम्हें धोखा दे रहा है।"

लड़की ने फिर कहा — "चाचा जी यह गीदड़ तो कुछ अजीब ही ढंग से चिल्ला रहा था। क्या कह रहा था यह।"

डाकू फिर बोला — "उँह। इस देश में सारे गीदड़ ऐसे ही बोलते हैं।"

सो बेचारी सुन्दर बोपोलूची उस डाकू के साथ साथ चलती रही जब तक वह उसके घर नहीं आ गयी। तब उसने उसे बताया कि वह कौन था और वह कैसे उससे खुद ही शादी करने वाला है।

यह सुन कर तो वह ज़ोर से रो पड़ी पर डाकू को उस पर दया नहीं आयी। उसने उसको तो अपनी बूढ़ी मॉ की देखरेख में रख दिया और खुद वह बाहर शादी की दावत का इन्तजाम करने चला गया।

बोपोलूची के बाल बहुत सुन्दर और लम्बे थे। वह उसकी एड़ी तक आते थे पर डाकू की बूढ़ी मॉ के सिर पर बाल बिल्कुल भी नहीं थे। बूढ़ी मॉ ने बोपोलूची को दुलहिन के कपड़े पहनाना शुरू किया तो उससे पूछा — "बेटी तुम्हें इतने सुन्दर बाल कैसे मिले।"

बोपोलूची बोली — "मेरी मॉ मेरे सिर को चावल कूटने की ओखली में कूटती थी। मूसल की हर मार पर मेरे सिर के बाल बढ़ जाते थे। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि बाल बढ़ाने का यह तरीका बिल्कुल अचूक है।"

बुढ़िया ने उत्सुकता से कहा — “शायद यह तरीका मेरे बाल भी बढ़ा दे।”

चालाक बोपोलोची बोली — “हॉ शायद इससे आपके बाल भी बढ़ जायें।”

सो उस बुढ़िया ने अपना सिर ओखली में रख दिया और बोपोलूची ने उसका सिर बहुत ज़ोर से कूट दिया जिससे वह मर गयी। फिर उसने उसके शरीर को लाल रंग की दुलहिन की पोशाक पहना कर उसको एक नीची सी कुर्सी पर बिठा दिया और उसके चेहरे पर परदा डाल दिया।

उसके आगे उसने चरखा रख दिया। ताकि जब डाकू घर आये तब उसको लगे कि वह उसकी दुलहिन बैठी हुई है।

और खुद डाकू की मॉ के कपड़े पहन कर अपनी लायी हुई चीज़ों की गठरी ले कर घर से बाहर निकल गयी।

जब वह घर जा रही थी तो रास्ते में उसको डाकू मिला जो एक

चुरायी हुई चक्की ले कर घर वापस लौट रहा था ताकि दावत के लिये उसमें मक्का पीसी जा सके। वह तो उसको देख कर बहुत डर गयी सो वह एक हैज के पीछे छिप गयी ताकि वह उसे देख न सके। और इस तरह बोपोलूची सुरक्षित घर पहुँच गयी।

इस बीच डाकू अपने घर आया तो उसने एक शक्ल दुलहिन की पोशाक पहने चरखा चलाती हुई एक नीची कुर्सी पर बैठी देखी।

डाकू ने सोचा कि वह बोपोलूची होगी सो उसने उसको पुकार कर कहा कि वह उसकी चक्की रखवाने में सहायता करे।

पर उस शक्ल ने तो कोई जवाब ही नहीं दिया। उसने उसे फिर पुकारा पर फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला तो वह गुस्से में भर गया और उसने चक्की उसके सिर पर दे मारी। वह शक्ल लुढ़क गयी और लो देखो तो वह तो बोपोलूची बिल्कुल भी नहीं थी। वह तो उसकी बूढ़ी माँ थी।

यह देख कर तो डाकू छाती पीट पीट कर रोने लगा। उसको लगा कि उसी ने अपनी माँ को मार दिया है। पर बाद में जब उसे यह पता चला कि बोपोलूची भाग गयी है तो वह गुस्से से पागल हो गया। उसने फैसला कर लिया कि चाहे किसी भी तरह हो वह उसको वापस ला कर ही रहेगा।

अब बोपोलूची को यह विश्वास हो गया था कि डाकू उसको लेने के लिये जरूर आयेगा सो हर रात वह अपने बिस्तर और घर को अकेला छोड़ कर अपनी किसी नयी दोस्त के घर सोने लगी। पर एक महीने बाद उसकी सब दोस्त खत्म हो चुकी थीं। इस समय में उसने अपनी भरपूर कोशिश की कि वह किसी एक दोस्त के घर में दोबारा न सोये।

सो उसने अपनी हिम्मत बटोरी और अब अपने ही घर में सोने का निश्चय किया चाहे कुछ भी हो। वह अपने साथ हॅसिया ले कर सोती थी।

एक दिन आधी रात को उसके घर में चार आदमी आये और उसकी चारपायी की चारों टॉगों को पकड़ कर उसको उठा कर ले गये। डाकू ने खास कर के चारपायी की वह वाली टॉग पकड़ी हुई थी जो उसके सिर के नीचे थी।

हालॉकि बोपोलूची पूरी तरह जागी हुई थी पर फिर भी वह सोने का बहाना करती रही। जब वे एक ऐसी जगह आये जहॉ कोई नहीं था और चोरों को कोई देख नहीं रहा था तो उसने अपना हॅसिया निकाला और पलक झपकते ही दो चोरों का गला काट दिया जो उसके पैरों की तरफ थे।

ऐसा ही उसने उस चोर के साथ भी किया जो उसके सिर की तरफ था पर इससे पहले कि वह डाकू को मारती वह डाकू डर के मारे बच कर भाग गया और एक जंगली बिल्ली की तरह पास के एक पेड़ पर चढ़ गया।

हाथ में हॅसिया लिये हुए बोपोलूची उससे बोली — "अरे नीचे आ और आ कर लड़।"

पर डाकू नीचे नहीं आया सो बोपोलूची से जितनी सूखी लकड़ियॉ इकट्ठी हो सकती थीं उसने इतनी लकड़ियॉ इकट्ठी की और

उनको एक ढेर के रूप में पेड़ के तने के चारों तरफ रख दिया और उनमें आग लगा दी।

अब यह तो साफ था कि पेड़ ने भी आग पकड़ ली। सारे में धुँआ फैल गया। डाकू का दम घुटने लगा। उसने पेड़ से नीचे कूदने की कोशिश की तो वह मर गया।

उसके बाद बोपोलूची उसके घर गयी और उसके घर से सोना चाँदी और जा कुछ भी कीमती चीज़ें उसके घर में थीं वह सब वहाँ से उठा कर अपने गाँव आ गयी। अब वह इतनी अमीर थी कि वह अब किसी से भी शादी कर सकती थी।

# 8 राजकुमारी बैंगन[39]

एक बार की बात है कि एक जगह एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह ब्राह्मण इतना गरीब था कि कभी कभी तो उसको केवल जंगली पत्ते और जड़ें खा कर ही गुजारा करना पड़ता था।

एक दिन ब्राह्मण जंगल से ऐसे ही पत्ते और जड़ें इकट्ठा करने गया तो उसको वहॉ एक बैंगन का पौधा मिल गया। उसने सोचा कि यह उनके काम आ जायेगा सो उसने उसको वहॉ से उखाड़ लिया घर ले गया और अपने घर के दरवाजे के सामने लगा दिया।

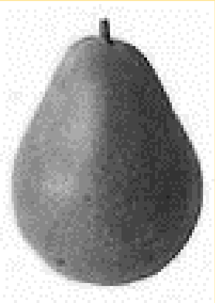

वह उसको रोज पानी देता उसकी देखभाल करता। पौधा धीरे धीरे बढ़ने लगा और एक दिन उस पर एक नाशपाती[40] जितना बड़ा फल लगा। वह जामुनी और सफेद रंग का था और खूब चमकदार था।

वह इतना सुन्दर था कि वे उसको तोड़ने में हिचक रहे थे। सो वह उसी पौधे पर ही लटका रहा, दिन ब दिन।

एक दिन उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था तो ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा — "अब हमको यह बैंगन खा लेना चाहिये सो तुम जाओ और उसे तोड़ लाओ और खाने में बना लो।"

[39] Princess Aubergine (Tale No 8)

[40] Translated for the word "Pear". See its picture above.

ब्राह्मण की पत्नी ने एक चाकू उठाया और पेड़ पर से वह जामुनी और सफेद फल काट लिया। जैसे ही उसने उसे काटा तो उसे लगा कि उसने किसी की धीमी सी सिसकी की आवाज सुनी पर वह उसको अनसुना कर गयी और उस बैंगन को घर में ला कर छीलने लगी।

जब वह उसे छील रही थी उसने फिर से किसी की धीमी सी मगर साफ आवाज सुनी "ज़रा धीरे से मेहरबानी कर के ज़रा धीरे से। ज़रा धीरे से छीलो नहीं तो यह चाकू मेरे अन्दर घुस जायेगा।"

वह भली स्त्री यह सुन कर बहुत परेशान हुई फिर भी यह सोचते हुए उसने उसे बहुत ही धीरे से छीला कि लगता है कि यह बैंगन जादुई बैंगन है। जब वह उसे काफी छील चुकी तो सोचो ज़रा कि क्या हुआ होगा।

उसमें से जामुनी और सफेद रंग की साटन की पोशाक पहने एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी। वह गरीब ब्राह्मण और उसकी पत्नी तो यह देख कर दंग रह गये फिर भी वे उसको देख कर बहुत खुश थे क्योंकि उनके अपना कोई बच्चा नहीं था।

उन्होंने उस छोटी सी लड़की को भगवान की देन समझा और उसको अपने पास रखने का सोचा। उन्होंने उसकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की। वे हमेशा उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरते रहते थे जिसने उसको बहुत बिगाड़ दिया था।

वे हमेशा उसको राजकुमारी बैंगन[41] के नाम से पुकारते थे। वे लोग यह सोचते थे कि चाहे असल में वह राजकुमारी न सही पर फिर भी वह इतनी कोमल और नाजुक थी कि वह किसी भी राजा की बेटी होने के लायक थी।

इस ब्राह्मण के घर से कुछ ही दूर वहाँ का राजा रहता था जिसके एक पत्नी थी और सात बहुत ताकतवर और सुन्दर बेटे थे।

एक बार राजा के महल से एक दासी उस ब्राह्मण के घर के पास से गुजरी और उससे आग माँगने गयी जहाँ उसने सुन्दर बैंगन को देखा तो तुरन्त ही वह राजमहल दौड़ी गयी और जा कर रानी को बताया कि किस तरह से उनके महल के पास के एक घर में एक सुन्दर राजकुमारी रहती थी।

वह इतनी सुन्दर और कोमल थी कि अगर राजा साहब उसको एक बार देख लें तो वह न केवल अपनी रानी को भूल जायेंगे बल्कि दुनियाँ की हर स्त्री को भूल जायेंगे।

रानी को यह सुन कर उससे बहुत जलन हुई। वह यह सोच कर ही परेशान थी कि कोई उससे ज़्यादा सुन्दर भी था। आखिर उसने उस बैंगन को मारने का प्लान बना ही लिया।

---

[41] The vernacular name for the story is "Baingan Baadshaahzaadi". The Baingan, Baigan, Begun, or Bhaantaa is the name of egg-plant or aubergine. Europeans in India know it by the name of "Brinjal". It is a very common and popular vegetable in rainy and in winter seasons in India.

अगर वह उसको किसी तरह से महल में बुला सकती... तो बाकी की बात तो वह बाद में देख लेगी।

असल में वह एक जादूगरनी[42] थी और बहुत तरह के जादू जानती थी। सो उसने राजकुमारी बैंगन के पास एक सन्देश भेजा कि उसकी सुन्दरता के चर्चे महल तक पहुँच गये हैं और रानी खुद अपनी ऑखों से उसको देखना चाहती है कि यह बात सच है कि नहीं।

अब राजकुमारी बैंगन को तो अपनी सुन्दरता का पता था सो वह रानी के जाल में फँस गयी। वह महल गयी। वहाँ रानी ने यह दिखावा किया जैसे उसने ऐसी सुन्दरता देख कर बहुत आश्चर्य हुआ हो और उससे झूठा प्यार जताते हुए बोली "तुम तो राजमहल में रहने के लिये पैदा हुई हो। अब तुम मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जाओगी। अबसे तुम मेरी बहिन हुई।"

राजकुमारी बैंगन यह सुन कर गर्व से फूली नहीं समायी। उसे किसी धोखे का भी शक नहीं हुआ और वह वहीं महल में ही रहने लगी। वहाँ की रीति रिवाज के अनुसार उसने रानी से उसका दुपट्टा भी बदल लिया और एक ही प्याले से दूध भी पिया।[43]

जबसे बैंगन महल में आयी थी तभी से रानी उसके ऊपर कड़ी नजर रखे थी वह जान गयी थी कि वह कोई मामूली तरह की

---

[42] Translated for the word "Sorcerer"

[43] They are the signs of friendship in Punjabis

आदमी नहीं थी बल्कि एक परी थी इसलिये वह उसके ऊपर जादू डालने में काफी होशियारी बर्त रही थी।

इसलिये उसने उसके ऊपर सोते में बहुत असरदार जादू डाला —

ओ सुन्दर बैंगन मुझे सच सच बताओ तुम्हारी आत्मा किस चीज़ में बसती है?

राजकुमारी ने जवाब दिया "तुम्हारे सबसे बड़े बेटे में। तुम उसको मार दो तो मैं भी मर जाऊँगी।"

सो वह नीच रानी अगली सुबह वहाँ गयी जहाँ उसका सबसे बड़ा बेटा सोया हुआ था और जा कर अपने हाथों से उसे मार डाला।

अपने बेटे को अपने ही हाथों से मार कर रानी ने अपनी एक दासी को राजकुमारी के कमरे में यह देखने के लिये भेजा कि वह मर गयी या नहीं। पर दासी ने आ कर बताया कि राजकुमारी तो अभी भी ज़िन्दा और ठीक थी।

गुस्से से रानी की आँखों में आँसू आ गये। उसको लगा क्योंकि उसका जादू राजकुमारी को मारने के लिये काफी ज़ोरदार नहीं था इसलिये वह तो मरी नहीं और उसने अपने बेटे को बेकार में ही मार दिया।

खैर अगली रात उसने राजकुमारी पर पहली रात से ज़्यादा असरदार जादू डाला और उससे पूछा —

ओ सुन्दर बैंगन मुझे सच सच बताओ तुम्हारी आत्मा किस चीज़ में बसती है?

सोती हुई राजकुमारी बोली "तुम्हारे दूसरे बेटे में। तुम उसको मार दो तो मैं भी मर जाऊँगी।"

यह सुन कर रानी ने अपने दूसरे बेटे को भी अपने हाथ से ही मार डाला पर जब उसने अपनी एक दासी को यह देखने के लिये भेजा कि राजकुमारी मरी कि नहीं और जब उसने आ कर यह बताया कि वह तो ज़िन्दा है और ठीक है तो वह जादूगरनी रानी गुस्से के मारे रो पड़ी क्योंकि उसका अपने दूसरे बेटे को मारना भी बेकार गया। राजकुमारी तो अभी भी ज़िन्दा थी।

उसने सोचा कि इस बार वह उस पर पहली और दूसरी बार से भी ज़्यादा असरदार जादू डालेगी सो उसने तीसरी रात को फिर से उसके ऊपर जादू डाल कर राजकुमारी से फिर पूछा —

ओ सुन्दर बैंगन मुझे सच सच बताओ तुम्हारी आत्मा किस चीज़ में बसती है?

राजकुमारी ने फिर वही जवाब दिया "तुम्हारे तीसरे बेटे में। तुम उसको मार दो तो मैं भी मर जाऊँगी।"

मगर फिर वही हुआ। रानी ने अपने हाथों से अपने तीसरे बेटे को भी मार दिया पर राजकुमारी तो मरी नहीं वह तो फिर भी ज़िन्दा और ठीक रही।

इस तरह से रोज वह राजकुमारी के ऊपर ज़्यादा असरदार जादू डालती रही और अपने बेटों को मारती रही जब तक कि उसने अपने सातों बेटे नहीं मार दिये। उनकी बेरहम माँ अपने बेटों को बेकार मारने पर रोती रही।

अगली रात रानी ने अपने सारे जादुओं का ज़ोर लगा दिया और राजकुमारी के ऊपर इतना असरदार जादू ऊपर डाला कि वह उसे रोक नहीं सकी और जब नीच रानी ने उससे पूछा —

ओ सुन्दर बैंगन मुझे सच सच बताओ तुम्हारी आत्मा किस चीज़ में बसती है?

तो इस बार तो राजकुमारी को बोलना ही पड़ा — "यहाँ से बहुत दूर एक नदी में एक लाल और हरे रंग की मछली रहती है। उस मछली के अन्दर एक भौंरा है। भौंरे के अन्दर एक बहुत छोटा सा बक्सा है और उस बक्से के अन्दर एक बहुत ही सुन्दर नौलखा हार[44] है। तुम उसे पहन लो तो मैं मर जाऊँगी।"

यह जवाब सुन कर रानी सन्तुष्ट हो गयी और उस लाल और हरे रंग की मछली की खोज में लग गयी। शाम को जब राजा उससे मिलने आया तो उसने सिसकियाँ ले ले कर रोना शुरू कर दिया।

---

[44] The introduction of "Nau-lakha Haar" or nine lakh rupees necklace is a fovorite incident in Indian folktales. Nau-lakha means worth nine lakh rupees or 900,000 Rupees. Frequently magic powers are ascribed to this necklace but the term "Nau-lakha" has come also to be often used conventionally for "very valuable", and so is applied to gardens, palaces etc. Probably all rich Kings had a hankering to really possess such a necklace and the last Maharaja of Patiala (Punjab) around 1880, bought a real one of huge diamonds, including the Sansy, for Rupees 900,000. It is on show always at the palace in the fort at Patiala.

राजा ने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी तो उसने बताया कि उसका मन नौलखा हार पहनने को करता है।

राजा ने पूछा पर वैसा हार मिलेगा कहाँ और रानी ने राजकुमारी बैंगन के शब्द उसको दोहरा दिये — "यहाँ से बहुत दूर एक नदी में एक लाल और हरे रंग की मछली रहती है। उस मछली के अन्दर एक भौंरा है। भौंरे के अन्दर एक बहुत छोटा सा बक्सा है और उस बक्से के अन्दर एक बहुत ही सुन्दर नौलखा हार है।"

राजा एक बहुत ही दयालु आदमी था। उसको अपने इतने सुन्दर सातों बेटों के मरने का बहुत दुख था जिसके लिये रानी ने यह बहाना बना दिया था कि वे किसी छूत की बीमारी लगने से मर गये थे।

उसको लगा कि उसकी पत्नी भी इस दुख से बहुत दुखी होगी तो उसको तसल्ली देने की इच्छा से उसने अपने राज्य के हर मछियारे के लिये यह हुक्म निकलवा दिया कि वे सारे दिन मछलियाँ पकड़ें जब तक कि उनमें से किसी को लाल और हरी मछली न मिल जाये।

यह सुन कर सारे मछियारे मछली पकड़ने में लग गये। जल्दी ही रानी की इच्छा पूरी हो गयी। लाल और हरे रंग की मछली पकड़ ली गयी। नीच रानी ने उसको चीरा तो उसके अन्दर उसको एक भौंरा मिला और भौंरे के अन्दर उसको एक बक्सा मिला जिसके

अन्दर उसे एक आश्चर्यजनक नौलखा हार मिला जिसे रानी ने निकाल कर तुरन्त ही पहन लिया।

अब जैसे ही राजकुमारी ने रानी को अपनी ज़िन्दगी का भेद बताया तो उसको लगा कि अब तो वह मर ही जायेगी। वह दुखी हो कर अपने माता पिता यानी ब्राह्मण के घर लौट आयी।

उसने उनको अपनी आने वाली मौत के बारे में बताया और उनसे प्रार्थना की कि वे उसके शरीर को न तो जलायें और न गाड़ें।

उसने कहा — "मैं आपसे बस यही चाहती हूँ कि आप मेरे साथ ऐसा करें कि मेरे शरीर को मेरे सबसे अच्छे कपड़े पहना दें और मेरे बिस्तर पर मुझे लिटा दें। मेरे ऊपर फूल डाल दें और मुझे सबसे ज़्यादा जंगली जंगल में ले जायें।

वहाँ ले जा कर मेरा पलंग जमीन पर रख दें और उसके चारों तरफ मिट्टी की एक ऊँची दीवार बनवा दें ताकि उस दीवार के ऊपर से झाँक कर कोई मुझे देख न सके।"

उसके माता पिता बेचारे यह सब सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़े और उससे वायदा किया कि वे वैसा ही करेंगे जैसा उसने उनसे करने के लिये कहा है।

सो जैसे ही उस नीच रानी ने वह नौलखा हार पहना तो राजकुमारी मर गयी। उसके माता पिता ने उसको उसके सबसे अच्छे कपड़े पहनाये उसके बिस्तर पर सुलाया उसके ऊपर फूल डाले और उसको बीच जंगल में ले गये। पलंग को जमीन पर रखा और उसके

चारों तरफ मिट्टी की एक इतनी ऊँची दीवार बना दी ताकि उसके अन्दर कोई झॉक कर न देख सके।

जब रानी ने अपनी दासी को ब्राह्मण के घर यह देखने के लिये भेजा कि राजकुमारी बैंगन वाकई में मर गयी या नहीं तो दासी ने आ कर जवाब दिया कि वह वाकई मर गयी है पर न तो उसको जलाया गया है और न ही उसको गाड़ा गया है। वह उत्तर की तरफ जंगल में पड़ी है फूलों से ढकी हुई उतनी ही सुन्दर जैसी पहले थी।

रानी इस जवाब से सन्तुष्ट तो नहीं थी पर क्योंकि वह कुछ और नहीं कर सकती थी इसलिये उसको इसी बात से तसल्ली रखनी पड़ी।

इधर राजा अपने सातों जवान बेटे खोने पर बहुत दुखी था। अपना दुख भुलाने के लिये वह रोज शिकार खेलने जाता था। रानी को डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि घूमते घूमते राजा राजकुमारी बैंगन के बारे में जान जाये सो उसने राजा से वायदा लिया कि वह उत्तर की तरफ कभी शिकार खेलने नहीं जायेगा।

उसने कहा कि उसको यकीन था कि अगर वह उधर की तरफ गया तो जरूर ही उसका कुछ बुरा होगा सो वह उधर न जाये।

पर एक दिन वह शिकार खेलने के लिये पूर्व की तरफ गया पश्चिम की तरफ गया दक्षिण की तरफ गया पर किसी भी तरफ उसे कोई शिकार ही नहीं मिला तो वह रानी से किया हुआ अपना वायदा

तो भूल गया और शिकार खेलने के लिये उत्तर की तरफ चल दिया।

घूमते घूमते वह रास्ता भूल गया और वह वहीं उसी जगह आ निकला जहाँ वह मिट्टी की दीवार बनी हुई थी। अजीब बात थी कि उस दीवार में कोई दरवाजा भी नहीं था। राजा को यह देखने की बड़ी उत्सुकता हुई कि उस दीवार के पीछे क्या है।

वह उस दीवार पर चढ़ गया और उसे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उस दीवार के घेरे में एक बहुत सुन्दर लड़की फूल बिखरे बिस्तर पर सोयी हुई है। ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी अभी सोयी हो। उसके दिमाग में यह बात तो आयी ही नहीं कि वह मर गयी है।

वह उसके पास घुटनों के बल बैठ गया और सारा दिन प्रार्थना करता रहा कि वह अपनी आँखें खोल दे पर उसने अपनी आँखें नहीं खोलीं। लाचार हो कर रात को वह अपने घर लौट आया।

पर सुबह होते ही फिर उसने अपना तीर कमान उठाया अपने सारे नौकरों को यह कह कर वापस जाने के लिये कहा कि आज वह अकेला ही शिकार पर जायेगा और अपनी सुन्दर राजकुमारी की तरफ उड़ चला।

इस तरह वह रोज ब रोज राजकुमारी के पास बैठ कर अपना दिन गुजारने लगा। उसके उठने की प्रार्थना करता रहा पर वह तो हिल कर भी नहीं दी।

इस तरह से करीब करीब एक साल गुजर गया कि एक दिन उसको उस राजकुमारी के पास एक बहुत सुन्दर लड़का लेटा हुआ मिला। यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ पर फिर भी वह रोज दिन में उसको अपनी बॉहों में ले कर उसे झुलाता पालता उसकी देखभाल करता। रात को उसको वह उसको उसकी मरी हुई मॉ के पास लिटा कर चला आता।

कुछ समय बाद बच्चे ने बोलना सीख लिया और जब राजा ने उससे पूछा कि क्या उसकी मॉ मर गयी है तो उसने कहा “नहीं रात को वह जाग जाती है और मेरी उसी तरह देखभाल करती है जैसे आप दिन में करते हैं।”

यह सुन कर राजा ने उससे कहा कि वह अपनी मॉ से यह पूछे कि वह कैसे मरी। अगले दिन बच्चे ने कहा “मेरी मॉ कहती है कि नौलखा हार जो आपकी पत्नी ने पहन रखा है जब रात को वह उसे उतार देती है तो मेरी मॉ ज़िन्दा हो जाती है और सुबह को जब वह पहन लेती है तब मेरी मॉ मर जाती है।”

यह बात राजा को एक पहेली सी लगी क्योंकि राजा यह सोच ही नहीं सका कि उसकी रानी का इस राजकुमारी से क्या रिश्ता हो सकता है। सो उसने बच्चे से फिर कहा कि वह अपनी मॉ से पूछ कर उसे बताये कि उसका पिता कौन है।

अगली सुबह बच्चे ने बताया “मॉ ने कहा है कि मैं आपका बेटा हूॅ जिसको राजा को उसके सात जवान बेटों के मर जाने के बाद

तसल्ली देने के लिये भेजा गया है। उस सातों बेटों को आपकी रानी ने मेरी माँ राजकुमारी बैंगन से जलन की वजह से मारा है।"

जब राजा को अपने सातों बेटों का ख्याल आया तो यह सुन कर तो राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने बच्चे से फिर कहा कि वह अपनी माँ से यह पूछ कर बताये कि रानी को किस तरह की सजा मिलनी चाहिये और वह नौलखा हार उससे किस तरह लिया जा सकता है।

अगली सुबह बच्चे ने जवाब दिया "माँ कहती है कि केवल मैं ही उस हार को उससे ले सकता हूँ। सो आज रात जब आप अपने महल जायें तो आप मुझे अपने साथ लेते जायें।"

सो जब राजा रात को अपने घर जाने के लिये तैयार हुआ तो उस बच्चे को भी अपने साथ ले गया। वहाँ जा कर उसने अपने सब वजीरों और दरबारियों से यह कह दिया कि अब से वही बच्चा उसका वारिस है।

जब जादूगरनी रानी ने यह सुना तो उसको अपने बच्चों की याद आ गयी और वह तो जलन से बिल्कुल पागल ही हो गयी। उसने उसको जहर दे कर मारने का प्लान बनाया।

इसलिये उसने कुछ बहुत ही लुभावनी मिठाई बनायी और बच्चे को सहलाते हुए उसे मुट्ठी भर कर खाने के लिये दी और उससे कहा कि खाओ। पर बच्चे ने उसे खाने से मना कर दिया और कहा कि

जब तक वह अपने गले में पड़ा चमकता हार उसको खेलने के लिये नहीं देगी वह यह मिठाई नहीं खायेगा।

उसने पक्का इरादा कर रखा था कि उसे तो उस बच्चे को जहर देना ही है तो उसको मिठाई खिलाने का और कोई दूसरा रास्ता न देख कर उसने अपने गले से नौलखा हार निकाल दिया और बच्चे को दे दिया।

जैसे ही बच्चे के हाथ में वह हार आया तो वह तो वहाँ से इतनी तेज़ भाग निकला कि कोई भी चौकीदार उसको पकड़ नहीं सका। वह रास्ते में साँस लेने के लिये भी नहीं रुका जब तक वह उस जगह नहीं पहुँच गया जहाँ उसकी माँ राजकुमारी बैंगन लेटी हुई थी।

उसने तुरन्त ही वह हार उसके गले में डाल दिया। गले में हार के पड़ते ही राजकुमारी ज़िन्दा हो गयी उतनी ही प्यारी जितनी वह हमेशा से थी।

तब राजा उसके पास आया और उससे अपनी रानी बन कर महल चलने की प्रार्थना की पर वह बोली — "मैं आपकी पत्नी तब तक नहीं बन सकती जब तक आपकी जादूगरनी पत्नी ज़िन्दा है क्योंकि वह फिर मुझे और मेरे बच्चे को मार देगी जैसे उसने आपके सातों बेटों को मारा है।

अगर आप अपने महल की देहरी पर एक गड्ढा खोदें उसको साँप बिच्छुओं से भर दें नीच रानी को उस गड्ढे में फेंक दें और

उसमें उसे ज़िन्दा ही गाड़ दें तब में उसकी कब्र के ऊपर चल कर आपके महल में जा कर आपकी रानी बन सकती हूँ।"

राजा ने ऐसा ही किया। उसने अपने महल की देहरी पर एक गड्ढा खुदवाया उसको और सॉप बिच्छुओं से भरवाया। फिर वह अपनी जादूगरनी रानी के पास गया और कहा कि वह उसको एक खास चीज़ दिखाना चाहता है।

पर रानी भी कम होशियार नहीं थी। उसको उसमें राजा की कोई चाल लगी सो उसने राजा के साथ जाने से मना कर दिया। तब राजा के चौकीदारों ने उसको पकड़ कर रस्सी से बॉध दिया और ज़िन्दा ही सॉप बिच्छुओं के बीच फेंक दिया।

राजकुमारी बैंगन अपने बेटे के साथ उसकी कब्र पर चल कर राजा के महल में घुसी और उसकी रानी बन गयी।

# 9 बहादुर विकी बहादुर जुलाहा [45]

एक बार की बात है कि एक जगह एक छोटा सा जुलाहा रहता था जिसका नाम था विक्टर प्रिंस। क्योंकि उसका सिर बड़ा था लम्बी पतली टॉगें थी पर कुल मिला कर वह छोटा सा और कमजोर सा था तो लोग उसको छोटा विकी कह कर बुलाया करते थे।

उसके छोटे साइज़, पतली टॉगों और उसकी अजीब सी शक्ल होने के बावजूद विकी बहुत ही शानदार लगता था। उसको अपनी बहादुरी की बातें करने का बहुत शौक था। वह घंटों तक अपनी बहादुरी की और वीरता की उन बातों की बात करता रहता था जिनको अगर उसको मौका दिया जाता तो वह कर सकता था।

पर बस वह सब उसकी किस्मत में ही नहीं था इसलिये वह बस छोटा विकी जुलाहा ही बना रहा। सारे लोग उसकी शान बघारने की हॅसी उड़ाया करते थे।

एक दिन विकी अपनी खड्डी[46] पर बैठा हुआ कपड़ा बुन रहा था कि एक मच्छर उसके बॉये हाथ पर उसी समय आ कर बैठ गया जब कि वह अपने

---

[45] Valiant Vicky, The Brave Weaver (Tale No 9)
Valiant Vicky, the Brave Weaver – In the original title it is "Fatteh Khan, the Valiant Weaver". "Victor Prince" is the very fair translation of the name Fatteh Khan. The original says his nickname was "Fattu" which would answer exactly to Vicky for Victor. Fattu is a familiar for the full name Fatteh Khan.

[46] Translated for the word "Loom" on which weavers weave cloth. See its picture above.

दॉये हाथ से शटल चलाने जा रहा था।

और इत्तफाक से जैसे ही उसने धागे के अन्दर से वह शटल चलायी और शटल उसके बॉये हाथ में उसी जगह आ गयी जहॅा वह मच्छर बैठा हुआ था। उसने उसे कुचल दिया।

यह देख कर विकी तो बहुत ही खुश हो गया। वह चिल्लाया — "यह तो वैसा ही हो गया जैसा कि मैं कहा करता था कि अगर मुझे मौका दिया गया तो मैं अपनी बहादुरी दिखा सकता हूॅ। अब मैं यह जानना चाहता हूॅ कि कितने लोग ऐसा कर सकते हैं।

मच्छर मारना तो आसान है और शटल चलाना भी आसान है पर दोनों काम एक साथ करना तो बहुत ही मुश्किल काम है। एक बड़े मोटे आदमी को दूर से मारना तो बहुत आसान है क्योंकि उसको देखना आसान है उसके ऊपर निशाना लगाना आसान है।

बन्दूक और तीर कमान बनाना भी आसान है पर एक मच्छर को कपड़ा बुनने की शटल से मारने की तो बात ही अलग है। इसके लिये एक आदमी[47] की जरूरत होती है।

जितना वह इस बारे में सोचता जाता था उतना ही ज़्यादा वह अपनी होशियारी और बहादुरी के बारे में ऊॅचा सोचता जाता था। अन्त में वह इस फैसले पर पहुॅच कि अबसे वह विकी नहीं कहलायेगा। उसने अपनी बहादुरी दिखायी है तो वह अब विक्टर कहलायेगा – विक्टर प्रिंस।

---

[47] Translated for the word "Man", not the human being

बल्कि उन सबको उसे राजकुमार विक्टर कह कर बुलाना चाहिये। यही नाम उसके गुणों के लिये ठीक था।

पर जब उसने अपनी यह बात अपने पड़ोसियों से कही तो वे तो बहुत ज़ोर से हॅस पड़े हालॉकि कुछ ने उसे राजकुमार विक्टर कह कर पुकारा भी पर वह उन्होंने उससे ऐसे हॅसते हुए मजाक में कहा कि उस छोटे आदमी को बहुत गुस्सा आ गया और वह गुस्से में भर कर अपने घर चला गया।

यहॉ भी उसका कोई बहुत बढ़िया स्वागत नहीं हुआ क्योंकि उसकी पत्नी ने जो एक बहुत ही सुन्दर नौजवान स्त्री थी और जो अपने इस छोटे से अजीब से पति के सोचने के ढंग से बहुत ज़्यादा तंग आ चुकी थी उसको अपनी बात कहने से रोकने के लिये बहुत मना किया। और साथ में यह भी कहा कि वह अपना बेवकूफ न बनवाये।

यह सुन कर उसने अपने घमंड में उसके बाल पकड़ कर उसे बहुत ही बेरहमी से पीटा और तय किया कि वह अब इस शहर में नहीं रहेगा जहॉ उसके गुणों को कोई पहचानता ही नहीं है। उसने अपनी पत्नी से उसकी यात्रा के लिये खाना बनाने के लिये कहा और अपने सामान की गठरी बॉध ली।

उसने अपने आपसे कहा "अब मैं दुनियॉ घूमूँगा। जो आदमी एक शटल से एक मच्छर को मार सकता है उसको किसी के पीछे

छिप कर नहीं रहना चाहिये। उसने रोटी एक रूमाल में बाँधीं शटल ली और अपनी गठरी उठा कर वहाँ से चल दिया।

चलते चलते वह एक ऐसे शहर में आ गया जिसमें एक हाथी रोज उस शहर के लोगों को खाने के लिये आया करता था। बहुत बड़े बड़े योद्धा उसे मारने के लिये गये पर कोई वापस भी नहीं लौट सका।

यह सुन कर बहादुर छोटे जुलाहे ने सोचा "यहाँ मेरा मौका है। जिस आदमी ने एक शटल से एक मच्छर मारा हो उसके लिये इतना बड़ा हाथी मारना तो क्या ही बड़ा काम होगा।"

यह सोच कर वह वहाँ के राजा के पास गया और उससे कहा कि वह अकेला ही हाथी को पकड़ कर मार देगा। पहले तो राजा को लगा कि यह छोटा आदमी कुछ पागल सा लगता है पर जब वह अपनी बात पर अड़ा रहा तो उसने कहा कि वह उस खतरे से खेलने के लिये अपनी किस्मत आजमाने के लिये आजाद है।

साथ में उसने उससे यह भी कहा कि बहुत से लोग पहले ही कोशिश कर चुके हैं पर कोई उसको मार नहीं सका।

फिर भी हमारे बहादुर योद्धा को बिल्कुल भी डर नहीं लगा। उसने राजा से कोई तलवार या तीर कमान लेने से भी मना कर दिया। बस उसने अपनी शटल और खाने की पोटली उठायी और हाथी को मारने चल दिया।

उसने उन सब लोगों से जिन्होंने भी उससे कोई और अच्छा हथियार ले जाने के लिये कहा अपनी शान बघारते हुए कहा कहा कि “बस यही मेरा हथियार है और मैं इसे अच्छी तरह इस्तेमाल करना जानता हूँ। मेरा यह हथियार बहुत अच्छा काम करता है।”

वह एक बड़ा अच्छा दृश्य था जब वह बहादुर छोटा विकी अपने दुश्मन के पास चला जा रहा था। शहर के बहुत सारे लोग यह अजीबो गरीब लड़ाई देखने के लिये दीवारों पर चढ़े हुए थे।

हाथी से मिलने से पहले हमारा बहादुर छोटा विकी जुलाहा जितना बहादुर था और जितनी ज़ोर से अपना बिगुल बजा रहा था उसकी वह बहादुरी तब सब खत्म हो गयी जब हाथी उसके सामने आया और आ कर सामने से उसके ऊपर हमला किया।

अपना नया नाम राजकुमार विक्टर भूलते हुए उसके हाथ से उसकी पोटली जिसमे उसकी शटल और उसकी रोटी रखी थी नीचे गिर पड़ी और वह वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था पीछे भाग लिया।

अब हुआ यह कि उसकी पत्नी ने उसके लिये रोटियॉ उसमें पड़े जहर को छिपाने के लिये बहुत मीठी बनायी थीं और उनमें बहुत सारे खुशबूदार मसाले डाले हुए थे क्योंकि वह नीच स्त्री अपना बदला लेने के लिये उस थका देने वाले खब्ती पति को मार डालना चाहती थी।

जैसे ही हाथी उस पोटली के पास से गुजरा तो उसको उन मीठी रोटियों की बहुत ज़ोर से खुशबू आयी। उसने अपनी लम्बी सूँड़ से वह पोटली उठायी और पल भर में ही उसकी सारी रोटियाँ खा गया।

इस बीच राजकुमार विक्टर की पतली टाँगों में डर के मारे कुछ ज़रा ज़्यादा ही जान आ गयी सो वह वहाँ से अपनी पोटली छोड़ कर बहुत तेज़ भागा। हालाँकि वह एक बड़े खरगोश[48] की तरह से भाग रहा था फिर भी हाथी जल्दी ही उसके पास आ गया।

वह बेकार में ही अपनी दोगुनी गति से भागने की कोशिश कर रहा था। हाथी की गर्म साँसें उसके पास आती जा रही थीं। बहुत ही नाउम्मीद हो कर वह पलटा ताकि वह उस बड़े जानवर की टाँगों के बीच में से हो कर निकल जाये।

डर के मारे उसे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था सो वह बजाय उन टाँगों में से निकलने के उनसे दूसरी दिशा में भाग लिया। किस्मत की बात कि तभी उन रोटियों के जहर ने अपना काम किया और लो हाथी तो मर कर नीचे गिर पड़ा।

जब देखने वालों ने हाथी को इस तरह से गिरते देखा तो उनकी आँखों को तो इस बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हुआ पर जब

---

[48] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal but a little bigger than that. See its picture above.

वे उस जगह की तरफ दौड़े तो उनका आश्चर्य तो और भी ज़्यादा बढ़ गया जब उन्होंने देखा कि हमारा छोटा विकी जीत की खुशी में उसके सिर के ऊपर बैठा हुआ है और बड़ी शान्ति से अपने रूमाल से अपने माथे का पसीना पोंछ रहा है।

जब लोगों ने उससे पूछा कि वह हाथी से बच कर भागा क्यों था तो उसने बड़ी शान्ति से जवाब दिया — "मुझे उससे भागने का बहाना बनाना पड़ा वरना वह कायर मेरे पीछे भागता ही नहीं।

बस उसके बाद तो मैंने उसको बहुत ही हल्का सा धक्का मारा और जैसा कि तुम लोग देख रहे हो वह गिर पड़ा। हाथी बड़े जानवर जरूर होते हैं पर सच पूछो तो उनके अन्दर ताकत बिल्कुल नहीं होती।"

सारे भले लोग बहादुर विकी के इस लापरवाही के ढंग से अपनी जीत को बताने के लिये बहुत आश्चर्यचकित रह गये कि वह कितने सादे से ढंग से अपनी उस जीत को बता रहा था। वे लोग साफ तरीके से यह देख ही नहीं पाये कि वहाँ क्या हुआ था क्योंकि वह उससे काफी दूर खड़े थे।

वे तुरन्त ही राजा के पास दौड़े गये और उन्होंने जा कर उसको बताया कि उस डरपोक छोटे से जुलाहे ने तो उस उतने बड़े हाथी को मार गिराया है।

राजा ने सोचा "मेरा कोई योद्धा कोई कुश्ती लड़ने वाला कोई पुराना बहादुर आदमी इस काम को नहीं कर सका। मुझे इस आदमी

को अपने पास रख लेना चाहिये अगर यह मेरे पास रह जाये तो।" सो उसने विकी को बुलाया और उससे पूछा कि वह दुनियाँ में इधर उधर क्यों घूमता फिर रहा है।

बहादुर विकी बोला — "खुशी के लिये, दूसरों की सेवा के लिये और जीतने के लिये।" उसने अपने आखिरी शब्द पर बहुत ज़ोर दिया तो राजा ने जल्दी से उसको अपनी सेना का सेनापति बना लिया ताकि वह कहीं किसी और जगह नौकरी करने न चला जाये।

अब बहादुर विकी एक बहुत बढ़िया योद्धा हो गया था और वह अपने बारे में जो भविष्यवाणी करता था उनको सच होता देख कर मोर की तरह से गर्व करने लगा।

जब वह अपनी पूरी पोशाक में सजता, चमकता हुआ जिरहबख्तर पहनता, अपनी कमर से तलवार और ढाल लटकाता तो वह अपने आपसे कहता — "मैं तो पहले ही कहता था कि यह सब मेरे अन्दर है।"

इस तरह से कुछ दिन गुजर गये कि एक भयानक चीता राज्य में आ गया और देश में आ कर उत्पात मचाने लगा। यह देख कर शहर के लोगों ने राजा से विनती की कि वह राजकुमार विकी को उसके मारने का काम सौंप दें।

सो अपनी बड़ी सी सेना को ले कर वह उस चीते को मारने चल दिया। पर क्योंकि अब वह एक बड़ा आदमी हो गया था राजा की पूरी सेना का सेनापति था सो अब वह अपनी खड्डी और शटल को

इस्तेमाल करना बिल्कुल भूल गया था। लेकिन फिर भी उसने राजा से यह वायदा लिया कि अगर वह चीता मार देगा तो राजा उसकी शादी राजकुमारी से कर देगा।

उस छोटे जुलाहे ने अपने मन में कहा कि "कुछ नहीं के बदले में कुछ नहीं"। जब राजा ने यह वायदा कर लिया तभी वह वहाँ से खिसका।

जब वह जाने लगा तो जो लोग उसको छोड़ने आये थे उसने उनको समझाते हुए कहा — "ओ भले लोगों। अपने आप पर ज़्यादा बोझ मत डालना। मेरे लिये बहुत परेशान मत होना। यह तो नामुमकिन सी बात है कि चीता मुझे मार पायेगा। क्योंकि तुम लोगों ने देखा होगा कि मैंने एक अपनी एक छोटी उँगली छुआयी और हाथी मर गया। मुझे कोई नहीं जीत सकता।"

पर हमें अपने बहादुर विकी के लिये बहुत अफसोस है। जैसे ही चीता अपनी पूँछ हिलाते हुए उसके सामने उसके ऊपर हमला करने आया तो वह दौड़ कर सबसे पास वाले पेड़ पर चढ़ गया और उसकी शाखाओं में दुबक कर बैठ गया। वहाँ वह बन्दर की तरह बैठा रहा जबकि चीता उसकी तरफ खूँख्वार नजरों से देखता रहा।

जब सेना ने देखा कि उनका सेनापति तो चूहे की तरह से पेड़ पर छिप गया है तो वे भी उसकी नकल करते हुए शहर की तरफ तेज़ी से भाग गये। वहाँ जा कर उन्होंने यह खबर फैला दी कि वह छोटा आदमी तो भाग कर पेड़ पर छिप गया।

राजा ने मन ही मन खुश होते हुए आराम की साँस लेते हुए कहा “उसको वहीं रहने दो।” क्योंकि वह खुद उस छोटे से आदमी की ताकत से जलता था और उससे अपनी बेटी की शादी नहीं करना चाहता था।

इस बीच डर के मारे विकी वहीं पेड़ पर दुबका बैठा रहा और चीता नीचे बैठा बैठा अपने दाँत किटकिटाता रहा मूँछें घुमाता रहा। विकी तो बस डर के मारे उसके मुँह में गिरने वाला ही होता रहता था।

इस तरह से उसको एक दिन बीता दो दिन बीते तीन दिन बीते। इस तरह से छह दिन बीत गये। सातवें दिन चीता बहुत नाराज हो गया और जुलाहे पर कड़ी नजर रखे रहा।

बेचारा छोटा जुलाहा बहुत भूखा था। इस भूख का इतना असर हुआ कि उसने इसको बहुत बहादुर बना दिया कि जब चीता दोपहर को झपकी मारता था तो उसने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया।

उसने बहुत धीरे धीरे इंच इंच कर के पेड़ पर से नीचे उतरना शुरू किया। अब उसका पैर जमीन से केवल एक फुट दूर ही रह गया था कि... वह चीता जो उस पर एक आँख लगाये बैठा उसने उस पर कूद लगा दी।

बहादुर विकी डर के मारे बहुत ज़ोर से चीखा और अपनी पूरी कोशिश लगा कर अपनी छोटी छोटी टाँगों को डाल पर रख कर ताकि वह चीते से कूछ दूर रह सके लटक गया।

क्योंकि चीते का गुलाबी मुँह और सफेद चमकते दाँत उसके पैर के अँगूठे से केवल आधा इंच की दूरी पर थे सो वह उससे और ज़्यादा बचने की कोशिश करने लगा कि इस कोशिश में उसका खंजर म्यान में से निकल गया और सीधा चीते के गले में और फिर उसके पेट में चला गया और चीता वहीं का वहीं मर गया।

बहादुर विकी तो अपनी इस खुशकिस्मती पर दंग रहा गया। फिर उसने उसके शरीर को एक डंडी मार कर देखना चाहा कि वह वाकई मर गया कि नहीं पर जब उसने देखा कि उसका शरीर तो हिल ही नहीं रहा तो उसे पक्का हो गया कि चीता वाकई में मर गया।

यह देख कर वह नीचे उतर आया उसका सिर काटा और अपनी जीत मनाता हुआ राजा के पास चला गया। वहाँ जा कर वह बहुत गुस्से से बोला — "आपके सारे सिपाही डरपोक हैं। मुझे देखिये मैं सात दिनों और सात रातों तक चीते से अकेला भूखा प्यासा लड़ता रहा जबकि आप सब लोग अपने अपने घरों में आराम से सोते रहे। यह बहुत बुरी बात है पर मुझे लगता है कि मेरे जैसा हीरो तो कोई है ही नहीं।"

इस तरह से छोटे विकी की शादी राजकुमारी से हो गयी।

अब इस राजा का एक पड़ोसी राजकुमार था जिसको इस राजा से बहुत शिकायत थी सो एक दिन वह इस राजा के ऊपर चढ़ाई करने आ पहुँचा और शहर के बाहर आ कर अपना डेरा डाल दिया। उसने कसम खायी कि वह उस शहर के हर आदमी औरत और बच्चे को अपनी तलवार से मौत के घाट उतार देगा।

यह सुन कर शहर का हर आदमी एक आवाज में चिल्लाया — "राजकुमार विक्टर राजकुमार विक्टर। मेहरबानी कर के हमारी सहायता करो।"

सो राजा ने राजकुमार विक्टर को हुक्म दिया कि वह शहर के बार जाये और दुश्मन राजा की सेना को नष्ट कर डाले। अगर उसने ऐसा कर दिया तो उसको राजा अपना आधा राज्य दे देगा।

बहादुर विकी जो अपनी इतनी शेखी बघारता था कोई बेवकूफ तो था नहीं। उसने सोचा "यह मामला तो दूसरे मामलों से बिल्कुल ही अलग है। एक आदमी एक मच्छर मार सकता है एक हाथी मार सकता है यहॉ तक कि एक शेर भी मार सकता है पर यह तो दुश्मन की इतनी बड़ी सेना है इसको मैं कैसे मार सकता हूॅ।

नहीं नहीं। मैं आधा राज्य ले कर क्या करूॅगा जब मेरे धड़ पर सिर ही नहीं रहेगा। इन हालातों में मैं हीरो बनने की कोशिश नहीं कर सकता। सो आधी रात को उसने अपनी पत्नी को उठाया और उससे सोने की थालियों को लेने के लिये और अपने साथ चलने के लिये कहा।

फिर उसने उससे बड़ी शेखी बघारते हुए कहा — "यह सब मैं तुमसे इसलिये ले जाने के लिये नहीं कह रहा कि इन थालियों की तुमको मेरे घर में जरूरत होगी बल्कि मैं इनको तुमसे इसलिये ले जाने के लिये कह रहा हूॅ कि शायद इनकी हमें रास्ते में जरूरत पड़े।" इस तरह से वे दोनों आधी रात में शहर से बाहर चल दिये।

उनको दुश्मन के डेरों के बीच से हो कर जाना था। जैसे ही वे उनके डेरों के बीच से हो कर जा रहे थे कि बड़ी सी बीटिल उसके चेहरे पर लगी तो वह बहादुर विकी डर के मारे चिल्लाया "भागो भागो" और पीछे मुड़ कर अपने घर की तरफ भाग लिया और अपने कमरे में जा कर ही दम लिया। वह तुरन्त ही अपने पलंग के नीचे छिप गया।

यह सुन कर उसकी पत्नी के हाथ से उसके सोने के बर्तनों की पोटली गिर गयी और वह उसको छोड़ कर उसके पीछे पीछे उसी की तरह से भाग ली। बर्तन जब नीचे गिरे तो बड़े ज़ोर से आवाज हुई जिससे डेरों में रह रहे सारे सिपाही जाग गये।

उनको लगा कि जिस राजा पर वे हमला करने आये थे उन्होंने उनके ऊपर हमला बोल दिया है सो वे अपने हथियार लेने के लिये भागे। पर एक तो वे आधे सोये हुए थे दूसरे बिल्कुल घुप ॲधेरा था सो वे दोस्त को दुश्मन से अलग नहीं कर सके वे आपस में ही एक दूसरे से ही बहुत ज़ोर से लड़ने लगे और इतने ज़ोर से लड़े कि

सुबह होने तक वे सब आपस में ही लड़ भिड़ कर मर गये। उनमें से कोई भी ज़िन्दा नहीं बचा।

अब यह तो सोचा जा सकता है कि जैसे ही यह खबर राजमहल में पहुँची चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ छा गयीं। राजकुमार विक्टर की ताकत की बड़ाई होने लगी।

राजकुमार विक्टर बड़ी सादगी से बोला — "यह तो बड़ी छोटी सी बात थी जब एक आदमी अपनी शटल से एक मच्छर मार सकता है तो बाकी की सारी चीज़ें तो उसके लिये खेल है।"

सो राजा ने अपने कहे अनुसार उसको अपना आधा राज्य दे दिया और उसने बड़ी शान से उस पर राज किया। इस लड़ाई के बाद उसने यह कहते हुए फिर कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ी कि राजा लोग खुद कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ते बल्कि दूसरों को लड़ने के लिये रख लेते हैं।

उसके बाद वह शान्ति से रहा और जब वह मरा तो सब लोगों ने कहा "हमने बहादुर विकी जैसा कोई हीरो नहीं देखा।"

# 10 सात मॉओं का बेटा[49]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके सात रानियॉ थीं पर उसके बच्चा कोई नहीं था। इस बात का उसे बड़ा दुख था। यह दुख उसका और बढ़ जाता जब वह यह सोचता कि उसके मरने के बाद उसके राज्य का वारिस कौन बनेगा।

एक दिन एक बूढ़ा फकीर उसके पास आया और उससे बोला कि "राजा साहब आपकी प्रार्थना सुन ली गयी है। आपकी इच्छा पूरी होगी। आपकी सातों रानियों के एक एक बेटा होगा।"

राजा तो यह सुन कर खुशी से फूला नहीं समाया। उसने तभी से हुक्म दे दिया कि आगे आने वाले मौकों पर क्या कैसे मनाया जायेगा।

इस बीच उसकी सातों रानियॉ बहुत आराम से रहीं। उनकी सेवा में सैंकड़ों दासियॉ लगी रहती थीं। उनको जो भी पसन्द होता मिठाई या नमकीन जितना भी वे खाना चाहतीं सब कुछ उनकी इच्छा के अनुसार ही होता।

राजा को शिकार का बहुत शौक था। वह अक्सर शिकार पर जाया करता था। एक दिन जब वह शिकार के लिये जा रहा था तो उसकी सातों रानियों ने उसको एक सन्देश भेजा कि "आज आप उत्तर की ओर शिकार करने न जायें क्योंकि हमने बहुत बुरे सपने

[49] The Son of Seven Mothers (Tale No 10)

देखे हैं और डरते हैं कि आपके साथ कहीं कुछ कोई बुरा न हो जाये।"

राजा ने उनकी चिन्ता दूर करने के लिये उनकी इच्छा पूरी करने का वायदा किया और शिकार के लिये दक्षिण की तरफ चल दिया। पर जैसा किस्मत में लिखा होता है होता तो वैसे ही है न।

हालाँकि राजा ने उधर काफी मेहनत से अपना शिकार ढूँढा पर उधर उसे कोई शिकार ही नहीं मिला। फिर वह पूर्व और पश्चिम की तरफ गया पर वहाँ भी किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया।

इससे वह कुछ अनमना सा हो गया और उस दिन उसने शिकार करने का पक्का इरादा कर लिया। आज वह घर खाली हाथ नहीं जाना चाहता था सो वह अपना वायदा तो भूल गया और शिकार की खोज में उत्तर की ओर चल दिया।

इधर भी पहले तो उसको कुछ नहीं मिला पर फिर जब वह नाउम्मीद हो कर वहाँ से वापस चलने को था कि तभी उसको एक सुनहरे सींगों वाला और रुपहले खुर वाला सफेद हिरन उसके पास की एक झाड़ी से निकल कर भागता दिखायी दे गया। वह इतनी तेज़ी से भागा कि वह उसको ठीक से देख भी न सका।

पर फिर भी राजा के दिल में उस अजीब जीव को पकड़ने की बहुत ज़ोर की इच्छा पैदा हो गयी। उसने तुरन्त ही अपने साथियों को हुक्म दिया कि वह झाड़ी को चारों तरफ से घेर लें और इस तरह से हिरन के चारों तरफ से एक गोला बना लें।

फिर उस गोले को और पास ले कर आयें ताकि वह हॉफते हुए हिरन को और पास से देख सके। वैसा ही किया गया। जैसे जैसे राजा उस हिरन के पास आया और उसको लगा कि वह उसको पकड़ लेगा कि उसने राजा के सिर के ऊपर से एक ज़ोर की छलॉग मारी और पहाड़ों की तरफ दौड़ गया।

राजा उसको देख कर सब कुछ भूल गया और उसने अपना घोड़ा उसके पीछे तेज़ी से दौड़ा दिया। घोड़ा उसके पीछे भागता रहा भागता रहा। इस भागने में राजा के साथी बहुत पीछे छूट गये पर राजा की निगाह उस सफेद हिरन की तरफ ही लगी रही।

दौड़ते दौड़ते वह एक घाटी में एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ जा कर रास्ता तंग हो जाता था और उससे आगे नहीं जाता था। सो उसने अपने घोड़े को लगाम दी और घोड़ा रोका तो उसने देखा कि वह तो एक बहुत ही पुराने टूटे फूटे मकान के सामने खड़ा था।

अपने इस बेकार का पीछा करने के बाद राजा थक गया था सो वह पानी मॉगने के लिये उस मकान में घुस गया। वहॉ एक बुढ़िया बैठी बैठी चरखा चला रही थी। उसने उसी से पीने के लिये पानी मॉगा। बुढ़िया ने अपनी बेटी को आवाज दी कि वह मेहमान के लिये पानी ले आये।

तुरन्त ही अन्दर के कमरे से एक बहुत सुन्दर और आकर्षक लड़की पानी लिये हुए बाहर आयी। वह बहुत गोरी थी उसके बाल सुनहरे थे। राजा उस उतनी सुन्दर लड़की को उस टूटे फूटे मकान में

देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह उसको देखता का देखता ही रह गया।

उसने पानी का बर्तन राजा के होठों से लगा दिया। राजा पानी पीते पीते उसकी ऑखों में देख रहा था। देखते देखते उसको इस बात का यकीन हो गया कि वह लड़की और कोई नहीं वही सोने के सींग वाला और चॉदी के खुर वाला सफेद हिरन थी जिसका पीछा करते करते वह यहॉ तक आ पहॅुचा था।

उसकी सुन्दरता ने उसके ऊपर जादू डाल दिया और उसने झुक कर उससे अपनी रानी बन कर महल चलने की विनती की तो वह हॅस कर बोली कि सात रानियॉ राजा के लिये काफी थीं।

पर जब राजा नहीं माना और उसने उसके ऊपर दया करने के लिये कहा और वह सब उसको देने का वायदा किया जो उसको चाहिये होगा तो उसने कहा – "आप अपनी सातों रानियों की ऑखें मुझे दे दें तब शायद मैं विश्वास कर सकॅूगी कि आप जो कह रहे हैं वही आप करेंगे।"

राजा के ऊपर उस सफेद हिरन की सुन्दरता का इतना जादू चला हुआ था कि बिना सोचे समझे वह तुरन्त ही घर की तरफ लौट पड़ा। आ कर उसने अपनी सातों रानियों की ऑखें निकलवायीं और उन बेचारी अन्धी रानियों को एक काल कोठरी में डलवा कर जहॉ से वे भाग नहीं सकती थीं। फिर वह अपनी उस भद्दी भेंट के साथ तुरन्त ही घाटी में बने उस मकान की तरफ दौड़ पड़ा।

उनको देख कर वह बेरहम सफेद हिरन बहुत ज़ोर से हॅसा और उसने उन चौदहों ऑखों की एक माला बनायी और अपनी मॉ के गले में पहना दी और अपनी मॉ से बोला — “मॉ लो इसे गिरवी की तरह से पहन लो जब तक मैं राजा के महल में रहती हूॅ।”

फिर वह जादू पड़े हुए राजा के साथ उसकी रानी बन कर उसके महल चली गयी। राजा ने अपनी सातों रानियों के सब कीमती कपड़े गहने उसको दे दिये। सातों रानियों के महल दे दिये और उनकी दासियॉ भी दे दीं। इस तरह उस जादूगरनी के पास वह सब कुछ आ गया जो वह चाहती थी।

उन सातों रानियों के जेल में डाले जाने के जल्दी ही बाद राजा की सबसे बड़ी रानी के एक बहुत सुन्दर सा बेटा हुआ पर वे रानियॉ इतनी ज़्यादा भूखी थीं कि उन्होंने उस बच्चे को तुरन्त ही मार डाला और उसके सात हिस्से करके सातों में खाने के लिये बॉट दिये।

छह बड़ी रानियों ने तो अपने अपने हिस्से के टुकड़े खा लिये पर सातवीं रानी ने अपने हिस्से का टुकड़ा बचा कर रख लिया।

अगले दिन दूसरी रानी के बेटा हुआ तो उसने भी ऐसा ही किया। उसके सात हिस्से किये और उन्हें सातों रानियों को दे दिया। पहले की तरह से बड़ी छह रानियों ने तो अपना अपना हिस्सा खा लिया पर सातवीं रानी ने अपना हिस्सा बचा कर रख लिया।

ऐसा तब तक होता रहा जब तक दूसरी छह रानियों के बच्चे नहीं हो गये और उन्हें खा नहीं लिया गया।

जब सातवीं रानी के बेटा हुआ तो छहों बड़ी रानियाँ उससे मिलने के लिये आयीं और उससे कहा — "तुम भी अपने बच्चे को मारो और उसे हमें खाने के लिये दो जैसे हमने तुम्हें अपना बच्चा खाने के लिये दिया था।"

तो उसने उनको उनके दिये हुए छहों टुकड़े निकाल कर उनको दे दिये और कहा — "मैं अपने बच्चे को नहीं मारूँगी। तुम लोग अपने ये छहों टुकड़े ले लो और इन्हें खा लो और मेरे बच्चे को छोड़ दो। तुमको इस बात की कोई शिकायत नहीं होनी चाहिये क्योंकि तुम लोगों को तुम्हारा न्यायपूर्ण हिस्सा मिल गया है – न कम न ज़्यादा।"

हालाँकि यह देख कर और रानियाँ को उससे बहुत जलन हुई पर फिर भी सबसे छोटी रानी की आगे की देखने की ताकत और अपने बच्चे को न मारने की इच्छा ने उसके बच्चे की जान बचायी। वे भी इसके आगे कुछ नहीं कह सकीं क्योंकि छोटी रानी ने उनको उनका न्यायपूर्ण हिस्सा जो उन्हें मिलना चाहिये था दे ही दिया था।

इसके अलावा पहले तो वे उस सुन्दर से बच्चे को नापसन्द करती रहीं पर बाद में तो वह उनके लिये बहुत ही फायदेमन्द साबित हुआ।

जैसे ही वह बच्चा पैदा हुआ करीब करीब तभी से उसने उस जेल की मिट्टी की दीवारों को खुरचना शुरू कर दिया और बहुत ही कम समय में उसने उसमें इतना बड़ा छेद कर दिया जिसमें से वह घुटनों के बल चल कर बाहर निकल सकता था।

एक दिन इस छेद में से निकल कर वह बाहर चला गया और एक घंटे में कुछ मिठाई ले कर वापस लौट आया जो उसने सातों रानियों में बराबर बराबर बॉट दी।

जैसे जैसे वह बड़ा होता गया उस छेद को भी वह बड़ा बनाता गया। अब वह दिन में कई बार शहर के कुलीन बच्चों के साथ खेलने के लिये उसमें से निकल जाता।

किसी को भी नहीं पता था कि वह छोटा बच्चा कौन था पर हर कोई उसको पसन्द करता था। उसको बहुत सारी हॅसी की बातें आती थीं और वह खुद भी बहुत हॅसमुख और खुश बच्चा था कि लोग उसको केक या मुरमुरे या खील[50] या कुछ मीठा खाने के लिये दे देते।

उसे इस तरह से जो कुछ भी मिलता वह सब वह अपनी सातों माओं के लिये ले आता। वह उन सातों अन्धी रानियों को मॉ कह कर ही बुलाया करता था। इस तरह से वे उस काल कोठरी में उसकी दया पर जीती रहीं जबकि दूसरे लोग यह समझते रहे कि वे बहुत पहले ही मर गयी होंगी।

---

[50] Translated for the words “Parched Grains” – roasted rice with husk (Dhaan)

आखिर जब वह काफी बड़ा हो गया तो एक दिन उसने अपना तीर कमान उठाया और शिकार ढूँढने चला गया। इत्तफाक से वह एक महल की तरफ आ निकला जहाँ वह सफेद हिरन एक नीच रानी के रूप में शान से रहता था।

वहाँ उसने महल की सफेद संगमरमर की मीनार के पास कुछ कबूतर उड़ते हुए देखे तो अच्छा निशाना साधते हुए उसने उनमें से एक पर अपना तीर चला दिया और मार दिया। इत्तफाक से वह कबूतर उसी खिड़की के सामने से हो कर नीचे गिरा जिस खिड़की में रानी बैठी हुई थी।

यह देखने के लिये कि यह सब क्या हो रहा था अपनी जगह से उठ कर उसने बाहर की तरफ देखा। पहली ही नजर में उसने एक बहुत सुन्दर लड़का हाथ में तीर कमान लिये हुए देखा। उसने अपने जादू से जान लिया कि वह राजा का बेटा है।

यह जानते ही वह तो जलन से भर उठी। उसने उसको तुरन्त ही मारने का सोच लिया। उसने अपने नौकर को बाहर भेज कर उस लड़के को अपने सामने बुलवाया और उससे पूछा कि क्या वह उसे वह कबूतर बेचना चाहेगा जिसे उसने अभी अभी मारा है।

लड़के ने बड़े पक्के इरादे से कहा — "नहीं। यह कबूतर मेरी सात अन्धी माँओं के लिये है जो एक काल कोठरी में रहती हैं। अगर मैं उनके लिये यह खाना नहीं ले कर गया तो वे तो बेचारी मर ही जायेंगी।"

नीच चालाक सफेद जादूगरनी बोली — “ओह बेचारी। पर क्या तुम उनकी ऑखें वापस लाना पसन्द नहीं करोगे? तुम अपना कबूतर मुझे दे दो मैं वायदा करती हूँ कि मैं तुम्हें वह जगह बता दूँगी जहॉ उनकी ऑखें हैं।”

यह सुन कर वह लड़का तो बहुत ही खुश हो गया। उसने वह कबूतर तुरन्त ही रानी को दे दिया। इसके बदले में अपने वायदे के अनुसार उसने उसको अपनी मॉ का पता बता दिया और कहा कि वह वहॉ जा कर उससे ऑखें मॉग ले जो उसने अपने गले में हार की तरह पहन रखी हैं। उनकी ऑखें वहॉ उसके पास हैं।

बेरहम रानी ने फिर एक पत्थर के टुकड़े पर एक नोट लिखा और उसको दे कर कहा — “अगर तुम उसको यह नोट दिखा दोगे जो मैंने उसके लिये लिखा है तो वह तुम्हें ऑखें जरूर दे देगी।”

ऐसा कह कर उसने लड़के को नोट लिखा वह पत्थर का टुकड़ा दे दिया जिस पर लिखा था “इसके लाने वाले को तुरन्त मार दो और इसका खून पानी की तरह बिखेर दो।”

अब इस सात मॉओं के बेटे को पढ़ना तो आता नहीं था उसने अपना वह जानलेवा सन्देश खुशी खुशी लिया और सफेद रानी की मॉ के पास चल दिया।

जब वह सफेद रानी की मॉ के पास जा रहा था तो रास्ते में एक शहर से गुजरा जहॉ के सारे रहने वाले उसको इतने उदास दिखायी

दे रहे थे कि वह उनसे पूछे बिना न रह सका कि क्या बात है सब इतने उदास क्यों हैं।

उन्होंने उसे बताया कि उनके राजा की एकलौती बेटी ने शादी करने से मना कर दिया है सो राजा के मरने के बाद कौन उसके राज्य का वारिस बनेगा यही चिन्ता की बात थी।

उन सबको डर था कि राजकुमारी का दिमाग फिर गया है क्योंकि एक राज्य का एक बहुत सुन्दर लड़का भी उसको दिखाया गया फिर भी उसने उससे शादी करने से मना कर दिया। वह कहती है कि वह सात मॉओं के बेटे से शादी करेगी।

और यह सच है किसी ने भी ऐसा कोई बेटा सुना नहीं है जिसके सात मॉऐं हों फिर भी राजा ने यह घोषणा करा रखी है कि इस शहर के दरवाजे के अन्दर जो भी घुसे उसे राजकुमारी के सामने लाया जाये ताकि वह अपने इरादे पर पछता कर उससे शादी कर ले।

इस समय वह लड़का हालॉकि बहुत जल्दी में था और अपने रास्ते पर जाने के लिये बेचैन था क्योंकि उसको अपनी मॉओं की ऑखें लानी थीं पर राजा की घोषणा के अनुसार उसको पहले राजकुमारी के सामने ले जाया गया।

जैसे ही उसने लड़के को देखा तो वह शर्म से लाल पड़ गयी और अपने पिता राजा से बोली — “पिता जी यही है वह जिससे मुझे शादी करनी है।”

जैसे ही राजकुमारी के मुँह से यह बात निकली कि सारे राज्य में खुशी की ऐसी लहर दौड़ गयी जैसी पहले कभी किसी ने नहीं देखी थी।

पर सात माँओं के बेटे ने कहा कि वह राजकुमारी से तब तक शादी नहीं कर पायेगा जब तक कि वह अपनी सातों माँओं की आँखें वापस नहीं ला देता।

जब सुन्दर दुलहिन ने लड़के की कहानी सुनी तो उसने उससे वह पत्थर देखने के लिये माँगा जो सफेद रानी ने उसको अपनी माँ को देने के लिये दिया था क्योंकि वह पढ़ी लिखी और होशियार थी।

लड़के ने वह पत्थर उसे दे दिया तो जैसे ही उसने उसे पढ़ा तो उसने उससे तो कुछ नहीं कहा पर उसने वैसा ही एक और पत्थर लिया और उस पर यह लिखा "इस लड़के की अच्छी तरह से देखभाल करना। इसे जो भी चाहिये वह दे देना।"

यह लिख कर उसने उसे वह पत्थर वापस कर दिया। वह उस पत्थर को ले कर उस जगह चल दिया जहाँ रानी ने उसको भेजा था। जल्दी ही वह उस घाटी में आ पहुँचा जिसमें सफेद रानी की माँ छिपे छिपे रहती थी और जा कर उसे उसकी बेटी का सन्देश दिया।

वह उस सन्देश को पढ़ कर बहुत गुस्सा हुई और कुछ कुछ बड़बड़ाने लगी। वह लड़के से उस समय खास कर के बहुत नाराज

हुई जब उसने उसका ऑखों का हार मॉगा। पर वह क्या करती उसने उसे वह हार उतार कर दे दिया।

हार दे कर उसने कहा कि अब इसमें केवल **13** ही ऑखें हैं क्योंकि पिछले हफ्ते मुझे बहुत भूख लगी थी सो इनमें से मैंने एक ऑख खा ली।

लड़का तो इतनी ही ऑखें ले कर बहुत खुश था सो वह जल्दी से वे ऑखें ले कर अपनी मॉओं के पास चल दिया। वहॉ आ कर उसने छह जोड़ी ऑखें अपनी छहों बड़ी मॉओं को दीं पर सबसे छोटी मॉ को उसने केवल एक ऑख दी और उससे कहा — "प्यारी मॉ तुम्हारी दूसरी ऑख मैं बन कर रहूॅगा।"

उसके बाद जैसा कि उसने वायदा किया था वह राजकुमारी से शादी करने चल दिया। जब वह जा रहा था तो उसने फिर से सफेद रानी के महल के ऊपर कबूतर उड़ते हुए देखे। उसने फिर से अपनी कमान खींची और एक कबूतर मार गिराया।

इत्तफाक से वह कबूतर भी उस दिन रानी की खिड़की के सामने से ही हो कर नीचे गिरा। सफेद रानी फिर अपनी खिड़की से बाहर झॉकने आयी तो देखा कि राजा का बेटा तो ज़िन्दा था और ठीक था। यह देख कर तो उसकी नफरत की कोई हद ही नहीं रही।

उसने अपना एक नौकर भेज कर फिर से उस लड़के को अपने पास बुलवाया और उससे पूछा कि वह इतनी जल्दी कैसे वापस लौट आया।

जब उसने सुना कि वह 13 ऑखें ले कर वापस लौटा है और उसने वे ऑखें सातों रानियों को दे दी हैं तब तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। लेकिन उसने यह दिखाया कि वह उसकी सफलता से बहुत खुश है।

फिर वह बोली कि अगर वह उसको यह दूसरा कबूतर भी दे दे तो वह उसको एक जोगी की एक ऐसी आश्चर्यजनक गाय का पता बतायेगी जो सारा दिन दूध देती है और उससे एक इतना बड़ा तालाब बन जाता है जितना बड़ा कोई राज्य होता है।

लड़के को उसकी इस बात पर कोई शक नहीं हुआ सो उसने उसे वह दूसरा कबूतर भी दे दिया। उसने फिर उसे अपनी मॉ के पास भेजा और उससे गाय मॉगने के लिये कहा।

उसने फिर से एक पत्थर लिया और उस पर लिखा "इसको देखते ही मार देना और इसका खून पानी की तरह से बिखेर देना।" यह लिख कर उसने वह पत्थर लड़के को दे दिया।

लड़का उस पत्थर को ले कर फिर चल दिया। रास्ते में वह फिर राजकुमारी से मिलने के लिये रुका पर बस उसे यही बताने के लिये कि उसे देर क्यों हो गयी। जब उसने उसको सफेद रानी का दिया हुआ पत्थर पढ़ा तो उसने एक दूसरा वैसा ही पत्थर उसको दे दिया।

उसने उसमें वह लिख दिया जिसको पढ़ कर वह बुढ़िया उसको जोगी की गाय देने से मना तो नहीं कर ही नहीं सकी पर उसने

उसको पाने का भी रास्ता बता दिया। उसने कहा कि इस गाय की 18 हजार राक्षस रखवाली करते रहते थे पर उसको उन 18 हजार राक्षसों से डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

फिर इससे पहले कि वह अपनी बेटी की बेवकूफियों पर अपनी अच्छी चीज़ों को इस तरह देने पर बहुत नाराज हो जाये उसने उससे जाने के लिये कहा।

लड़के ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया था। चलते चलते वह एक दूध जैसे सफेद तालाब के पास तक आ निकला। वहॉ 18 हजार राक्षस उस तालाब की रखवाली कर रहे थे। वे देखने में बहुत भयानक लग रहे थे।

पर हिम्मत बटोर कर दॉये बॉये किसी भी तरफ को न देखते हुए वह अपने मुँह से एक धुन निकालता हुआ उनके बीच से जाने लगा।

धीरे धीरे कर के वह जोगी की गाय के पास आ गया। वह गाय ऊँची थी सफेद थी सुन्दर थी जबकि जोगी जो सब राक्षसों का राजा था वहॉ बैठा बैठा उसको दिन रात दुहता रहता था। और दूध उसके थनों से निकल कर तालाब में गिरता रहता था।

जोगी ने लड़के को देखा तो कुछ गुस्सा होते हुए उससे पूछा "तुम्हें यहॉ से क्या चाहिये।"

जैसा कि बढ़िया ने उससे कहने के लिये कहा था वह बोला — "मुझे आपकी खाल चाहिये। क्योंकि राजा इन्द्र[51] एक नया ढोल बना रहे हैं तो उन्होंने कहा है कि आपकी खाल बढ़िया और सख्त है। इसी लिये"

यह सुन कर जोगी तो डर के मारे कॉपने लगा क्योंकि कोई भी जोगी या जिन्न राजा इन्द्र की आज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

वह लड़के के पैरों पर गिर गया और बोला — "अगर तू मुझे छोड़ देगा तो मैं मेरे पास जो कुछ भी है उसमें से तुझे भी कुछ दे दूॅगा। यहॉ तक कि अपनी यह सुन्दर सफेद गाय भी।"

यह सुन कर सात मॉओं के बेटे ने कुछ हिचकिचाने का नाटक किया और फिर यह कहते हुए वह राजी हो गया कि हालॉकि जोगी की सुन्दर और सख्त खाल मिलना कोई खास मुश्किल काम नहीं है वह मैं कहीं और से भी ले सकता हूॅ। कह कर उसने उसके सामने बॅधी हुई गाय खोली और उसको अपने सामने हॉकते हुए अपने घर लौट पड़ा।

सातों रानियॉ इस बढ़िया जानवर को देख कर बहुत खुश हो गयीं। हालॉकि वे दिन रात उस गाय के दूध को बाजार में बेचती रहीं और उसका दही और पनीर भी बनाती रहीं पर फिर भी वे

[51] Chief of Hindu gods – the Rain God, King Indra

उसका आधा दूध भी इस्तेमाल नहीं कर पाती थीं जितना कि वह देती थी। इस तरह वे दिन ब दिन अमीर होती चली गयीं।

उन सातों मॉओं को आराम से रहता देख कर उनके बेटे ने फिर से राजकुमारी के पास उससे शादी करने जाने का विचार किया। पर जब वह जा रहा था तो वह सफेद रानी के महल पर उड़ रहे कबूतरों पर फिर से तीर चलाने से अपने आपको रोक न सका।

एक कबूतर फिर मर कर गिर गया और वह भी सफेद रानी की खिड़की के सामने से। रानी फिर उठी तो क्या देखती है कि वह लड़का तो अभी भी उसके सामने ज़िन्दा और तन्दुरुस्त खड़ा है। यह देख कर तो वह गुस्से के मारे बिल्कुल पागल सी हो गयी।

उसने अपना नौकर भेज कर उसे फिर अपने पास बुलवाया और अपने गुस्से को काबू में रखते हुए उससे पूछा कि वह इतनी जल्दी कैसे वहॉ से वापस आ गया। फिर यह जान कर कि उसकी मॉ ने उसका कितनी अच्छी तरह से स्वागत किया तो उसको तो दौरा ही पड़ गया।

फिर भी अपनी भावनाओं को छिपाते हुए और मीठा मीठा मुस्कुराते हुए उसने उससे कहा कि वह बहुत खुश थी कि वह अपना किया गया वायदा पूरा कर सकी।

फिर उसने उससे कहा कि अगर वह अपना यह तीसरा कबूतर भी उसे दे दे तो वह उसके लिये उससे भी कहीं ज़्यादा करेगी

जितना उसने इससे पहले उसके लिये किया है। वह उसको करोड़ों चावल देगी जो एक ही रात में पक जायेगा।

लड़का तो इस विचार से ही बहुत खुश हो गया। उसने अपना तीसरा कबूतर भी उसको दे दिया और चावल लेने के लिये चल दिया। पहले की तरह से इस बार भी उसने एक पत्थर पर कुछ लिख कर उसे दिया और वह उसे ले कर चल दिया।

इस बार उसकी सौतेली माँ ने पत्थर पर लिखा था "इस बार कोई गलती नहीं करना। लड़के को मार कर उसका खून पानी की तरह से बिखेर देना।"

पर जब उसने अपनी राजकुमारी की तरफ देखा तो उसको चिन्ता से बचाने के लिये वह फिर उससे मिलने के लिये रुक गया।

पहले की तरह इस बार भी उसने उससे पत्थर का टुकड़ा देखने के लिये माँगा और पहले की तरह से उसने इस बार भी उसको एक दूसरा पत्थर यह लिख कर दे दिया कि "इसको जो भी यह माँगे सब दे देना क्योंकि इसका खून तुम्हारा ही खून है।"

जब बुढ़िया जादूगरनी ने यह सब देखा कि वह लड़का तो करोड़ों गुना चावल माँग रहा था जो एक रात में ही पक जाता था तो उसका गुस्सा फिर से सातवें आसमान पर चढ़ गया कि उसकी यह लड़की क्या कर रही है।

पर अपनी बेटी के गुस्से से डर कर उसने अपना वह गुस्सा उस लड़के पर जाहिर नहीं किया और उससे कहा कि वह जा कर उस

खेत को ढूँढे जिसकी एक करोड़ 80 लाख[52] राक्षस रखवाली करते हैं।

उसने उससे यह भी कहा कि वह चावल के सबसे लम्बे पेड़ को जो उस खेत के बीचोबीच उग रहा था तोड़ने के बाद किसी भी हालत में पीछे मुड़ कर न देखे।

सो वह सात माँओं का बेटा चावल के उस खेत की तरफ चल दिया जहाँ करोड़ों चावल उगते थे और जल्दी ही वहाँ आ पहुँचा। वह खेत तो सचमुच एक करोड़ 80 लाख राक्षसों से सुरक्षित था।

वह उस खेत के अन्दर बिना दाँये बाँये देखे बहादुरी से आगे चलता चला गया जब तक वह उसके बीच तक पहुँचा। वहाँ जा कर उसने सबसे ऊँची लगी हुई चावल की बाल तोड़ी और जैसे ही वह अपने घर की तरफ को मुड़ा कि उसके पीछे से हजारों मीठी आवाजें आने लगीं "मेहरबानी कर के मुझे भी तोड़ लो। मेहरबानी कर के मुझे भी तोड़ लो।"

यह सुन कर उसने पीछे मुड़ कर देखा तो बस वहाँ तो कुछ भी नहीं था केवल एक छोटा सा राख का ढेर पड़ा था। वह खुद भी एक राख के ढेर में बदल गया था।

जब कुछ दिन तक लड़का नहीं आया तो यह याद करके कि "इसका खून तुम्हारा ही खून है।" सफेद रानी की जादूगरनी बुढ़िया

---

[52] 1,80,00,000 (18,000,000 = 18 million)

मॉ को चिन्ता होने लगी। वह तुरन्त ही उसकी खबर लेने के लिये चल दी।

जल्दी ही वह उस राख के ढेर के पास आ पहुॅची। उसने अपनी कला से यह जान लिया कि वह क्या था सो उसने थोड़ा सा पानी लिया उसे राख में में मिला कर उसकी लेही सी बनायी और फिर उससे आदमी एक शक्ल बनायी।

उसके बाद उसने अपनी छोटी उॅगली से एक बूॅद खून निकाला और उसके मुॅह में डाल दिया। फिर उसने उसके मुॅह में फूॅक मारी तो वह सात मॉओं का बेटा तुरन्त ही तन्दुरुस्त हो कर खड़ा हो गया।

बुढ़िया शिकायत करते हुए बोली "आगे से आज्ञा का उल्लंघन मत करना। अगर तुमने आगे ऐसा किया तो फिर तुम जानो। अब इससे पहले कि मैं तुम्हारे ऊपर अपनी दया करने के लिये पछताऊॅ तुम यहॉ से भाग जाओ।"

सो वह सात मॉओं का बेटा सात रानियों के पास खुशी खुशी लौट आया जो उस करोड़ों चावल की वजह से राज्य की सबसे अमीर स्त्रियॉ बन गयीं। उसके बाद उन्होंने अपने बेटे की शादी खुशी खुशी उस होशियार राजकुमारी से कर दी।

पर दुलहिन तो बहुत होशियार थी। उसने सोच लिया था कि वह तब तक चैन से नहीं बैठेगी जब तक वह अपने पति को उसके पिता से न मिलवा ले और सफेद रानी को सजा न दिलवा ले।

सो राजकुमारी ने अपने पति से कहा कि वह एक वैसा ही महल बनवाये जैसे महल में उसकी सातों मॉऐं रहा करती थीं और अब वह सफेद रानी रहती थी। जब सब बन कर तैयार हो गया तो उसने अपने पति से राजा को खाने पर बुलाने के लिये कहा।

राजा ने इस सात मॉओं के बेटे के बारे में और उसकी अपार सम्पत्ति के बारे में काफी कुछ सुन रखा था सो उसने उसका बुलावा तुरन्त ही स्वीकार कर लिया।

पर जब वह महल में घुसा तो उसके आश्चर्य की हद नहीं रही जब उसने उसके महल को अपने महल की हूबहू तस्वीर पायी। और फिर जब उसका मेजबान बढ़िया कीमती कपड़े पहने बाहर उसको लेने के लिये आया और उसको अपने निजी कमरे में ले गया जहॉ उसकी सातों रानियॉ राज सिंहासन पर वैसी ही सजी बैठी थीं जैसी उसने उनको आखिरी बार देखा था तो उसके मुॅह से एक शब्द भी नहीं निकला।

तब राजकुमारी आगे आयी उसने राजा के पैर छुए और उसको सारी कहानी बतायी। राजा के ऊपर पड़ा जादू टूट गया और सफेद हिरन के लिये उसका गुस्सा जाग गया। अब वह अपने आपे में नहीं था उसने उसे मरवाने का हुक्म दे दिया। उसकी कब्र पर बार बार हल चलवाया गया।

अपनी सातों रानियों को वह वापस अपने महल में ले आया और फिर सब लोग खुशी खुशी रहे।

# 11 एक चिड़िया और एक कौआ[53]

एक बार एक चिड़िया और एक कौए में यह समझौता हुआ कि वे लोग अपने शाम के खाने में खिचड़ी[54] खायेंगे। सो चिड़िया चावल ले आयी और कौआ दाल ले आया। अब चिड़िया को खिचड़ी पकानी थी।

चिड़िया ने खिचड़ी पकायी। जब खिचड़ी तैयार हो गयी तो कौआ अपना हिस्सा लेने के लिये आ खड़ा हुआ।

चिड़िया ने उसकी तरफ देखते हुए डॉट कर कहा — "क्या कभी किसी ने इतने गन्दे आदमी को खाना के लिये बैठते हुए सुना है जितने कि तुम हो। तुम्हारा सारा शरीर काला है और तुम्हारा सिर तो ऐसा है जैसे कि राख से ढका हुआ हो। अपने भले के लिये पहले किसी तालाब में नहा कर आओ तब खिचड़ी खाना।"

चिड़िया के उसे गन्दा कहने पर कौए को थोड़ा गुस्सा आ गया पर लड़ने से तो अच्छा था कि उसकी बात मान ली जाये सो वह एक तालाब के पास गया और उससे बोला —

आपका नाम तालाब है जनाब पर मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के मुझे थोड़ा पानी दीजिये
क्योंकि अगर आप मुझे पानी दे देंगे तो मैं उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
फिर मैं खिचड़ी खा सकूँगा हालॉकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहॉ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

---

[53] The Sparrow and the Crow (Tale No 11)

[54] Any kind of pulse and rice, normally in equql quantity, cooked together with some spices and butter

लेकिन तालाब बोला — "मैं तुम्हें पानी जरूर दूँगा। पर पहले तुम हिरन के पास जाओ और उससे उसका एक सींग माँग कर लाओ। तब तुम उससे एक सुन्दर सी छोटी सी नाली खोद सकते हो जिसमें साफ और ताजा पानी बह कर आयेगा।"

सो वह कौआ उड़ कर एक हिरन के पास पहुँचा और उससे बोला —

आपका नाम हिरन है जनाब और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे अपना एक सींग दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं उससे एक नाली खोद सकता हूँ
जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

इस पर हिरन बोला — "मैं आपको यकीनन अपना एक सींग दे दूँगा पर पहले आप किसी गाय के पास जाइये और मेरे पीने के लिये थोड़ा सा दूध ले कर आइये। उसे पी कर मैं मोटा हो जाऊँगा जिससे मुझे अपने सींग टूटने का दर्द ज़्यादा महसूस नहीं होगा।"

कौआ उड़ता हुआ एक गाय के पास पहुँचा और उससे बोला —

आपका नाम गाय है मैम और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे अपना थोड़ा सा दूध दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगी तो उसे ले जा कर हिरन को दूँगा
हिरन को उसको पी कर अपना सीग तोड़ने में कम दर्द होगा

और वह मुझे अपना सींग दे देगा
सींग से मैं एक नाली खोदूँगा जिसमें मैं पानी भरूँगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

इस पर गाय बोली — "जनाब मैं आपको दूध दे तो दूँगी पर पहले आप मेरे खाने के लिये घास ला कर दें। क्या कभी आपने किसी गाय को बिना घास खाये हुए दूध देते सुना है?"

सो कौआ उड़ता हुआ घास के पास गया और उससे बोला —

आपका नाम घास है मैम और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे थोड़ी सी घास दे दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगी तो मैं उसे ले जा कर मैम गाय को खाने के लिये दूँगा
मैम गाय मुझे अपना दूध देंगी जिसे पी कर हिरन मुझे अपना एक सींग देगा
सींग से मैं तालाब से एक नाली खोद सकता हूँ जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालाँकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहाँ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

घास बोली — "यकीनन मैं तुम्हें घास तो दे दूँगी पर पहले तुमको एक लोहार के पास जा कर एक हँसिया बनवा कर लाना पड़ेगा तभी तुम मेरी घास काट सकोगे। क्योंकि घास को अपने आप कटते किसने सुना है।"

कौआ उड़ते उड़ते एक लोहार के पास पहुँचा। उसने लोहार से कहा —

आपका नाम लोहार है जनाब और मेरा नाम कौआ है
मेहरबानी कर के आप मुझे एक हॅसिया बना दें
क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे तो मैं उससे घास काटूँगा
घास ले जा कर मैं मैम गाय को उनके खाने के लिये दूँगा
फिर मैम गाय मुझे अपना दूध देंगी जिसे पी कर हिरन मुझे अपना एक सींग देगा
सींग से मैं तालाब से एक नाली खोद सकता हूँ जिसमें पानी भर जायेगा
फिर मैं बढ़िया खिचड़ी खाने के लिये उसमें अपनी चोंच और पैर धो लूँगा
हालॉकि मुझे पता नहीं कि चिड़िया का क्या मतलब था
क्योंकि मुझे यकीन कि जहॉ तक कौओं का सवाल है मैं बिल्कुल साफ हूँ

लोहार बोला — "खुशी से जनाब। अगर आप मेरी भट्टी में आग जला दें और उसको धौंकनी से हवा दे दें तो।

सो कौए ने उसकी भट्टी में आग जलायी और धौंकनी से उस आग को हवा दे कर तेज़ किया। जब वह ऐसा कर रहा था तो वह बेचारा बीच भट्टी में जा पड़ा और जल कर मर गया।

और बस यही उसका अन्त था। चिड़िया ने सारी खिचड़ी खाली।

# 12 एक चीता, एक ब्राह्मण और एक गीदड़[55]

एक बार की बात है कि एक चीता एक शिकारी के जाल में पकड़ा गया। शिकारी ने उसे अपने पिंजरे में बन्द कर लिया। शेर ने उसके डंडों में से निकलने की बहुत कोशिश की पर वह किसी भी तरह उसमें से बाहर नहीं निकल सका। और जब वह किसी भी तरह से बाहर नहीं निकल सका तो गुस्से और दुख के मारे इधर उधर लोटने लगा और काटने लगा।

इत्तफाक से उधर से एक ब्राह्मण गुजर रहा था तो वह उससे बोला — "ए ब्राह्मण। ओ भले आदमी। मेहरबानी कर के मुझे इस पिंजरे में से बाहर निकालो।"

ब्राह्मण नम्रता से बोला — "नहीं भाई नहीं। अगर मैंने तुम्हें यहाँ से निकाल दिया तो तुम मुझे निकलते ही खा जाओगे।"

चीते ने कई कसमें खायीं कि वह ऐसा नहीं करेगा। वह बोला — "बल्कि मैं तो हमेशा तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा और तुम्हारे नौकर की तरह से तुम्हारी सेवा करूँगा।"

जब चीता उसके सामने बहुत रोया बहुत गिड़गिड़ाया तो ब्राह्मण का दिल पिघल गया। वह उस पिंजरे का दरवाजा खोलने पर राजी हो गया।

---

[55] The Tiger, the Brahman and the Jackal (Tale No 12)

पिंजरे का दरवाजा खुलते ही चीता उसमें से बाहर आ गया और उस ब्राह्मण को पकड़ लिया। उसको पकड़ कर वह बोला — “तुम कितने बेवकूफ हो जो तुमने मुझे पिंजरे में से बाहर निकाल दिया। अब मुझे तुम्हें खाने से कौन रोक सकता है। क्योंकि इतने समय से इसमें बन्द रहने की वजह से तो मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।”

ब्राह्मण ने उससे अपनी जान की कई बार भीख माँगी तो उसको केवल एक वायदा मिला कि वह चीते के इस फैसले को ठीक बताने के लिये तीन लोगों से पूछेगा। अगर वे कह देंगे कि हाँ चीता ठीक कर रहा है तब तो वह उसको खा लेगा नहीं तो वह उसे छोड़ देगा।

ब्राह्मण ने सबसे पहले एक पीपल का पेड़ चुना और उससे पूछा कि वह इस बारे में क्या सोचता था। पीपल के पेड़ ने कुछ गुस्से से कहा — “तुम इसकी क्या शिकायत करते हो। क्या जो भी इधर से गुजरता है मैं उसको अपनी छाया नहीं देता पर वे मेरे साथ क्या क्या करते हैं। वे मेरी शाखाऐं तोड़ तोड़ कर अपने जानवरों को खिलाते हैं। इसलिये शिकायत करने की कोई जरूरत नहीं। आदमी बनो।”

ब्राह्मण दुखी दिल से सोचते हुए थोड़ा और आगे बढ़ा तो उसको एक भैंस दिखायी दी जो कुँए से पानी निकालने के लिये पहिया चला रही थी। उससे पूछने पर उससे भी उसको कोई बहुत अच्छा जवाब नहीं मिला।

क्योंकि वह बोली — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो जो किसी से भलाई की आशा रखते हो। मुझे ही देखो। जब मैं उनको दूध देती थी तब वे मुझे बिनौला और तेल की रोटी खिलाते थे और आज जब मैं उनको दूध नहीं दे पा रही हूँ तो उन्होंने मुझे यहाँ जोत रखा है और खाने के लिये मुझे बेकार की चीज़ें देते हैं।"

ब्राह्मण यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने फिर सड़क से उसकी राय पूछी तो सड़क बोली — "जनाब। आप भी कितने

बेवकूफ हैं जो किसी से किसी चीज़ की आशा रखते हैं। मुझे देखिये मैं सबके लिये कितनी फायदे की चीज़ हूँ फिर भी सब अमीर हो या गरीब बड़ा हो या छोटा कोई मुझे कुछ भी नहीं देता और बल्कि मुझे रौंदते हुए चला जाता है। इतना ही नहीं वे मेरे ऊपर अपने पाइप की राख और अनाज का भूसा भी बिखेरते जाते हैं।"

यह सुन कर ब्राह्मण बहुत दुखी हो कर वापस लौट पड़ा। वापस आते समय रास्ते में उसको एक गीदड़ मिल गया। उसने ब्राह्मण को पुकार कर कहा — "क्या बात है ब्राह्मण देवता। आप तो ऐसे दुखी लग रहे हैं जैसे कोई मछली पानी से बाहर निकालने पर दुखी हो जाती हो।"

ब्राह्मण ने उसको जो कुछ भी उसके साथ हुआ था अपनी सारी कहानी सुना दी।

जब वह अपनी सारी कहानी सुना चुका तो गीदड़ बोला — "बड़ी अजीब सी बात है। बात कुछ समझ में नहीं आयी क्योंकि सब कुछ इस तरह से आपस में मिल कर गड्ड मड्ड हो गया है कि मुझे इसका ओर छोर ही पता नहीं चल रहा है। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो क्या आप इसे मुझे दोबारा सुनाना पसन्द करेंगे।"

ब्राह्मण ने उसे सब कुछ फिर से सुना दिया पर गीदड़ ने अपना सिर एक बार फिर ना में हिलाया जैसे उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया हो।

वह दुखी हो कर बोला — "यह सब मेरे दिमाग में कुछ बैठ नहीं रहा। यह मेरे एक कान से अन्दर जा रहा है और दूसरे से बाहर निकले जा रहा है। मैं उस जगह जाना चाहता हूँ जहाँ यह सब हुआ था। तब शायद मैं कुछ फैसला कर सकूँ।"

सो दोनों चीते के पिंजरे के पास आये। चीता अभी भी वहाँ खड़ा खड़ा ब्राह्मण का इन्तजार कर रहा था और अपने दाँत किटकिटा रहा था और पंजों से जमीन खुरच रहा था।

जंगली जानवर गुस्से से बोला — "मैं तुम्हारा बहुत देर से इन्तजार कर रहा हूँ। तुमने तो बहुत देर लगा दी। अब हमको अपना खाना खाना शुरू कर देना चाहिये।"

बदकिस्मत ब्राह्मण यह सुन कर डर गया उसके घुटने काँपने लगे "हमारा खाना। कितनी अच्छी तरह से कहा है इसने यह।"

ब्राह्मण बोला — "जनाब आप मुझे पाँच मिनट दें ताकि मैं यहाँ खड़े इस गीदड़ को सारा मामला समझा सकूँ। इसकी समझ ज़रा कमजोर है।"

चीता राजी हो गया। ब्राह्मण ने अपनी कहानी फिर से शुरू की। उसने अबकी बार कोई बात नहीं छोड़ी बल्कि उसे जितना बढ़ा चढ़ कर वह उसे बता सकता था उसने बताया।

बेचारा गीदड़ अपने पंजे मरोड़ते हुए बोला — "उफ़ मेरा बेचारा छोटा सा दिमाग। उफ़। मैं देखना चाहता हूँ कि यह सब कैसे शुरू हुआ। तुम पिंजरे में थे जब चीता यहाँ से गुजरा।"

चीता चिल्लाया — "उफ़ तुम कितने बेवकूफ हो। पिंजरे में वह नहीं मैं था।"

गीदड़ भी डर के मारे काँपने का बहाना करते हुए चिल्लाया — "हाँ हाँ मैं भी तो वही कह रहा हूँ कि मैं पिंजरे में था – नहीं नहीं। मैं पिंजरे में नहीं था। उफ़ मेरी अक्ल को क्या हो गया है। अच्छा अच्छा चीता ब्राह्मण के अन्दर था और पिंजरा इधर से गुजर रहा था।

अरे नहीं नहीं। यह भी ठीक नहीं है। खैर आप मेरी चिन्ता न करें आप अपना खाना खाना शुरू करें क्योंकि मैं इस बात को कभी समझ ही नहीं सकता।"

गीदड़ की बेवकूफी पर गुस्सा होते हुए चीता चिल्लाया — "तुम समझोगे कैसे नहीं। मैं तुम्हें समझाता हूँ। देखो मैं चीता हूँ।"

गीदड़ डरते हुए बोला — “ठीक है माई लौर्ड।”

चीता आगे बोला — “और यह ब्राह्मण है।”

“है माई लौर्ड।”

चीता आगे बोला — “और यह पिंजरा है।”

“है माई लौर्ड।”

चीता फिर बोला — “और मैं पिंजरे में अन्दर था। आयी बात समझ में।”

गीदड़ डर कर बोला — “हॉ – नहीं – माई लौर्ड।”

चीता अबकी बार बहुत ज़ोर से चिल्ला कर बोला — “जब मैं कह रहा हूॅ कि मैं था तो मैं था। इतनी ज़रा सी बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती।”

गीदड़ बोला — “जी। पर जनाब आप पिंजरे में घुसे कैसे।”

चीता बोला — “अरे मैं कैसे घुसा? क्यों, जैसे घुसते हैं।”

गीदड़ बड़ी दीन सी आवाज में बोला — “पर जनाब इसमें घुसते कैसे हैं।”

अब तक चीते का धीरज बिल्कुल खत्म हो चुका था। वह कूद कर पिंजरे में जा बैठा और बोला — “इस तरह से। अब तुम्हारी समझ में आया कि मैं इसमें कैसे घुसा।”

गीदड़ मुस्कुरा कर बोला — “यह तो बिल्कुल ठीक है।” कह कर उसने जल्दी से पिंजरे का दरवाजा बन्द कर दिया।

वह आगे बोला — "अगर आप मुझे आगे कुछ कहने का मौका दें तो मैं अब यह कहना चाहूँगा कि अब यह मामला ऐसा ही रहेगा जैसा कि पहले था।"

# 13 मगरों का राजा[56]

एक बार की बात है कि एक किसान अपने खेतों को देखने के लिये गया जो एक नदी के पास थे। उसको वहाँ जा कर यह देख कर बहुत दुख हुआ कि उसके गेंहू के नर्म नर्म पेड़ों को कई मगर कुचल ही नहीं गये थे बल्कि काफी बर्बाद भी कर गये थे। ये मगर उसकी फसल के बीच में आराम से ऐसे पड़े हुए थे जैसे लकड़ी के लट्ठे पड़े हुए हों।

यह देख कर उसको बहुत ज़ोर का गुस्सा आ गया। उसने उनसे कहा कि वे अपने रहने की जगह पानी में चले जायें। पर वे वहाँ से जाना तो दूर बल्कि और उस पर हँस दिये।

रोज यही होता रहा। किसान रोज ही मगरों को अपने खेतों में आराम करता हुआ पाता और जब वह उनसे जाने के लिये कहता तो वे वहाँ से जाने की बजाय उस पर हँसते। यह देख कर एक दिन उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया।

उसने उनको वहाँ से हटाने की बहुत कोशिश की पर जब वे नहीं माने तो उसने उनको पत्थर मार कर भगाने की कोशिश की। इस पर मगरों को भी गुस्सा आ गया। वे गुस्से में भर कर उसकी तरफ दौड़े। उनको इस तरीके से आता देख कर किसान डर कर काँप गया और उनसे अपनी जान की भीख माँगने लगा।

---

[56] The King of the Crocodiles (Tale No 13)

यह देख कर उनमें से जो सबसे बड़ा मगर था वह बोला — “हम न तो तुम्हें और न तुम्हारे नये नये गेहूँ को कोई नुकसान पहुँचायेंगे अगर तुम अपनी बेटी की शादी हमसे कर दो तो। पर अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम तुम्हें तुम्हारे हमारे ऊपर पत्थर फेंकने के लिये खा जायेंगे।”

किसान की पहले तो समझ में ही नहीं आया कि वह इसका क्या जवाब दे पर अपनी जान बचाने की खातिर वह मगरों की बात मानने पर राजी हो गया।

पर जब वह घर लौटा और उसने अपनी पत्नी को बताया कि वह वहाँ क्या कर के आया था तो उसकी पत्नी बहुत दुखी हुई। क्योंकि उनकी बेटी चाँद सी सुन्दर थी और उसकी सगाई एक बहुत ही अमीर घर में हो चुकी थी।

सो किसान की पत्नी ने अपने पति से विनती की कि वह मगरों से किये गये वायदे पर कोई ध्यान न दे और अपनी बेटी की शादी ऐसे कर दे जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

किसान राजी हो गया पर जब शादी का दिन पास आया तो दुलहा मर गया और इस तरह से वह मामला हमेशा के लिये खत्म हो गया।

पर किसान की बेटी इतनी सुन्दर थी कि और दूसरे लोग उसका हाथ माँगने के लिये आने लगे। पर इस बार उसका होने वाला दुलहा एक लम्बी बीमारी से बीमार पड़ गया।

थोड़े में कहें तो उससे जो भी रिश्ता जोड़ना चाहता उसी के साथ कुछ न कुछ बुरा हो जाता तो किसान की पत्नी को भी यह मानना पड़ा कि इसमें जरूर मगरों का ही कुछ हाथ था।

सो उसकी सलाह मान कर किसान फिर नदी के पास गया और मगरों से विनती की कि वह उसको उसके वायदे से आजाद कर दें पर उन्होंने उसकी एक न सुनी।

बल्कि उन्होंने उसको बहुत ही खतरनाक धमकी दी कि अगर उसने अपना वायदा तुरन्त ही पूरा नहीं किया तो वे उसको और सख्त सजा देंगे।

यह सुन कर किसान बहुत दुखी हो कर अपने घर अपनी पत्नी के पास गया और उससे जा कर बताया कि उसके और मगर के बीच में क्या बात हुई थी। पर उसकी पत्नी फिर भी अपनी ज़िद पर ही अड़ी रही और अपनी बेटी को मगरों को देने से मना कर दिया।

इसके अगले दिन लड़की बेचारी गिर पड़ी और उसकी टॉग टूट गयी। तब किसान की पत्नी ने कहा — "लगता है कि ये शैतान राक्षस मगर तो हमारे घर को बर्बाद कर के ही दम लेंगे। उसको मरता हुआ देखने की बजाय तो अच्छा यही होगा कि हम उसकी शादी इस अजीब घर में ही कर दें।"

इस फैसले के अनुसार किसान अगले दिन फिर नदी पर गया और उन मगरों से कहा कि जब भी उनको ठीक लगे वे बारात ला कर उसकी बेटी को ले जायें।

अगले दिन कई मादा मगर दुलहिन के लिये एक थाली में बहुत सारे सुन्दर कीमती कपड़े और मेंहदी ले कर किसान के घर आयीं। वे बहुत ही नम्रता से बर्ताव कर रही थीं। उन्होंने सारी रस्में बड़े सुघड़ ढंग से पूरी कीं।

फिर भी सुन्दर दुलहिन की ऑखों में ऑसू आ गये और वह रो कर बोली — "मॉ क्या तुम मेरी शादी एक नदी में कर रही हो वहॉ तो मैं डूब जाऊॅगी।"

ठीक समय पर दुलहिन की बारात आयी। सारा गॉव उसकी शादी का इन्तजाम देख कर आश्चर्यचकित था। लोगों ने इतने सारे मगर पहले कभी नहीं देखे थे। कुछ मगर वाद्यों पर संगीत बजा रहे थे। दूसरे मगर बहुत सारी थालियों में मिठाई ले कर आये थे।

सारे मगरों ने बहुत कीमती कपड़े पहन रखे थे और इन सबके बीच था सोने और जवाहरातों से दमकता मगरों का राजा।

इस सबको देख कर दुलहिन को थोड़ा सन्तोष हुआ पर जब उसको सुन्दर सी दुलहिन वाली पालकी में बिठाया गया तो वह फिर से बहुत रोयी। फिर वे सब नदी के किनारे चले।

जब वे सब नदी के किनारे आ गये तो मगरों ने बेचारी दुलहिन को पानी में खींच लिया। लड़की ने यह सोचते हुए पानी में न जाने के लिये बहुत कोशिश की कि वह पानी में डूब जायेगी। वह बहुत ज़ोर से चीखी भी पर लो देखो जैसे ही उसके पैरों ने पानी को छुआ तो वह तो उसकी ऑखों के सामने ही दो हिस्सों में बॅट गया।

अब पानी दोनों तरफ ऊँचा उठा हुआ था और बीच में नदी की तली साफ दिखायी दे रही थी जहाँ जा कर उसकी बारात गायब हो गयी। दुलहिन का पिता जो उसके साथ वहाँ तक आया था वहीं किनारे पर ही खड़ा रह गया और इस शानदार दृश्य को देखता का देखता ही रह गया।

कुछ महीने बीत गये मगरों की कोई खबर नहीं मिली। किसान की पत्नी बहुत रोयी क्योंकि उसको लग रहा था कि उसने अपनी बेटी खो दी है। उसने तो यह बात सबसे कह भी दी थी कि उसकी बेटी पानी में डूब गयी थी और उसके पति की यह कहानी कि नदी का पानी उन सबको रास्ता देने के लिये दो हिस्सें में बँट गया था उसके अपने दिमाग की उपज थी।

जब मगरों का राजा अपनी पत्नी के साथ वह जगह छोड़ रहा था तो उसने लड़की के पिता को यह कहते हुए एक ईंट का टुकड़ा दिया था — "जब कभी भी आप अपनी बेटी को देखना चाहें तो इस नदी पर आ जाना और यह ईंट का टुकड़ा नदी में जितनी दूर तक फेंक सकते हों वहाँ तक फेंक देना तो आप अपनी बेटी को देख पायेंगे।"

किसान ने जब देखा कि उसकी पत्नी बहुत दुखी है तो मगरों के राजा की यह बात याद करते हुए उसने एक दिन अपनी पत्नी से कहा — "क्योंकि तुम अपनी बेटी के दुख में बहुत दुखी हो रही हो

इसलिये मैं खुद जा कर देख कर आता हूँ कि वह ज़िन्दा और ठीक है कि नहीं।"

उसने वह ईंट का टुकड़ा लिया और नदी की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने ईंट का टुकड़ा नदी में जितना दूर उससे हो सकता था फेंक दिया। तुरन्त ही उसके पैरों के पास से नदी का पानी दो हिस्सों में बँट गया और उसमें नदी की तली तक एक सूखा रास्ता निकल आया।

वह रास्ता बहुत ही आकर्षक लग रहा था। उस पर साफ रेत बिछी हुई थी और उसके दोनों तरफ फूल लगे हुए थे। किसान बेहिचक उस रास्ते पर चल पड़ा।

चलते चलते वह एक बहुत ही शानदार महल के पास आ गया। उसकी छत सोने की थी। चमकते हीरों की दीवारें थीं। उसके चारों तरफ बड़े बड़े पेड़ थे सुन्दर बागीचे थे। उसके दरवाजे के आगे एक सन्तरी इधर से उधर चक्कर काट रहा था।

किसान ने सन्तरी से पूछा — "यह महल किसका है?"

सन्तरी बोला — "मगरों के राजा का।"

किसान ने सोचा "चलो अच्छा है कि मेरी बेटी इतने सुन्दर महल में रहती है। काश उसका पति इससे आधा भी सुन्दर होता।"

उसने सन्तरी से पूछा — "क्या मेरी बेटी अन्दर है?"

सन्तरी ने पूछा — "वह यहाँ क्या कर रही होगी?"

किसान बोला — “उसकी शादी मगरों के राजा से हुई है। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।”

सन्तरी यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — “बहुत सुन्दर कहानी है। तुम्हारा कहना है कि मेरे मालिक ने तुम्हारी बेटी से शादी की है? हा हा हा।”

किसान की बेटी इत्तफाक से अपने महल की एक खिड़की में बैठी थी और अपने पति के शिकार से लौटने का इन्तजार कर रही थी। वह दिन की तरह खुश थी। क्योंकि तुमको मालूम होना चाहिये कि मगरों का राजा अपने राज्य में सबसे सुन्दर राजकुमार था। केवल जब वह नदी के किनारे जाता था तभी वह मगर का रूप लेता था।

उसकी बेटी इतने सुन्दर शानदार महल में रहती थी इतने सुन्दर राजकुमार के साथ रहती थी कि उसको अपने घर की याद भी नहीं आती थी पर अब कोई अजीब सी आवाज सन्तरी से बात करते सुन कर उसकी याद जाग गयी और उसने अपने पिता की आवाज पहचान ली।

उसने खिड़की से बाहर झाँका तो उसने अपने पिता को उन्हीं गरीबी के कपड़ों में खड़े देखा। उसकी बहुत इच्छा हुई कि वह जल्दी से जा कर अपने पिता से लिपट जाये पर वह अपने पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकी। उसने उसको बाहर जाने के

लिये और किसी को भी महल के अन्दर बुलाने के लिये मना कर रखा था।

वह बस इतना ही कर सकी कि वह खिड़की के बाहर झुक सकी और उसको पुकार कर कह सकी — "ओ मेरे प्यारे पिता जी, मैं यहाँ हूँ। मेहरबानी कर के तब तक इन्तजार कीजिये जब तक मगरों के राजा मेरे पति आते हैं। तब मैं उनसे पूछ कर आपको अन्दर बुलाती हूँ। मैं उनसे बिना पूछे बाहर नहीं आ सकती।"

हालाँकि पिता अपनी बेटी को देख कर बहुत खुश हुआ पर उसे इस बात का आश्चर्य भी नहीं हुआ कि वह अपने पति से डरती थी। वह उसके पति का बाहर बड़े धैर्य से इन्तजार करता रहा।

कुछ ही देर में घुड़सवारों का एक झुंड महल में घुसा। हर आदमी सिर से पैर तक चाँदी की प्लेटों से बने जिरहबख्तर[57] से ढका हुआ था। उनके बीच में एक शानदार राजकुमार सिर से पाँव तक चमकते हुए सोने का जिरहबख्तर पहने हुए चला आ रहा था। वह बहुत सुन्दर और एक शानदार राजकुमार था जैसा शायद ही कभी किसी ने देखा हो।

किसान उस सोने का जिरहबख्तर पहने आदमी के पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "ओ राजा आप मुझसे खुश रहें क्योंकि मैं एक

[57] Translated for the word "Armor" – a covering to cover the body during the fight to protect one;s body. Normally it is made of iron.

गरीब आदमी हूँ जिसकी बेटी मगरों के एक भयानक राजा ने भगा ली है।"

सोने के जिरहबख्तर पहने वह राजकुमार हँसा और बोला — "मैं ही वह मगरों का राजा हूँ। आपकी बेटी एक बहुत अच्छी और आज्ञा मानने वाली लड़की है। वह आपको देख कर बहुत खुश होगी।"

उसके बाद वहाँ बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। पर जब कुछ दिन हँसी खुशी में बीत गये तो किसान कुछ बेचैन हो गया। उसने उससे अपनी बेटी को कुछ दिन के लिये अपने साथ ले जाने की प्रार्थना की ताकि उसकी पत्नी को उसे देख कर यह विश्वास हो जाये कि उनकी बेटी खुश और तन्दुरुस्त थी।

पर मगरों के राजा ने मना कर दिया — "अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। पर अगर आप चाहें तो मैं आपको यहाँ कुछ जमीन और एक घर दे सकता हूँ जिसमें आप हमारे पास रह सकते हैं।"

किसान ने कहा कि वह अपनी पत्नी से पूछ कर बतायेगा और अपने घर वापस लौट गया। मगरों के राजा ने उसको कई सारे ईंट के टुकड़े दे दिये थे जिनको वह नदी में फेंक कर उसे दो हिस्सों में बाँट सकता था।

घर पहुँच कर उसने अपनी बेटी का हाल अपनी पत्नी को बताया और उसको मगरों के राजा ने उससे जो कुछ कहा था वह भी बताया। तो पहले तो उसकी पत्नी मगरों के राज्य में रहने को

तैयार नहीं हुई पर वह उसके घर जाने के लिये तैयार हो गयी। बाद में तो वह उस नदी की इतनी शौकीन हो गयी कि वह अक्सर अपनी बेटी रानी को देखने के लिये जाने लगी।

और फिर उसके बाद तो वे दोनों फिर कभी किनारे लौटे ही नहीं। वे हमेशा अपने दामाद मगरों के राजा के साथ मगरों के राज्य में ही रहे।

# 14 एक छोटी टखने की हड्डी[58]

एक बार की बात है कि एक लड़का था जिसके माता पिता मर गये थे सो वह अपनी चाची के पास रहने के लिये चला गया था। चाची ने उसे अपनी भेड़ें चराने का काम दे दिया था। यह छोटा बच्चा सारा दिन नंगे पैर मैदानों में अपनी बाँसुरी बजाता घूमता फिरता था जिनमें कोई सड़क भी नहीं होती थी।

एक दिन वहाँ एक भेड़िया आ गया और उसने भूखी निगाहों से इस छोटे लड़के की और उसकी मोटी भेड़ों की तरफ देखा और बोला — "ओ छोटे लड़के। मैं तुझे खाऊँ या तेरी मोटी भेड़ खाऊँ?"

लड़के ने उसे बहुत ही नम्रता से जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम मिस्टर भेड़िये। मुझे इस बारे में अपनी चाची से पूछना चाहिये।"

सो सारे दिन तो वह अपनी बाँसुरी बजाता घूमता रहा और शाम को जब वह अपनी भेड़ों के झुंड को घर ले कर आया तो वह अपनी चाची के पास गया और उससे कहा — "चाची आज एक बहुत बड़ा भेड़िया आया था वह मुझसे यह पूछ रहा था कि "मैं तुमको खाऊँ या तुम्हारी मोटी भेड़ को खाऊँ?" तुम ही बताओ वह किसको खाये।"

---

[58] Little Anklebone (Tale No 14)

उसकी चाची ने पहले अपने छोटे गड़रिये[59] की तरफ देखा फिर अपनी मोटी भेड़ की तरफ देखा और चालाकी से बोली — "किसको खाऊँ? अरे उसको तो तुझे ही खाना चाहिये। और किसको?"

सो अगली सुबह जब लड़का अपनी भेड़ों को ले कर मैदान में पहुँचा और खुशी से अपनी बाँसुरी बजायी तो कुछ देर में ही भेड़िया वहाँ आ गया। उसको देख कर उसने अपनी बाँसुरी तो नीचे रख दी और उस जंगली जानवर के सामने पहुँच कर बोला — "मिस्टर भेड़िये अगर आपको कुछ खाना ही है तो मैंने अपनी चाची से पूछ लिया है आप मुझे खा लें।"

अब यह भेड़िया जैसे कि सब जंगली भेड़िये हमेशा होते हैं बच्चे की यह बात सुन कर उसको उस छोटे नंगे पैर वाले बच्चे पर एक पल को तो दया आ गयी जो इतनी सुरीली और मीठी बाँसुरी बजाता था पर फिर अपनी भूख को याद करके वह उससे बड़ी नम्रता से बोला — "जब मैं तुम्हें खा लूँ तब क्या मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता हूँ?"

छोटा गड़रिया बोला — "मिस्टर भेड़िये धन्यवाद। अगर आप मुझ पर इतने ही मेहरबान हैं तो जब आप मेरी हड्डियाँ चुनें तो मेरे टखने की हड्डी को एक धागे में पिरो लें और उसे उस पेड़ की

[59] Translated for the word "Shepherd" – who grazes sheeps or goats.

किसी शाख पर टॉग दें जो दूर तालाब के किनारे रोता रहता है।[60] मैं आपका बहुत कृतज्ञ रहूँगा।”

सो भेड़िये ने छोटे गड़रिये को खा लिया उसकी हड्डियॉ उठायीं और उसके टखने की हड्डी को एक धागे में बॉध कर उस पेड़ की एक शाख पर लटका दिया जहॉ वह धूप में नाचती और झूलती रही।

अब एक दिन तीन डाकू महल में चोरी कर के उस रास्ते से जा रहे थे तो वे उसी पेड़ के नीचे बैठ कर अपनी लूट का बॅटवारा करने लगे। जैसे ही उन्होंने सोने की थालियॉ जवाहरात और दूसरी कीमती चीज़ें तीन ढेरों में लगा कर रखीं कि एक गीदड़ चिल्ला उठा।

बच्चों क्या तुमको पता है कि डाकू लोग गीदड़ के चिल्लाने को एक तरह की चेतावनी समझते हैं। इत्तफाक से उसी पल छोटी टखने की हड्डी के धागे ने उनको मारा और वह हड्डी उन डाकुओं के सरदार के सिर पर गिर पड़ी।

उस डाकू ने सोचा कि शायद किसी ने उसको कोई कंकरी मारी है सो वह चिल्लाया “भागो भागो किसी ने हमें देख लिया है।” और यह कह कर वह वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग लिया। उसको भागता देख कर उसके साथी भी अपना सारा खजाना वहीं छोड़ कर उसके पीछे पीछे भाग लिये।

---

[60] Ban tree – a very common tree in Punjab

यह देख कर छोटे टखने की हड्डी ने सोचा कि अब मैं अच्छी बढ़िया ज़िन्दगी बिताऊँगा। सो उसने वह सारा खजाना इकट्ठा किया और एक पेड़ के नीचे बैठ गया जिसकी शाखाऐं तालाब के पानी के ऊपर जाती थीं।

फिर उसने एक नयी बॉसुरी पर इतनी मीठी धुन बजाना शुरू किया कि जंगल के सारे जानवर आसमान की सारी चिड़ियें और तालाब की सारी मछलियॉ उसको सुनने के लिये वहॉ जमा हो गयीं।

छोटे टखने की हड्डी ने संगमरमर के बने कुछ तसले[61] तालाब के किनारे रख दिये थे ताकि जानवर उनमें से पानी पी सकें।

शाम को हिरनियॉ मादा चीता मादा भेड़िया उसके चारों तरफ इकट्ठा हो जातीं ताकि वह उनका दूध निकाल सके। उनका वह दूध पहले वह खुद पेट भर कर पीता बाकी बचा हुआ तालाब में डाल देता जब तक कि वह एक दूध का तालाब नहीं बन गया।

फिर वह छोटा टखने की हड्डी उस दूध के तालाब के पास बैठ जाता और अपनी बॉसुरी बजाया करता।

एक दिन एक बुढ़िया पानी भरने जा रही थी कि वह उधर से गुजरी। उसने छोटे टखने की हड्डी की बॉसुरी की मीठी धुन सुनी तो उसके पीछे पीछे वह उस दूध के तालाब के पास आ पहुॅची जहॉ छोटा टखने की हड्डी बैठा हुआ बॉसुरी बजा रहा था।

---

[61] Translated for the word “Basin”. See its picture above.

वहाँ आ कर उसने देखा कि वहाँ तो जंगल के बहुत सारे जानवर आसमान की चिड़ियें और तालाब की मछलियाँ सब बैठे हुए उसकी बाँसुरी सुन रहे हैं। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने सुना कि छोटे टखने की हड्डी ने उससे कहा “माँ जी भर लीजिये अपना घड़ा भर लीजिये। यहाँ जो कोई भी आता है वह दूध पी कर ही जाता है।”

यह सुन कर बुढ़िया ने अपना घड़ा दूध से भर लिया और खुश होती हुई अपने घर चली गयी। पर जब वह जा रही थी तो बीच रास्ते में उसको वहाँ का राजा मिल गया जो शिकार करने निकला था और उस बिना रास्ते वाले मैदान में रास्ता भूल गया था। उसको प्यास भी बहुत लगी थी।

उस बुढ़िया को घड़ा ले जाते देख कर राजा ने उससे कहा — “माँ जी क्या आप मुझे थोड़ा सा पानी पिलायेंगी मुझे बहुत ज़ोर से प्यास लगी है।”

बुढ़िया बोली — “बेटे यह दूध है पानी नहीं। मैंने इसे पास के एक दूध के तालाब से लिया है।” फिर उसने राजा को वहाँ जो आश्चर्यजनक दृश्य देखा था उसके बारे में बताया। यह सुन कर उसने उस आश्चर्य को खुद देखने का फैसला किया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ एक दूध से भरा तालाब है। जंगल के जानवर आसमान की चिड़ियें और तालाब की

मछलियॉ चारों तरफ बैठे हैं और छोटा टखने की हड्डी उनके बीच में बैठा अपनी बॉसुरी से बड़ी मीठी धुन बजा रहा है।

उसको देखते ही उसके मुँह से निकला — “मुझे यह छोटा बॉसुरी बजाने वाला चाहिये चाहे इसको पाने के लिये मुझे मरना ही क्यों न पड़े।”

जैसे ही छोटे टखने की हड्डी ने राजा के ये शब्द सुने तो वह वहॉ से उठ कर भाग लिया। राजा भी उसके पीछे भागा। इससे पहले उसने इस तरह से पहले किसी का पीछा नहीं किया था।

छोटा टखने की हड्डी बहुत मोटे मोटे कॉटों और पत्तियों के बीच छिप कर बैठ गया पर राजा भी अपने उस छोटे से बॉसुरी बजाने वाले को पाने के लिये अपने इरादों में इतना पक्का था कि उसने कॉटों की कोई परवाह नहीं की और उनसे जख्मी होते हुए भी उसको वहॉ ढूँढता रहा।

आखिर वह उसको वहॉ मिल ही गया पर जैसे ही उसने अपने छोटे टखने की हड्डी को पकड़ा कि उसके ऊपर बहुत ही डरावने बादल छा कर गरजने लगे और बिजली कड़कने लगी। और नीचे हिरनियों की चीखने की आवाजें आने लगीं।

और इन सबसे ऊपर थी छोटे टखने की हड्डी की अपनी आवाज जो गा रही थी —

ओ बादलों तुम क्यों तूफान लाते हो
बेचारे टखने की हड्डी को तो घूमना पड़ता है

ओ हिरनियों तुम क्यों दूध दुहने वाले की परवाह करती हो
बेचारे टखने की हड्डी को तो अपना घर छोड़ना ही है

उसने यह गीत इतने मीठे और दिल को इतना छूने वाले सुर में गाया कि राजा का दिल उसके लिये दया से भर गया खास कर के जब उसने देखा कि वह तो केवल एक हड्डी का टुकड़ा था। उसने उसको छोड़ दिया और वह छोटा बाँसुरी बजाने वाला फिर से अपनी जगह यानी पेड़ के नीचे और तालाब के पास चला गया।

वह वहाँ अभी भी बैठता है और अपनी बाँसुरी बजाता है जबकि जंगल के जानवर आसमान की चिड़ियें और तालाब की मछलियाँ अभी भी उसके चारों तरफ बैठ कर उसका संगीत सुनते हैं।

कभी कभी अभी भी उस बिना सड़क के मैदान से लोग गुजरते हैं तो वे कहते है कि "देखो वह छोटा टखने की हड्डी अपनी बाँसुरी बजा रहा है जिसे बहुत दिन पहले एक भेड़िये ने खा लिया था।"

# 15 करीबी साथ[62]

एक दिन एक किसान अपने बैलों को ले कर अपना खेत जोतने के लिये गया। उसने अपने खेत का अभी एक ही चक्कर लगाया था कि न जाने कहाँ से एक चीता वहाँ आ गया। वह बोला — "किसान भाई सुखी रहो। आज की सुबह तुम कैसे हो?"

किसान उसको देख कर डर गया। डर से काँपता हुआ पर यह सोचते हुए कि इस समय चीते से नम्रता से बोलना अक्लमन्दी होगी वह धीरे से बोला — "आप भी सुखी रहें माई लौर्ड। मैं बहुत ठीक हूँ। पूछने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।"

चीता खुशी से बोला — "मुझे यह सुन कर बहुत खुशी हुई क्योंकि खुदा ने मुझे तुम्हारे ये दो बैल खाने के लिये भेजा है। मुझे मालूम है कि तुम एक खुदा से डरने वाले आदमी हो सो जल्दी करो और उनको अपने हल से अलग कर दो ताकि मैं उन्हें खा सकूँ।"

यह सुन कर किसान की हिम्मत लौट आयी क्योंकि उसे पता चल गया था कि यह मामला केवल बैलों को ही खाने का था उसको नहीं। वह बोला — "मेरे दोस्त। क्या तुमको यकीन है कि तुम कोई गलती नहीं कर रहे हो क्योंकि खुदा ने ही मुझे यहाँ यह खेत जोतने के लिये भेजा है।

[62] The Close Alliance (Tale No 15)

और यह तो सभी जानते हैं कि अगर किसी को अपना खेत जोतना हो तो उसे बैलों की जरूरत पड़ती है। शायद तुमको दोबारा खुदा के पास जाना चाहिये और फिर से यह मालूम करना चाहिये कि तुम्हें किसके बैल खाने हैं।"

चीता बोला — "अब इस समय देर करने का मौका नहीं है। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें इतना इन्तजार कराया। मैं तो उन्हें खाने के लिये तैयार हूँ बस तुम उनको अपने हल से खोल दो।"

इतना कह कर वह जंगली चीता अपने पंजे के नाखून तेज़ करने लगा और दाँत किटकिटाने लगा।

किसान ने उससे बहुत विनती की कि वह उसको बैलों को नहीं खा सकता। उसने उससे यह भी वायदा किया कि अगर वह उनको छोड़ देगा तो वह उसको एक मोटी जवान गाय खाने के लिये देगा जिसे उसकी पत्नी ने अपने आँगन में बाँध रखा है।

इस बात के लिये चीता राजी हो गया सो किसान ने जल्दी से अपने दोनों बैल खोले और उनको ले कर घर चल दिया। मेहनती और हमेशा काम में लगी पत्नी ने पति को जल्दी घर लौट कर आया देख कर उससे कहा — "अरे आलसी। तुम इतनी जल्दी घर आ गये और मेरा काम तो अभी शुरू ही हुआ है।"

तब किसान ने उसको बताया कि कैसे उसकी खेत पर चीते से मुलाकात हुई और उससे अपने बैल बचाने के लिये वह अपनी गाय का सौदा उससे कर आया था।

यह सुन कर तो उसकी पत्नी रोने लगी और बोली — “यह कहानी है न कि तुम अपने बैलों को बचाने के चक्कर में मेरी गाय को उसे देने का वायदा कर के आये हो। गाय चली जायेगी तो ज़रा सोचो हमारे बच्चे दूध कहाँ से पियेंगे। और मैं अपना खाना बिना मक्खन के कैसे बनाऊँगी।”

किसान बोला — “अच्छा अच्छा यह तो सब ठीक है पर बिना मक्की के रोटी कैसे बनेगी। साग सब्जी तो ठीक है और हम बिना दूध और मक्खन के तो काम चला लेंगे पर बिना रोटी के हमारा काम कैसे चलेगा। इसलिये तुम जल्दी से गाय खोलो और उसे मुझे ले जाने दो।”

पत्नी ने रोते हुए कहा — “तुम तो बहुत ही बड़े बेवकूफ हो। अगर तुम्हारे अन्दर ज़रा सी भी समझ होती तो तुम उस बेकार के चीते से बचने की कोई तरकीब सोचते।”

किसान गुस्से में बोला — “तो तुम सोच लो न।”

पत्नी बोली — “ठीक है मैं ही कुछ सोचती हूँ। पर अगर मैं सोचने का काम करूँगी तो करना उसे तुम्हीं को पड़ेगा। मैं दोनों काम नहीं कर सकती।

तुम वापस चीते के पास जाओ और उससे कहो कि गाय तुम्हारे साथ नहीं आ रही बल्कि तुम्हारी पत्नी उसे ले कर आ रही है। बस फिर मैं उसे देख लूँगी।”

किसान बहुत ही डरपोक किस्म का आदमी था। उसको यह विचार कि वह खाली हाथ चीते के पास जाये पूरा तो छोड़ो आधा भी नहीं जॅच रहा था। पर क्योंकि वह और कोई दूसरी तरकीब नहीं सोच पा रहा था इसलिये उसने वही किया जो उसकी पत्नी ने उससे करने के लिये कहा था।

जब वह चीते के पास आया तब भी चीता भूख के मारे अपने दॉत किटकिटा रहा था और अपने पंजों से जमीन खुरच रहा था। और जब उसने यह सुना कि अभी उसे अपने खाने के लिये और ज़्यादा इन्तजार करना पड़ेगा तो उसने गुर्राना शुरू कर दिया अपनी पूॅछ इधर उधर फटकारनी शुरू कर दी अपनी मूॅछें घुमानी शुरू कर दीं। यह देख कर किसान बेचारा तो डर के मारे कॉप गया।

उधर जब किसान घर से चला गया तो उसकी पत्नी अस्तबल में गयी और वहॉ से अपने एक घोड़े को लिया अपने पति के सबसे अच्छे कपड़े पहिने बड़ी ऊॅची सी पगड़ी बॉधी ताकि वह खूब लम्बी लग सके और उस घोड़े पर सवार हो कर खेत की तरफ चल दी जहॉ चीता उसका इन्तजार कर रहा था।

चलते चलते वह वहॉ तक आयी जहॉ से सड़क उसके खेत की तरफ मुड़ती थी। वहॉ उस मोड़ पर आ कर वह जितने ज़ोर से चिल्ला सकती थी उतनी ज़ोर से चिल्ला कर बोली — “खुदा मुझसे खुश हो। यहॉ मुझे एक चीता मिलने वाला है। क्योंकि मैंने चीते

का माँस कल से नहीं चखा है पर मेरी किस्मत देखो कि मुझे सुबह के नाश्ते में ही तीन चीते मिल गये।"

यह सुन कर और एक बोलने वाले घुड़सवार को तेज़ी से अपनी तरफ आते देख कर चीता इतना ज़्यादा डर गया कि उसने अपनी पूँछ घुमायी और अपने गीदड़ को पीछे छोड़ता हुआ जंगल की तरफ भाग गया। क्योंकि हर चीते का अपना एक गीदड़ होता है जो उसका खाने पर इन्तजार करता है और उसके खाने के बाद उसके खाने की हड्डियाँ साफ करता है।[63]

गीदड़ यह देख कर चिल्लाया — "जनाब आप कहाँ भागे जा रहे हैं?"

चीता हाँफते हुए बोला — "भाग यहाँ से भाग ओ गीदड़। एक शैतान घुड़सवार यहाँ खेत में भागा चला आ रहा है जो अपने नाश्ते में ही तीन चीते खा जाता है।"

गीदड़ खी खी कर के हँसा और बोला — "मालिक लगता है कि सूरज की रोशनी से आपकी आँखें चौंधिया गयी हैं। वह कोई घुड़सवार नहीं है वह तो किसान की पत्नी एक आदमी के वेश में है।"

चीता रुक कर बोला — "क्या तुमको पूरा यकीन है?"

[63] From the time immemorial the tiger has been supposed to be accompanied by a jackal who shows him his game and gets the leavings as his wages.

गीदड़ फिर बोला — “माई लौर्ड मुझे पूरा यकीन है। और अगर आपकी ऑखें सूरज की रोशनी से न चौंधियाई हुई हों तो आप उसके सिर के पीछे उसकी चोटी लटकती देख सकते हैं।”

डरपोक चीते ने फिर कहा — “पर तुम गलत भी तो हो सकते हो। देखने में तो वह एक शैतान घुड़सवार ही लगता था।”

गीदड़ बोला — “कौन डरता है उससे? आइये और उस स्त्री की वजह से अपना खाना मत छोड़िये।”

चीता जो दूसरे डरपोकों की तरह से शक्की था उसने फिर उससे बहस की — “पर तुमको मुझे धोखा देने के लिये रिश्वत भी तो दी गयी हो सकती है।”

गीदड़ ने खुश हो कर कहा — “तो चलिये न फिर हम दोनों साथ साथ चलते हैं।”

चीता चालाकी से बोला — “नहीं नहीं। तुम मुझे वहॉ ले जा कर वहॉ से भाग सकते हो।”

गीदड़ उसको तसल्ली देने के तौर बोला — “ठीक है अगर आप इतना ही डरते हैं तो हम आपस में एक दूसरे से अपनी पूछें बॉध लेते हैं तब तो मैं आपके साथ ही रहूँगा।”

इस बात पर चीता राजी हो गया। सो दोनों ने अपनी अपनी पूछें एक दूसरे की पूछों से बॉधीं और एक दूसरे के हाथों में हाथ डाल कर किसान की तरफ चल दिये।

उधर जब शेर भाग गया तो किसान और उसकी पत्नी वहाँ अकेले रह गये। वे अपनी इस चाल पर खुश थे जो किसान की पत्नी ने चीते पर खेली थी।

लेकिन यह क्या। चीते और गीदड़ का खुश खुश जोड़ा तो अपनी पूँछें आपस में बाँधे बहादुरी से उन्हीं की तरफ चला आ रहा था। यह देख कर तो किसान चिल्लाया — "भागो भागो हम तो मरे हम तो मरे।"

पर उसकी पत्नी ठंडे दिमाग से बोली — "अगर तुम अपना यह शोर मचाना बन्द करो तो ऐसा कुछ नहीं होगा। तुम्हारे इस शोर में तो मैं अपना कहा गया भी ठीक से नहीं सुन सकती।"

फिर उसने उन दोनों का तब तक इन्तजार किया जब तक वे उसके पास तक नहीं आ गये।

तब उसने उनसे नम्रता से कहा — "आपकी कितनी मेहरबानी है प्यारे मिस्टर गीदड़ जी कि आप मेरे लिये इतना मोटा चीता ले कर आये। मैं अपना हिस्सा खाने में एक पल की भी देर नहीं लगाऊँगी फिर बाकी बची हड्डियाँ आप खा लीजियेगा।"

जैसे ही चीते ने उसके ये शब्द सुने तो वह तो डर के मारे पागल हो गया और गीदड़ को भूल कर उलटे पैरों वहाँ से भाग लिया – पत्थरों के ऊपर से और झाड़ियों में हो कर।

गीदड़ बेकार में ही चिल्लाता रह गया कि वह रुक जाये पर उसका शोर तो चीते को और ज़्यादा डरा रहा था और वह डरपोक

भागा चला जा रहा था मैदानों से हो कर पहाड़ियों के ऊपर से नदी में तैर कर अपनी पूरी रफ्तार से। जब तक कि वह थक कर अधमरा नहीं हो गया। और गीदड़ तो इस दौड़ में जख्मी हो कर बिल्कुल मरे जैसा ही हो गया था।

इसलिये कभी डरपोक के साथ मत रहो।

# 16 दो भाई[64]

एक बार की बात है कि एक राजा था। उसके दो छोटे बेटे थे दोनों बहुत ही अच्छे थे। वे दोनों स्कूल जाते थे और वह सब सीखते थे जो एक राजा के बेटों को सीखना चाहिये।

पर जब वे अभी पढ़ ही रहे थे कि उनकी मॉ चल बसी। उनके पिता ने जल्दी ही दूसरी शादी कर ली। उनकी दूसरी मॉ उन बच्चों से बहुत जलती थी। और जैसा कि सौतेली मॉऐं अक्सर करती हैं उसने उन बेचारे दोनों बच्चों के साथ बुरा व्यवहार करना शुरू कर दिया।

उसने उनको बजाय गेहूॅ की रोटी खिलाने के जौ की रोटी देनी शुरू कर दी और ये जौ की रोटियॉ भी बिना नमक के बनायी जाती थीं। कुछ समय बाद ये रोटियॉ पुराने आटे की बनायी जाने लगीं जो खट्टा होता या फिर उसमें कीड़े पड़ गये होते थे। इस तरह से मामला खराब से और ज़्यादा खराब होता गया।

जब केवल इससे उसका मन नहीं भरा तो उसने उन बेचारे बच्चों को पीटना भी शुरू कर दिया। जब वे चिल्लाते तो वह राजा से उनकी शिकायत करती कि वे उसका कहना नहीं मानते थे। यह सुन कर वह भी गुस्सा हो जाता और फिर वह भी उनको पीटता।

---

[64] The Two Brothers (Tale No 16)

आखिर बच्चों को लगा कि उनको इसका कुछ इलाज करना ही पड़ेगा। उन्होंने आपस में कहा कि अब उनको घर से बाहर दुनियाँ में जा कर अपनी रोजी रोटी अपने आप ही कमानी चाहिये।

बड़ा भाई बोला "हॉ हमें अब ऐसा ही करना चाहिये। हम लोगों को यहॉ से तुरन्त ही निकल जाना चाहिये। हमें अब इस घर की रोटी और नहीं खानी।"

छोटा भाई अपने बड़े भाई से ज़्यादा होशियार था वह बोला — "नहीं भैया ऐसे नहीं। क्या तुम्हें वह कहावत याद नहीं "कहीं मत जाओ खाली पेट, चाहे हो माघ या फिर जेठ।"

सो उन्होंने अपनी उस दिन की रोटी खायी चाहे वह खराब ही थी और अपनी किस्मत आजमाने एक घोड़े पर चढ़ कर घर से बाहर निकल पड़े। कुछ समय तक तो वे बंजर जमीन पर चलते रहे फिर वे एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ गये।

इत्तफाक से उस समय एक मैना और एक तोता[65] उधर से उड़ कर जा रहे थे। वे भी उस पेड़ की एक शाख पर बैठ गये और आपस में लड़ने लगे कि कौन ज़्यादा अच्छी जगह पर बैठेगा।

मैना तोते को धक्का मारते हुए उस पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर बैठते हुए बोली — "मैंने ऐसी बदतमीजी कहीं नहीं देखी। मैं कितनी खास चिड़िया हूँ कि जो कोई मुझे खायेगा वह यकीनन वजीर बन जायेगा।"

[65] Translated for the words "Starling" and "Parrot"

तोता मैना को धक्का देता हुआ बोला — "तुम अपने से बेहतर लोगों को जगह देना सीखो क्योंकि जो आदमी मुझे खायेगा इसमें कोई शक नहीं कि वह राजा बन जायेगा।"

जो नर तोता मार कर खावे पेड़ के हेथ, कुछ संसार में ना धरे वह होगा राजा जेठ
जो मैना को मार खा, मन में राखे धीर, कुछ चिन्ता मन ना करे वह सदा रहेगा वजीर[66]

यह सुन कर दोनों भाइयों ने अपनी अपनी कमान पर अपने अपने तीर चढ़ा लिये और एक साथ निशाना लगाते हुए उन दोनों को मार दिया। वे दोनों एक साथ ही मर कर नीचे गिर पड़े।

अब ये दोनों भाई एक दूसरे को इतना प्यार करते थे कि उनमें से कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि तोते को उसने मारा है क्योंकि दोनों ही यह चाहते थे कि उसका भाई राजा बन जाये। और जब उन्होंने दोनों चिड़ियों को पका लिया तब भी वे दोनों इस बात पर झगड़ते ही रहे कि तोता उसका दूसरा भाई खा ले।

आखिर छोटा भाई बोला — "भैया हम लोग बेकार में ही समय बरबाद कर रहे हैं। तुम बड़े हो तुमको अपना अधिकार लेना ही चाहिये क्योंकि तुम मुझसे पहले पैदा हुए हो।"

सो बड़े भाई ने तोता खा लिया और छोटे भाई ने मैना खा ली फिर वे अपने घोड़े पर सवार हो कर आगे चल दिये।

---

[66] Who kills a parrot and eats him under a tree
Should have no doubt in his mind, he will be a great king
Who kills and eats a starling, let him be patient
Let him not be troubled in his mind, he will be minister for life

वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि बड़े भाई को ध्यान आया कि उसका घोड़े को मारने वाला कोड़ा तो कहीं छूट गया है। यह सोचते हुए कि शायद वह उसी पेड़ के नीचे छूट गया होगा जिसके नीचे उन्होंने आराम किया था छोटे भाई से कहा कि वे वहाँ वापस चलें और उसे ढूँढ कर ले आयें।

छोटा राजकुमार बोला — "नहीं नहीं। तुम राजा हो और मैं तो केवल वजीर ही हूँ सो यह मेरा फर्ज बनता है कि मैं वहाँ जाऊँ और तुम्हारा कोड़ा ढूँढ कर लाऊँ।"

बड़ा भाई बोला — "जैसी तुम्हारी इच्छा। पर ऐसा करो कि तुम यह घोड़ा ले जाओ ताकि तुम वहाँ जल्दी से पहुँच कर मेरा कोड़ा वापस ला सको। तब तक में पैदल ही आगे चलता हूँ।"

सो छोटे राजकुमार ने घोड़ा लिया और पेड़ की तरफ चल दिया। अब यह पेड़ एक अजगर का था और वह इस बीच वहाँ लौट आया था। सो जैसे ही राजकुमार ने उसके साये में अपना पैर रखा तुरन्त ही उस भयानक अजगर ने उसे काट लिया और मार दिया।

इस बीच बड़ा राजकुमार धीरे धीरे आग चलता रहा और एक शहर में आ पहुँचा। यह शहर एक बहुत बड़े पशोपेश में था। उस शहर का राजा तभी तभी मर कर चुका था।

इस देश में यह रिवाज था कि एक हाथी ही राजा को चुनता था। वह शहर के सारे लोगों के सामने से गुजरता और जिसको भी वह राजा चुनना चाहता उसके आगे झुक कर उसको सलामी देता। वही उस देश का राजा चुना जाता था।

क्योंकि अभी तक राजा को चुनने वाला हाथी उस शहर के सारे आदमियों के सामने घूम चुका था और उसने उनमें से किसी को भी अपने घुटनों पर झुक कर और उसको सलामी दे कर राजा नहीं चुना था इसी लिये वहाँ के लोग बहुत परेशान थे।

सबको यह हुक्म दिया गया था कि आगे से जो कोई भी शहर के दरवाजे में घुसे उसे सबसे पहले उस हाथी के सामने लाया जाये। सो जैसे ही बड़े राजकुमार ने उस शहर में अपना पहला कदम रखा उसको हाथी के सामने लाया गया।

इस बार उसे वह मिल गया था जिसको वह ढूँढ रहा था। जैसे ही उसने राजकुमार को देखा तो वह अपने घुटनों पर बैठ गया और बहुत जल्दी से उसको सलामी देने लगा। इस तरह से राजकुमार तुरन्त ही वहाँ का राजा चुन लिया गया। शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

इतने सब समय में छोटा राजकुमार वहीं पेड़ के नीचे मरा पड़ा रहा। कुछ समय तक तो उसके बड़े भाई ने जो अब राजा बन चुका था उसका इन्तजार किया फिर उसने उसके मिलने की आशा छोड़ दी और सोच लिया कि शायद वह मर गया होगा।

तब उसने एक दूसरे आदमी को अपना वजीर बना लिया।

पर अब हुआ ऐसा कि एक जादूगर और उसकी पत्नी जो अक्लमन्द थे और उन सॉपों से नहीं डरते थे जो उस पेड़ में रहते थे वहॉ से पानी भरने आये जो उस पेड़ की जड़ में से एक सोते[67] के रूप में बहता था।

जादूगर की पत्नी ने वहॉ राजकुमार को मरा पड़ा देखा – इतना सुन्दर इतना नौजवान। उसको लगा कि इतना सुन्दर लड़का उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसको उस पर दया आ गयी सो उसने अपने पति से कहा — "तुम अपनी चतुराई की हमेशा बात किया करते हो। आज तुम्हारा इम्तिहान है। इसको ज़िन्दा कर के उसे साबित करो।"

पहले तो जादूगर ने उसे मना कर दिया पर जब उसकी पत्नी ने उसको कुछ कुछ कहना शुरू किया कि उसकी ताकतें सब बहाना थीं तो उसने उसे गुस्से से जवाब दिया — "ठीक है। तुम ऐसा ही देखोगी हालॉकि मेरे अपने अन्दर किसी मरे हुए को ज़िन्दा करने के ताकत नहीं है पर मैं कम से कम दूसरों को ऐसा करने पर मजबूर कर सकता हूॅ।"

इसके बाद उसने अपनी पत्नी से अपना पीतल का बर्तन सोते के पानी से भर कर लाने के लिये कहा। जब वह वहॉ पानी भरने

[67] Translated for the word "Spring"

गयी और उस सोते से पानी भरने लगी तो लो देखो सोते का एक एक बूँद पानी उस कटोरे में आ गया और सारा सोता सूख गया।

जादूगर बोला — "अब तुम घर जाओ और फिर तुम वही देखोगी जो तुम देखना चाहती हो।"

जब साँपों ने देखा कि उनका सोता सूख गया है तो वे बहुत परेशान हुए क्योंकि साँप पानी बहुत पीते हैं पानी को पसन्द भी बहुत करते हैं। वे तीन दिन तक प्यासे रहे। फिर वे जादूगर के शरीर में चले गये और उससे कहा कि अगर वह उनका पानी उनको लौटा दे तो वे वही करेंगे जो वह उनसे करने के लिये कहेगा।

जादूगर ने उनसे यह करने का वायदा किया अगर बदले में वे मरे हुए राजकुमार की ज़िन्दगी वापस कर दें। और जब उन्होंने उसका यह काम कर दिया तो उसने भी वह पीतल का बर्तन उस सोते में पलट दिया। सोते में पानी फिर से निकलने लगा और साँपों ने बड़ी ख़ुशी से पानी पिया।

नौजवान राजकुमार जब ज़िन्दा हो गया तो उसको लगा कि वह एक लम्बी नींद से जागा है। उसको लगा कि उसका बड़ा भाई कहीं उसको देर हो जाने की वजह से दुखी न हो रहा हो सो उसने जल्दी से अपने बड़े भाई का कोड़ा उठाया और अपने घोड़े पर बैठ कर जो वहीं अपने मालिक के पास घास चर रहा था चल दिया।

अब क्योंकि वह कुछ जल्दी में था परेशान था सो उसने एक दूसरी ही सड़क ले ली और इस तरह उस शहर से जहाँ उसका भाई राजा था एक दूसरे ही शहर में आ पहुँचा।

रात होती जा रही थी उसके पास पैसे भी नहीं थे। वह केवल यही सोच रहा था कि वह कुछ खाने का सामान कैसे जुटाये। पर तभी उसको अच्छे स्वभाव वाली एक बुढ़िया मिल गयी। वह अपनी बकरियाँ चरा रही थी।

वह उससे बोला — "माँ जी। अगर आप मुझे कुछ खाने के लिये दे दें तो आप यह मेरा घोड़ा भी चरा लें और इसे आप रख लें।"

इस बात पर बुढ़िया राजी हो गयी और राजकुमार उसके घर चला गया। वहाँ जा कर उसने देखा कि वह बुढ़िया तो बड़ी दयालु और अच्छे स्वभाव की है। पर एक दो दिन बाद ही उसको लगा कि वह बहुत दुखी है सो उसने उससे पूछा कि क्या बात है वह क्यों दुखी है।

बुढ़िया रोते हुए बोली — "बात यह है मेरे बेटे कि इस राज्य में एक राक्षस रहता है जो रोज एक नौजवान, एक बकरा और एक गेहूँ की रोटी खा जाता है। हम उसे यह सब ठीक समय से पहुँचा देते हैं ताकि वह और सब लोगों को शान्ति से रहने दे।

इसलिये यह खाना उसके लिये रोज तैयार किया जाता है और मरने के डर से इसे कई परिवार मिल कर तैयार करते हैं। आज मेरी

बारी है। रोटी तो मैं बना दूँगी बकरा भी मेरे पास है पर नौजवान मैं कहाँ से लाऊँगी।"

बहादुर नौजवान राजकुमार ने पूछा — "कोई उसको मारता क्यों नहीं?"

बुढ़िया बहुत ज़ोर से रोते हुए बोली — "हालाँकि यहाँ के राजा ने जो कोई भी उसे मारेगा उसको अपना आधा राज्य देने का और उससे अपनी बेटी की शादी करने का वायदा किया है और बहुत से लोगों ने उसको मारने की कोशिश भी की है पर उसको मार कोई नहीं सका। आज मेरी बारी है सो आज मुझे मरना है क्योंकि कोई नौजवान मुझे कहाँ से मिलेगा।"

राजकुमार बोला — "आप रोयें नहीं माँ जी। आपने मेरे ऊपर बहुत मेहरबानी की है। मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा कि मैं उस राक्षस के हिस्से का खाना बनूँ।"

हालाँकि बुढ़िया ने पहले तो उसे इस काम के लिये बिल्कुल ही मना कर दिया कि वह उस जैसे सुन्दर नौजवान को उस राक्षस का खाना नहीं बनने देगी पर राजकुमार उसके इस डर पर हँसा और कहा कि वह उसकी बिल्कुल चिन्ता न करे सो वह फिर राजी हो गयी।

राजकुमार ने फिर पूछा — "मैं एक बात कहना चाहता हूँ माँ जी। आप गेहूँ की जो रोटी बनायें तो वह आपसे जितनी बड़ी बन

सके आप उतनी बड़ी बनायें और अपने बकरों में से अपना सबसे अच्छा और सबसे मोटा बकरा मुझे दें।"

बुढ़िया ने वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो राजकुमार ने रोटी ली और बकरे की गर्दन में रस्सी बाँधी और उस पेड़ की तरफ चला जहाँ वह राक्षस रोज शाम को अपना खाना लेने और खाने के लिये आया करता था। वहाँ जा कर उसने बकरा पेड़ से बाँध दिया और रोटी जमीन पर रख दी।

फिर वह उस गड्ढे से जो राक्षस के खाने की जगह के चारों तरफ खोदा गया था कुछ दूर चला गया और राक्षस का इन्तजार करने लगा। कुछ ही देर में वह भयानक राक्षस वहाँ आया।

अक्सर वह नौजवान को पहले खाया करता था क्योंकि बकरा और रोटी उसको बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं लगती थी पर आज की शाम वह इतनी बड़ी रोटी और इतना मोटा बकरा देख कर उन पर से अपनी आँखें नहीं हटा सका।

वह तुरन्त ही उनकी ओर गया और उन्हें खाने लगा। जब वह अपना आखिरी कौर खा कर खत्म कर रहा था तो उसने आदमी के माँस के लिये इधर उधर देख रहा था तो राजकुमार अपनी तलवार ले कर उसके ऊपर कूद पड़ा।

दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। राक्षस एक राक्षस की तरह लड़ा पर सबसे बड़ी रोटी और सबसे मोटा बकरा खा कर वह उतना

तेज़ नहीं था जितना कि और दिनों में हुआ करता था और काफी लड़ाई के बाद राजकुमार जीत गया। उसने अपने दुश्मन को अपने पैरों पर गिरा दिया।

अपनी जीत पर खुश होते हुए राजकुमार ने राक्षस का गला काट लिया और उसे एक ट्रौफी की तरह एक कपड़े में बॉध लिया। लड़ते लड़ते राजकुमार थक गया था सो लड़ाई से थक कर चूर वह वहीं लेट गया और सो गया।

हर सुबह एक सफाई करने वाला राक्षस के खाने की जगह उसके पिछली शाम के खाने के बचे टुकड़े और हड्डियों के टुकड़े साफ करने आता था। क्योंकि राक्षस खुद बहुत बदबूदार था तो उसके बचे खाने में से भी बहुत बदबू आती थी। वह उसको सहन नहीं कर पाता था।

पर उस दिन की सुबह की तो बात ही कुछ और थी। आज उसने देखा कि आज तो केवल रोज से आधी हड्डियॉ ही पड़ी हैं तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने बची हुई हड्डियॉ इधर उधर खोजनी शुरू कीं पर वे तो उसको मिली नहीं बल्कि उसको एक नौजवान वहॉ सोता हुआ मिल गया। राक्षस का सिर उसके पास रखा था।

उस सिर को देख कर उस सफाई करने वाले ने सोचा कि यह तो मेरे लिये बहुत अच्छा मौका है। यह सोच कर उसने राजकुमार

को उठाया। राजकुमार क्योंकि बहुत थका हुआ था सो वह जाग नहीं पाया।

उसने उसको उठा कर एक गड्ढे में रख दिया और उसे मिट्टी से ढक दिया। फिर उसने राक्षस का सिर उठाया और उसे ले कर राजा के पास चल दिया ताकि वह राक्षस के मारने वाले मिलने के इनाम में आधे राज्य का मालिक बन जाये और उसकी बेटी से शादी कर सके।

यह सब देख कर राजा को लगा कि यह सब कुछ ठीक नहीं है फिर भी अपने वायदे के अनुसार जहॉ तक उसे आधा राज्य देने का सवाल था वह अपना वायदा निभाने पर मजबूर था।

पर जहॉ तक उसकी अपनी बेटी की शादी की सवाल था वह ऐसे आदमी के साथ उसकी शादी करने के लिये तैयार नहीं था। उसने इस बात को कुछ समय के लिये टाल दिया। उसने कहा कि राजकुमारी अभी एक साल तक शादी नहीं करना चाहती।

सो उस सफाई करने वाले ने एक साल तक राजा के आधे राज्य पर राज किया और अपनी आने वाली शादी की तैयारियों में लगा रहा।

इस बीच कुछ कुम्हार वहॉ अपने गड्ढे में से मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये मिट्टी लेने आये। सो जब वे उस गड्ढे में से मिट्टी निकाल रहे थे उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा

कि उस गड्ढे में मिट्टी के नीचे तो एक नौजवान बेहोश पड़ा हुआ है पर उसकी सॉस चल रही है।

वे उसको वहॉ से ले कर अपने घर चले गये और उसको अपनी पत्नियों को देखभाल करने के लिये दे दिया। वे जल्दी ही उसको होश में ले आयीं। जब वह होश में आया तो वह सफाई करने वाले की राक्षस के ऊपर जीत की बात सुन कर बड़े आश्चर्य में पड़ा।

सारा शहर उसके बारे में बात कर रहा था। वह समझ गया कि किस तरह से वह वहॉ आया होगा और उसको धोखा दे गया।

उसके पास उसको झूठा साबित करने के लिये कुछ भी नहीं था सिवाय अपने शब्दों के और इस तरह से उसको झूठा साबित करना नामुमकिन था। सो उसने कुम्हारों का यह प्रस्ताव मान लिया कि वे उसको अपना बर्तन बनाने का काम सिखा देंगे।

इस तरह राजकुमार अब कुम्हार के चाक पर बैठ गया और मिट्टी के बर्तन बनाने में इतनी जल्दी होशियार हो गया कि बहुत जल्दी ही उसके बनाये बर्तनों के डिजाइन बहुत पसन्द किये जाने लगे। उसका काम भी बहुत साफ होता था।

उसका काम इतना मशहूर हुआ कि वह अब गड्ढे में से निकला हुआ बर्तन बनाने वाला नौजवान के नाम से मशहूर हो गया। यहॉ तक कि बाहर के देश वाले भी उसको जान गये।

हालॉकि राजकुमार ने अक्लमन्दी से अपने बारे में कुछ भी नहीं कहा था फिर भी जब उसकी खबर उस राजा बने सफाई करने वाले

के कानों तक पहुँची उसने यह इरादा कर लिया कि वह चाहे किसी भी तरह से हो उस गड्ढे में से निकले हुए बर्तन बनाने वाले नौजवान को मार कर ही रहेगा। क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि वह पकड़ा जाये और उसे खुद को मरना पड़ जाये।

अब हुआ यह कि करीब करीब इसी समय हर साल बहुत सारे व्यापारियों के जहाज़ जो वहाँ मसाले आदि बेचने आया करते थे तूफान की वजह से बन्दरगाह पर ही रुक गये।

क्योंकि जितनी ज़्यादा देर वे वहाँ रुके रहते उनको उतना ही यह डर था कि वे एक साल में वापस जा सकते थे या नहीं। यह क्योंकि एक गम्भीर मामला था सो भविष्य बताने वालों को सलाह के लिये बुलाया गया।

उन्होंने कहा कि इसके लिये एक आदमी की बलि की जरूरत है। जब तक यह नहीं होगा जहाज़ बन्दरगाह से नहीं जा पायेंगे।

राजा बने सफाई करने वाले को जब यह पता चला तो उसको तो मौका मिल गया। उसने इस मौके का फायदा उठाया। उसने अपने लोगों को हुक्म दिया कि "ऐसा ही करो पर अपने देश के किसी आदमी की बलि मत देना। व्यापारियों को वह बेकार का कुम्हार लड़का दे दो जिसका यही पता नहीं था कि वह आया कहाँ से है।"

दरबारियों ने राजा बने सफाई करने वाले के इस फैसले की बहुत बड़ाई की और राजकुमार को व्यापारियों को दे दिया गया। वे

उसको अपने जहाज़ पर ले गये और उसकी बलि की तैयारी करने लगे। उसने बेचारे ने उनसे बहुत विनती की बहुत प्रार्थना की कि वे शाम तक इन्तजार करें तो किसी तरह वे इस बात पर राजी हो गये बशर्ते कि हवाओं का रुख ठीक हो।

जब राजकुमार ने देखा कि हवा नहीं चली तो उसने एक चाकू से अपनी छोटी उँगली में छोटा सा चीरा लगाया। जैसे ही उसमें से खून की पहली बूँद बही उस जहाज़ के पाल हवा से भर गये और वह बन्दरगाह से चल निकला।

इसी तरह से जब उसकी दूसरी बूँद बही तो दूसरा जहाज़ चल निकला। फिर तो उसकी हर बूँद के साथ जहाज़ वहाँ से चल दिये।

व्यापारी लोग तो ऐसे कीमती जादुई लड़के को ले कर बहुत खुश हुए जो हवाओं को अपने कन्ट्रोल में रखता था। उन्होंने उसकी बहुत अच्छे से देखभाल की। बहुत जल्दी ही वह उन सबका प्यारा बन गया क्योंकि वह बहुत ही खुशमिजाज आदमी था।

चलते चलते वे एक दूसरे शहर में पहुँचे। इत्तफाक से यह वही शहर था जिसमें इस राजकुमार के भाई को हाथी ने राजा चुना था। जब व्यापारी लोग शहर में अपना काम करने गये तो राजकुमार को अपने जहाज़ों की निगरानी के लिये छोड़ गये।

राजकुमार ने उनकी कुछ देर तक तो निगरानी की पर फिर थक गया सो वह किनारे की मिट्टी से खेल कर अपना दिल बहलाने लगा। उसने अपनी याद से अपने पिता का महल बनाया। जैसे जैसे

वह वह महल बनाता गया उसमें उसकी रुचि बढ़ती गयी और उसने उसे कला का एक बेहतरीन नमूना बना दिया।

उसमें फूलों का बागीचा था। सिंहासन पर राजा बैठा था। दरबारी उसके चारों तरफ बैठे हुए थे। राजा के दोनों राजकुमार स्कूल में पढ़ रहे थे। यहाँ तक कि कबूतर मीनार के ऊपर उड़ रहे थे।

जब राजकुमार यह सब बना कर खत्म किया तो उसको देख कर उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह अपने पुराने दिन याद करके आहें भरने लगा।

उसी समय राजा के वजीर की बेटी अपनी दासियों के साथ वहाँ से गुजर रही थी। उसने उस सुन्दर मौडल को देखा तो वह तो आश्चर्य से दंग रह गयी।

पर जब उसने उसके पास ही एक दुखी सुन्दर नौजवान आहें भरते बैठे हुए देखा तो वह वहाँ से सीधी अपने घर चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया और खाना खाने से बिल्कुल मना कर दिया।

उसके पिता को लगा कि वह बीमार पड़ गयी है सो उसने उससे पुछवाया कि क्या बात है। तो उसने अपने पिता को यह जवाब भिजवाया — "मेरे पिता से जा कर कह देना कि मैं न तो कुछ खाऊँगी न पियूँगी जब तक वह मेरी शादी उस नौजवान से नहीं कर

देंगे जो समुद्र के किनारे पर एक मिट्टी के किले के सामने बैठा बैठा आहें भर रहा है।"

पहले तो अपनी बेटी की यह बात सुन कर वजीर बहुत गुस्सा हुआ पर यह देख कर कि अगर उसकी बेटी की शादी उस नौजवान से न हुई तो वह तो भूख हड़ताल कर के अपनी जान देने पर उतारू है तो उसने ऊपरी मन से उसको इस शादी की इजाज़त दे दी।

पर छिपे तौर पर उसने व्यापारियों से यह सौदा कर लिया कि उसकी बेटी की शादी होने के तुरन्त बाद वे उन दोनों को अपने जहाज़ पर चढ़ा कर दूर ले जायेंगे। फिर जैसे ही उनको मौका मिलेगा वे उस नौजवान को तो समुद्र में फेंक देंगे और उसकी बेटी को वापस ले आयेंगे।

सो उन दोनों की शादी हो गयी और जहाज़ समुद्र में चल दिये।

एक दो दिन बाद ही जब राजकुमार जहाज़ के अगले हिस्से में बैठा हुआ था तो वहाँ से उन्होंने उसे समुद्र में धक्का दे दिया। पर हुआ यह कि इत्तफाक से उसका केबिन भी उधर ही था और एक रस्सी उसकी खिड़की के सामने से नीचे गिर रही थी सो जब राजकुमार उधर से नीचे गिरा तो उसने उस रस्सी को पकड़ लिया और बिना किसी के देखे उस केबिन में चढ़ गया।

वजीर की बेटी को उसको इस तरह आते देख कर बहुत आश्चर्य हुआ तो उसने उसको सारी कहानी बता दी। राजकुमारी ने उसे एक बक्से में बन्द कर दिया जहाँ वह छिपा हुआ रहा।

जब जहाज़ वाले उसके लिये खाना ले कर आये तो उसने दुख मनाते हुए यह कह कर खाना खाने से मना कर दिया "तुम लोग इसे यहीं छोड़ जाओ। शायद मुझे धीरे धीरे भूख लग आये।" जब वे खाना वहीं छोड़ कर चले गये तो उसने और राजकुमार दोनों ने मिल कर वह खाना खा लिया।

व्यापारियों ने सोचा कि उन लोगों ने अपन काम बखूबी निभा दिया है सो उन्होंने अपने जहाज़ बन्दरगाह की तरफ लौटा लिये और वजीर की बेटी को वजीर को वापस करने के लिये ले आये। वजीर यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उन्होंने उस आदमी को ठिकाने लगा दिया और उसने उनको बहुत इनाम दिया।

उसकी बेटी भी बिल्कुल सन्तुष्ट दिखायी दे रही थी। जब वह अपने कमरे में पहुँच गयी तो उसने बक्से में से अपने पति को बाहर निकाला और उसे एक दासी की तरह से तैयार कर दिया ताकि वह महल में इधर उधर आसानी से आ जा सके।

राजकुमार ने अब तक अपनी ज़िन्दगी की सारी कहानी अपनी पत्नी को बता दी थी। तो उसकी पत्नी ने उसको बताया कि किस तरह से उस देश का राजा हाथी द्वारा चुना गया था तो राजकुमार को लगा कि यह जरूर उसका बहुत दिनों से खोया हुआ भाई ही होगा। सो उसने यह मामला पक्का करने के लिये एक प्लान बनाया।

वजीर के बागीचे से एक फूलों का गुलदस्ता रोज राजा को भेजा जाता था। एक दिन राजकुमार अपने नकली वेश में माली की बेटी के पास गया जो उस समय गुलदस्ता बनाने के लिये अपने बागीचे से फूल काट रही थी।

उसने उससे कहा — "अगर तुम चाहो तो ये फूल मुझे दे दो मैं तुम्हें एक नयी तरह का गुलदस्ता बनाना सिखाती हूँ।"

माली की बेटी ने उसको फूल दे दिये तो उसने उनको उसी तरह से लगा दिया जैसे उसके पिता का माली लगाया करता था।

अगली सुबह जब राजा ने वह फूलों का गुलदस्ता देखा तो वह तो पीला पड़ गया। उसने माली से पूछा कि वे फूल उस ढंग से किसने लगाये हैं।

माली डर से कॉपते हुए बोला — "मैंने सरकार।"

राजा चिल्लाया — "तुम झूठ बोल रहे हो ओ झूठे। जाओ और कल भी तुम मेरे लिये इसी तरह का गुलदस्ता ले कर आना नहीं तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा।"

उस दिन माली की बेटी रोती हुई दासी बने राजकुमार के पास गयी और उससे जा कर सब बताया। फिर उसने उससे वैसा ही गुलदस्ता बनाने की और इस तरह अपने पिता की जान बचाने की प्रार्थना की।

राजकुमार तो यही चाहता था सो वह तुरन्त ही राजी हो गया। उसको और पक्का हो गया कि यह राजा जरूर ही उसका इतने दिनों से खोया हुआ भाई है।

इस बार उसने और भी ज़्यादा सुन्दर गुलदस्ता बनाया और उसके फूलों में अपने नाम का एक परचा छिपा दिया।

जब राजा ने वह छिपा हुआ परचा देखा और उस पर लिखा हुआ नाम देखा तो वह तो बिल्कुल ही पीला पड़ गया।

उसने माली से कहा — "अब मुझे विश्वास हो गया कि वह गुलदस्ता तुमने नहीं बनाया था। तुम इतना सुन्दर गुलदस्ता बना ही नहीं सकते। अब तुम मुझे सच सच बताओ कि यह गुलदस्ता किसने बनाया तो मैं तुम्हें इस झूठ के लिये माफ कर दूँगा।"

यह सुन कर माली राजा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला कि वजीर के घर से एक दासी ने यह गुलदस्ता उसकी बेटी को बना कर दिया था। यह सुन कर तो राजा का आश्चर्य बहुत बढ़ गया।

उसने सोचा कि वह वेश बदल कर फूल लेने के लिये माली की बेटी के साथ वजीर के बागीचे में जायेगा। उसने ऐसा ही किया। पर जैसे ही राजकुमार ने राजा को देखा तो उसने तुरन्त ही उसको अपने बड़े भाई के रूप में पहचान लिया।

यह देखने के लिये कि कहीं उसको उसके ओहदे और सम्पत्ति ने उनके बचपन के प्यार को भुला तो नहीं दिया राजकुमार ने राजा

से कई सवाल पूछे। फिर राजा ने उससे पूछा कि उसने फूलों के सजाने की यह कला उसने कहाँ से सीखी।

उसने फिर अपनी ज़िन्दगी के बारे में उसे वहाँ तक बताया जहाँ तक उन्होंने तोता और मैना खा लिये थे। पर उसके बाद उसने कहा कि आज अब वह बहुत थका हुआ था और अब आगे की कहानी अगले दिन सुनायेगा।

हालाँकि राजा को यह सब सुन कर बहुत उत्सुकता हुई पर उसको अगले दिन तक का तो इन्तजार करना ही पड़ा।

अगले दिन राजकुमार ने उसको अपनी राक्षस के साथ लड़ाई और कुम्हार के घर रहने की बात बतायी। इतना कहने के बाद उसने फिर कहा कि वह आज अब थक गया था और अब आगे की बात अगले दिन सुनायेगा।

हालाँकि राजा इससे आगे की कहानी सुनने के लिये बहुत उत्सुक था पर उसको फिर अगले दिन का इन्तजार करना पड़ा। इस तरह सातवें दिन राजकुमार ने उसे यह बता कर अपनी कहानी खत्म की कि फिर वजीर की बेटी से उसकी शादी हो गयी और अब वह उसकी दासी के रूप में उसके घर में रह रहा था।

यह सुनते ही राजा ने उसको अपने गले लगा लिया और दोनों अपस में मिल कर बहुत खुश हुए। जब वजीर को यह पता चला कि उसकी बेटी ने कितने बढ़िया आदमी से शादी की है तो उसने

अपनी इच्छा से अपने पद से इस्तीफा दे दिया ताकि उसका दामाद अब वजीर बन सके।

इस तरह जो कुछ भी तोता और मैना ने कहा था सच हो गया। एक भाई राजा था और दूसरा भाई वजीर।

इसके बाद सबसे पहला काम तो राजा ने यह किया कि उसने अपने दूत उस देश के राजा को भेजे जिस देश में वह राक्षस रहता था जिन्होंने उसको सच बताया कि क्या हुआ था।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि अब उस आदमी की उसके आधे राज्य में कोई रुचि नहीं थी जिसने उसको मारा था क्योंकि वह यहाँ वजीर बन कर खुश था और सन्तुष्ट था।

यह सुन कर वहाँ का राजा तो बहुत खुश हुआ उसने वजीर राजकुमार से प्रार्थना की कि वह उसकी बेटी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर ले तो वजीर ने जवाब दिया कि वह तो पहले से ही शादीशुदा है पर उसका भाई जो राजा था वह उससे खुशी से शादी कर लेगा।

ऐसा ही हुआ। दोनों राज्यों में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। राजा बने सफाई करने वाले को मौत की सजा दे दी गयी। यही उसके लायक भी थी।

# 17 एक गीदड़ और एक गोह[68]

एक चॉदनी रात को एक भूखा गीदड़ एक गॉव में घूम रहा था तो उसको एक जोड़ी फटे जूते एक नाली में पड़े मिल गये। वे उसके खाने के लिये बहुत सख्त थे सो उसने उनका कुछ और इस्तेमाल करने की सोची। उसने उनको अपने कानों में कान के बुन्दों की तरह से पहन लिया

फिर वह तालाब की तरफ चल दिया। उधर जाते हुए उसने जितनी भी पुरानी हड्डियॉ उसको मिलीं उन्हें बटोर लिया और उनका मिट्टी लगा कर एक चबूतरा सा बना लिया। उस पर वह शान से बैठ गया।

फिर जब भी वहॉ कोई जानवर पानी पीने आता तो वह खूब ज़ोर से चिल्लाता — "ए रुक जाओ। तुम तब तक पानी मत पीना जब तक तुम मुझे पानी पीने का टैक्स न दे दो। इस मौके के लिये मैंने यह कविता लिखी है तुम पहले इसको दोहराओ —

> उसका चॉदी का चबूतरा है जिस पर सोने का प्लास्टर चढ़ा है
> उसके कानों में बुन्दे हैं वह राजकुमार जैसा है जिसे हमें देखना ही चाहिये

अब जानवर तो वहॉ बहुत प्यासे आते थे उनको पानी पीने की जल्दी रहती थी सो वे उसकी बातों पर कुछ ध्यान भी नहीं देते थे

---

68 The Jackal and the Iguana (Tale No 17)

बस बिना सोचे समझे उसके शब्दों को दोहरा देते थे। यहाँ तक कि शाही चीते ने भी इसको मजाक में लिया और उसके ये शब्द दोहरा दिये।

जब कुछ जानवरों ने ऐसा कर दिया तो गीदड़ को वाकई यह लगने लगा कि वह एक बहुत बड़ा खास आदमी है।

और फिर एक बार आया गोह[69] दौड़ता भागता तालाब पर पानी पीने। सारी दुनियाँ को तो वह एक बच्चा मगर जैसा लगता था।

गीदड़ उसको देखते ही बोला — "ए तुम। तुम यह पानी नहीं पी सकते जब तक ये शब्द न दोहरा लो।"

उसका चाँदी का चबूतरा है जिस पर सोने का प्लास्टर चढ़ा है
उसके कानों में बुन्दे हैं वह राजकुमार जैसा है जिसे हमें देखना ही चाहिये[70]

गोह अपनी लम्बी सी साँस लेते हुए बोला — "पूह पूह पूह। हे भगवान हम पर दया करो। मेरा गला कितना सूख रहा है। क्या मैं एक घूँट पानी पी सकता हूँ क्योंकि उसके बाद ही मैं तुम्हारी यह कविता ठीक से पढ़ पाऊँगा। इस समय तो मेरी आवाज कौए की आवाज जितनी भर्रायी हुई हो रही है।"

---

[69] Translated for the word "Iguana". This translation has been taken from www.dict.hinkhoj.com. It is mostly found in North America and can be in several colors. It is like a big lizard or small crocodile child. See its picture above.

[70] चाँदी दा मेरा चौंतरा कोई सोना लिपाई । कान में मेरा गूकरू कोई शाहज़ादा बैठा है

गीदड़ मुस्कुरा कर बोला — “हॉ हॉ क्यों नहीं। मैं अपनी इस कविता को तब सुनना ज़्यादा अच्छी तरह से पसन्द करूँगा जव यह किसी अच्छे गले से गायी जायें।”

यह सुन कर गोह ने गीदड़ को धन्यवाद दिया और तालाब के पानी में अपना मुॅह डाल दिया। वह बहुत देर तक पानी पीता रहा यहॉ तक कि गीदड़ को यह लगने लगा कि वह तो अब पानी में से कभी अपना मुॅह बाहर निकालेगा ही नहीं।

पर यह देख कर तो गीदड़ दंग रह गया जब वह अपना मुॅह पानी में से बाहर निकाल कर वहॉ से चलता बना। उसको वहॉ से जाते देख कर गीदड़ जल्दी से चिल्लाया — “ए रुको। कम से कम वह तो कहते जाओ जो मैंने तुमसे कहने के लिये कहा था —

उसका चॉदी का चबूतरा है जिस पर सोने का प्लास्टर चढ़ा है
उसके कानों में बुन्दे हैं वह राजकुमार जैसा है जिसे हमें देखना ही चाहिये

गोह बड़ी नम्रता से बोला — “प्यारे भाई। मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था। ठीक है मैं गा कर देखता हूॅ। ज़रा में अपनी आवाज तो देख लूॅ कि वह ठीक भी है या नहीं। स रे ग म प ध नी स। ठीक है न। अब मैं उसे गाता हूॅ। हॉ तो क्या गाना है मुझे?”

गीदड़ ने दोहराया —

उसका चॉदी का चबूतरा है जिस पर सोने का प्लास्टर चढ़ा है
उसके कानों में बुन्दे हैं वह राजकुमार जैसा है जिसे हमें देखना ही चाहिये

पर उसका ध्यान ही नहीं गया कि गोह तो धीरे धीरे वहाँ से दूर ही जाता जा रहा है। गोह बोला — "हाँ ठीक है। मुझे लगता है कि मैं इसे गा सकता हूँ।" और इसके बाद उसने उसे अपनी सबसे ऊँची आवाज में गाया —

उसका हड्डी का चबूतरा है जिस पर मिट्टी का प्लास्टर चढ़ा है
उसके कानों में जूते हैं वह केवल एक गीदड़ है और कुछ नहीं[71]

इसके बाद उसने एक बार पीछे मुड़ कर देखा और तेज़ी से अपने बिल की तरफ बढ़ गया।

गीदड़ तो उसकी कविता सुन कर अपने कानों पर विश्वास ही नहीं कर सका। उसकी तो बोलती ही बन्द हो गयी। गुस्से के मारे तो जैसे उसके पर लग गये हों।

वह अपने छोटे पैरों और छोटी छोटी साँसों के बावजूद वहाँ से उड़ता हुआ उस गोह के पीछे चल दिया। उसने अपने अच्छा वाला पैर आगे रखा और तेज़ी से भाग लिया।

यह बिल्कुल किसी दौड़ की तरह लग रही थी। जैसे ही गोह ने अपना एक कदम अपने बिल में रखा कि गीदड़ ने उसकी पूँछ पकड़ ली और उसको पकड़े रहा। अब तो दोनों में खींचा तानी होती रही। गोह ने देखा कि उसकी पूँछ उखड़ने वाली है और गीदड़ को

[71] हड्डी दा तेरा चौंतरा कोई गोबर लिपाई । कान में तेरी जुत्ती कोई गीदड़ बैठा है

लगा कि उसका जबड़ा बाहर आने वाला है पर फिर भी दोनों ने अपनी अपनी कोशिशें नहीं छोड़ीं।

कोई इधर से उधर नहीं हुआ और वे लोग शायद अब तक भी उसी हालत में रहते अगर गोह ने अपनी सबसे मीठी आवाज में गीदड़ से यह नहीं कहा होता — "मेरे दोस्त, मैं हार गया। अब तो तुम मेरी पूँछ छोड़ दो। तब मैं पीछे मुड़ जाऊँगा और अपने बिल के बाहर आ जाऊँगा।"

यह सुन कर गीदड़ ने गोह की पूँछ छोड़ दी और जैसे ही उसने उसकी पूँछ छोड़ी उसकी पूँछ तो उसके बिल में जा कर गायब हो गयी।

इसका गीदड़ को यह इनाम मिला कि वह अपने पंजों से वहाँ की जमीन खुरचते खुरचते अपने पूरे के पूरे नाखून ही घिस बैठा। फिर उसने गोह का मीठा गीत सुना —

उसका हड्डी का चबूतरा है जिस पर मिट्टी का प्लास्टर चढ़ा है
उसके कानों में जूते हैं वह केवल एक गीदड़ है और कुछ नहीं

# 18 एक गरीब चिड़िया की मौत और दफ़न[72]

एक बार की बात है कि एक चिड़ा अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों अब बूढ़े होते जा रहे थे। पर चिड़ा अपने बूढ़े होने के बाद भी बहुत शौकीन और रंगीला था। उसको अपने गदराये बदन पर बहुत नाज़ था और वह था भी बहुत सारी चिड़ियों का प्यारा।

एक बार उसकी निगाह एक सुन्दर सी नौजवान चिड़िया पर पड़ गयी तो उसने उससे शादी करने की सोची क्योंकि वह अपनी सीधी सादी बुढ़िया पत्नी से कुछ ऊब सा गया था।

उसकी शादी बड़े शानदार तरीके से हुई। सारे लोग बहुत खुश थे और आनन्द मना रहे थे। पर बेचारी उसकी बुढ़िया पत्नी बहुत दुखी बैठी थी। वह उस शोर से दूर चली गयी और अकेली ही एक कौए के घोंसले के नीचे जा कर बैठ गयी जहाँ वह बिना किसी की बात का कोई जवाब दिये और बिना किसी का मजाक बने अकेले ही इस शादी का दुख मना सके।

जब वह वहाँ बैठी थी तो बारिश आ गयी। बारिश ने पहले कौए के घोंसले को भिगोया फिर पानी उसमें से टपक टपक कर चिड़िया के ऊपर भी गिरने लगा जिससे उसके पंख भीग गये। पर वह इतनी दुखी थी कि उसने उसकी चिन्ता ही नहीं की। वह वहीं सिकुड़ी सी भीगी सी बैठी रही जब तक बारिश खत्म हुई।

---

[72] The Death and Burial of Poor Hen-Sparrow (Tale No 18)

अब ऐसा हुआ कि कौए के पास अपने घोंसले में अन्दर लगाने के एक रंगीन कपड़ा था। तो जैसे ही वह गीला हुआ कि उसमें के रंग उसमें से निकल निकल कर बारिश के पानी के साथ नीचे बहने लगे।

ये रंग चिड़िया के पंखों पर पड़े तो उसके पंख तो कई रंग के हो गये और वह चमकीले मोर जैसी एक चिड़िया हो गयी। हम सब जानते हैं कि अच्छे पंख तो अच्छी चिड़िया की निशानी है और इस वजह से अब तो वह एक बहुत ही सुन्दर चिड़िया हो गयी थी।

वह इतनी ज़्यादा सुन्दर हो गयी थी कि जब वह अपने घर उड़ कर आयी तो उसके पति की नयी पत्नी तो उसको देख कर उससे जलने लगी। उसने उससे तुरन्त ही पूछा कि इतनी सुन्दर पोशाक उसे कहाँ से मिली।

चिड़े की पहली पत्नी ने कहा — “बड़ी आसानी से। मैं एक रंगरेज[73] के रंग रखने वाले टब में कूद गयी थी।”

नयी पत्नी ने तुरन्त ही वहाँ जाने का फैसला कर लिया। वह इस बात को बिल्कुल सहन नहीं कर पायी कि उसके पति की बुढ़िया पत्नी उससे अच्छी पोशाक पहने।

सो वह तुरन्त ही रंगरेज के घर उड़ गयी। और वह क्योंकि वह बहुत जल्दी में थी सो जा कर वह रंगरेज के रंग रखने वाले टब

[73] Cloth dyer – people who dye clothes

में कूद गयी। उसने यह भी देखने की कोशिश नहीं कि उसका पानी ठंडा था या गर्म।

बेचारी चिड़िया जब तक उस टब के पानी से बाहर आयी तब तक तो वह आधी उबल चुकी थी क्योंकि उस टब में रंग का पानी बहुत गर्म था।

इस बीच रंगीन मिजाज वाले चिड़े ने जब देखा कि उसकी नयी दुलहिन घर पर नहीं है तो वह उसकी खोज में इधर से उधर उड़ने लगा। तुम सोच सकते हो कि जब उसने उसको आधा डूबा आधा उबला हुआ रंगरेज के अजीब से रंग में रंगे पंखों में देखा होगा तो वह कितनी ज़ोर से रोया होगा।

उसने पूछा — "यह तुम्हें क्या हुआ?"

पर वह बेचारी चिड़िया रुक रुक कर साँस लेती हुई बोली —

सौतन रंग में रंगी मैं भी रंगों में पड़ी

इस पर चिड़े ने उसको बड़ी कोमलता से अपनी चोंच में उठाया और उस सुन्दर बोझे को अपने घर ले गया।

घर जाते समय जब वह अपने घर के सामने की बड़ी नदी पार कर रहा था तो उसकी बड़ी पत्नी ने अपनी रंगीली पोशाक में अपने घर की खिड़की से बाहर झाँका और जब उसने अपने बूढ़े पति को अपनी जवान पत्नी को इस तरह लाते देखा तो वह बहुत ज़ोर से

हॅस पड़ी और बोली — “अच्छा हुआ अच्छा हुआ। क्या तुम्हें वह गीत याद है —

इक सरी इक बली इक हिनक मोड चढ़ी[74]

यह सुन कर उसके पति को इतना गुस्सा आया कि वह अपने आपे से बाहर हो गया और चिल्ला कर बोला — “अपनी जबान को लगाम दे, ओ बेशर्म बूढ़ी बिल्ली।”

और जैसे ही उसने यह कहने के लिये अपना मुँह खोला तो उसकी नयी पत्नी उसकी चोंच में से निकल कर नीचे नदी में गिर गयी और डूब गयी। यह देख कर चिड़ा भी इतना दुखी हुआ कि उसने दुख के मारे अपने सारे पंख नोच डाले और ऐसा हो गया जैसे अभी अभी जुता हुआ नंगा खेत।

फिर वह एक पीपल के पेड़ पर चला गया और वहाँ जा कर नंगा ही बैठ गया और सिसकियाँ ले ले कर रोने लगा। पीपल ने जब यह देखा तो वह तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

वह बोला — “क्या हुआ चिड़े भाई?”

चिड़ा रोते हुए बोला — “बस कुछ पूछो नहीं। जब कोई इतना दुखी हो तो उससे कोई भी सवाल पूछना कोई अच्छी बात नहीं है।”

---

[74] One is vexed and one grieved; And one is carried laughing on the shoulder.

पर पीपल के पेड़ को इस बात को बिना जाने शान्ति नहीं थी कि चिड़े के साथ क्या हुआ था और वह क्यों रो रहा था।

सो आखिर चिड़े को जवाब देना ही पड़ा —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है

यह दुखभरी कहानी सुन कर पीपल भी बहुत दुखी हुआ। उसने कहा कि वह भी उसके दुख में दुख मनायेगा और उसने अपनी सारी पत्तियाँ वहीं गिरा दीं।

उसी समय एक भैंस गर्मी में वहाँ से गुजर रही थी तो उसने सोचा कि वह पीपल की छाँह में थोड़ा ठंडा हो ले आराम कर ले पर उसने देखा कि पीपल के पेड़ पर तो कोई पत्ता ही नहीं है। उसकी तो सारी पत्तियाँ नीचे झड़ी पड़ी हैं।

भैंस बोली — "अरे तुम्हें क्या हुआ पीपल। कल तक तो तुम हरे भरे थे आज तुम्हें क्या हो गया। तुम्हारी सब पत्तियाँ क्यों झड़ गयीं।"

पीपल बोला — "मुझसे मत पूछो। क्या तुम अपने तौर तरीके भी भूल गयीं। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जब लोग दुख मना रहे हों तो उनसे सवाल पूछना अच्छा नहीं समझा जाता।"

पर भैंस ने उससे दुख मनाने की वजह जानने की जिद की तो बहुत सारी सिसकियाँ भरते हुए पीपल ने जवाब दिया —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है
पीपल का पेड़ उसके दुख में अपनी पत्तियाँ गिरा कर सिसकता और रोता है

भैंस ने भी जब यह कहानी सुनी तो वह भी दुखी हो गयी और बोली — "उफ़ कितने दुख की बात है। मुझे भी तुम लोगों के दुख में शामिल होना चाहिये।"

सो उसने तुरन्त ही अपने सींग गिरा दिये और रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद उसको प्यास लगी तो वह नदी पर पानी पीने गयी। उसको देखते ही नदी बोली — "हे भगवान। तुम्हें क्या हुआ ओ भैंस रानी। तुम्हारे सींग क्या हुए।"

भैंस रोते हुए बोली — "उफ़ तुम भी कितनी बदतमीज हो। क्या तुम्हें पता नहीं चल रहा कि मैं दुख मना रही हूँ। और ऐसे समय में सवाल पूछना कोई अच्छी बात नहीं है।"

पर नदी ने उससे जब बार बार पूछा कि वह क्यों दुख मना रही थी तो भैंस बोली —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है
पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
और भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है

नदी बोली — "उफ़ कितनी बुरी बात है।" कह कर वह इतने ज़ोर से रोयी कि उसका सारा पानी ही नमकीन हो गया।

फिर कहीं से एक कोयल नदी पर नहाने के लिये आ गयी। एक डुबकी मार कर वह बोली — "अरे नदी तुम्हें क्या हुआ। आज तो तुम्हारा पानी ऑसुओं की तरह नमकीन है।"

नदी रोते हुए बोली — "मेहरबानी कर के मुझसे मत पूछो कि क्या हुआ है। उसको शब्दों में कहना तो बहुत ही भयानक है।"

फिर भी कोयल तो ना सुनने वाली थी नहीं सो उसने फिर पूछा कि क्या बात थी तो नदी बोली —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहॉ रोता है
पीपल का पेड़ अपनी पत्तियॉ गिरा कर इसका दुख मनाता है
और भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
और मैं नदी ज़ोर ज़ोर से रोती हूँ जिससे मेरा पानी नमकीन हो गया है

यह सुन कर कोयल बोली — "उफ़ उफ़। यह तो बड़े दुख की बात है। इसके लिये तो मुझे भी दुखी होना चाहिये।" कह कर उसने अपनी एक ऑख निकाल दी और एक मक्का बेचने वाले की दूकान पर जा कर वहॉ उसकी दूकान के दरवाजे पर बैठ कर रोने लगी।

मक्का बेचने वाले दूकानदार भगतू ने उसे रोते हुए देखा तो उससे पूछा — “ओ छोटी कोयल रानी। क्या बात है। तुम क्यों रोती हो।”

कोयल अपनी नाक सिनकते हुए बोली — “मुझसे मत पूछो भगतू भैया। यह तो बहुत ही भयानक दुख की बात है। बहुत ही भयानक।” पर भगतू तो उसकी ना सुनने वाला नहीं था। वह बोला — “फिर भी कोयल रानी कुछ तो बताओ।”

जब भगतू ने उससे बहुत जिद की तो उसने अपने एक पंख से अपनी एक आँख के आँसू पोंछते हुए कहा —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है
पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
और मैं कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती हूँ

यह सुन कर भगतू रोते हुए बोला — “ओह मेरे भगवान। यह तो बहुत ही दिल तोड़ने वाली कहानी है। ऐसी कहानी तो मेंने अपनी पूरी ज़िन्दगी में कभी नहीं सुनी। मुझे भी तुम सब लोगों की तरह से दुख मनाना चाहिये।”

कह कर वह अपनी छाती पीट पीट कर रोने लगा जब तक कि वह बिल्कुल पागल सा नहीं हो गया। कुछ ही देर में रानी की

नौकरानी उससे जब कुछ खरीदने आयी तो उसने उसको हल्दी की बजाय लाल मिर्च दे दी लहसुन की बजाय प्याज दे दी और दाल की बजाय गेहूँ दे दिया।

नौकरानी बोली — "प्यारे भगतू। आज तुम्हारी अक्ल क्या ऊन इकट्ठा करने गयी है। क्या हो गया है तुमको। यह सब तुमने मुझे आज क्या दे दिया।"

भगतू रोते हुए बोला — "बस तुम मुझसे यह बात न पूछो क्योंकि मैं उसी को तो भूलने की कोशिश कर रहा हूँ। यह बहुत ही भयानक है बहुत ही डरावना है।"

पर नौकरानी को तो वह जानना ही था कि उस दिन भगतू ने वैसा क्यों किया सो उसने उससे पूछा — "फिर भी कुछ बताओ तो सही।" भगतू बोला —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है
पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती है
और भगतू का दुख तो इतना गहरा है कि वह तो अपने होश ही खो बैठा है

यह सुन कर नौकरानी बोली — "उफ़ कितने दुख की बात है। मुझे तुम्हारे इस दुख पर कोई आश्चर्य नहीं हो रहा क्योंकि यह तो है

ही बड़े दुख की बात। पर क्या करें इस खराब दुनियाँ में ऐसा ही होता है। सब कुछ उलटा ही होता है।”

इसके बाद वह हर घर की दीवार पर गिरती पड़ती महल पहुँची तो रानी जी ने पूछा — “क्या हुआ तुझे। तू इतनी परेशान क्यों है।”

नौकरानी बोली — “वही पुरानी कहानी। हर आदमी दुखी है। और मैं तो इतनी दुखभरी खबर सुन कर बहुत ही दुखी हो गयी हूँ।” तब उसने बताया —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है

पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती है
भगतू का दुख तो इतना गहरा है कि वह तो अपने होश ही खो बैठा है
और मैं नौकरानी औरों के घर की रेलिंग पकड़ कर चलती हूँ

उसकी यह कहानी सुन कर रानी भी रो पड़ी — “यह बिल्कुल सच है तू ठीक कह रही है यह दुनियाँ तो बस आँसुओं से भरी हुई है। पर इसके लिये क्या किया जा सकता है सिवाय इसके कि आदमी कोशिश करे कि इसको भूल जाये।”

कह कर उसने अपना काम तो रोक दिया और जितनी जल्दी जल्दी उससे हो सकता था नाचने लगी।

इतने में राजकुमार आ गया। उसने अपनी माँ को ज़ोर ज़ोर से नाचते देखा तो आश्चर्य से बोला — "यह क्या हो रहा है माँ। तुम इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों नाच रही हो।"

रानी ने बिना रुके साँस लेते हुए कहा —

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है

पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती है
भगतू का दुख तो इतना गहरा है कि वह तो अपने होश ही खो बैठा है
नौकरानी औरों के घर की रेलिंग पकड़ कर चलती है
और रानी उस दुख को भूलने के लिये नाचती है

राजकुमार बोला — "अगर तुम्हारा दुख मनाने का यही ढंग है तो मैं भी दुख मनाऊँगा।" कह कर उसने अपना तम्बूरीन[75] उठा लिया और उसको थप थप कर के बजाने लगा।

[75] Tambourine is a kind of musical instrument to give beat to the music. See the picture of one of its kinds above.

तम्बूरीन की आवाज सुन कर राजा दौड़ा दौड़ा आया और पूछा — "यह सब क्या हो रहा है। क्या मामला है।"

अपनी पूरी ताकत लगा कर तम्बूरीन पर हाथ मारते हुए राजकुमार बोला "यह मामला है।

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है

पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती है

भगतू का दुख तो इतना गहरा है कि वह तो अपने होश ही खो बैठा है
नौकरानी औरों की रेलिंग पकड़ कर चलती है
रानी उस दुख को भूलने के लिये नाचती है
तो राजकुमार उसको खुश करने के लिये तम्बूरीन बजाता है

यह सुन कर राजा बोला — "हाँ ऐसा ही तो होना चाहिये।" और यह कह कर राजा ने अपना ज़िदर[76] उठा लिया और उसे ज़ोर ज़ोर से बजाने लगा जैसे उस पर किसी आत्मा का साया पड़ गया हो।

बस अब तो सब गाने नाचने लगे रानी भी राजकुमार भी राजा भी और नौकरानी भी —

---

[76] Zither – a kind of musical string instrument with several strings going across.

बदसूरत चिड़िया ने जलन से अपने आपको रंग लिया
तो सुन्दर चिड़िया ने भी अपने आपको रंग लिया
अपनी पत्नी के लिये रोता हुआ चिड़ा गंजा और नंगा अब यहाँ रोता है

पीपल का पेड़ अपनी पत्तियाँ गिरा कर इसका दुख मनाता है
भैंस अपने सींग गिरा कर इसका दुख मनाती है
नदी ज़ोर ज़ोर से रोती है जिससे उसका पानी नमकीन हो गया है
कोयल अपनी एक आँख से कानी हो कर रोती है

भगतू का दुख तो इतना गहरा है कि वह तो अपने होश ही खो बैठा है
नौकरानी औरों की रेलिंग पकड़ कर चलती है
रानी उस दुख को भूलने के लिये नाचती है
तो राजकुमार खुश करने के लिये तम्बूरीन बजाता है
और राजा उन सबका साथ देने के लिये ज़िदर बजाता है

इस तरह सब नाचते गाते रहे जब तक वे थक नहीं गये। इस तरह सबने अपने अपने तरीके से बेचारे चिड़े की चिड़िया का दुख मनाया।

# 19 राजकुमारी पैपैरीना[77]

एक बार की बात है कि एक जंगल में एक बुलबुल रहती थी वह अपने साथी के लिये सारा दिन गाती थी। एक दिन उसने अपने साथी से कहा — "प्रिय तुम बहुत सुन्दर गाते हो पर मुझे भी कुछ हरी मिर्च खाने के लिये चाहिये।"

सो उसका पति बुलबुल तुरन्त ही उसके लिये कुछ हरी मिर्चें ढूँढने के लिये उड़ गया। हालाँकि वह मीलों तक उड़ा पर उसको कहीं एक भी हरी मिर्च दिखायी नहीं दी। या तो वे अपने पौधे पर लगी नहीं थीं क्योंकि वहाँ उसको केवल सफेद फूल ही दिखायी दे रहे थे या फिर वे मिर्चें पक कर लाल हो गयी थीं तो लोगों ने तोड़ ली थीं।

आखिर वह एक खुली जगह में आ गया जहाँ चहारदीवारी से घिरा एक बागीचा था। उसमें ऊँचे ऊँचे आम के सायेदार पेड़ लगे हुए थे जिससे वहाँ पर तेज़ धूप और हवाऐं नहीं आ पाती थीं।

उसके अन्दर बहुत तरीके के फूलों और फलों के पेड़ लगे हुए थे। पर वहाँ पर किसी और ज़िन्दगी का कोई नाम नहीं था। न कोई चिड़िया थी न कोई तितली थी, थी तो केवल शान्ति और फूलों की खुशबू।

सो बुलबुल उस बागीचे के बीच में जा कर उतर गया।

---

[77] The Princess Pepperina (Tale No 19)

और लो वहाँ तो एक अकेला मिर्च का पौधा खड़ा हुआ था। उसकी चमकदार पत्तियों के बीच में एक बहुत ही बड़े साइज़ की हरी मिर्च पन्ने[78] की तरह से चमक रही थी।

उसको देख कर वह बहुत खुश हुआ और उड़ कर अपने घर आया। यह कहते हुए कि उसको दुनियाँ की एक सबसे सुन्दर हरी मिर्च मिल गयी है वह अपनी पत्नी को ले कर उस बागीचे में वापस आया। पत्नी बुलबुल भी उसको देख कर बहुत खुश हुई और उसने उसको तुरन्त ही खाना शुरू कर दिया।

अब यह बागीचा एक जिन्न का था। वह अब तक अपने गर्मी वाले मकान में सो रहा था। साधारण तौर पर जिन्न 12 साल के लिये जागते हैं और 12 साल के लिये सोते हैं। इस समय वह गहरी नींद सो रहा था सो उसको बुलबुलों के आने जाने का कुछ पता ही नहीं चला।

उसके जागने का समय भी अब दूर नहीं था। पर जब वह बुलबुल हरी मिर्च खा रही थी तो उसी समय उसको कुछ भयानक सपने दिखायी दिये। और जिस समय बुलबुल की पत्नी ने उस मिर्च के पेड़ की जड़ के पास पन्ने जैसे रंग का एक अंडा दिया और वहाँ से अपने पति के साथ उड़ कर चली गयी उस समय तो वह बेचैन हो उठा और जाग गया।

---

[78] Translated for the word "Emerald" – one of the nine precious gems.

जैसा कि वह अक्सर करता था जॅभाइयॉ और अॅगड़ाइयॉ लेते हुए वह उठा और अपने मिर्च के पौधे को देखने गया कि वह कैसा चल रहा था। यह तो देख कर उसे बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ कि उसकी हरी मिर्च तो कुतरी हुई पड़ी थी।

वह तो यह सोच ही नहीं सका कि यह बदमाशी किसने की होगी। जहॉ तक उसको पता था उसके बागीचे में कोई चिड़िया कोई जंगली जानवर कोई कीड़ा मकोड़ा नहीं रहता था।

उसने सोचा कि जब वह सो रहा होगा तभी शायद कहीं बाहर से कोई भयानक चीज़ आ कर उसे चुरा कर ले गयी है सो वह उस चीज़ को ढूॅढने में लग गया। उसको किसी तरह का किसी का कोई निशान नहीं मिला सिवाय एक पन्ने के रंग का चमकता हुआ अंडे के जो मिर्च के पेड़ की जड़ में पड़ा था।

वह अंडा उसको इतना अच्छा लगा कि वह उसको अपने घर ले आया। वहॉ उसने उसको रुई में लपेटा और सॅभाल कर दीवार में बनी हुई एक खाली जगह में रख दिया। अब वह उसको रोज देखने जाता था और अपनी खोयी हुई हरी मिर्च के बारे में दुखी होता रहता।

कि लो एक दिन सुबह को जब वह उस अंडे को देखने गया तो वहॉ तो कोई अंडा नहीं था और उसकी जगह एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी हुई थी। उसने सिर से पैर तक पन्ने के रंग के हरे रंग

के कपड़े पहने हुए थे। और उसके गले में एक बड़ा सा हरी मिर्च की शक्ल का एक पन्ना लटका हुआ था।

यह जिन्न एक बहुत ही शान्त और अच्छा जिन्न था सो वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ। वह बच्चों को बहुत प्यार करता था और फिर यह तो उसके खाने के लिये एक बहुत ही बढ़िया कौर था जैसा उसने पहले कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा था। फिर भी वह इसको नहीं खा सका।

अब उसने उसे यानी राजकुमारी पैपेरीना की देखभाल करने को अपनी ज़िन्दगी का एक काम बना लिया। उस लड़की ने उसको अपना यही नाम बताया था।

अब जब फूलों के बागीचे में 12 साल बीत गये तो अब उस भलेमानस जिन्न का सोने का समय आया। वह भला जिन्न तो यह सोच कर ही परेशान हो गया कि जब वह अपनी राजकुमारी की देखभाल करने के लिये वहाँ नहीं होगा तो उसकी देखभाल कौन करेगा।

लेकिन हुआ यों कि एक राजा अपने वजीर के साथ जंगल में शिकार पर निकला और घूमते घूमते एक ऊँची चहारदीवारी वाले बागीचे की तरफ आ निकला। उसको यह देखने की उत्सुकता हुई कि उस ऊँची चहारदीवारी के पीछे क्या है सो वे दोनों उस चहारदीवारी पर चढ़े तो उन्होंने देखा कि एक प्यारी सी लड़की यानी राजकुमारी पैपेरीना एक मिर्च के पेड़ के पास बैठी हुई है।

राजा उसको देखते ही उससे प्रेम करने लगा और उससे बहुत ही सुन्दर भाषा में अपनी पत्नी बन जाने के लिये कहा। लेकिन राजकुमारी ने बड़ी तमीज से अपना सिर झुकाया और कहा — "मैं ऐसा नहीं कर सकती। आपको इसके लिये उस जिन्न से पूछना चाहिये जिसका यह बागीचा है। बस उसकी एक बुरी आदत है कि वह कभी कभी आदमी को खा लेता है।"

पर वैसे जब उसने राजा को अपने सामने झुकते हुए देखा वह इस बात को सोचने से अपने आपको रोक न सकी कि वह दुनियाँ का सबसे सुन्दर और शानदार नौजवान है। यह सोच कर उसका दिल पिघल गया।

और जब उसने जिन्न के आते हुए कदमों की आहट सुनी तो उसने राजा से कहा — "मेहरबानी कर के आप बागीचे में कहीं छिप जाइये और मैं देखती हू कि मैं उसको आपसे बात करने पर राजी कर सकती हूँ या नही।"

जैसे ही जिन्न वहॉ आया तो उसने आते ही इधर उधर सॅूघना शुरू किया और चिल्लाया — "फ़ी फ़ा फ़ॅू। मुझे किसी आदमी के खून की बू आ रही है।"

राजकुमारी पैंपैरीना ने उसको तसल्ली दी — "प्यारे जिन्न तुम मुझे खाना चाहो तो खा सकते हो पर यहॉ और कोई नहीं है।"

जिन्न ने प्यार से सहलाते हुए कहा — “तुम तो मेरी ज़िन्दगी हो। मैं तुम्हारे बजाय ईंट और ओखली खाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।”

उसके बाद राजकुमारी ने चालाकी से अपनी बात उसकी आने वाली नींद की तरफ मोड़ दी। उसने उससे रोते हुए पूछा कि जब वह वहाँ से सोने के लिये चला जायेगा तब वह इस चहारदीवारी वाले बागीचे में अकेली क्या करेगी।

यह सुन कर जिन्न को सचमुच चिन्ता हो गयी। आखिर उसने उसके लिये यह प्लान सोचा कि किसी अच्छे भले नौजवान के साथ उसकी शादी कर दी जाये।

लेकिन फिर वह बोला कि उसके लायक ऐसा कोई आदमी मिलना तो बहुत मुश्किल है। खास कर के उसको उतना ही सुन्दर होना चाहिये जितना कि पैंपेरीना थी।

यह सुन कर पैंपेरीना को मौका मिल गया तो उसने जिन्न से पूछा कि क्या वह अपने कहे का पक्का था कि वह उसकी शादी किसी ऐसे ही सुन्दर नौजवान से कर देगा जैसी कि वह खुद थी।

जिन्न ने उससे सचमुच में ही उससे यह वायदा किया। वह तो यह सोच भी नहीं सकता था कि पैंपेरीना की निगाह में पहले से ही कोई ऐसा नौजवान मौजूद था जो उतना ही सुन्दर था जितनी वह खुद थी।

सो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ जब पैपैरीना के ताली बजाने पर एक शानदार नौजवान राजा एक झाड़ी में से निकल कर उसके सामने आ खड़ा हुआ।

जब पैपैरीना और वह राजा एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर उसके सामने खड़े हुए तो वह भी इतनी सुन्दर जोड़ी देख कर यह कहे बिना न रह सका कि ऐसा जोड़ा तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था।

उसने उस शादी की इजाज़त दे दी जो बहुत जल्दी में हुई क्योंकि जिन्न ने अब तक जॅभाइयॉ लेना शुरू कर दिया था। और जब उसका दोनों को विदा कहने का समय आया तो वह इतना रोया कि उसको तो केवल उसके ऑसू ही जगा सके वरना तो वह सोते सोते ही उसके पीछे पीछे चल रहा था।

यहॉ तक कि जब उसकी राजकुमारी को देखने की इच्छा इतनी जबरदस्त हुई तो उसको अपने आपको एक फाख्ता[79] में बदल जाना पड़ा। तब वह उसके पीछे उड़ती चली गयी फिर उसके सिर पर पंख फड़फड़ाती रही।

जिन्न को राजकुमारी बहुत खुश नजर आ रही थी क्योंकि उसने देखा कि वह अपने सुन्दर पति से फुसफुसा कर मुस्कुराते हुए बातें कर रही थी। यह देख कर वह सोने के लिये अपने घर उड़ आया पर उसका हरा शाल उसकी ऑखों के सामने तैरता ही रहा।

---

[79] Translated for the word "Dove". See its picture above.

पर इससे उसको बिल्कुल चैन नहीं पड़ा सो उसने अपने आपको एक बाज़ में बदला और उसके पीछे पीछे भाग लिया। वह उसके सिर के ऊपर बहुत देर तक चक्कर लगाता रहा।

उसने देखा कि वह तो अपने पति के बराबर में बैठी हुई बहुत खुश थी सो वह जिन्न फिर से अपने घर अपने बागीचे में वापस आ गया। उसको बहुत ज़ोर ज़ोर से जॅभाइयॉ आ रही थीं।

पर उसकी छोटी प्यारी पैंपैरीना की मुलायम ऑखें उसकी अपनी ऑखों की नींद उड़ाये दे रही थीं। अबकी बार वह एक गरुड़ की शक्ल में बदला और फिर ऊॅचे आसमान में उड़ने लगा। उसने अपनी तेज़ चमकीली ऑखों से देखा कि उसकी पैंपैरीना बहुत दूर राजा के महल में घुस रही थी।

अब वह अच्छा जिन्न सन्तुष्ट था। अब उसे नींद आ गयी और वह 12 साल के लिये सो गया।

आगे आने वाले सालों में राजा अपनी सुन्दर पत्नी को बहुत प्यार करता रहा पर महल में जो और स्त्रियॉ थीं वे उससे बहुत जलती रहीं। खास कर के तब जब उसने एक बहुत सुन्दर राजकुमार को जन्म दिया।

उन्होंने पक्का इरादा कर लिया था कि वे उसको बर्बाद कर के ही छोड़ेंगी। अब वे हर रात रानी के कमरे के दरवाजे पर आतीं और यह देखने के लिये फुसफुसातीं कि वह जाग तो नहीं रही। राजकुमारी पैंपैरीना जागी रहती जबकि सारा संसार सोया रहता।

वह पन्ना जो पैपैरीना अभी भी अपने गले में पहने हुए थी असल में एक तलिस्मान था और हमेशा ही सच बोलता था। अगर किसी ने कोई बात फुसफुसा कर भी कही हो तो वह सच तुरन्त ही बोल देता था और बिना उसके अपमान का ख्याल किये दोषी को शर्मनाक साबित कर देता था।

सो वह पन्ना ऐसे मौकों पर जवाब देता — "ऐसा नहीं है। राजकुमारी पैपैरीना तो सोई हुई है। यह तो दुनियाँ है जो जाग रही है।"

यह सुन कर वे नीच स्त्रियाँ वहाँ से चली जातीं क्योंकि वे जान जातीं कि जब तक वह तलिस्मान राजकुमारी के गले में है उनकी कोई ताकत राजकुमारी पर नहीं चलने वाली जिससे वे उसका कुछ बिगाड़ सकें।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब राजकुमारी पैपैरीना नहा रही थी तो उसने पन्ने का वह तलिस्मान अपने गले में से बाहर निकाल कर रख दिया और गलती से वहीं रखा छोड़ दिया जहाँ वह नहा रही थी।

सो उस रात वे जलने वाली स्त्रियाँ उसके कमरे के दरवाजे पर आयीं और फुसफुसायीं "राजकुमारी पैपैरीना जागी हुई है वह तो दुनियाँ है जो सोयी हुई है।"

तो सच बोलने वाले तलिस्मान ने वहीं नहाने की जगह से ही जवाब दिया "नहीं ऐसा नहीं है। राजकुमारी पैपैरीना सोयी हुई है। वह तो दुनियाँ है जो जागी हुई है।"

तलिस्मान की आवाज सुन कर उन्होंने यह जान लिया कि आज तलिस्मान अपनी रोज की जगह पर नहीं है सो वे नीच स्त्रियाँ चुपके से राजकुमारी के कमरे में घुस गयीं और बच्चे राजकुमार को मार दिया जो शान्ति से अपने पालने में सो रहा था।

उन्होंने उसके छोटे छोटे टुकड़े किये और उसकी माँ के बिस्तर पर बिखेर दिये और उसका खून उसकी माँ के होठों पर लगा दिया।

अगले दिन सुबह सवेरे ही वे रोती चिल्लाती राजा के पास पहुँचीं और उससे आ कर वह भयानक दृश्य देखने के लिये कहा।

उन्होंने उससे कहा — "देखिये राजा साहब। आप अपनी जिस रानी को बहुत प्यार करते हैं ज़रा उसका हाल तो देखिये। यह तो डायन है डायन। हमने आपको पहले ही सावधान किया था और अब तो उसने माँस खाने के लिये अपने ही बच्चे को मार दिया है।"

राजा को यह देख कर बहुत दुख भी हुआ और बहुत गुस्सा भी आया क्योंकि वह अपनी रानी को बहुत प्यार करता था। फिर भी यह सब देख कर वह इस बात से ना नहीं कर सका कि वह डायन नहीं थी। उसने हुक्म दिया कि उसको कोड़ों से मारा जाये और फिर जान से मार दिया जाये।

सो वह सुन्दर नौजवान रानी देश से बाहर निकाल दी गयी और बेदर्दी से मार दी गयी। नीच रानियाँ अपनी इस नीच करतूत की कामयाबी पर बहुत खुश थीं।

लेकिन जब राजकुमारी पैपैरीना मर गयी तो उसका शरीर संगमरमर की ऊँची दीवार बन गया। उसकी आँखें तालाब बन गयीं। उसका हरा शाल घास का मैदान बन गया।

उसके लम्बे घुँघराले बाल लताऐं बन गयीं। उसका लाल मुँह और सफेद दाँत लाल गुलाब और सफेद फूलों की क्यारियाँ बन गये। उसकी आत्मा चकवी बन गयी और उसका चकवा उसके साथ हर समय तालाब में घूमते रहते। वे सारा दिन राजकुमारी पैपैरीना की बदकिस्मती पर रोते रहते।

बहुत दिनों के बाद नौजवान राजा जो अपनी पत्नी के गलती करने के बावजूद उसके लिये रोता रहता एक बार शिकार के लिये चला गया। उसको कोई शिकार नहीं मिला तो दूर दूर तक इधर उधर घूमता रहा।

घूमते घूमते वह उस संगमरमर की ऊँची दीवार के पास आ गया। यह देखने के लिये कि उस दीवार के भीतर क्या था वह घास पर चढ़ा जहाँ बेलें गुँथी हुई थीं और गुलाब और सफेद फूल लगे हुए थे और जहाँ प्यारी प्यारी चिड़ियें दिन भर रोया करती थीं।

राजा जो बहुत थका हुआ था और दुखी था अपना दुख भूलने के लिये उस सुन्दर जगह पर आ कर लेट गया और उन चिड़ियों का रोना सुनने लगा।

जब वह उन्हें सुन रहा था तो उसको साफ साफ समझ में आ रहा था कि वे नीच स्त्रियों की धोखाधड़ी की कहानी कह रही थीं।

एक चिड़िया ने दूसरी चिड़िया से पूछा — "क्या अब वह कभी ज़िन्दा नहीं हो सकती?"

तो दूसरी चिड़िया ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं हो सकती। अगर राजा हमको पकड़ ले और हमारे दिलों को एक साथ लगा ले और फिर अपनी तलवार के एक ही झटके से हमारे सिर हमारे शरीर से अलग कर दे ताकि हममें से पहले कोई न मरे यानी हम दोनों साथ साथ ही मरें तो राजकुमारी पैंपैरीना एक बार फिर से ज़िन्दा हो जायेगी। पर अगर हममें से कोई एक पहले मर जायेगा तो वह वैसी की वैसी ही रह जायेगी जैसी अब है।"

राजा ने धड़कते दिल से उन चिड़ियों को पुकारा तो वे तुरन्त ही आ गयीं। उसने उनको दोनों को उनके दिल मिला कर रख कर एक साथ अपनी तलवार के एक ही झटके से मार दिया जिससे वे दोनों एक साथ ही मर कर गिर गयीं।

और लो वहॉ तो तुरन्त ही राजकुमारी पैंपैरीना खड़ी हुई थी मुस्कुराती हुई पहले से भी सुन्दर। पर यह बड़ी अजीब सी बात हुई

कि वह संगमरमर की दीवार तालाब बेलें गुलाब और सफेद फूल हरी घास सभी वहीं रहे।

राजा उसको अपने साथ अपने घर ले आना चाहता था। उसने कसम खायी कि वह उसके ऊपर कभी अविश्वास नहीं करेगा और उन सब नीच स्त्रियों को मरवा देगा।

पर उसने कहा कि वह वहीं अपनी सफेद संगमरमर की दीवार के अन्दर रहना पसन्द करेगी ताकि फिर उसे कोई परेशान न कर सके।

जिन्न तभी अपनी **12** साल की नींद से जागा था। वह जाग कर तुरन्त ही अपनी राजकुमारी के पास उड़ गया और बोला — "तुम यहाँ रहोगी और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

उसके बाद उसने राजा और रानी के लिये एक बहुत ही शानदार महल बनवाया जहाँ वे जब तक रहे खुश रहे। किसी को उनका पता नहीं चला और न ही कोई उनसे जला।

# 20 पीज़ी और बीन्ज़ी[80]

एक बार की बात है कि दो बहिनें एक साथ रहती थीं। उनमें से बड़ी वाली जिसका नाम बीन्ज़ी था बहुत लड़ाकू थी। उसकी किसी से पटती भी नहीं थी। जबकि छोटी वाली बहुत ही नम्र स्वभाव की थी और सबसे हिलमिल कर रहती थी।

एक बार पीज़ी ने यानी छोटी वाली बहिन ने जो हर समय हर एक को खुश रखने में लगी रहती अपनी बड़ी बहिन बीन्ज़ी से कहा — "बीन्ज़ी क्यों न हम एक बार अपने गरीब बूढ़े पिता को देखने चलें। वह हमारे बिना बहुत दुखी होंगे। यह समय खेतों की कटायी का है और वह घर में अकेले हैं।"

बीन्ज़ी बोली — "उँह। मैं क्या करूँ अगर वह अकेले हैं तो। तुम्हें जाना हो तो तुम चली जाओ। मैं तो इतनी गर्मी में एक बूढ़े आदमी को खुश करने नहीं जा रही।"

सो दयालु पीज़ी अपने आप अकेली ही अपने बूढ़े पिता के घर चल दी। रास्ते में उसको एक बेर का पेड़[81] मिला।

पेड़ बोला — "ओह पीज़ी ज़रा रुको तो। ओ भली लड़की। मेहरबानी कर के मेरे थोड़े से कॉटे साफ कर दो। वे मेरे चारों तरफ बिखरे पड़े है जिनसे मुझे बहुत परेशानी होती है।"

[80] Peasie and Beansie (Tale No 20)

[81] Translated for the words "Plum Tree" – jujube fruit

पीज़ी बोली — "हॉ हॉ वह तो होती ही होगी।" कह कर उस पेड़ के कॉटे साफ करने में लग गयी। उसने थोड़ी ही देर में उसको साफ नया जैसा पेड़ कर दिया।

वह कुछ दूर और आगे चली तो उसको आग मिली। आग बोली — "ओ प्यारी पीज़ी। मेहरबानी कर के ज़रा मेरी भट्टी साफ कर दो क्योंकि इस राख में तो मेरा दम घुटा जा रहा है।"

पीज़ी बोली — "हॉ वह तो है।" और उसने उसकी राख साफ कर दी। अब आग साफ और खुश खुश जल रही थी।

वह और आगे चली तो उसको एक पीपल का पेड़ मिला। पीपल का पेड़ उसको देख कर बोला — "ओ दयालू पीज़ी। ज़रा मेरी यह टूटी शाख ठीक से बॉध दो नहीं तो यह मर जायेगी और मेरी एक शाख मुझसे दूर हो जायेगी।"

"उफ़ उफ़। मैं अभी बॉधती हूॅ।" कह कर उसने उसकी टूटी हुई शाख बॉध दी।

कुछ दूर और आगे जाने पर उसको एक नाला मिला। नाले ने उसको देख कर कहा — "ओ सुन्दर पीज़ी। मेहरबानी कर के मेरे मुॅह से रेत और पत्तियॉ साफ कर दो। जब ये सब होती हैं तो मैं ठीक से बह नहीं पाता।"

"अब ऐसा नहीं होगा। तुम ठीक से बह पाओगे।" कह कर उसने उसका रेत और कचरा जो कुछ भी उसके पानी को रोक रहा था साफ किया जिससे वह फिर से तेज़ी से बहने लगा।

आखिर वह थकी हुई अपने बूढ़े पिता के घर आ पहुँची। पर उसका आश्चर्य तो बहुत बढ़ गया जब वह उसको शाम को आने ही नहीं दे रहा था।

फिर उसने उसको एक चरखा एक भैंस कुछ पीतल के बर्तन एक पलंग और कई सारी चीज़ें लेने की जिद की जैसे कोई लड़की अपने माता पिता के घर से विदा हो कर ससुराल जा रही हो। वह सब उसने भैंस की पीठ पर रखा और अपने घर चल दी।

जब वह नाले के पास आयी तो उसने देखा कि उसके पानी में तो बहुत बढ़िया कपड़े का जाल सा बिछा हुआ है। वह नाला चिल्लाया — "इसे ले लो पीज़ी इसे ले लो। मैं इसको तुम्हारे काम के इनाम में दूर से ले कर आया हूँ।"

सो उसने वह कपड़ा इकट्ठा कर लिया और उसको अपनी भैंस पर रख कर आगे चल दी। उसके बाद वह पीपल के पेड़ के पास आयी तो उसने देखा कि वह शाख जो वह पेड़ से बाँध कर गयी थी उस शाख पर मोतियों की एक माला लटकी हुई है।

पीपल के पेड़ की पत्तियाँ बोलीं — "ले लो पीज़ी इसको ले लो। मैंने इसको एक राजकुमार की पगड़ी से लिया है और अब यह तुम्हारी मेहरबानी का इनाम है।"

उसने वह मोतियों की माला उस शाख से उतार ली और उसे अपने गोरे सुन्दर पतले गले में पहन लिया। माला पहन कर खुश खुश वह आगे चली।

चलते चलते वह आग के पास आयी जिसको उसने जलने में सहायता की थी। अब वह आग तेज़ी से जल रही थी। उसके पास ही एक बेकिंग ट्रे रखी थी जिसमें एक केक रखी थी।

वह बोली — “ले लो पीज़ी इस केक को ले लो। मैंने इसे केवल तुम्हारे लिये तुम्हारी दया के बदले में तुम्हें देने के लिये बनाया है।”

सो खुशकिस्मत पीज़ी ने वह गर्म स्वादिष्ट केक उठाया। उसके दो हिस्से किये – एक अपने लिये दूसरा अपनी बहिन के लिये। बहिन वाला हिस्सा उसने रख लिया और दूसरा हिस्सा वह रास्ते में खाती चली गयी।

अब वह बेर के पेड़ के पास पहुँची तो उसकी सबसे ऊँची शाखाऐं नीचे झुक गयीं। उन पर पके पीले बेर लगे हुए थे।

बेर का पेड़ बोला — “ले लो पीज़ी ले लो। मुझ पर से जितने चाहो उतने बेर तोड़ लो। ये बेर मैं तुम्हें तुम्हारी दया के बदले में दे रहा हूँ।”

सो उसने वहॉ से उसने अपना दुपट्टा भर कर बेर तोड़ लिये। कुछ उसने खुद खाये कुछ उसने अपनी बहिन के लिये रख लिये।

जब वह घर पहुँची तो उसकी बड़ी लड़ाकू बहिन अपनी छोटी बहिन की अच्छी किस्मत और दयालु होने पर खुश होने की बजाय उस पर इतना गुस्सा हो गयी कि बेचारी पीज़ी को अपनी अच्छी किस्मत पर दुखी होना पड़ गया।

उसने कहा — "आपकी भी किस्मत अच्छी हो सकती थी अगर आप पिता जी के घर जातीं तो।"

सो अगली सुबह लालची बीन्ज़ी उठी और वह भी यह सोच कर अपने पिता के घर चल दी कि उसको भी पीज़ी की तरह ही अच्छी अच्छी चीज़ें मिलेंगी।

चलते चलते उसको भी बेर का पेड़ मिला तो वह उससे बोला — "बीन्ज़ी मेहरबानी कर के ज़रा रुको और मेरे कॉटे साफ करती जाओ।"

तो बीन्ज़ी ने अपने सिर को एक झटका दिया और बोली — "ऊँह। जितनी देर में तुम्हारे कॉटे साफ करूँगी उतनी देर में तो मैं तीन मील चल लूँगी। तुम अपने आप कर लो।"

आगे चली तो उसको एक पीपल का पेड़ मिला। उसने उससे कहा — "बीन्ज़ी ज़रा मेरी यह टूटी शाख बॉध दो। यह मुझे बहुत तंग कर रही है।"

उसकी बात सुन कर वह हॅस दी और बोली — "यह मुझे तो कोई परेशान नहीं कर रही। जितनी देर में मैं तुम्हारी यह शाख बॉधूँगी उतनी देर में तो मैं तीन मील चल लूँगी। यह काम तुम किसी और से करा लो।"

वह और आगे चली तो उसको आग मिली। वह बोली — "ओ सुन्दर बीन्ज़ी। ज़रा मेरी भट्टी साफ कर दो। इसमें इतनी सारी

राख जमा हो गयी है कि इससे मेरा गला घुटा जा रहा है। तुम इसे साफ कर दोगी तो मैं ठीक से साँस ले पाऊँगी।"

बीन्ज़ी ने मुँह बिचकाते हुए कहा — "उँह। तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो जो तुमने इतनी सारी राख अपने अन्दर समेट रखी है। तुम क्या समझती हो कि मैं क्या उन सबकी सहायता करने के लिये निकली हूँ जो अपनी सहायता अपने आप नहीं कर सकते। नहीं नहीं। हर एक को अपनी सहायता अपने आप ही करनी चाहिये।"

आखिर वह अपने पिता के घर पहुँच गयी। उसने सोच रखा था कि वह बिना दो भैंसों का बोझा लिये हुए वहाँ से खिसकने वाली नहीं है।

पर जैसे ही वह अपने पिता के घर के आँगन में घुस रही थी कि उसका भाई और उसकी पत्नी दोनों उसके ऊपर बरस पड़े — "तो यह सब तुम्हारी करतूत है। कल जब हम काम पर गये हुए थे तो पीज़ी आयी थी। बिना कुछ किये धरे ही बाबा ने उसको अपनी सबसे अच्छी भैंस दे दी और भी पता नहीं क्या क्या दे दिया।

और आज तुम हमारे ऊपर डाका डालने चली आयी हो। ओ भिखारिन चली जाओ यहाँ से।"

इस तरीके से उन्होंने उस थकी हुई को, घायल को, भूखी को गर्मी में वहाँ से भगा दिया।

वह अपने आप से बोली "कोई बात नहीं। मुझे अभी भी कपड़ों का जाल तो मिल ही जायेगा।

जब वह नाला पार करने लगी तो यकीनन वहॉ पीज़ी वाले कपड़े से तीन गुना बढ़िया कपड़े का एक जाल पड़ा था जो किनारे के पास ही बह रहा था पर जब बीन्ज़ी उसको पकड़ने के लिये उस पर कूदी तो अफसोस वहॉ पानी गहरा होने की वजह से वह तो डूबते डूबते बची। और वह कपड़ा भी उसको नहीं मिला क्योंकि वह उसके हाथ की उॅगलियों को छू कर निकल गया।

उसने सोचा "कोई बात नहीं। मुझे मोती की माला तो मिल ही जायेगी ही।"

हॉ वहॉ उस टूटी शाख पर एक मोती की माला लटकी हुई तो थी पर बीन्ज़ी जब उसे लेने के लिये कूदी तो उसको लगा भी कि उसने पेड़ की शाख और माला दोनों पकड़ ली हैं तो वह तो यह देख कर सन्न रह गयी कि वह शाख तो टूट कर उसके सिर पर गिर पड़ी।

जब वह होश में आयी तब तक तो कोई और ही उसकी वह माला ले कर वहॉ से उड़न छू हो गया था। अब उसके माथे पर एक अंडे जितना बड़ा गूमड़ा[82] पड़ा रह गया था।

इन सब घटनाओं ने उसको काफी थका दिया था। वह भूख से परेशान थी सो वह इस आशा में आग की तरफ बढ़ी कि उसको भी वहॉ एक बहुत अच्छी से केक मिल जायेगी।

[82] Translated for the word "Bump".

हॉ वहॉ थी एक बहुत ही खुशबूदार मीठी केक पर जैसे ही बीन्ज़ी ने उसे लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो उस केक के बहुत गरम होने की वजह से उसका हाथ जल गया। वह दर्द के मारे इधर उधर कूदने लगी। एक कौआ उस केक को उड़ा कर ले गया और वह वहॉ रोती रह गयी।

अब उसने सोचा कि ठीक है यह सब उसको नहीं मिले तो न सही कम से कम उसको बेर तो मिल ही जायेंगे। यह सोच कर वह बेर के पेड़ की तरफ भागी। वहॉ उस पेड़ की सबसे ऊॅची शाख पर पके पीले बेर लगे थे। उनको देख कर उसके मुॅह में पानी भर आया।

पहले उसने अपने बॉये हाथ से नीचे वाली शाखें पकड़ीं और फिर दॉये हाथ से ऊपर वाली शाख पर लगे बेर तोड़ने की कोशिश की तो उसका वह हाथ कॉटों से छिल गया तो उसने अपने बॉये हाथ से बेर तोड़ने की कोशिश की पर वह किसी भी हाथ से बेर न तोड़ सकी।

उसके सारे चेहरे और बॉहों पर कॉटे चुभ गये थे। उनसे खून भी निकल रहा था तो उसने अपनी यह बेकार की कोशिश छोड़ दी और घायल पिटी हुई दुखी भूखी अपने घर चली गयी।

मुझे विश्वास ही कि उसकी दयालु बहिन ने जरूर ही उसके घावों पर मरहम लगाया होगा उसको खाना खिलाया होगा और उसको बिस्तर में लिटा कर उसकी सेवा की होगी।

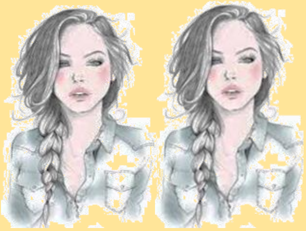

# 21 गीदड़ और तीतर[83]

एक बार एक गीदड़ और तीतर ने हमेशा दोस्त बने रहने की कसम खायी। पर गीदड़ बहुत चालाक था।

वह अक्सर तीतर से कहता — "तुम मेरे लिये उसका आधा भी नहीं करतीं जितना कि मैं तुम्हारे लिये करता हूँ और फिर भी तुम अपनी दोस्ती की शान बघारती हो।

मेरा विचार दोस्ती का यह है जो मुझे हॅसा सके, रुला सके, अच्छा खाना खिला सके और जरूरत पड़ने पर मेरी जान भी बचा सके। तुम यह सब नहीं कर सकतीं।"

तीतर बोली "देखते हैं। तुम मेरे साथ थोड़ी दूर तक चलो। अगर मैंने तुम्हें इस बीच न हॅसा दिया तो तुम मुझे खा लेना।"

कह कर तीतर वहॉ से उड़ गयी और कुछ दूर जा कर दो राहगीरों से मिली जो एक दूसरे के पीछे जा रहे थे। उन दोनों के पैरों में छाले पड़े हुए थे और वे थके हुए थे।

उनमें से आगे वाला राहगीर अपना बोझ एक डंडे से बॉध कर अपने कन्धे पर लिये जा रहा था जबकि दूसरा राहगीर अपने हाथ में अपने जूते लिये जा रहा था।

---

[83] The Jackal and the Partridge (Tale No 21)

तीतर बहुत ही हलके से जैसे कोई पंख बैठता है उसी तरीके से आगे वाले राहगीर के डंडे पर बैठ गयी। उसको पता भी नहीं चला और वह चलता रहा।

पर उसके पीछे आने वाले राहगीर ने यह देख लिया क्योंकि वह उसकी नाक के सामने ही एक पालतू चिड़िया की तरह बैठी हुई थी। उसने अपने मन में सोचा "आज तो यह शाम का अच्छा खाना रहेगा।" और तुरन्त ही अपने जूते उसकी तरफ फेंक कर मारे क्योंकि वे तो उसके हाथ में ही थे।

यह देख कर तीतर तो उड़ गयी और उसके जूते आगे जाते हुए राहगीर की पगड़ी में लग गये। वह चिल्लाया — "उफ़। तुम कितने नीच आदमी हो। तुमने अपने जूते मेरे सिर पर क्यों मारे?"

तो दूसरे राहगीर ने नम्रता से कहा — "मेहरबानी कर के नाराज न हो। मैंने वे जूते तुम्हारे सिर पर नहीं मारे थे बल्कि एक तीतर तुम्हारी डंडी पर बैठी हुई थी उस पर मारे थे।"

आगे वाले राहगीर ने गुस्से में भर कर कहा — "क्या वह मेरी डंडी पर बैठी थी? तुमने मुझे बेवकूफ समझा है क्या? तुम मुझे ये बेकार की कहानियॉ मत बताओ। पहले तो तुम मेरा अपमान करते हो और फिर कायरों की तरह से झूठ बोलते हो। तुमको तमीज़ सीखनी चाहिये।"

कह कर आगे वाला राहगीर पीछे वाले राहगीर पर टूट पड़ा और वे लोग तब तक लड़ते रहे जब तक दोनों थक कर चूर नहीं हो

गये। उन दोनों की नाकों से खून बह रहा था। गुस्से में उनके कपड़े फट गये थे।

यह देख कर गीदड़ तो हॅसी के मारे बस मर सा ही गया।

तीतर बोली — “क्या अब तुम सन्तुष्ट हो?”

गीदड़ हॅसते हॅसते बोला — “तुमने तो वाकई मुझे हॅसा हॅसा कर लोट पोट कर दिया। पर मुझे शक है कि तुम मुझे रुला भी सकती हो या नहीं। हॅसाना तो आसान है पर रुलाना बहुत मुश्किल काम है।”

कुछ सोचते हुए तीतर बोली — “देखते हैं। देखो वह शिकारी अपने कुत्तों के साथ आ रहा है। तुम उस पेड़ के खोखले तने में छिप जाओ और मुझे देखो। अगर तुम ज़ार ज़ार न रोओ तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारे अन्दर कोई भावनाऐं ही नहीं हैं।”

सो गीदड़ पास के एक पेड़ के खोखले तने में छिप कर बैठ गया और तीतर को देखने लगा कि वह अब क्या करती है। उसने देखा कि तीतर झाड़ियों के आस पास मॅडरा रही है।

जब तीतर को यह यकीन हो गया कि कुत्तों ने उसे देख लिया है तो वह उड़ कर उस पेड़ की तरफ चली जिस पेड़ के खोखले में गीदड़ छिपा बैठा था।

अब इसमें तो कोई शक नहीं है कि कुत्तों को उसकी सूँघ आ गयी थी सो वे इतने ज़ोर से भौंके कि शिकारी उनके पास आ गया और यह देख कर कि वहॉ क्या है उन्होंने गीदड़ को उसकी पूँछ

पकड़ कर खींच लिया। इसके साथ साथ कुत्तों ने भी उसको मन भर कर तंग किया। बाद में वे उसको मरा जान कर छोड़ गये।

धीरे धीरे गीदड़ ने अपनी ऑखें खोलीं क्योंकि वह तो केवल मरने का बहाना कर रहा था। उसने देखा कि तीतर तो पेड़ के ऊपर बैठी हुई उसी को देख रही थी।

उसने पूछा — “क्या तुम रोये? क्या मैंने तुम्हारी ऊँची भावनाओं को जगा दिया?”

गीदड़ उस पर गुर्राया — “चुप रहो। मैं तो डर के मारे अधमरा ही हो गया था।”

सो गीदड़ वहीं कुछ देर के लिये लेटा रहा। अपने घावों को थोड़ा आराम पहुॅचाने की कोशिश करता रहा।

इस बीच उसको भूख लग आयी सो वह तीतर से बोला — “अब सच्ची दोस्ती का समय आया है। अब तुम मुझे एक बहुत अच्छा सा खाना खिला दो तो मैं तुम्हें अपना बहुत अच्छा दोस्त घोषित कर दूॅगा।”

तीतर बोली — “ठीक है। बस मुझे देखते रहो और जब समय आये तब अपने आप खाना खा लेना।”

उसी समय कुछ स्त्रियों का एक झुंड चला आ रहा था। वे स्त्रियॉ खेतों की कटायी के समय अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर जा रही थीं।

तीतर ने एक बहुत छोटी सी चीख निकाली और एक झाड़ी में से निकल कर दूसरी झाड़ी में उनके सामने घूमने लगी। लगता था जैसे वह घायल हो गयी हो।

स्त्रियॉ बोलीं — “अरे यह तो एक घायल चिड़िया है। इसको तो हम आसानी से पकड़ सकते हैं।” सो वे उसके पीछे पीछे घूमने लगीं।

पर चालाक तीतर ने उनके साथ हजारों चालें खेली जिससे वे उसको पकड़ने के लिये इतनी ज़्यादा उत्सुक हो गयीं कि उन्होंने अपनी अपनी पोटलियॉ तो नीचे रख दीं ताकि वे उसके पीछे आजादी से दौड़ सकें।

इस बीच गीदड़ को मौका मिल गया और वह उनकी पोटलियों के पास तक पहुँच गया और बहुत बढ़िया खाना खाया।

तीतर ने उससे पूछा — “अब तो तुम सन्तुष्ट हो?”

गीदड़ बोला — “ठीक है। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि तुमने मुझे बहुत अच्छा खाना खिलाया तुमने मुझे हॅसाया तुमने रुलाया पर दोस्ती का एक बहुत बड़ा इम्तिहान अभी तुम नहीं दे सकीं। तुम मेरी ज़िन्दगी नहीं बचा सकीं।”

तीतर बहुत दुखी हो कर बोली — “शायद यह काम में न कर पाऊॅ क्योंकि मैं इतनी छोटी और कमजोर हूँ कि... पर अब तो रात हो रही है हमें देर हो रही है अब हमें घर जाना चाहिये। किले की तरफ से तो रास्ता बहुत लम्बा पड़ेगा चलो नदी की तरफ से चलते

हैं। वहाँ मेरा एक दोस्त मगर रहता है वह हमारी सहायता कर देगा।"

सो वे नदी की तरफ चल दिये। अपने प्लान के अनुसार तीतर ने अपने दोस्त मगर को बुलाया और उससे नदी पार जाने के लिये कहा। मगर तैयार हो गया। वे दोनों उसकी पीठ पर बैठ गये और वह उनको नदी पार कराने लगा।

पर जैसे ही वे नदी की बीच धार में पहुँचे तीतर बोली — "मुझे ऐसा लगता है कि मगर हमसे कोई चाल खेलना चाहता है। कितनी अजीब सी बात होती अगर वह तुमको नदी में डुबो दे तो।"

गीदड़ कुछ डरते हुए बोला — "यह तो तुम्हारे लिये भी अजीब सी बात होती।"

तीतर बोली — नहीं मेरे लिये नहीं, मेरे लिये नहीं क्योंकि मेरे तो पंख हैं मैं तो उड़ जाऊँगी पर तुम्हारे पंख नहीं हैं तुम क्या करोगे?"

यह सुन कर गीदड़ तो डर के मारे काँपने लगा। उसी समय मगर चिल्लाया कि उसको भूख लगी है। उसे अभी बहुत बढ़िया खाना चाहिये।"

गीदड़ तो इसके बाद एक शब्द भी नहीं कह पाया। तब तीतर चिल्लायी — "ओ मगर हमारे साथ चाल खेलने की कोशिश मत करो। मैं तो उड़ जाऊँगी पर जहाँ तक मेरे दोस्त का सवाल है तुम उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

वह कोई बेवकूफ नहीं जो अपनी ज़िन्दगी ऐसे छोटे मोटे घूमने की जगह ले कर चले। वह उसको अपने घर में एक आलमारी में ताले में बन्द करके रख कर आता है।"

मगर ने आश्चर्य से पूछा — "अरे क्या यह सच है?"

तीतर बोली — "हॉ मैं बिल्कुल ठीक कह रही हूॅ। तुम अगर चाहो तो उसको खाने की कोशिश करो पर तुम्हारी यह कोशिश बेकार ही जायेगी।"

मगर तो यह सुन कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। उसको अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है। वह बोला — "अरे यह तो बड़ी अजीब सी बात है।" कह कर वह उसको नदी पार करा कर दूसरे किनारे पर छोड़ आया।

दूसरे किनारे पर पहुॅच कर तीतर बोली — "ठीक है। अब तो तुम सन्तुष्ट हो?"

गीदड़ बोला — "मैम। तुमने मुझे हॅसाया, तुमने मुझे रुलाया, तुमने मुझे खाना खिलाया और तुमने मेरी जान बचायी। इसके लिये मैं तुम्हारी बहुत इज़्ज़त करता हूॅ पर मुझे लगता है तुम मेरी दोस्त बनने के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही अक्लमन्द हो सो गुड बाई।"

इसके बाद गीदड़ फिर कभी तीतर के पास नहीं गया।

# 22 सॉप स्त्री और अली मरदान खान[84]

एक बार की बात है कि राजा अली मरदान खान[85] काश्मीर की डल झील के ऊपर शिकार के लिये गया। डल झील का साफ पानी पहाड़ों और शाही शहर श्रीनगर के बीच में स्थित है। वहॉ उसको एक फूल सी सुन्दर लड़की मिली जो एक पेड़ के नीचे बैठी हुई बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी।

उसने अपने साथ आने वालों को थोड़ी दूर पर छोड़ा और अकेला ही उसके पास गया। उसने उससे पूछा कि वह कौन थी और वहॉ उस जंगल में अकेली कहॉ से आयी थी।

उस लड़की ने राजा की ऑखों में देखा और कहा — "मैं चीन के बादशाह की अपनी दासी[86] हूॅ। मैं उसके महल में इधर उधर घूमने निकली थी तो घूमते घूमते रास्ता भूल गयी और इधर आ निकली।

मुझे पता नहीं मैं कितनी दूर आ निकली पर अब तो मैं थकी हुई और भूखी हूॅ मुझे लगता है कि मैं तो थकान और भूख से मर ही जाऊॅगी।"

---

[84] The Snake-Woman and Ali Mardaan Khaan (Tale No 22)

[85] Ali Mardaan Khaan belongs to modern history having been Governor of Kashmir (not the King) under the Mugal Emperor Shah Jehan about 1650 AD. He has been very famous and is now the best remembered Governor.

[86] A common way of explaining the origin of unknown girls in Muslims tales.

राजा उस लड़की की सुन्दरता की तरफ देखता हुआ बोला — "जब तक अली मरदान ज़िन्दा है और किसी को बचा सकता है तब तक इतनी सुन्दर लड़की इस तरह नहीं मर सकती।"

उसने अपने साथियों को बुलाया और उनको उसे अपने शालीमार बाग में बने महल में ले जाने के लिये कहा जहाँ फव्वारे फूलों की क्यारियों को पानी की बूँदों से नहलाते थे और फलों से लदे पेड़ संगमरमर की सीढ़ियों पर झुके रहते थे।

और जहाँ फूलों और धूप के बीच में वह राजा के साथ रहती थी जो उसकी सुन्दरता का इतनी जल्दी दीवाना बन गया था कि वह दुनियाँ की हर बात भूल गया था।

इस तरह से दिन निकलने लगे। एक दिन एक जोगी का नौकर गंगाबल झील से जो हरमुख पहाड़[87] पर है उसका पवित्र पानी ले कर अपने मालिक के पास वापस आ रहा था। क्योंकि वह हर साल उस पहाड़ पर अपने मालिक के लिये उस झील से पानी ले कर जाता था तो वह शालीमार बाग के पास से ही गुजरता था।

उस समय वह उसकी दीवार के ऊपर से फव्वारे का पानी गिरता हुआ देखता था जैसे कोई रुपहली धूप बिखेर रहा हो।

उस दृश्य को देख कर उसका मन इतना लुभाया कि उसने अपना पानी का बर्तन तो जमीन पर नीचे रख दिया और वह खुद

[87] Gangabal holy lake on Haramukh mountain

दीवार फॉद कर उसके अन्दर घुस आया ताकि वह उस दृश्य को ठीक से देख सके।

एक बार जब वह फव्वारे और फूलों के बीच आ गया तो वह उनकी सुन्दरता देखने के लिये इधर उधर घूमने लगा। सुन्दरता से प्रभावित हो कर जब वह थक गया तो एक पेड़ की छाँह में लेट गया और सो गया।

उधर राजा बाग में घूमने आया तो उसने देखा कि उसके बाग में एक पेड़ के नीचे एक आदमी सो रहा है। उसके दॉये हाथ की मुट्ठी बॅधी हुई है और उसमें कुछ रखा हुआ है।

अली मरदान ने उसकी उॅगलियॉ बहुत धीरे से खोलीं तो उसने देखा कि उसकी मुट्ठी में एक छोटा सा डिब्बा है जिसमें कोई खुशबू वाला मरहम रखा हुआ है। जब वह उसे और ध्यान से देख रहा था तभी उस आदमी की ऑख खुल गयी।

उसने देखा कि उसकी मुट्ठी में से उसके मरहम का डिब्बा गायब है तो वह रोने लगा। यह देख कर राजा ने कहा कि वह परेशान न हो उसका वह डिब्बा उसके पास है। कह कर उसने उसको वह डिब्बा दिखा दिया।

और अगर वह उसको यह बता दे कि वह डिब्बा उसके लिये क्यों इतना कीमती है तो वह उसको उसे वापस भी कर देगा।

जोगी के नौकर ने कहा — "यह डिब्बा मेरे मालिक का है और इसमें रखे इस मरहम में बहुत सारे गुण हैं। इसकी ताकत से मुझे

कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती। इसी की ताकत से मैं गंगाबल जा सका और यह बर्तन भर कर पानी वहाँ से इतने थोड़े समय में ला सका ताकि मेरे मालिक को इस पवित्र चीज़ की कमी न रहे।"

राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उस आदमी की तरफ ध्यान से देखते हुए पूछा — "मुझे ठीक से बताना कि क्या तुम्हारा यह मालिक इतना बड़ा संत है? क्या वह वाकई इतना आश्चर्यजनक आदमी है?"

नौकर बोला — "जी राजा साहब। वह वाकई इतने बड़े संत हैं। वह वाकई इतने आश्चर्यजनक आदमी हैं। दुनियाँ में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे वह नहीं जानते।"

यह जवाब सुन कर तो राजा की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी। उसने उस डिब्बे को अपनी जेब में रख कर कहा — "अब तुम अपने घर अपने मालिक के पास जाओ और उनसे कहना कि आपके मरहम का डिब्बा अली मरदान के पास है और वह तब तक उसके पास रहेगा जब तक वह खुद उसको लेने नहीं आयेगा।"

इस तरह वह उन संत को अपने सामने बुलाना चाहता था।

नौकर ने जब देखा कि अब उसके पास कोई और रास्ता नहीं है तो वह अपने मालिक के पास चल दिया। उसको घर पहुँचने में ढाई साल लग गये थे क्योंकि अब उसके पास वह कीमती डिब्बा तो था नहीं जिसकी सहायता से उसने गंगाबल का पानी लिया था।

अली मरदान इस सारे समय उस अजनबी लड़की के साथ ही शालीमार महल में रहता रहा। वह उसकी सुन्दरता में ही डूबा रहा और बाहर का सब कुछ भूल गया। पर फिर भी वह खुश नहीं था। उसका चेहरा कुछ अजीब सा दिखायी देने लगा। उसकी ऑखें कुछ पथरा सी गयी थीं।

जब नौकर अपने घर पहुँचा तो उसने अपने मालिक को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। जोगी यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ पर उसका काम बिना उस मरहम के डिब्बे के नहीं चल सकता था। वह डिब्बे का मरहम ही था जिसकी वजह से वह गंगाबल से पानी मॅगवा सकता था।

वह तुरन्त ही अली मरदान के दरबार की तरफ चल दिया। जब वह अली मरदान के दरबार में पहुँचा तो उसका बड़ी इज़्ज़त से स्वागत किया और उसका डिब्बा लौटा देने का वायदा पूरा किया।

जोगी वाकई में बहुत ही विद्वान आदमी था। जब उसने राजा का चेहरा देखा तो वह तुरन्त ही पहचान गया कि राजा कुछ ठीक नहीं था सो वह बोला — "राजा साहब। आपने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है इसलिये इसके बदले में मैं आपके लिये एक बहुत ही बढ़िया काम करना चाहता हूँ।

इसलिये आप मुझे सच सच बतायें कि क्या आपके चेहरे पर ये सफेद दाग और यह पथरीली ऑखें बहुत पहले से ही हैं?"

यह सुन कर राजा का सिर नीचे लटक गया।

पवित्र जोगी ने उससे फिर पूछा — "मेहरबानी कर के मुझे सच सच बताइये। आपके महल में क्या कोई अजनबी स्त्री रहती है?"

जोगी की यह तसल्ली भरी बात सुन कर राजा की हिम्मत बढ़ी और उसने उसको जंगल में एक अजनबी सुन्दर लड़की के मिलने की और उसको महल में लाने की बात खुल कर बता दी।

जोगी निडर हो कर बोला — "राजा साहब। वह चीन के बादशाह की दासी नहीं है और वह लड़की भी नहीं है। वह तो लामिया[88] है और कोई नहीं। यह एक 200 साल का साँप है जिसके पास एक स्त्री का रूप लेने की ताकत है।"

यह सुन कर पहले तो राजा अली मरदान कुछ हिचकिचा गया। उसे जोगी की बात पर विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

पर जब जोगी ने जिद की और उसको विश्वास दिलाने की कोशिश की तब वह जोगी की सलाह मानने पर राजी हो गया। ताकि वह उसके शब्दों की सच्चाई और झूठ का पता लगा सके।

उसी शाम उसने दो तरह की खिचड़ी[89] बनाने का और दोनों खिचड़ियों को एक ही थाली में परसने का हुक्म दिया। इस तरह से

---

[88] In the original, Lamia is said in Kashmir to be a snake 200 years old and to possess the power of becoming a woman. In India, especially in hill districts, it is called "Yahawwaa". In this tale the Lamia is called "Waasudev" – a mythical serpent. Waasdeo is the same as Waasudev, the son of Vasudev. The Lamia is not only known in India from ancient times to the present day, but also in Tibet and Central Asia generally, and in Europe from ancient times to medieval times and always as a malignant supernatural being.

[89] Sweet Khichri consists of rice, sugar, coconut, raisins, cardmoms and aniseed, and salt Khichri pulse and rice with salt and some other spices (optional) and Ghee.

एक थाली में दो तरह की खिचड़ी थीं आधी मीठी और आधी नमकीन।

रोज की तरह से जब राजा अपनी साँप स्त्री के साथ उसी थाली में से खाना खाने के लिये बैठा तो उसने नमकीन खिचड़ी उसकी तरफ कर दी और मीठी खिचड़ी अपनी तरफ कर ली।

उसने जब नमकीन खिचड़ी खायी तो वह उसको ज़्यादा नमक वाली लगी पर उसने देखा कि राजा तो उस खिचड़ी को बड़ा स्वाद ले ले कर बिना कुछ कहे खा रहा था तो उसने भी अपनी खिचड़ी चुपचाप खा ली।

पर जब वे सोने के लिये चले गये राजा ने जोगी का कहना मानते हुए राजा ने सोने का बहाना किया। साँप स्त्री को उतना नमक वाला खाना खाने की वजह से इतनी प्यास लगी कि उसको पानी पीने की बहुत ज़ोर की इच्छा हो आयी।

उसने कमरे में पानी ढूँढा पर उसको पानी कहीं नहीं मिला तो उसको पानी पीने के लिये बाहर जाना पड़ा।

अब अगर किसी साँप स्त्री को बाहर जाना पड़े तो वह केवल अपने ही रूप में जा सकती है। सो क्योंकि राजा केवल सोने का बहाना ही कर रहा था उसने देखा कि वह सुन्दर लड़की अपने पलंग से उतरी और एक बहुत ही खतरनाक जहरीले साँप में बदल गयी।

उसने कमरे का दरवाजा पार किया और बाहर चली गयी। वह दबे पाँव उसके पीछे पीछे चल दिया और उसे देखता रहा कि बाहर

जा कर क्या करती है। उसने देखा कि जब तक वह डल झील पहुँची उसने रास्ते में पड़े सब फव्वारों से पानी पिया। वहाँ जा कर उसने झील में बहुत देर तक पानी पिया और नहायी धोयी।

राजा जोगी की बातों से बहुत सन्तुष्ट था तो उसने उससे विनती की कि वह उसे इससे बचने की कोई तरकीब बताये। जोगी ने उसकी सहायता करने का वायदा किया अगर राजा उसकी बात ठीक से माने तो।

सो उन्होंने एक ओवन बनवाया जिसको कई धातुओं को मिला कर पिघला कर उनसे बनवाया गया था। उसको ढकने के लिये एक बहुत ही मजबूत ढक्कन बनवाया जिसमें एक बहुत भारी ताला लगा हुआ था।

इसको बागीचे के एक कोने में रखवा दिया गया जहाँ उसे भारी भारी जंजीरों से जमीन से जड़ दिया गया था।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो राजा ने साँप स्त्री से कहा — "मेरे दिल की प्यारी। चलो एक दिन हम लोग अकेले ही बाग घूमने चलते हैं और वहाँ खुद ही खाना बना कर खायेंगे।"

उसको कोई शक नहीं हुआ सो वह राजी हो गयी। सो एक दिन वे दोनों बागीचे में अकेले घूमने निकले। जब शाम को खाने का समय आया तो दोनों मिल कर खाना बनाने में लग गये।

राजा ने ओवन बहुत गर्म कर लिया और रोटी का आटा भी मल लिया। पर वह आटा उसके हाथ में चिपकने लगा तो उसने

सॉप स्त्री से कहा कि अब इससे ज़्यादा वह उस आटे को और नहीं मल सकता और अब वह उसकी रोटी बेक कर दे।

पहले तो उसने यह कहते हुए इस काम के लिये मना कर दिया कि ओवन उसको बिल्कुल अच्छे नहीं लगते थे। पर जब राजा ने नाराजी का बहाना किया कि उसके राजा की सहायता न करने से उसको ऐसा लगता है कि वह उसको बिल्कुल प्यार नहीं करती तो वह बहुत बुरा सा मुँह बना कर बेक करने के लिये बैठ गयी।

जैसे ही वह ओवन के मुँह पर रोटी को पलटने के लिये झुकी राजा ने मौका देख कर उसको ओवन के अन्दर धकेल दिया और बाहर से दरवाजा फटाक से बन्द कर दिया। उसने पहले एक ताला लगाया और फिर दूसरा ताला भी लगा दिया।

अब जब सॉप स्त्री ने अपने आपको ओवन में बन्द पाया तो उसने उसमें से बाहर निकलने की कोशिश की और अगर वह ओवन धरती से मजबूत जंजीरों से न बॅधा होता तो शायद वह उसे तोड़ कर बाहर निकल ही जाती।

पर जंजीरों से बॅधने की वजह से वह उसी में उछलती कूदती रही पर बाहर नहीं निकल सकी।

तभी जोगी भी वहीं आ गया और राजा और जोगी दोनों ने मिल कर उसके ऊपर और बहुत सारा ईंधन डाल दिया। अब क्या था ओवन गर्म से और ज़्यादा गर्म होता गया। यह सब पहले दिन शाम के चार बजे से ले कर अगले दिन शाम के चार बजे तक

चलता रहा। तब कहीं जा कर साँप स्त्री ने उछलना कूदना बन्द किया और सब कुछ शान्त हो गया।

उन्होंने ओवन के ठंडे होने का इन्तजार किया। जब वह ठंडा हो गया तब उसे खोला तो उसमें साँप स्त्री तो उन्हें कहीं दिखायी नहीं दी बस केवल राख का एक छोटा सा ढेर पड़ा था।

जोगी ने उस राख में हाथ डाल कर एक छोटा सा गोल पत्थर निकाल लिया और उसे राजा को देते हुए कहा — "यह साँप स्त्री का सत[90] है। इससे तुम जिस किसी चीज़ को छुओगे वह सोना बन जायेगी।"

पर राजा अली मरदान बोला — "यह तो किसी की भी ज़िन्दगी की कीमत से भी ज़्यादा है क्योंकि इससे तो जलन लड़ाई और कत्ल ही आयेंगे।"

सो जब वह ऐटोक नदी[91] के पास गया तो उसने वह पत्थर उस नदी में फेंक दिया ताकि उसकी वजह से दुनियाँ में अशान्ति न फैल जाये।

[90] Translated for the word "Essence" – this stone was "Touchstone" or in Hindi it is called "Paaras" stone.

[91] Attock River – in the original it is the Atak River (Indus River) near Hoti Mardaan – a place near Atak or Attock.

# 23 जादुई अँगूठी[92]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके दो बेटे थे। जब वह मरा तो वह अपना सारा खजाना उन्हीं के लिये छोड़ गया। पर छोटे भाई ने उसको इतनी लापरवाही से खर्च करना शुरू कर दिया कि बड़े भाई को उससे कहना पड़ा — "जो कुछ भी बचा है अब हम उसको आपस में बाँट लेते हैं। तुम अपना हिस्सा ले लो और फिर जो तुम्हारे मन में आये तुम उसका वही करो।"

सो छोटे भाई ने अपना हिस्सा ले लिया और उसकी एक एक पैनी कुछ ही समय में खत्म कर दी। जब उसके पास सचमुच में ही कुछ नहीं बचा तो उसने अपनी पत्नी से जो कुछ भी उसके पास था उसे दे देने के लिये कहा।

यह सुन कर वह रो पड़ी और रोते हुए बोली — "मेरे पास तो अब कुछ भी नहीं बचा बस केवल एक गहना बचा है। अगर आपको चाहिये तो उसको भी ले लीजिये।"

उसने उससे वह अँगूठी ले ली और उसको चार पौंड में बेच दिया। उस पैसे को ले कर वह अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। जब वह जा रहा था तो उसको एक आदमी मिला जो एक बिल्ला लिये जा रहा था।

[92] The Wonderful Ring  (Tale No 23)

खर्चीले राजकुमार ने उससे पूछा — "यह बिल्ला कितने का है?"

वह आदमी बोला — "एक सोने के पौंड से कम का नहीं है।"

राजकुमार बोला — "अरे यह तो बड़ा अच्छा सौदा है। लो यह लो पौंड और यह बिल्ला मुझे दे दो।" कह कर उसने उसे एक पौंड दिया और उस बिल्ले को उससे खरीद लिया।

बिल्ले को ले कर वह आगे चला तो उसे एक आदमी और मिला जो एक कुत्ता लिये जा रहा था। उसने उससे भी पूछा — "तुम्हारा यह कुत्ता कितने का है?" तो उसने भी जवाब दिया कि वह उसे एक सोने के पौंड से कम में नहीं देगा।

वह बोला कि यह भी एक अच्छा सौदा है। उसने उसे भी एक सोने का पौंड दिया और उसका कुत्ता ले कर आगे चला।

बिल्ले और कुत्ते को ले कर वह आगे चला तो उसको एक आदमी तोता ले जाता हुआ मिला। उसने उससे भी पूछा कि वह अपना तोता कितने में बेचेगा। उसने भी उसके लिये एक सोने का पौंड माँगा तो एक सोने का पौंड दे कर उसने वह तोता भी खरीद लिया।

अब उसके पास केवल एक पौंड बच गया। फिर भी आगे चल कर उसको एक जोगी मिला जिसके पास एक साँप था तो उसने उससे भी पूछा — "तुम यह साँप मुझे कितने का दोगे?"

जोगी बोला — "एक सोने के पौंड का।"

वह बोला — "अरे यह तो बहुत सस्ता है।" कह कर उसने अपना आखिरी सिक्का निकाला और उसे उसको दे कर उससे वह सॉप खरीद लिया।

अब उसके पास एक बिल्ला, एक कुत्ता, एक तोता और एक सॉप हो गये पर जेब में उसके एक पैनी भी नहीं थी। फिर भी बड़ी बहादुरी से वह अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये कुछ काम करने के लिये चल दिया। पर कड़ी मेहनत वाले काम ने उसे थका दिया। क्योंकि वह तो एक राजकुमार था और ऐसा काम उसने कभी किया नहीं था।

सॉप ने जब उसे इस हालत में देखा तो उसको अपने दयालु मालिक पर रहम आ गया। वह बोला — "राजकुमार। अगर तुम्हें डर न लगे तो तुम मेरे पिता के पास चलो। शायद वह तुम्हें मुझे जोगी से बचाने के लिये कुछ दे देंगे।"

अब यह खर्चीला राजकुमार तो किसी से डरता नहीं था सो वह और सॉप दोनों सॉप के पिता के घर चल दिये। जब वे सॉप के घर पहुँचे तो सॉप ने उसको घर के बाहर छोड़ा और खुद अकेला ही अन्दर गया ताकि वह अपने पिता को अपने घर आये मेहमान से मिलने के लिये तैयार कर सके।

जब सॉप के पिता ने अपने बेटे सॉप की बात सुनी तो वह बहुत खुश हुआ और उसने कहा कि वह मेहमान को जो कुछ भी वह चाहेगा वही उसे दे देगा।

सो बेटा साँप मेहमान को बाहर से अपने पिता के सामने लाने के लिये गया। जब वह राजकुमार को अन्दर ले जा रहा था तो उसने उसके कान में धीरे से कहा — "मेरे पिता तुम्हें जो कुछ भी चाहिये यानी जो कुछ भी तुम चाहो देने के लिये तैयार हैं। पर याद रखना तुम उनके हाथ में पड़ी एक छोटी अँगूठी ही माँगना और कुछ नहीं।"

यह सुन कर राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसको लगा कि एक अँगूठी एक भूखे आदमी के लिये किस काम की। फिर भी उसने वही किया जो बेटे साँप ने उससे करने के लिये कहा था।

जब पिता साँप ने राजकुमार से पूछा कि वह अपने बेटे को बचाने के बदले में क्या लेना चाहता है तो वह बोला — "आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मेरे पास सब कुछ है मुझे कुछ नहीं चाहिये।"

तब पिता साँप ने एक बार उससे और पूछा कि वह उसके बेटे को बचाने के लिये उससे कुछ भी माँग ले पर उसने फिर वही जवाब दिया कि जो उसे चाहिये वह सब उसके पास था।

फिर भी जब पिता साँप ने उससे तीसरी बार पूछा तो वह बोला — "अगर आपकी मुझे कुछ देने की ही इच्छा है तो निशानी के तौर पर मुझे अपने हाथ में पहनी हुई यह अँगूठी दे दीजिये।"

इस बात पर पिता साँप बहुत गुस्सा हो गया और कुछ नाखुश सा दिखायी दिया। वह बोला — "अगर मैंने तुमसे वायदा नहीं

किया होता तो मेरा यह कीमती खजाना माँगने के लिये मैं तुम्हें यहाँ इसी जगह खड़े खड़े जला कर राख का ढेर कर देता। पर क्योंकि तुमसे मैंने वायदा किया है इसलिये इस समय तुम यह अँगूठी लो और तुरन्त चले जाओ।"

सो राजकुमार ने वह अँगूठी उससे ली और अपने साँप नौकर के साथ वहाँ से अपने घर चला गया।

रास्ते में उसने दुखी हो कर उससे कहा — "यह पुरानी अँगूठी माँग कर तो मैंने एक बहुत बड़ी गलती की। इसको माँग कर मैंने पिता साँप को केवल गुस्सा ही कर दिया। और यह मेरा भला भी क्या करेगी। मैं तो तब ज़्यादा होशियार कहलाता जब मैं उनसे एक बोरी भर कर सोना माँग लेता।"

बेटा साँप बोला — "ऐसा नहीं है राजकुमार। यह अँगूठी तो बड़े कमाल की अँगूठी है। तुम जमीन पर एक चौकोर जगह साफ कर लो और उस पर चौका पोत लो[93]। इस अँगूठी को वहाँ रख दो और उसके ऊपर थोड़ी सी छाछ[94] डाल दो और जो कुछ भी तुम्हारी इच्छा हो वह बोल दो बस तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।"

राजकुमार तो इतना बड़ा खजाना पा कर बहुत ही खुश हो गया और खुश होता हुआ अपने रास्ते चल दिया पर जैसे जैसे वह अपने रास्ते चलता जा रहा था उसको भूख लग आयी।

---

[93] Clean a square of land and smear it with cow dung to purify it.

[94] Translated for the word "Buttermilk"

उसने सोचा कि अब वह अपनी ॲगूठी की जॉच कर ले। सो उसने एक चौका बनाया और उसमें ॲगूठी रख कर उस पर थोड़ी सी छाछ डाली और बोला — "ओ ॲगूठी। मुझे खाने के लिये कुछ मिठाई चाहिये।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे कि एक थाली भर कर स्वादिष्ट मिठाई वहाँ प्रगट हो गयी। उसने पेट भर कर मिठाई खायी और फिर वह आगे अपनी यात्रा पर चल दिया। उसे दूर एक शहर दिखायी दे रहा था वह उसी की तरफ बढ़ा चला।

जैसे ही वह उस शहर के फाटक में घुसा तो उसने वहाँ राजा का एक सन्देश सुना कि "जो कोई एक रात में समुद्र के बीच में एक सोने का महल बनवायेगा जिसमें सोने की सीढ़याँ होंगी उसको मेरा आधा राज्य मिलेगा और मेरी बेटी मिलेगी। पर अगर वह इसे न कर पाया तो उसे मार दिया जायेगा।"

यह सुन कर हमारा खर्चीला राजकुमार वहाँ जा पहुँचा और राजा के दरबार में जा कर कहा कि यह काम वह पूरा करेगा।

राजा उसको इस कोशिश को करने के लिये तैयार देख कर अचम्भे में पड़ गया। उसने कहा कि वह फिर एक बार फिर से ठीक से सोच ले कि वह क्या करने जा रहा है।

साथ में उसने यह भी कहा कि इससे पहले भी कई राजकुमारों ने इस महल को इस तरीके से बनाने की कोशिश की है पर कोई भी इस काम में सफल नहीं हुआ और उन सबको अपनी जान गॅवानी

पड़ी। उसने उसको उन मरे हुओं के गर्दनों की माला भी दिखायी जिन्होंने यह काम नहीं किया था और उनको मार डाला गया था।।

पर हमारा राजकुमार बोला कि वह किसी चीज़ से नहीं डरता। वह जानता है कि वह इस काम में कभी असफल नहीं होगा।

यह सुन कर राजा ने वैसा महल बनाने की इजाज़त दे दी और एक पहरेदार उस पर तैनात कर दिया। अपने सन्तरियों को उसने हुकुम दे दिया कि वे उस पर निगाह रखें कि वह कहीं भाग न जाये।

जब शाम हुई तो राजकुमार सोने के लिये लेट गया। उसको सोने के लिये लेटा देख कर पहरेदार आपस में बात करने लगे कि लगता है कि यह कोई पागल है जो अपनी ज़िन्दगी से छुटकारा पाना चाहता है।

फिर भी जैसे ही सुबह के सूरज की पहली किरन फूटी राजकुमार ने चौका बनाया ॲगूठी उसमें रखी उसके ऊपर थोड़ी सी छाछ डाली और कहा — “ओ ॲगूठी। मुझे समुद्र के बीच में एक सोने का महल चाहिये जिसमें सोने की सीढ़ियॉ हों।”

और लो वहॉ तो समुद्र के बीच में एक सोने का महल धूप में चमकता खड़ा था जिसमें सोने की सीढ़ियॉ थीं। यह देख कर तो पहरेदारों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। यह खबर राजा को देने के लिये वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े महल गये।

फिर क्या था राजकुमार ने अपना वायदा पूरा किया था सो उसको राजा का आधा राज्य मिल गया और राजा की बेटी से उसकी शादी हो गयी।

पर ज़रा हमारे राजकुमार को देखो।

वह राजा से बोला — "राजा साहब। न तो मुझे आपका राज्य चाहिये और न मुझे आपकी बेटी चाहिये। मुझे तो अपने इनाम में वही महल चाहिये जिसे मैंने समुद्र के बीच में बनवाया है।"

राजा ने मान लिया और वह राजकुमार वहाँ रहने चला गया। पर जब राजकुमारी को उसके पास भेजा गया तो पहले तो उसने उसे रखने से मना कर दिया पर उसकी सुन्दरता देख कर उसने उससे शादी कर ली और फिर वे दोनों मिल कर एक साथ खुशी खुशी रहने लगे।

एक दिन राजकुमार अपने कुत्ते को साथ ले कर शिकार के लिये। राजकुमारी का मन बहलाने के लिये अपना तोता और बिल्ला वह घर पर ही छोड़ गया।

एक दिन जब वह शाम को घर लौटा तो उसने देखा कि राजकुमारी बहुत उदास है। उसने उससे पूछा कि वह उसे अपनी उदासी की वजह बताये।

तो वह बोली — "ओ राजकुमार। मैं चाहती हूँ कि उस जादुई अँगूठी की सहायता से तुम मुझे भी सोने में बदल दो जिसकी सहायता से तुमने यह सोने का महल बनवाया था।"

सो उसको खुश करने के लिये उसने एक चौका बनाया उसमें अपनी जादू की अँगूठी रखी उस पर थोड़ी सी छाछ डाली और उससे कहा — "ओ अँगूठी। मेरी पत्नी को सोने का बना दो।"

जैसे ही उसने यह कहा कि उसकी इच्छा पूरी हो गयी और उसकी पत्नी सोने की बन गयी।

एक बार वह सोने की पत्नी अपने बाल धोने के बाद उनमें कंघी कर रही थी कि उसके सिर के दो चमकीले सुनहरे बाल टूट कर उसकी कंघी में आ गये।

उसने उनको देखा और यह सोचते हुए कि आसपास में कोई भी गरीब आदमी नहीं था ताकि वह उन्हें किसी को दे सके और यह सोचते हुए कि वे खोयेंगे भी नहीं उसने हरे पत्तों का एक दोना सा बनाया उसमें उनको रखा और उस दोने को समुद्र में बहा दिया।

अब जैसी जिसकी किस्मत। इधर उधर घूमते हुए वह दोना एक ऐसे किनारे पर आ पहुँचा जहाँ एक धोबी कपड़े धो रहा था। उत्सुकतावश उसने उस दोने को उठा लिया और इनाम के लालच में उसे राजा के पास ले गया।

राजा ने उसको अपने बेटे को दिखाया जिनको उसे देख कर ही इतना अच्छा लगा वह उदास और दुखी हो कर एक मैले से बिस्तर पर लेट गया और खाना पीना सब बन्द कर दिया। उसने कहा कि वह शादी करेगा तो केवल उसी लड़की से जिसके सिर के ये सुनहरी बाल हैं वरना मर जायेगा।

अपने बेटे का यह हाल देख कर राजा बहुत सोच विचार में पड़ गया कि वह इस सोने के बालों वाली राजकुमारी को कहाँ से ढूँढे। उसने अपने मन्त्रियों और कुलीन लोगों को बुलाया और उनसे इस बारे में सहायता माँगी। सोच विचार कर उन सबने राजा को सलाह दी कि इस बारे में किसी अक्लमन्द स्त्री की सहायता लेनी चाहिये।

सो एक बहुत ही अक्लमन्द स्त्री को बुलवाया गया और उसने वायदा किया कि वह उस लड़की को ढूँढ निकालेगी पर राजा से फिर उसे इस काम के बदले में वह इनाम चाहिये जो वह चाहे।

उस स्त्री ने एक सोने की नाव बनवायी जिसमें एक रेशम का झूला था जिसमें रेशम की डोरियाँ थीं। जब यह सब तैयार हो गया तो वह अपने चार मल्लाह ले कर उसी दिशा में चल दी जिधर से वह दोना वहाँ आया था।

उसने उन चारों मल्लाहों को इस तरह बता रखा था कि जब भी वह उनको इशारा करे तो वे नाव वहीं रोक दें और नहीं तो उसे खेते रहें।

काफी देर के बाद उनको सोने का महल दिखायी दिया। उसको देख कर उस अक्लमन्द स्त्री ने तुरन्त ही अन्दाजा लगा लिया कि राजकुमारी वहीं उसी महल में रहती होगी।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी उँगली उठा दी सो मल्लाहों ने अपनी नाव वहीं रोक दी और वह अक्लमन्द स्त्री वहाँ उतर गयी

और जल्दी से महल में चली गयी। वहाँ उसको सुनहरी राजकुमारी दिखायी दे गयी जो एक सोने के सिंहासन पर बैठी थी।

वह उसके पास चली गयी और फिर जैसा कि वहाँ का रिवाज थी कि जब कोई बड़ा रिश्तेदार घर आता था तो वह छोटों के सिर पर हाथ फेरता था वैसे ही वह भी उसके सिर पर हाथ फेरने लगी। उसके बाद उसने उसको चूमा और बोली — "बेटी तुम मुझे नहीं जानती होगी। मैं तुम्हारी मासी[95] हूँ।"

पर पहले तो राजकुमारी उससे थोड़ा दूर हट गयी और बोली कि उसने न तो पहले कभी अपनी किसी मासी के बारे में सुना है और ना ही किसी मासी को देखा है।

अक्लमन्द स्त्री ने तब उसे बताया कि किस तरह से वह कई साल पहले घर छोड़ कर चली गयी थी और फिर उसने उसे एक ऐसी बनावटी कहानी सुनायी कि राजकुमारी ने जो अपनी एक साथिन पा कर बहुत ख़ुश हो गयी थी उसका विश्वास कर लिया कि वह उसकी मासी ही थी। उसने उसको अपने महल में अपने साथ कुछ दिन रहने के लिये भी कहा।

जब वे बैठी बैठी बात कर रही थीं तो अक्लमन्द स्त्री ने राजकुमारी से पूछा कि क्या उसका समुद्र के बीच में महल में अकेले रहते हुए मन नहीं ऊबता था।

---

[95] Translated for the word "Aunt" – Maasee is mother's sister.

फिर उसने उससे पूछा कि वे वहाँ ऐसे किस तरह कैसे रहते थे यानी बिना नौकरों के और उसका पति राजकुमार वहाँ कैसे आता जाता था।

तब राजकुमारी ने उसे उस जादुई अँगूठी के बारे में बताया जिसे राजकुमार दिन रात अपने हाथ में पहने रहता था और जिसकी वजह से जो कुछ वे चाहते थे वह सब पल भर में हो जाता था।

यह सुन कर नकली मासी कुछ गम्भीर हो गयी। उसने उससे कहा कि अगर राजकुमार कहीं बाहर हो और उसको वहाँ कुछ हो जाये तो। उसने यह बात इतने अपनेपन और भोलेपन से कही कि राजकुमारी तो यह सुन कर बहुत चिन्तित हो गयी।

उसी शाम जब उसका पति लौट कर वापस घर आया तो उससे कहा — "प्रिये। जब भी आप बाहर शिकार पर जायें तो आप अपनी अँगूठी मुझे दे कर जायें क्योंकि अगर आप पर कोई मुसीबत आयी तो इस समुद्र में बने महल में मेरा क्या होगा।"

सो अगले दिन जब राजकुमार शिकार के लिये गया तो अपनी अँगूठी राजकुमारी को देता गया।

जैसे ही नीच स्त्री को यह पता चला कि राजकुमार अपनी अँगूठी राजकुमारी को दे गया है और अँगूठी वाकई राजकुमारी के पास है तो उसने उसके पीछे पड़ कर उसे नीचे समुद्र के पास भेज दिया और उससे सोने की नाव को देखने के लिये कहा जिसमें रेशम का झूला पड़ा हुआ था।

अपने उकसाने वाले शब्दों से और अपनी चालाकी भरी चालों से अक्लमन्द स्त्री ने राजकुमारी को सोने की नाव पर चढ़ा लिया ताकि वे कुछ देर समुद्र की सैर कर के आ सकें। पर जैसे ही उसकी कीमती चीज़ रेशमी झूले में सुरक्षित हुई उसने अपने मल्लाहों को इशारा किया और उन्होंने बहुत जल्दी से नाव खे दी।

राजकुमारी को भी जल्दी ही पता चल गया कि उसको धोखा दे कर कहीं ले जाया जा रहा है सो उसने उससे कहा कि वह उसको उसके महल वापस ले चले।

पर यह सुन कर वह अक्लमन्द स्त्री हॅस पड़ी और उस राजकुमारी के ऑसुओं और प्रार्थनाओं का बड़े सख्त शब्दों में जवाब दिया।

अन्त में वे शाही शहर में आ गये। उसके आने पर शहर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं कि अक्लमन्द स्त्री सोने के बालों वाली राजकुमारी को अपने उदास राजकुमार के लिये ले कर आ गयी है।

बहुत विनती के बाद भी राजकुमारी ने राजकुमार से बात करना तो दूर छह महीनों तक राजकुमार की तरफ देखने के लिये भी मना कर दिया। उसने कहा कि अगर इस बीच उसके राजकुमार ने उसको नहीं ढूॅढ लिया तब शायद वह इस शादी के बारे में सोच सके। पर तब तक वह किसी की नहीं सुनेगी।

यह देखते हुए कि इन्तजार के लिये छह महीने कुछ ज़्यादा समय नहीं है और दूसरे अगर उसका राजकुमार या उसका कोई और

रिश्तेदार अगर यहाँ तक पहुँच भी गया तो भी उसको मारना इतना आसान नहीं होगा। वह आसानी से उन लोगों को काबू में कर लेगा। राजकुमार इस बात पर राजी हो गया।

इस बीच हमारा खर्चीला राजकुमार शाम को शिकार से वापस लौटा तो सोने की सीढ़ियों पर चढ़ते ही रोज की तरह से अपनी पत्नी को आवाज लगायी पर उसको कोई जवाब नहीं मिला।

महल में घुसने पर उसको कोई दिखायी भी नहीं दिया सिवाय तोते के। तोते ने उसे बताया कि राजकुमारी जी की मासी आयी थीं और उनको अपनी सोने की नाव में बिठा कर कहीं ले गयी हैं।

यह सुन कर तो राजकुमार बेहोश सा हो गया। जब वह कुछ होश में आया तभी भी उसको तसल्ली देना बहुत मुश्किल हो गया।

कुछ देर में जब वह अपने पूरे होश में आ गया तब तोते ने उसे फिर से तसल्ली देते हुए उससे कहा कि वह वहीं उसका इन्तजार करे तब तक वह समुद्र के ऊपर उड़ कर आता है और खोयी हुई राजकुमारी के बारे में पता करने की कोशिश करता है।

सो उसका पालतू तोता कई टापुओं के चक्कर लगा कर आया कई शहरों में गया कई घरों में गया जब तक उसको राजकुमारी के सोने के बालों की चमक नहीं दिखायी दे गयी।

वह उड़ कर उसके पास बैठ गया और उससे कहा कि वह हिम्मत रखे क्योंकि वह उसकी सहायता करने के लिये आया है।

उसने राजकुमारी से वह जादू की अँगूठी माँगी। इस पर तो सुनहरी राजकुमारी तो और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

क्योंकि उसको मालूम था कि वह अक्लमन्द स्त्री उस अँगूठी को दिन रात अपने मुँह में रखती है और उससे उसे कोई नहीं ले सकता।

खैर तोते ने बिल्ले से सलाह माँगी तो वह तोते के साथ उड़ आया और बोला यह तो मेरे बाँये हाथ का खेल है।

राजकुमारी को बस यही करना है कि उसको उस अक्लमन्द स्त्री से शाम के खाने के लिये चावल माँगने हैं और फिर बजाय उनको सारे खाने के उनमें से कुछ चावल चूहे के बिल के मुँह के सामने बिखेर देने हैं। बाकी फिर मेरा और तुम्हारा काम रह जायेगा।

सो उस रात राजकुमारी ने रात के खाने के लिये चावल माँगे। उनमें से उसने कुछ तो खाये और कुछ चूहे के एक बिल के मुँह के सामने बिखेर दिये। उसके बाद वह सोने चली गयी और बहुत ज़ोर से सो गयी। वह अक्लमन्द स्त्री भी उसके पास ही खर्राटे मार कर सो रही थी।

धीरे धीरे जब सब शान्त हो गया तब चूहे अपने बिल के मुँह के सामने पड़े चावलों को खाने लिये आ गये। बिल्ले ने एक कूद मारी और एक ऐसे चूहे को दबोच लिया जिसकी सबसे लम्बी पूँछ थी। उसको पकड़ कर वह उसको वहाँ ले गया जहाँ अक्लमन्द स्त्री अपना मुँह खोले सो रही थी।

उसने चूहे की पूँछ उसके खुले मुँह में घुसा दी जिससे उसे बहुत ज़ोर की छींक आ गयी और छींक के साथ साथ निकल पड़ी उसके मुँह से वह जादुई अँगूठी जिसे लेने के लिये वे आये थे।

अँगूठी फर्श पर पड़ी थी। इससे पहले कि वह घूम कर उसे उठाती तोते ने उसको अपनी चोंच में उठा लिया और बिना एक पल का भी इन्तजार किये उसे अपने मालिक को ला कर दे दी।

बस अब राजकुमार को क्या करना था। उसने झट से चौका लगाया अँगूठी को उस पर रख थोड़ा सा छाछ उस पर डाला और बोला — "ओ अँगूठी। मुझे अपनी पत्नी चाहिये।" यह कहते ही उसकी सुनहरी पत्नी उसके पास आ कर खड़ी हो गयी।

अपना सोने का महल और अपना पति देख कर वह बहुत खुश हुई।

# 24 एक गीदड़ और एक मोरनी[96]

एक बार की बात है कि एक गीदड़ और एक मोरनी ने हमेशा के लिये दोस्ती की कसम खायी। उस दिन के बाद से वे साथ साथ खाना खाते और घंटों हॅसी ख़ुशी की बातें करते रहते।

एक बार मोरनी को शाम के खाने के लिये कहीं से रसीले बेर मिल गये और गीदड़ को एक रसीला बच्चा मिल गया। दोनों ने अपना अपना खाना खूब शौक से खाया।

पर जब उनका खाना खत्म हो गया तो मोरनी गम्भीर हो कर उठी और जमीन खुरचने के बाद उसने वहॉ के गड्ढों में बेर के बीज एक लाइन में बो दिये।

फिर वह इस तरह से बोली जैसे अपने गुणों का बखान कर रही हो — “यह हमारे यहॉ का रिवाज है कि जब भी मैं बेर खाती हूॅ तो मैं उसकी गुठली भी बर्बाद नहीं करती। मेरी मॉ ने जो एक बहुत ही भली स्त्री है मुझे इस अच्छी आदत के साथ बड़ा किया है कि मैं कोई भी चीज़ बरबाद न करूॅ।

सो बेर तो मैंने खा लिये और उनके बीज मेंने बो दिये। अब ये बीज बड़े हो कर पेड़ बन जायेंगे तो फिर मैं चाहे रहूॅ या न रहूॅ ये बहुत सारे मोरों को खाना खिलायेंगे।”

---

[96] The Jackal and the Pea-hen (Tale No 24)

मोरनी की यह बात सुन कर गीदड़ अपने आपको कुछ नीचा समझने लगा सो उसने उसकी चिन्ता न करते हुए कहा — "ठीक यही बात मेरे साथ है। मैं भी जब अपना खाना खा लेता हूँ तो उसकी हड्डियाँ जमीन में दबा देता हूँ।" कह कर उसने जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा अच्छी तरह खोदा और उस बच्चे की हड्डियाँ सावधानी से एक लाइन में बो दीं।

उसके बाद दोनों अपना अपना बागीचा देखने के लिये वहाँ रोज आने लगे। धीरे धीरे बेर के बीजों में कल्ले फूटने लगे और वे नर्म नर्म डंठल के साथ बड़े होने लगे। पर गीदड़ ने जो हड्डियाँ बोयी थीं उनका कोई अता पता नहीं था।

पूछने पर गीदड़ ने शान्त रहने का बहाना बनाते हुए जवाब दिया कि हड्डियाँ ज़रा कुछ देर से निकलती हैं। मैंने देखा है कि वे जमीन के नीचे महीनों तक पड़ी रहती हैं।

मोरनी उसकी हँसी उड़ाते हुए बोली — "जनाब। महीनों तक नहीं मैंने तो उनको सालों तक पड़े देखा है।"

इस तरह से समय बीतता गया और दिन पर दिन मोरनी गीदड़ को बहुत ताने मारने लगी और गीदड़ और ज़्यादा जंगली होता गया।

आखिर बेर के पेड़ों पर फूल लगे और फल भी लगने लगे। मोरनी को फिर से बेरों की दावत खाने का मौका मिल गया।

एक दिन जब गीदड़ को कोई शिकार नहीं मिला तो उसके पास कोई खाना नहीं था और वह भूखा भी था तो मोरनी ने हँस कर कहा — "ही ही ही ही। तुम्हारी हड्डियों ने बाहर निकलने में कितना समय लगा दिया।"

यह सुन कर गीदड़ को गुस्सा आ गया पर मोरनी ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की और अपना बोलना जारी रखा — "तुम बहुत भूखे लगते हो। लगता है कि जब तक तुम अपनी खेती काटोगे तब तक तुम्हें भूखा ही रहना पड़ेगा। यह भी कितनी बुरी बात है कि तब तक तुम ये बेर भी नहीं खा सकते।"

गीदड़ बड़े ज़ोर से चिल्लाया — "अगर मैं बेर नहीं खा सकता तो क्या हुआ। मैं बेर खाने वाले को तो खा सकता हूँ।"

कह कर वह तुरन्त ही मोरनी पर कूद गया और उसे खा गया। बेवकूफों से दोस्ती करना खतरे से खाली नहीं।

# 25 मक्का का दाना[97]

एक बार की बात है कि एक किसान की पत्नी मक्का के दाने निकाल रही थी कि एक कौआ ऊपर से उड़ता हुआ आया और उसकी टोकरी में से मक्का का एक दाना ले कर उड़ गया। वह एक पास के पेड़ पर बैठ गया और वहाँ बैठ कर उसे खाने लगा।

यह देख कर किसान की पत्नी बहुत गुस्सा हुई। उसने पास में पड़ा एक पत्थर उठाया और उसको कौए की तरफ ऐसा निशाना लगा कर मारा कि कौआ पेड़ से नीचे गिर पड़ा। और साथ में गिर पड़ा उसका मक्का का दाना। मक्का का दाना लुढ़कता हुआ पेड़ की एक झिरी में चला गया।

किसान की पत्नी ने जब देखा कि कौआ नीचे गिर पड़ा तो वह उसके पास गयी और उसकी पूँछ पकड़ कर चिल्लायी — “मेरा मक्का का दाना दे नहीं तो मैं तुझे मार दूँगी।”

वह कौआ बेचारा मरने के डर से बोला कि वह उसका मक्का का दाना जरूर वापस कर देगा। पर लो देखो जब वह दाना ढूँढने निकला तो वह तो पेड़ की झिरी में इतनी दूर लुढ़क गया था कि न तो वह उसे अपनी चोंच से निकल सकता था और न ही पंजों से।

सो वह एक लकड़ी काटने वाले के पास गया और बोला —

---

[97] The Grain of Corn (Tale No 25)

आदमी आदमी पेड़ काट
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर लकड़ी काटने वाले ने पेड़ को काटने से मना कर दिया तो वह राजा के महल में उड़ कर गया और बोला —

राजा जी राजा जी उस आदमी को मारिये क्योंकि वह आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर राजा ने आदमी को मारने से मना कर दिया तो कौआ रानी जी के पास पहुँचा और बोला —

रानी जी रानी जी राजा जी को कोंचिये
क्योंकि राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर रानी ने राजा को कोंचने से मना कर दिया तो कौआ उड़ कर एक साँप के पास गया और साँप से बोला —

साँप साँप रानी जी को काट क्योंकि रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर साँप ने रानी को काटने से मना कर दिया तो कौआ उड़ता उड़ता एक डंडे के पास गया और उससे कहा —

डंडे डंडे तू साँप को मार
क्योंकि साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं

राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

अब कौआ उड़ा तो आग के पास पहुँचा और आग से बोला —

आग ओ आग तू डंडे को जला क्योंकि डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर आग ने डंडे को जलाने से मना कर दिया तो कौआ फिर उड़ता हुआ पानी के पास पहुँचा और पानी से बोला —

ओ पानी तू आग को बुझा दे
क्योंकि आग डंडे को नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

पर पानी ने भी आग को बुझाने से इनकार कर दिया तो कौआ फिर उड़ा और एक बैल के पास गया और बैल से बोला —

बैल बैल आ चल कर पानी पी ले क्योंकि पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

सो बेचारा कौआ फिर उड़ा ओर एक रस्सी के पास पहुँचा और रस्सी से बोला —

चल रस्सी चल कर बैल को बाँध ले
क्योंकि बैल पानी नहीं पीता पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता
साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

यह सुन कर कौआ फिर उड़ा और अब की बार एक चूहे के पास गया और उससे कहा —

ओ चूहे चल कर रस्सी काट क्योंकि रस्सी बैल को नहीं बाँधती
बैल पानी नहीं पीता पानी आग नहीं बुझाता
आग डंडा नहीं जलाती डंडा साँप को नहीं मारता

साँप रानी को नहीं काटता रानी जी राजा जी को नहीं कोंचतीं
राजा जी आदमी को नहीं मारते आदमी पेड़ नहीं काटता
मुझे मक्का का दाना नहीं मिलता किसान की पत्नी से अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये

बिल्ले ने जैसे ही चूहे का नाम सुना तो वह तो उसके पीछे लग गया क्योंकि अगर बिल्ले ने चूहा नहीं खाया तब तो दुनियाँ ही खत्म हो जायेगी —

सो बिल्ले चूहा पकड़ने भागा बिल्ले के डर से चूहा रस्सी काटने भागा
चूहे के डर से रस्सी बैल को बाँधने भागी रस्सी के डर से बैल पानी पीने भागा
बैल के डर से पानी आग जलाने भागा पानी के डर से आग डंडा जलाने भागी

आग से जलने के डर से डंडा सॉप को मारने भागा
डंडे के डर से सॉप रानी को काटने भागा सॉप से डर के रानी राजा को कोंचने भागी
रानी के कोंचने के डर से राजा आदमी को मारने भागा
राजा के मारने के डर से आदमी पेड़ काटने भागा

आदमी ने पेड़ काटा और किसान की पत्नी का मक्का का दाना ढूँढ कर दिया जिससे कौए की जान बची।

# 26 एक किसान और एक सेठ[98]

एक बार की बात है कि एक किसान था जिसे एक सेठ[99] ने बहुत तंग किया हुआ था। किसान की फसल चाहे अच्छी होती या खराब किसान हमेशा गरीब ही रहता और सेठ अमीर।

आखिर जब किसान के पास कुछ नहीं बचा तो किसान सेठ के घर गया और बोला — "सेठ जी। आप पत्थर में से पानी नहीं निचोड़ सकते। अब क्योंकि आप मुझसे कुछ नहीं ले सकते तो कम से कम मुझे अमीर होने का राज़ तो बता ही सकते हैं।"

सेठ जी बड़ी सच्चाई से बोले — "मेरे दोस्त। अमीरी तो राम से आती है। तुम उसी से माँगो।"

सीधे सादे किसान ने कहा — "ठीक है सरकार मैं अब राम से ही माँगूगा।"

कह कर वह घर गया रास्ते के लिये तीन रोटियाँ बनवायीं और उन्हें ले कर राम को ढूँढने अपनी यात्रा पर चल दिया।

रास्ते में पहले उसे एक ब्राह्मण मिला। उसने उसको एक रोटी दी और राम से मिलने के लिये रास्ता पूछा। ब्राह्मण ने उससे रोटी तो ले ली मगर बिना कोई शब्द बोले वहाँ से चला गया।

---

[98] The Farmer and the Money-lender (Tale No 26)

[99] Translated for the word "Money-lender"

और आगे चला तो उसको एक जोगी मिला तो उसने उसको भी एक रोटी दी हालाँकि उसने उससे किसी सहायता की उम्मीद नहीं की थी।

आगे चल कर उसको एक गरीब आदमी मिला जो एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। उसको लगा कि वह भूखा है तो उसने उसे अपनी तीसरी और आखिरी रोटी दी और आराम करने के लिये उसी के पास बैठ गया।

दोनों में आपस में बात होने लगी तो गरीब आदमी ने पूछा — “किधर जा रहे हो?”

किसान बोला — “ओह। मुझे तो बहुत लम्बा जाना है। मैं राम को ढूँढने जा रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि तुम मुझे उसके पास तक पहुँचने का रास्ता बता सकते हो।”

गरीब आदमी मुस्कुरा कर बोला — “शायद बता सकता हूँ क्योंकि मैं ही राम हूँ। बताओ तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।”

तब किसान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनायी तो राम ने उसके ऊपर तरस खा कर उसको एक शंख[100] दिया और उसको एक खास तरीके से बजाना बता कर कहा कि जब भी कभी उसे किसी चीज़ की जरूरत हो तो वह उसको उसी तरह से

[100] Translated for the word “Conch Shell”. See its picture above. In Hindu religion it is blown while doing some worship.

बजाये जिस तरह से उसने उसे बताया है तो उसको वही चीज़ तुरन्त ही मिल जायेगी।

बस तुम उस सेठ से सावधान रहना क्योंकि उसकी इच्छा के खिलाफ तो कोई जादू भी काम नहीं कर सकता।"

किसान उस शंख को ले कर खुशी खुशी अपने गॉव चला गया। सेठ ने देखा कि किसान तो अब बहुत खुश है। ऐसा लगता है कि इस बेवकूफ की किस्मत जाग गयी है इसी लिये यह अपना सिर इतना ऊँचा उठा कर चल पा रहा है।

सो वह उस सीधे सादे किसान के पास गया और उसकी खुशकिस्मती के लिये उसको कुछ ऐसे शब्दों में बधाई दी जैसे उसने यह सब अभी सुना हो। और बात यहॉ तक पहुॅच गयी कि किसान को उसे सारी कहानी बतानी पड़ गयी।

फिर भी उसने शंख को खास तरीके से बजाने का ढंग उसे नहीं बताया। किसान सीधा जरूर था पर बेवकूफ नहीं था जो उसे यह बता देता।

यह सब सुन कर सेठ ने उस शंख को किसी भी तरह लेना चाहा। वह ठीक मौके का इन्तजार करता रहा और एक दिन उसने उससे उसे चुरा लिया।

उसने उसको बजाने के सारे तरीके इस्तेमाल कर लिये पर वह उससे कुछ भी न पा सका तो उसने उसे बजाने की कोशिश छोड़ दी

पर फिर भी वह उसे उस तरीके से बजाना चाहता था जिसे उसको वह मिल जाये जो वह चाहता था।

सो वह किसान के पास वापस गया और बोला — "मेरे दोस्त। तुम्हारा शंख मेरे पास है पर मैं उसको इस्तेमाल नहीं कर सकता। तुम्हारे पास यह शंख है नहीं सो तुम भी इसे इस्तेमाल नहीं कर सकते।

मामला यहीं अटका खड़ा रहेगा जब तक हम लोग आपस में एक सौदा न कर लें। मैं तुम्हें तुम्हारा शंख देने के लिये तैयार हूँ और फिर मैं तुम्हारे उसके इस्तेमाल करने के बीच में कभी नहीं आऊँगा – एक शर्त पर, और वह शर्त यह है कि जो कुछ तुम इससे लोगे मैं इससे उसका दोगुना लूँगा।"

किसान चिल्ला कर बोला — "नहीं नहीं कभी नहीं। यह सब तो पुरानी बात फिर से शुरू हो जायेगी।"

चालाक सेठ बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। तुम अपना हिस्सा लोगे। क्योंकि अगर तुम वह सब ले लेते हो जो तुमको चाहिये तो इस बात का क्या मतलब है कि मैं गरीब हूँ या अमीर हूँ। तुम्हारे पास तो वह सब कुछ होगा ही जो तुमको चाहिये।"

आखिरकार, हालाँकि यह किसान के खिलाफ जाता था फिर भी किसान को इसी से सन्तोष करना पड़ा। अब जितना चाहे किसान उस शंख से लेता सेठ को उससे उसका दोगुना मिलता।

और यह बात किसान के दिमाग पर दिन रात कुछ इस तरह छायी रहती कि उसको चैन ही नहीं पड़ता। वह चाहे जितना उस शंख से मॉग लेता पर फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता। उसको हमेशा ही यह लगा रहता कि सेठ उससे उसका हिस्सा ले रहा है।

आखिर सूखे का मौसम आया। इतना सूखा पड़ा कि बारिश की कमी से किसान की फसल सूख गयी। सो किसान ने शंख से एक कुँआ मॉगा। लो तुरन्त ही वहॉ एक कुँआ प्रगट हो गया पर सेठ के घर में भी दो नये सुन्दर कुँए प्रगट हो गये।

अब यह बात तो किसी भी किसान के लिये सहन नहीं थी। सो हमारा दोस्त किसान इस बारे में बहुत देर तक सोचता रहा सोचता रहा कि उसके दिमाग में एक बहुत ही शानदार विचार आया।

उसने तुरन्त अपना शंख उठाया उसे उस खास तरीके से बजाया और बोला — "हे राम मेरी एक ऑख की रोशनी ले लो।"

बस उसकी तो एक ऑख की रोशनी गयी पर सेठ की दोनों ऑखों की रोशनी चली गयी और वह अन्धा हो गया। वह अपने दोनों नये कुँओं के बीच में से रास्ता ढूँढ रहा था कि न देख पाने की वजह से एक कुँए में गिर पड़ा और मर गया।

बाद में उसने शंख से अपनी एक ऑख की खोयी हुई रोशनी मॉग ली और आनन्द से रहा।

# 27 मौत का देवता[101]

एक बार एक सड़क थी। उस पर जो कोई भी चलता था वह मर जाता था। कुछ लोगों का कहना था वे साँप के काटे से मर जाते थे दूसरे कहते कि वे बिच्छू के डंक मारने से मर जाते पर यह निश्चित था कि वे सभी मर जाते थे चाहे किसी तरह से भी सही।

एक दिन एक बहुत ही बूढ़ा आदमी उस सड़क पर चला जा रहा था कि वह चलते चलते थक गया सो वह आराम करने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

एकाएक उसने देखा कि उसके पीछे एक बिच्छू है जो एक मुर्गे के बराबर बड़ा है। उसके देखते देखते वह एक साँप में बदल गया। यह देख कर तो वह और भी दंग रह गया।

जैसे जैसे वह उससे दूर जा रहा था तो उसने उसका पीछा करने का निश्चय किया ताकि वह यह देख सके कि वह वास्तव में है क्या। साँप दिन और रात चलता रहा और उसके पीछे पीछे साये की तरह से चलता रहा वह बूढ़ा।

एक बार वह एक सराय में घुस गया और वहाँ जा कर कई यात्रियों को मार दिया। एक और बार वह राजा के घर में घुस गया तो वहाँ उसने राजा को मार दिया।

[101] The Lord of Death (Tale No 27)
In Hindu religion the Lord of Death is Yamaraaj

उसके बाद वह पानी के पाइप के सहारे रानी के कमरे में चढ़ गया और राजा की सबसे छोटी बेटी को मार दिया।

वह और आगे बढ़ता रहा। जहाँ जहाँ वह गया वहाँ वहाँ से रोने की आवाज आती थी। पर वह बूढ़ा भी उसके पीछे साये की तरह लगा रहा।

अचानक आगे चल कर सड़क एक चौड़ी गहरी और तेज़ बहती हुई नदी में बदल गयी। उसके किनारे कुछ यात्री लोग बैठे हुए थे जिनको नदी पार करनी थी। पर उनके पास नाव लेने के लिये पैसे नहीं थे।

तभी साँप एक सुन्दर भैंसे में बदल गया जिसके गले में एक पीतल की घंटियों का हार पड़ा हुआ था और वह नदी के किनारे जा कर खड़ा हो गया।

जब उन गरीब यात्रियों ने उसे देखा तो बोले — "यह जानवर नदी पार कर के अपने घर जाना चाहता है। चलो हम लोग इसकी पीठ पर बैठ जाते हैं और इसकी पूँछ पकड़ लेते हैं तो हम लोग भी नदी पार उतर जायेंगे।"

सो वे उसकी पीठ पर चढ़ गये और वह भैंसा पानी में तैरने लगा। वह भैंसा तो बड़ी निडरता से पानी में तैर रहा था पर जब वह बीच धार में पहुँचा वह अपने पैरों को मारने लगा जिससे उसके ऊपर बैठे सारे यात्री पानी में गिर पड़े और डूब गये।

इधर बूढ़ा नाव में बैठ कर नदी पार कर गया।

जब बूढ़ा नदी दूसरी पार पहुँचा तो उसने देखा कि वह भैंस गायब हो गयी थी और अब उसकी जगह वहाँ एक बैल खड़ा हुआ था। एक किसान ने उस सुन्दर बैल को देखा तो लालच में आ कर उसने उसको बहलाया और उसे अपने घर ले गया।

उस बैल को वहाँ बँध कर रहने में बहुत परेशानी हो रही थी सो बीच रात में उसने एक साँप का रूप ले लिया वहाँ बँधे सारे जानवरों को काटा और किसान के घर में घुस गया। वहाँ पहुँच कर उसने सब सोते हुए लोगों को काट लिया और भाग गया।

पर वह बूढ़ा उसके पीछे साये की तरह लगा रहा। वहाँ से चल कर वे एक और नदी के पास आये। वहाँ वह एक सुन्दर लड़की के रूप में बदल गया। यह लड़की देखने में बहुत सुन्दर थी और इसने बहुत सारे कीमती गहने पहने हुए थे।

कुछ ही देर बाद वहाँ दो सिपाही भाई आये और उस लड़की को वहाँ अकेले बैठे देख कर उसके पास आये तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। भाइयों ने पूछा — "क्या बात है। तुम इतनी सुन्दर और नौजवान लड़की इस नदी के किनारे अकेली क्यों बैठी हो?"

लड़की बोली — "मेरा पति मुझे ले कर घर जा रहा था इसलिये वह इस नदी के किनारे वह कोई नाव ढूँढ रहा था कि वह अपना मुँह धोने लगा। मुँह धोते धोते वह फिसल कर नदी में गिर पड़ा और डूब गया। अब मेरा पति भी नहीं है और कोई रिश्तेदार भी नहीं है।"

उन दोनों में से बड़ा भाई जो उसकी सुन्दरता पर मर मिटा था बोला — "डरो नहीं। तुम मेरे साथ चलो मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

लड़की बोली — "एक शर्त पर। तुम मुझसे घर का कोई काम नहीं करवाओगे और मैं जो कुछ भी माँगू तुम मुझे ना नहीं करोगे।"

वह नौजवान बोला — "मैं तुम्हारी किसी दास की तरह सेवा करूँगा।"

लड़की बोली — "तो अभी जाओ और मेरे लिये एक गिलास पानी ले कर आओ। तुम्हारा भाई मेरे पास रहेगा।"

लेकिन जैसे ही बड़ा भाई उसके लिये पानी लेने गया यह लड़की छोटे भाई की तरफ घूमी और बोली — "आओ चलो मेरे साथ भाग चलो। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। मैंने तुम्हारे भाई के साथ जो वायदा किया था वह तो मैंने केवल उसको यहाँ से भगाने के लिये किया था।"

छोटा भाई बोला — "नहीं ऐसा नहीं है। तुम मेरी मेरे भाई को दी गयी उसकी पत्नी हो और इस रिश्ते से तुम मेरी बहिन लगती हो।"

यह सुन कर वह लड़की गुस्सा हो गयी और रोने चिल्लाने लगी। जब बड़ा भाई उस लड़की के लिये पानी ले कर आया तो वह उससे बोली — "प्रिय। यह कैसा दुश्मन है। तुम्हारे भाई ने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें छोड़ कर उसके साथ भाग चलूँ।"

बड़ा भाई यह सुन कर बहुत नाराज हुआ। उसने तुरन्त अपनी तलवार निकाल ली और छोटे भाई को लड़ने के लिये ललकारा। वे दोनों सारा दिन लड़ते रहे और शाम आते आते दोनों आपस में लड़ भिड़ कर मर गये।

यह देख कर लड़की ने एक बार फिर सॉप का रूप रखा और वहॉ से चल दी। हमारा बूढ़ा भी उसके पीछे पीछे उसके साये की तरह से चुपचाप चल दिया।

आखीर में वह एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बन गया और चलने लगा। यह देख कर हमारे वाले बूढ़े ने जो अब तक उसका चुपचाप पीछा करता चला आ रहा था अपने जैसे एक आदमी को अपने आगे जाते देखा तो उसने हिम्मत जुटा कर उसकी दाढ़ी पकड़ कर उससे पूछा — "तुम कौन हो और क्या हो?"

दूसरा बूढ़ा मुस्कुराया और बोला — "कुछ लोग मुझे मौत का देवता कहते हैं क्योंकि मैं दुनियॉ में चारों तरफ घूमता हुआ लोगों को मारता रहता हूॅ।"

हमारा बूढ़ा बोला — "तो मेहरबानी कर के मुझे भी मौत दे दीजिये। मैं आपके पीछे इतनी दूर तक शान्त चला आया हू और अब मैं बहुत थक गया हूॅ।"

मौत के देवता ने ना में सिर हिलाया — "नहीं। मैं मौत केवल उन्हीं को देता हूॅ जिनकी उम्र पूरी हो गयी है तुम्हारी उम्र तो अभी 60 साल बाकी है।"

यह कह कर वह सफेद दाढ़ी वाला आदमी गायब हो गया। पर वास्तव में वह क्या था मौत का देवता? या फिर शैतान? कौन जानता है।

# 28 कुश्तीबाज[102]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार दूर देश में एक कुश्तीबाज रहता था जिसने यह सुन कर कि भारत में कोई ताकतवर आदमी था उससे हारने का निश्चय किया। उसने 10 हजार पौंड आटा अपनी चादर में बाँधा उसकी गठरी अपने सिर पर रखी और खुशी खुशी झूमता हुआ चल दिया।

चलते चलते शाम तक वह एक तालाब के पास आ गया जो एक रेगिस्तान के बीचोबीच था। वहाँ वह अपना खाना खाने बैठ गया। पहले उसने बहुत सारा पानी पिया। फिर उसने अपने आटे की पोटली खोल कर उस तालाब में डाल दी जिससे वह एक गाढ़ा लेही जैसा बन गया। उसका उसने पेट भर कर खाना खाया। खाना खा कर वह एक पेड़ के नीचे लेट कर सो गया।

अब कई सालों से एक हाथी वहाँ रोज पानी पीने आया करता था। उस शाम जब वह अपना पानी पीने के लिये तालाब पर आया तो उसने देखा कि वहाँ तो पानी नहीं है केवल थोड़ी से कीचड़ और आटा उसकी तली में पड़ा है।

वह सोचने लगा "अब मैं क्या करूँ क्योंकि दूसरा पानी तो यहाँ से 20 मील दूर है।"

---

[102] The Wrestlers (Tale No 28)

वह कुछ निराश हो कर वहाँ से दूर जा रहा था कि उसने उस कुश्तीबाज को एक पेड़ के नीचे शान्ति से सोते देखा। तो उसको तुरन्त ही लगा कि यह सारी बदमाशी उसी ने की थी।

सो गुस्से के मारे वह उसकी तरफ कूद कर भाग लिया और उधर जा कर उसको मारने के ख्याल से उसके सिर पर अपना पैर रख दिया।

पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह कुश्तीबाज तो केवल ज़रा सा ही हिला और सोते सोते बोला — "उँह क्या बात है। क्या बात है। अगर तुम्हें मेरे बालों को साबुन लगा कर साफ करना है तो तुम उसे ठीक से क्यों नहीं करते। जो भी काम करो उसे ठीक से करना चाहिये। मेरे सिर के ऊपर थोड़ा बोझा और डालो न।"

हाथी तो यह सुन कर सकते में आ गया। उसने अपना पैर उसके सिर से हटा लिया और निडर हो कर अपनी सूँड़ को कुश्तीबाज की कमर में डाल कर इस इरादे से उसे ऊपर उठा लिया कि वह उसको घुमा कर जमीन पर पटक कर उसके टुकड़े टुकड़े कर देगा।

कुश्तीबाज एक बड़ी सी जँभाई ले कर हाथी की पूँछ पकड़ते हुए बोला — "ओह मेरे छोटे से दोस्त तो तुम्हारा यह प्लान है।" कहते हुए उसने हाथी को अपने कन्धे के ऊपर घुमाता हुआ आगे चल दिया।

जब वह अपने जाने की जगह पहुँच गया तो उसने भारतीय कुश्तीबाज के घर का दरवाजा खटखटाया और बोला — "हो हो मेरे दोस्त। ज़रा बाहर तो निकलो और एक बार मुझे गिरने की कोशिश तो करो।"

भारतीय कुश्तीबाज की पत्नी अन्दर से बोली — "आज मेरे पति घर पर नहीं हैं। वह लकड़ी काटने जंगल गये हैं।"

पहला कुश्तीबाज बोला — "ठीक है जब वह घर आ जाये तो उसको मेरी तरफ से यह छोटी सी भेंट दे देना और उससे कहना कि इसका मालिक तुमको ललकारने के लिये बहुत दूर से आया है।"

ऐसा कह कर उसने वह हाथी उसके ऑगन की दीवार के उस पार फेंक दिया। एक बहुत पतली सी तेज़ सी आवाज अन्दर से चिल्लायी — "मॉ मॉ देखो। मैं कहती हूँ कि इस बेहूदे आदमी ने एक चूहा मेरी गोद में फेंक दिया है। मैं इसका क्या करूँ।"

भारतीय कुश्तीबाज की पत्नी बोली — "चिन्ता मत करो मेरी छोटी बिटिया। तुम्हारे पिता जी आ कर उसको ठीक ढंग सिखा देंगे। तुम घास की झाड़ू ले लो और उससे उसको बाहर फेंक दो।"

फिर उसको अन्दर से बुहारी लगाने की आवाज आयी और तुरन्त ही बाद वह हाथी बाहर आ गया।

पहले कुश्तीबाज ने सोचा "हूँ। अगर इस कुश्तीबाज की छोटी बेटी यह कर सकती है तो इसका पिता तो मेरा अच्छा जोड़ीदार रहेगा।"

सो वह भारतीय कुश्तीबाज से मिलने के लिये जंगल की तरफ चल दिया। पर वह उसे रास्ते में ही आता हुआ मिल गया। वह 160 गाड़ी भर कर लकड़ी खींचता हुआ आ रहा था।

पहला कुश्तीबाज ऑख मारते हुए बोला "अब देखेंगे।" कह कर वह उन सब गाड़ियों के पीछे की तरफ चला गया और आखिरी गाड़ी को उसकी दूसरी दिशा में खींचने लगा।

भारतीय कुश्तीबाज ने सोचा "लगता है यह बीच में कोई गड्ढा आ गया है।" और उन्हें और ज़्यादा ताकत लगा कर खींचने लगा।

ऐसा एक घंटे तक चलता रहा पर दोनों में से कोई भी गाड़ियों को एक इंच भी इधर से उधर नहीं हिला सका। तब भारतीय कुश्तीबाज बोला "लगता है कि गाड़ियों के पीछे कोई लटक रहा है।"

कह कर वह गाड़ियों के पीछे गया तो अजनबी उससे मिलने आया और बोला — "लगता है कि हम एक दूसरे के बराबर के हैं। तो क्यों न हम एक साथ ही गिरें।"

भारतीय कुश्तीबाज बोला — "मैं तैयार हूॅ। पर इस जंगल में अकेले में नहीं। जब तक कोई ताली बजाने वाला न हो तो कुश्ती का क्या मजा।"

अजनबी बोला — "पर मेरे पास समय नहीं है। मुझे बहुत जल्दी जाना है। या तो यहीं या फिर कहीं नहीं।"

तभी एक बुढ़िया जल्दी जल्दी कदम बढ़ाती हुई वहॉ से निकली। उसको जाता हुआ देख कर अजनबी बोला — “देखो देखो एक देखने वाला मिल गया।”

फिर वह ज़ोर से बोला — “मॉ जी मॉ जी। आइये हम लोगों का न्यायपूर्ण खेल देखिये।”

बुढ़िया बोली — “मैं नहीं देख सकती मेरे बच्चों मैं नहीं देख सकती क्योंकि मेरी बेटी मेरे ऊँट चुरा रही है और मुझे उसे यह करने से रोकने के लिये जाना है।

पर तुम लोग एक काम कर सकते हो। तुम लोग मेरी हथेली पर आ जाओ और वहॉ लड़ते रहो तो मैं जहॉ भी जाऊँगी वहीं तुम्हारा खेल देखती रहूँगी।”

कह कर उसने उनके सामने अपना हाथ फैला दिया और दोनों कुश्तीबाज उसकी हथेली पर कूद गये। बुढ़िया उन दोनों को अपनी हथेली पर ले कर पहाड़ियों और घाटियों से हो कर चल दी।

जब बुढ़िया की बेटी ने बुढ़िया को दो कुश्तीबाज अपने हथेली पर लाते देखा तो उसने सोचा कि “लगता है मेरी मॉ उन सिपाहियों को ले कर आ रही है जिनके बारे में उसने कहा था। अब मुझे यहॉ से भाग जाना चाहिये।”

सो उसने 160 ऊँट उठाये उनको अपनी चादर में बॉध कर अपने कन्धे पर लादा और वहॉ से भाग ली।

पर उन ऊँटों में से एक ऊँट का सिर बाहर निकला रह गया। वह शोर मचाने लगा और रोने लगा तो लड़की ने उसको चुप करने के लिये रास्ते में से एक दो पेड़ उखाड़े और उनको अपनी गठरी में ठूँस दिया।

यह देख कर वह किसान जिसके वे पेड़ थे भागता हुआ और चिल्लाता हुआ आया — "अरे रोको कोई चोर को रोको।"

लड़की गुस्से से बोली — "चोर। हॉ यह ठीक कहता है यह तो किसी चोर का ही काम है।" कहते हुए रास्ते में उसे जो भी मिला किसान खेत बैल घर सब उसने एक चादर में बॉध लिये।

जल्दी ही वह एक शहर के पास आ गयी। वह बहुत भूखी थी तो उसने खाने के लिये एक बेकर से कुछ मिठाई मॉगी। बेकर ने उसे कुछ भी देने से इनकार कर दिया तो उसने सारा का सारा शहर और जो कुछ भी मिला वह सब अपने ऊपर उठा कर अपनी चादर में बॉध लिया अब उसकी चादर बिल्कुल भरी हुई थी।

चलते चलते वह एक बड़े से तरबूज के पास आयी। उसको प्यास लगी थी तो वह उसको खाने के लिये बैठ गयी। खा पी कर उसे नींद आने लगी पर उसकी पोटली में बॅधे हुए ऊॅट इतना शोर मचा रहे थे कि उन्होंने उसको बहुत तंग किया हुआ था।

सो उसने उन सबको तरबूज के नीचे वाले आधे खोखले छिलके में रखा और दूसरे आधे छिलके से उन सबको ढका और खुद को अपनी चादर में लपेट कर तरबूज का तकिया लगा कर सो गयी।

अब जब वह सो रही थी तो एक बड़ी सी बाढ़ आ गयी और तरबूज को बहा कर ले जाने लगी। तरबूज थोड़ी देर तक तो बहा पर फिर कीचड़ में फँस कर रुक गया।

कीचड़ में फँसने से जो उसको धक्का लगा तो उसका ऊपर का खोल खुल गया और उसमें से सब निकल आये – ऊँट, पेड़, खेत, किसान, घर, बैल, शहर, यानी वह सब कुछ जो उस लड़की ने उसमें बाँधा था।

और इस तरह वहाँ नदी के किनारे एक नया शहर बस गया।

# 29 बर्फीले दिल वाली रानी ग्वाशब्रारी[103]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार यह पुरानी दुनियाँ जब नयी नयी बनी थी तो आज जो कुछ तुम्हें दिखायी देता है उस समय इससे सब कुछ अलग था। ताकतवर वैस्तरवान[104] सब पहाड़ों का राजा था।

उसका सिर सब पहाड़ियों से भी ऊँचा पहुँचता था। उसका सिर इतना बड़ा था कि जब गर्मी के बादल उसके चौड़े कन्धों पर नाचते थे तो केवल उसका सिर ही था जो नीले आसमान के नीचे दिखायी देता था। और इस तरह दुनियाँ से बहुत दूर होने पर भी वह अपनी शान वाला एक अकेला ही था।

इससे उसको घमंड हो गया और जब सारा कोहरा छँट जाता तब भी नयी दुनियाँ उसके पैरों में मुस्कुराती रहती पर वह उसकी तरफ देखता तक नहीं था। बस केवल सूरज और सितारों की ही तरफ देखता रहता।

अब हरमुख और नंगा पर्वत[105] और दूसरी पहाड़ियाँ जो वैस्तरवान के चारों तरफ खड़ी थीं और ऐसा लगता था जैसे राजा के दरबार में राजा के आने का इन्तजार कर रही हों वे उससे दुखी रहती थीं क्योंकि वह उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता था।

---

[103] The Legend of Gwashbrari, the Legend of Glacier-hearted Queen (Tale No 29)
[104] Mighty Westerwan Mountain
[105] Haramukh and Nanga Parvat (mountains)

और गर्मी के बादल जब आसमान में उसके कन्धों पर पड़ी शाही पोशाक की तरह घूमते थे तो वे सब उसको बुरा भला कहते थे। उस पर गुस्सा होते थे उससे जलते थे।

केवल सुन्दर ग्वाशब्रारी ठंडी और अपने बर्फ़ीले पहाड़ों के बीच चमकती हुई चुपचाप खड़ी रहती। वह अपने आप में सन्तुष्ट थी शान्त थी और अपनी सुन्दरता ही उसके लिये सब कुछ थी।

दूसरे पहाड़ कोहरे के ऊपर तक तो उठ जाते थे पर उसके बराबर कोई सुन्दर नहीं था।

फिर भी एक बार जब बादलों के परदे ने वैस्तरवान को ढक लिया और लोगों का गुस्सा बहुत ज़ोर का हो गया तो वह उनको हॅस हॅस कर शान्त रहने के लिये कह रही थी।

उसने बड़ी शान्ति से कहा था — "तुम लोग इतना नाराज क्यों होते हो। हमारा वैस्तरवान तो बहुत महान है। हालॉकि सितारे उसके ताज का काम करते हैं पर उसके पैर तो मिट्टी के हैं। वह भी उन्हीं चीज़ों का बना हुआ है जिनके हम बने हुए हैं। बस उसमें वे चीज़ें हमसे कुछ ज़्यादा हैं और कुछ नहीं।"

शिकायत करने वालों ने कहा — "हम लोग तो इसलिये नाराज हैं कि उसे हमारा राजा किसने बनाया।"

ग्वाशब्रारी एक तीखी हॅसी हॅसी — "ओ बेवकूफो। बिल्कुल बेवकूफो और अन्धो। राजा होते हुए भी वह मुझे दिखायी नहीं दे रहा। मैं कहती हूॅ कि ओ वैस्तरवान कि तुम सितारों लगा यह ताज

पहनने के बावजूद मेरे लिये राजा नहीं हो। यह तो मैं हूँ जो उसकी रानी हूँ।"

यह सुन कर ताकतवर पहाड़ियाँ बहुत ज़ोर से हँसीं क्योंकि ग्वाशब्रारी तो उन सबसे भी छोटी थी।

तब ग्वाशब्रारी की ठंडी और पथरायी हुई आवाज ने कहा — "थोड़ा इन्तजार करो और देखो। कल सुबह सवेरे सूरज निकलने से पहले वैस्तरवान मेरा दास होगा।"

यह सुन कर ताकतवर पहाड़ियाँ एक बार फिर से ज़ोर से हँस पड़ीं फिर भी बर्फीले दिल वाली सुन्दरी ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। सुन्दर और शान्त वह सारी गर्मियों के लम्बे दिनों में भी मुस्कुराती रही।

केवल एक या दो बार उसकी चोटियों से सफेद धुँआ सा उठा जिससे यह पता चलता था कि कहीं से कोई बर्फ का पहाड़ किसी की बर्बादी लाने के लिये टूट कर गिरा है।

पर जब सूरज डूबता था तो उसकी गुलाबी रंग की चमक चारों तरफ फैल जाती। तब ग्वाशब्रारी के पीले उदास चेहरे पर ज़िन्दगी के लक्षण दिखायी देते। उसकी ठंडी सुन्दरता में भावनाओं की गर्मी आ जाती और वह जल्दी ही अँधेरे में छा जाने वाले आसमान में सितारे की तरह चमकने लगती।

और ताकतवर वैस्तरवान पूर्व में गुलाबी किरनें देख कर अपनी गर्व भरी आँखें उधर की तरफ कर लेता। तब ग्वाशब्रारी की सुन्दरता उसकी सारी इन्द्रियों पर छा जाती।

डूबता हुआ सूरज और नीचे डूब जाता। डूबते डूबते जब वह अपनी लाल किरनें ग्वाशब्रारी के चहरे पर फेंकता तो ऐसा लगता जैसे राजा की निगाहें अपने ऊपर पड़ने से वह शर्मा कर लाल हो गयी हो।

राजा की आत्मा में उसको पाने की इच्छा भर जाती जैसे वह उससे कहता हो — "ओ ग्वाशब्रारी। मुझे चूम लो वरना मैं मर जाऊँगा।" यह आवाज सारी घाटियों में गूँज जाती जबकि चोटियाँ आश्चर्यचकित सी उनको देखती खड़ी रहतीं।

उधार लिये अपने लाल चेहरे के ऊपर ग्वाशब्रारी एक जीत की मुस्कान लिये खड़ी रहती जैसे वह कह रही हो — "ऐसा कैसे हो सकता है ओ महान राजा। मैं तो तुमसे बहुत नीचे हूँ।

अगर मैं ऊपर उठना भी चाहूँ तो भी तुम्हारे सितारों जड़े ताज रखे सिर तक कैसे पहुँच सकती हूँ। अगर मैं अपने पैर के अँगूठे की नोक पर भी खड़ी हो जाऊँ तब भी मैं तुम्हारे बादलों से ढके कन्धे तक भी नहीं पहुँच सकती।"

एक बार फिर से प्रेम भरी आवाज आती — "ओ ग्वाशब्रारी। मुझे चूम लो वरना मैं मर जाऊँगा।"

तब बर्फ से भरी सुन्दरता धीरे से फुसफुसाती। उसकी संगीतमय आवाज में जैसे एक जादू सा होता जो वैस्टरवान को चारों तरफ से घेर लेता।

वह कहती — "क्या तुम मुझे प्यार करते हो? तो क्या तुमको यह नहीं पता कि जो प्यार करते हैं उनको झुकना ही पड़ता है। तुम अपना गर्वीला सिर मेरे होठों तक ले कर आओ मुझे चूम लो जिसे मैं केवल दे सकती हूँ चुन नहीं सकती।"

फिर धीरे धीरे जैसे जादू के सहारे दुनियाँ का सब कुछ भूल कर राजा अपना सिर उसके चमकते हुए चेहरे की तरफ नीचे करता।

सूरज डूब गया। ग्वाशब्रारी के चेहरे से लाल किरनों की चमक हट गयी और उसे ठंडा और बर्फीला छोड़ गयी। आसमान में तारे निकल कर चमकने लगे पर राजा ग्वाशब्रारी के पैरों पर ही पड़ा रहा बिना ताज के हमेशा के लिये।

और इसी लिये महान राजा वैस्टरवान बर्फीले दिल वाली ग्वाशब्रारी के पैरों में काश्मीर की घाटी में फैला पड़ा है। हर रात सितारों का ताज आसमान में लटकता है जैसे पुराने दिनों में लटकता था पर उसे पहनने वाले का सिर तो उसकी रानी के कदमों में पड़ा है।

# 30 नाई की चतुर पत्नी[106]

एक बार की बात है कि एक शहर में एक नाई रहता था। वह नाई इतना बेवकूफ आदमी था कि वह अपना काम भी ठीक से नहीं कर पाता था बल्कि कभी कभी तो वह अपने ग्राहकों के बाल काटने की बजाय उनके कान तक काट डालता था और दाढ़ी बनाने की बजाय उनके गले काट देता था।

सो वह रोज गरीब से गरीब ही होता जा रहा था। आखिर एक दिन वह दिन भी आया जिस दिन उसके घर में कुछ नहीं था – सिवाय उसकी पत्नी के और रेज़र के। और दोनों एक दूसरे से ज़्यादा तेज़ थे। पत्नी रेज़र से ज़्यादा और रेज़र पत्नी से ज़्यादा।

अब क्योंकि उसकी पत्नी बहुत ज़्यादा तेज़ थी तो वह अपने पति को हमेशा ही बेवकूफ समझती रहती थी। सो जब उसने देखा कि अब घर में कुछ भी नहीं बचा वह हमेशा की तरह से उसको डॉटने लगी।

पर नाई ने उसकी डॉट को बड़ी शान्ति से झेला। वह बोला — “प्रिये इतना ज़्यादा परेशान होने की क्या जरूरत है। तुम यह सब मुझसे पहले भी कह चुकी हो और मैं तुम्हारी बात से राजी भी हूँ। मैंने न कभी काम किया, न मैं कभी काम कर सका और न मैं कभी काम कर पाऊँगा यह भी सच है।”

---

[106] The Barber’s Clever Wife (Tale No 30)

उसकी पत्नी तुरन्त पलट कर बोली — “तो जा कर भीख माँगो क्योंकि मैं तुम्हें खुश करने के लिये भूखी नहीं मरने वाली।”

नाई ने उससे बहुत ही मुलायमियत से कहा — “ठीक ही प्रिये ठीक है।”

नाई अपनी पत्नी से बहुत डरता था सो उसने वही किया जो उसकी पत्नी ने उससे करने के लिये कहा। वह वहाँ से महल चला गया और राजा से उसे कुछ भीख में देने के लिये कहा।

राजा ने पूछा — “कुछ? कुछ क्या चाहिये?”

अब नाई की पत्नी ने कोई खास नाम तो लिया ही नहीं था और नाई कुछ भी सोचने के लिये बहुत ही बेवकूफ था सो उसने फिर से वही कहा — “बस कुछ भी।”

राजा ने पूछा — “क्या जमीन का एक टुकड़ा काम करेगा?”

इस पर आलसी नाई को बड़ा चैन मिला कि उसकी परेशानी हल हो गयी थी। वह बोला — “जी जनाब। यह ठीक है और कुछ और भी।”

राजा ने उसको शहर के बाहर एक बंजर जमीन का टुकड़ा दे दिया और नाई उसको ले कर सन्तुष्ट हो कर घर चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी चतुर पत्नी ने जो उसका बेसब्री से लौटने का इन्तजार कर रही थी उससे पूछा — “तुम्हें क्या मिला? जो कुछ भी लाये हो वह मुझे जल्दी से दो ताकि मैं उससे कुछ रोटी पानी का इन्तजाम कर सकूँ।”

अब तुम लोग बड़ी अच्छी तरह से सोच सकते हो कि उसने उसको कितना डॉटा होगा जब उसने उसे यह बताया होगा कि राजा ने उसको शहर के बाहर एक बंजर जमीन का टुकड़ा दिया है।

नाई पलट कर बोला — "पर जमीन तो जमीन ही होती है न। यह कहीं भाग तो नहीं जायेगी। सो अब हमारे पास कुछ तो है।"

चतुर पत्नी गुस्सा हो कर बोली — "उफ़ क्या किसी ने ऐसा खरदिमाग आदमी पहले भी कहीं देखा है। उस जमीन का क्या फायदा अगर हम उसे जोत न सकें। और फिर हम लोग उसे जोतने के लिये हल और बैल कहाँ से लायेंगे।"

पर जैसा कि हमने कहा कि वह एक बहुत ही चतुर स्त्री थी उसने अपनी अक्लमन्दी लगायी और इस बुरे सौदे को फायदेमन्द बनाने का बहुत जल्दी ही एक तरीका निकाल लिया।

उसने अपने पति को अपने साथ लिया और उस बंजर जमीन की तरफ चल दी। वहाँ जा कर उसने अपने पति से कहा कि वह उसकी नकल करे।

उसने जमीन के अन्दर तक देखते हुए उसके चारों तरफ चक्कर लगाने शुरू कर दिये। पर जब वहाँ कोई आता तो वह बैठ जाती और यह दिखाती जैसे वह कुछ नहीं कर रही नहीं तो उसके चक्कर लगा रही होती।

अब ऐसा हुआ कि सात चोर वहीं कहीं आसपास में छिपे हुए थे। वे नाई और उसकी पत्नी को सारा दिन यह करते हुए देखते

रहे। इससे उनको यह विश्वास हो गया कि वहाँ जरूर कुछ भेद छिपा है।

सो शाम हो जाने पर उन्होंने अपना एक आदमी उधर भेजा जो वहाँ जा कर यह देख कर आता कि वहाँ क्या भेद छिपा है।

काफी इधर उधर की बातें करने और अपना भेद छिपा कर रखने के बाद नाई की पत्नी बोली — "सच तो यह है कि यह जमीन मेरे नाना की है जिसमें उन्होंने पाँच बड़े बड़े घड़े भर कर सोना छिपाया हुआ है।

इससे पहले कि हम इसे पूरा का पूरा खोदें हम लोग इसमें उस ठीक जगह को देख रहे हैं जहाँ उन्होंने वह पैसा छिपाया हुआ है। तुम इस बात को किसी से कहोगे तो नहीं।"

चोर ने वायदा किया कि वह यह बात किसी से नहीं कहेगा। पर जैसे ही नाई और उसकी पत्नी दोनों घर वापस चले गये उसने अपने साथियों को बुलाया और उनको उसमें छिपे हुए खजाने के बारे में बताया और उन सबको काम पर लगा दिया।

वे लोग सारी रात उस जमीन को खोदते रहे जब तक बह खेत ऐसा नहीं लगने लगा जैसे किसी ने बोने के लिये जोता हो और सात बार से भी ज़्यादा जोता हो।

वे उसे जब तक खोदते रहे जब तक तक वे उसे खोदते खोदते थक कर चूर चूर नहीं हो गये। पर उनको उसमें कहीं एक पाई भी

नहीं मिली कोई सोने या चॉदी का टुकड़ा तो दूर। सो जब सुबह हो गयी तो वे वहॉ से चले गये।

सुबह को नाई की पत्नी आयी तो उसने देखा कि उनकी जमीन तो सारी की सारी बिना हल बैल के ही खुद चुकी है तो अपने कीमती तरकीब पर वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी।

फिर वह एक मक्का बेचने वाले के पास गयी जिससे उसने उस जमीन में बोने के लिये थोड़ा सा चावल उधार मॉगा। मक्का बेचने वाले ने उसको तुरन्त ही वह चावल इस आशा से दे दिया कि जब फसल कटने का समय आयेगा तब उसको उसके चावल का तीन गुना चावल मिल जायेगा।

नाई ने वह चावल ला कर उस जमीन में बो दिया। उसमें तो इतनी बढ़िया फसल हुई जैसी कि पहले कभी किसी ने देखी नहीं थी। नाई की पत्नी ने अपने सारे उधार निबटा दिये। काफी कुछ घर के लिये बचा कर रखा और बाकी के उसने सोने के टुकड़े खरीद लिये।

जब चोरों ने यह देखा तो वे तो बहुत गुस्सा हो गये। वे तुरन्त ही नाई के घर गये और बोले — "अपनी फसल में से हमारा भी हिस्सा दो क्योंकि जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो तुम्हारा खेत हमने जोता है।"

नाई की पत्नी हॅसी और बोली — "मैंने तो तुमसे यह कहा था कि जमीन में सोना गड़ा है पर वह तो तुम्हें मिला नहीं। मेरे पास घर

में कुछ चावल रखे हुए थे सो वह मैंने उसमें डाल दिये। लेकिन तुम गधों को उनमें से कुछ भी नहीं मिलेगा।"

चोर बोले — "ठीक है। तुम आज की रात चौकन्ने रहना। अगर तुम हमें हमारा हिस्सा अपने आप नहीं दोगे तो फिर हम उसे जबरदस्ती ले लेंगे।"

सो उस रात उनमें से एक चोर उनके घर में ही छिप गया। उसका इरादा था कि जब घर के लोग सो जायेंगे तब वह रात को अपने साथियों के लिये घर का दरवाजा अन्दर से खोल देगा पर नाई की पत्नी ने उसे ऑख के एक कोने से देख ही लिया।

नाई की पत्नी ने सोचा कि उसको नाच नचाया जाये। अपने पति से मिल कर उसने नाटक रचा सो जब वे सोने जाने लगे तो उसके पति ने उससे पूछा कि उसने सोने के टुकड़ों का क्या किया तो वह बोली कि उसने उनको एक ऐसी सुरक्षित जगह रख दिया है जहॉ उन्हें कोई ढूँढ नहीं सकता – मिठाई के नीचे। उस बर्तन में जो दरवाजे के पास रखा है।

चोर ने यह सुन लिया तो वह मन ही मन हॅसा। जब सब सो गये और सब शान्त हो गया तब वह अपनी जगह से बाहर निकला और उस बर्तन को ढूॅढता हुआ दरवाजे तक आ पहॅुचा। वह बर्तन उठा कर उसने अपने साथी से कहा कि उसको सोना मिल गया।

कहीं ऐसा न हो कि कोई उनका पीछा करने लग जाये वे उसे ले कर दूर एक झाड़ी की तरफ भाग गये। वहाँ वे अपनी लूट आपस में बाँटने के लिये बैठ गये।

चोर बोला — “उसने कहा था कि उसके ऊपर मिठाई रखी है सो मैं पहले उसे ही बाँटता हूँ। पहले हम उसे खायेंगे क्योंकि इन्तजार करते और पहरा देते अब भूख भी लग आयी है।”

सो जिसे उसने मिठाई सोचा था उसने पहले उसे बाँट लिया। पर नाई की पत्नी ने उस बर्तन में मिठाई नहीं बल्कि बहुत सारी गन्दी और बेकार की चीज़ें भर दी थीं।

सो चोरों ने जब उन चीज़ों को अपने मुँह में भरा तो तुम सोच सकते हो कि चोरों ने कैसे कैसे चेहरे बनाये होंगे और फिर कैसे नाई से बदला लेने की सोची होगी।

अगले दिन वे उनसे फिर से अपना हिस्सा माँगने गये नाई की पत्नी उनके ऊपर फिर हँस दी। उन्होंने उनको फिर से चेतावनी दी — “आज की रात तुम लोग अपना ख्याल रखना। तुमने दो बार हमारा उल्लू बनाया है – एक बार तो हमसे सारी रात जमीन खुदवा कर और दूसरी बार हमको कचरा खिला कर और हमारी जाति खराब कर के। अब आज की रात हमारी बारी है।”

उस रात एक दूसरा चोर उनके घर में छिप गया। इस बार भी नाई की पत्नी ने उसे अपनी आधी आँख से देख लिया।

जब पति ने पूछा — "प्रिये तुमने वह सोना कहाँ छिपा कर रखा हुआ है। मुझे आशा है कि तुमने उसे हमारे तकियों के नीचे नहीं छिपाया होगा।"

पत्नी बोली — "तुम चिन्ता न करो। वह तो घर के बाहर है। मैंने उसे घर के बाहर लगे नीम के पेड़ के ऊपर टाँग रखा है। वहाँ देखने की तो कोई सोच भी नहीं सकता।"

छिपा हुआ चोर मन ही मन मुस्कुराया। जब घर के लोग सो गये तो वह वहाँ से भाग गया और जा कर अपने साथियों को बताया तो सारे चोर वहीं आ गये।

चोरों के सरदार ने आ कर नीम के पेड़ की तरफ देखा तो उसे वहाँ कुछ दिखायी दिया तो वह खुशी से बोला — "वह देखो वहाँ वह टँगा तो है। तुममें से एक जाओ और उसे नीचे ले कर आओ।"

अब सरदार ने जो देखा था तो वह तो एक बर्र का छत्ता था जो बड़ी काली और पीली बर्रों से भरा हुआ था सोने के टुकड़ों की कोई पोटली तो थी नहीं।

सो जैसे ही एक चोर उसको लाने के लिये उसके पास तक गया एक बर्र उड़ी और उसने उसकी जाँघ पर काट लिया। उसने तुरन्त ही अपने हाथ से उस जगह को मारा।

सारे चोर नीचे से चिल्लाये — "ओ चोर। तुम क्या सारा सोना अपनी जेब में भर रहे हो? तुम तो बहुत ही खराब हो।"

अब क्योंकि अँधेरा था तो जब उस बेचारे ने वहॉ हाथ मारा जहॉ बर्र ने उसे काटा था तो नीचे खड़े चोरों को लगा कि वह सोना वहॉ से निकाल कर अपनी जेब में रख रहा है।

चोर ऊपर से ही गुस्सा हो कर बोला — "अरे मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा। पर यहॉ इस पेड़ पर कुछ है जिसने मुझे काट लिया है।"

उसी समय एक और बर्र ने उसको उसकी छाती पर काटा तो उसने अपना हाथ वहॉ मारा तो नीचे खड़े हुए चोर फिर चिल्लाये — "अरे शर्म आनी चाहिये तुमको। तुमने फिर सोना चुराया। अबकी बार तुमने फिर ऐसा किया तो. . . ।"

उसके बाद उन्होंने दूसरे चोर को भेजा पर उसने भी उन दोनों से कोई बेहतर काम नहीं किया। इस तरह से सारे चोर अपना अपना हिस्सा लेने गये और सब अपना शरीर पीटते पीटते ही नीचे आये।

आखीर में चोरों के सरदार की बारी आयी तो वह भी अपना इनाम लेने के लिये ऊपर गया और उसने तो सारा का सारा छत्ता ही पकड़ लिया कि तभी जिस शाख पर सब चोर खड़े हुए थे वह टूट गयी। इससे सारे चोर नीचे गिर पड़े और उनके ऊपर गिर पड़ा बर्र का छत्ता। सब घायल थे फिर भी सब एक दूसरे के ऊपर से हो कर इधर उधर भाग रहे थे।

इसके बाद नाई की पत्नी को कुछ शान्ति मिली क्योंकि अब सातों चोर अस्पताल में पड़े हुए थे। असल में वे लोग इतने ज़्यादा

दिनों तक वहाँ रहे कि वह तो यह सोचने लगी थी कि वे लोग अब फिर कभी वापस नहीं आयेंगे सो उसने उनके आने की आशा ही छोड़ दी थी।

पर वह गलती पर थी क्योंकि एक रात वह घर के बाहर हो रही फुसफुसाहट से जाग गयी क्योंकि उसके कमरे की एक खिड़की खुली हुई थी जिससे उनकी आवाजें आ रही थीं।

उसने उनकी आवाज तुरन्त ही पहचान ली। वह तो सोच ही नहीं पायी कि वह क्या करे फिर भी वह यह चाहती थी कि बिना किसी लड़ाई झगड़े के यह मामला निपट जाये।

उसने अपने पति का रेज़र उठा लिया और खिड़की से बाहर निकल गयी और बिल्कुल बिना हिले डुले खड़ी हो गयी। धीरे धीरे एक चोर वहाँ आया। वह तब तक इन्तजार करती रही जब तक उसकी नाक की नोक उसको दिखायी नहीं देने लगी।

जैसे ही उसकी नाक उसको दिखायी दी उसने रेज़र से उसकी नाक काट डाली। वह चिल्लाया — "पकड़ लो उसको। किसी ने मेरी नाक काट डाली।"

यह सुन कर दूसरे फुसफुसाये — "श श श श। चुप। चिल्ला कर तो तुम सबको जगा दोगे। चलते रहो।"

"नहीं नहीं। मैं नहीं। मेरे तो खून बहुत बह रहा है।"

दूसरा चोर बोला — "हो सकता है कि तुम्हारी नाक दरवाजे से टकरा गयी हो। मैं जाता हूॅ।" पर उसकी भी नाक गयी। उसने गुस्से से कहा कि लगता है कि यहॉ कुछ है।

तीसरा चोर बोला — "लगता है कि जालीदार दरवाजे में शायद कोई बॉस का टुकड़ा लगा हो। मैं जाता हूॅ।"

वह गया तो उसकी भी नाक काट डाली गयी। वह वहॉ से लौटते हुए बोला — "ओह यह तो बड़ी अजीब सी बात है। मुझे तो ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरी नाक ही काट दी हो।"

चौथा चोर बोला — "यह तुम क्या बेकार की बात कर रहे हो। तुम सब कायर हो। मैं जाता हूॅ।" पर उसका भी वही हाल हुआ।

पॉचवे और छठे का भी वही हाल हुआ। अब सातवॉ चोर यानी उनका सरदार रह गया। वह बोला — "तुम लोग तो सब अपंग हो गये सबकी नाक कट गयी। अब कम से कम एक आदमी तो दूसरों की देखभाल करने के लिये सही सलामत रहना चाहिये।"

वह एक बहुत ही सावधान किस्म का आदमी था उसको अपनी नाक की कीमत पता थी। सो वे सब नाराज से हो कर वहॉ से चले गये।

फिर नाई की पत्नी ने एक लैम्प जलाया और उसकी रोशनी में सारी नाकें इकट्ठी कीं और उन सबको एक जगह सुरक्षित रूप से एक छोटे से बक्से में रख दिया।

इससे पहले कि वे सब चोर ठीक होते गर्मी का मौसम आ गया। नाई और उसकी पत्नी को घर के अन्दर सोने में गर्म लगा तो उन्होंने अपने अपने बिस्तर बाहर लगा लिये। उनको लगा कि अब चोर वापस नहीं आयेंगे।

पर वे तो फिर वापस आ गये और उन्होंने बदले का एक अच्छा मौका देख कर नाई की पत्नी का पलंग उठाया और उसे ले गये। वह बहुत गहरी नींद सो रही थी उसको पता ही नहीं चला।

पर जब उसकी ऑख खुली तो उसने अपने आपको चार चोरों के सिर के ऊपर पाया। बाकी के तीन उसके साथ चल रहे थे। वह बेचारी फिर परेशान हो गयी वह सोचती रही सोचती रही सोचती रही पर उसे वहॉ से भाग निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आया।

पर किस्मत उसके साथ थी। चोर आराम करने के लिये एक बरगद के पेड़[107] के नीचे रुके। बिजली की सी तेज़ी के साथ उसने पेड़ की एक शाख जो उसकी पहुँच के अन्दर थी पकड़ ली और पेड़ पर झूल गयी। उसने अपनी ओढ़ने की चादर अपने बिस्तर पर ही उसी तरीके से छोड़ दी जैसे वह उसमें अभी भी लेटी हुई हो।

जो चोर उसको ले कर जा रहे थे वे बोले — "अब हम थोड़ा आराम कर लेते हैं। अभी तो काफी समय है और हम अब थक भी गये हैं। यह स्त्री तो बहुत ही भारी है।"

[107] Translated for the words "Bunyan Tree" – a very large and old shady tree

नाई की पत्नी को बहुत हँसी आयी पर वह ज़ोर से नहीं हँसी। उस दिन पूनम की रात थी। चोरों ने उस पलंग को नीचे रख कर एक दूसरे से यह पूछा कि उनमें से कौन पहले पहरा देगा।

तो यह तय हुआ कि सबसे पहले सरदार पहरा देगा क्योंकि दूसरे चोर तो अभी अपने नाक काटने वाले पिछले धक्के को ही नहीं भूल पाये थे। सो वे सब तो सो गये और सरदार पलंग की तरफ देखता हुआ इधर उधर चक्कर काटता रहा। और नाई की पत्नी पेड़ के ऊपर एक बड़ी चिड़िया की तरह बैठी थी।

अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने अपना सफेद परदा अपने चेहरे के सामने कर लिया और बहुत ही धीरे धीरे गाने लगी।

गाने की आवाज सुन कर चोरों के कैप्टेन ने ऊपर देखा तो उसको एक परदा पड़ी हुई शक्ल नजर आयी। वह तो आश्चर्य में पड़ गया पर एक सुन्दर नौजवान होने के नाते वह इस नतीजे पर पहुँचा कि वह एक परी थी और उसकी सुन्दर चेहरे के प्यार में पड़ गयी थी।

क्योंकि चाँदनी रातों में परियाँ अक्सर ऐसा करती हैं सो उसने अपनी मूँछों पर ताव दिया और उसकी तरफ देखने लगा कि शायद वह उससे कुछ बोले। पर जब वह गाती ही रही और उसने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया तो वह रुका और बोला — “नीचे आ जाओ मेरी प्यारी। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुचाऊँगा।”

पर वह तो नीचे नहीं उतरी और बस गाती ही रही। तो वह खुद पेड़ पर चढ़ गया। जब वह उसके काफी पास आ गया तो उसने मुँह फेर कर एक लम्बी सी साँस ली।

उसने बड़ी मुलायमियत से पूछा — "क्या बात है मेरी प्यारी। मुझे मालूम है कि तुम एक परी हो और तुम्हें मुझसे प्यार हो गया है। पर इसमें लम्बी साँस भरने की क्या बात है।"

नाई की पत्नी बोली — "आह आह आह। मुझे लगा कि तुम्हारा दिमाग पल पल में बदलता है। जिन आदमियों की नाक लम्बी होती है वे ऐसे ही होते हैं।"

पर चोरों के सरदार ने जवाब दिया कि वह तो बहुत ही स्थिर दिमाग का आदमी है। पर वह परी तो आहें भरती ही रही जब तक कि कैप्टेन को ऐसा नहीं लगने लगा कि काश उसकी नाक छोटी होती।

नकली परी बोली — "मुझे यकीन है कि तुम कहानियाँ बना रहे हो। बस तुम मेरी जीभ की नोक से अपनी जीभ को छूने दो तो मैं उसका स्वाद चख कर बता दूँगी कि तुम सच बोल रहे हो या नहीं।"

यह सुन कर कैप्टेन ने अपनी जीभ बाहर निकाल दी और नाई की पत्नी ने उसकी जीभ काट ली। डर और दर्द की वजह से वह शाख से नीचे गिर गया और खटाक से नीचे जमीन पर आ पड़ा।

वह बहुत देर तक अपनी टॉगें खोल कर बैठा रहा और सोचता रहा कि कहीं वह आसमान से तो नहीं गिरा।

इतने में उसके साथियों की भी ऑख खुल गयीं। उन्होंने पूछा कि क्या हुआ?

वह बोला — "बुल उल ला उल।" क्योंकि बिना जीभ के वह साफ तो बोल नहीं सकता था। उन्होंने दोबारा पूछा पर फिर उनको वैसा सा ही जवाब मिला तो वे बोले — "लगता है कि सरदार के ऊपर किसी ने जादू डाल दिया है। पेड़ में ऊपर कोई भूत दिखता है।"

उसी समय नाई की पत्नी ने अपना परदा फड़फड़ाना और ज़ोर ज़ोर से गुर्राना शुरू कर दिया। इससे वे चोर अपने सरदार को घसीटते हुए बिना इधर उधर देखे भाले डर के मारे वहाँ से भाग लिये।

उनके भाग जाने के बाद नाई की पत्नी पेड़ से नीचे कूद आयी और अपना पलंग अपने सिर पर रख कर चुपचाप अपने घर चली गयी।

इसके बाद तो चोरों ने सोच लिया कि इस तरह से ज़ोर जबरदस्ती से उनको अपना हिस्सा नहीं मिलने वाला सो वे अपना हिस्सा लेने के लिये अदालत गये।

पर नाई की पत्नी ने उन सबकी नाक और कटी जीभ दिखा कर अपना मुकदमा इतने अच्छे से लड़ा कि राजा ने यह कहते हुए नाई

को अपना वजीर बना लिया कि यह कभी कोई बेवकूफी का कोई काम नहीं कर सकता जब तक इसकी पत्नी ज़िन्दा है।

# 31 गीदड़ और मगर[108]

एक बार की बात है कि एक मिस्टर गीदड़ खुशी खुशी घूम रहे थे कि उनकी नजर एक जंगली अलूचे के पेड़ पर पड़ी।

पर वह पेड़ तो नदी के दूसरी तरफ लगा हुआ था और वह उस नदी को किसी तरह भी पार नहीं कर सकते थे सो वह नदी के किनारे बैठ गये और उन पके हुए रसीले फलों की तरफ देखते रहे जब तक उनके मुँह में पानी नहीं आ गया।

अब हुआ यह कि मिस मगर अपनी नाक ऊपर किये हुए वहाँ तैरती हुई आयी तो गीदड़ उससे बहुत नम्रता से बोला — "गुड मौर्निंग मिस मगर। आज तुम कितनी सुन्दर लग रही हो और तुम तैरती भी कितना अच्छा हो। काश मैं भी तैर सकता तो हम दोनों नदी के उस पार लगे अलूचे के पेड़ से पके मीठे रसीले फलों की दावत खाते।"

कहते हुए उसने अपना एक पंजा अपने दिल पर रख कर एक आह भरी। मिस मगर का दिल बहुत ही नर्म था सो जब गीदड़ ने उसकी तरफ प्रेम भरी दृष्टि से उसे देखा और उससे इतने प्यार से यह सब कहा तो उसके शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी और वह शर्म से लाल हो गयी।

---

[108] The Jackal and the Crocodile (Tale No 31)

वह बोली — "ओह मिस्टर गीदड़। तुम ऐसी बातें क्यों करते हो। मैं तो तुम्हारे साथ बाहर खाना खाने जाने की सोच भी नहीं सकती जब तक कि... ।"

गीदड़ ने उसको उकसाते हुए कहा — "जब तक कि...क्या।"

मिस मगर बोली — "जब तक कि हमारी शादी न हो जाये।"

गीदड़ बड़ी उत्सुकता से बोला — "और हमारी शादी क्यों नहीं हो जानी चाहिये। मैं जा कर एक नाई को बुला कर लाता हूँ ताकि वह हमारी शादी तुरन्त ही करा सके। पर अभी तो मैं भूख से बेहोश हुआ जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं तो गाँव तक पहुँच ही नहीं पाऊँगा।

पर अगर मेहरबानी कर के तुम अपने दास को अपनी पीठ पर बिठा कर नदी के दूसरी तरफ ले चलो तो वे पके रसीले मीठे अलूचे खा कर मुझमें थोड़ी से जान आ जायेगी और फिर मैं अपने दिल की इच्छा पूरी कर सकूँगा।"

यह कह कर गीदड़ ने इतने ज़ोर की आह भरी और ऐसी चालाकी भरी आँखों से मिस मगर की तरफ देखा कि वह उनको सहन नहीं कर सकी। वह उसको अपनी पीठ पर बिठा कर नदी पार करा कर दूसरी तरफ ले गयी।

वहाँ जा कर वह तो किनारे पर बैठ गयी और अपनी शादी की पोशाक के बारे में सोचने लगी उधर मिस्टर गीदड़ अलूचे की दावत उड़ाता रहा।

जब उसने मन भर कर अलूचे खा लिये फिर खुश खुश वह मिस मगर से बोला — “अब मैं नाई को ले कर आता हूँ।”

सो मिस मगर एक अच्छे जानवर की तरह उसको ले कर फिर वापस पहले किनारे पर आयी। वह तो इस विचार से ही इतनी खुश थी कि वह यह सोच ही नहीं सकती थी कि और क्या नहीं हो सकता।

धोखेबाज गीदड़ ने उससे कहा — “तुम बहुत ज़्यादा चिन्ता मत करना मिस मगर क्योंकि यह कोई नामुमकिन काम नहीं है कि मुझे नाई न मिले और फिर तुम्हें मेरे लौटने तक कुछ देर इन्तजार भी करना पड़ सकता है, बल्कि केवल कुछ देर के लिये ही नहीं हो सकता है काफी देर के लिये। सो मेहरबानी कर के मेरे लिये अपनी तबियत खराब मत कर लेना।”

इसके साथ ही उसने मिस मगर को एक हवाई चुम्बन दिया और अपनी पूँछ उठा कर वहाँ से शहर की तरफ चल दिया।

अब यह तो साफ था कि उसको आना तो था ही नहीं सो वह तो वापस आया नहीं। हालाँकि मिस मगर ने मिस्टर गीदड़ पर विश्वास कर के उसका काफी देर तक इन्तजार किया। आखिर उसको पता चल गया कि वह तो एक खुश धोखेबाज जानवर था।

अब उसने उससे इसका बदला लेने का निश्चय किया। गीदड़ उस नदी पर रोज पानी पीने आया करता था। सो एक दिन उसने

अपने आपको उस जगह एक पेड़ की जड़ के नीचे पानी में छिपा लिया जहाँ वह पानी पीता था।

धीरे धीरे वह वहाँ आया और पानी पीने के लिये सीधा पानी में चला गया। वहाँ वह बहुत देर तक पानी पीता रहा। मिस मगर ने मौका देख कर उसको उसके दाँयी टाँग से पकड़ लिया और उसको पकड़े रखा।

गीदड़ की समझ में आ गया कि क्या हुआ है सो वह चिल्लाया — "मैं डूब रहा हूँ मैं डूब रहा हूँ। अगर तुम मुझसे प्यार करती हो तो उस पुरानी जड़ को छोड़ कर मेरी टाँग पकड़ लो। वह उसके बराबर में ही है।"

यह सुन कर मिस मगर को लगा कि शायद गलती से उसने पेड़ की जड़ पकड़ ली है सो जल्दी से उसने उसकी टाँग छोड़ दी और उसके बराबर वाली जड़ पकड़ ली और उसको कस कर पकड़े रही।

जैसे ही मिस मगर ने गीदड़ की टाँग छोड़ी तो गीदड़ तो कूद कर किनारे पर पहुँच गया और अपनी पूँछ ऊपर कर के भाग गया। भागते हुए कहता गया — "थोड़ा धीरज रखो मेरी सुन्दरी। नाई एक दिन जरूर आयेगा।"

पर इस बार मिस मगर जानती थी कि उसके इन्तजार का कोई फायदा नहीं था। वह मिस्टर गीदड़ से बहुत नाराज थी। वह गीदड़ की माँद में चली गयी और वहाँ जा कर चुपचाप लेट गयी।

कुछ देर बाद गीदड़ अपनी पूँछ उठाये हुए अपने घर आया। उसने देखा कि रेत में मगर के उसके घर में घुसने के निशान बने हुए हैं तो समझ गया कि मामला क्या है।

वह बोला — "अच्छा तो यह मामला है।"

सो वह बाहर ही खड़ा रह गया और बोला — "हे भगवान मेरी रक्षा करो। यह क्या हो गया। मेरी तो अन्दर जाने की आधी भी इच्छा नहीं हो रही क्योंकि जब भी मैं घर आता हूँ तो मेरी पत्नी मुझसे कहती है —

ओ मेरे प्यारे पति तुम खाने के लिये क्या लाये हो मेरे और मेरे बच्चे के लिये

और आज तो कोई यह बात मुझसे पूछ ही नहीं रहा।"

यह सुन कर मिस मगर ने सोचा कि शायद ऐसा ही होता होगा सो वह अन्दर से बोली —

ओ मेरे प्यारे पति तुम खाने के लिये क्या लाये हो मेरे और मेरे बच्चे के लिये

गीदड़ ने बहुत ज़ोर से ऑख मारी और फिर धीमे कदमों से दरवाजे में खड़ा हो गया। इस बीच मिस मगर ने जब उसके आते हुए कदमों की आवाज सुनी तो वह सॉस रोक कर पड़ गयी।

गीदड़ अपनी जेब से रूमाल निकालते हुए बोला — "भगवान मेरी रक्षा करे। कितने दुख की बात है। यहॉ तो बेचारी मिस मगर मरी पड़ी है और वह भी मेरे प्यार में। उफ़ उफ़।

पर फिर भी यह बात कुछ अजीब सी लग रही है। मुझे लगता नहीं कि यह मर गयी है क्योंकि मरे हुए तो अपनी पूँछ हिलाते रहते हैं और इसकी पूँछ तो हिल ही नहीं रही।"

यह सुन कर मिस मगर ने अपनी पूँछ हिलानी शुरू कर दी और यह देख कर गीदड़ वहाँ से ज़ोर से हँसता हुआ भाग गया — "हा हा हा। सो मरे हुए तो हमेशा ही अपनी पूँछ हिलाते हैं।"

# 32 राजा रसालू कैसे पैदा हुआ[109]

एक बार की बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जिसका नाम था राजा सालबाहन[110]। उसके दो पत्नियाँ थीं। उसकी बड़ी वाली पत्नी नाम था अछरा और उसके एक बहुत सुन्दर बेटा था जिसका नाम था पूरन।[111]

उसकी छोटी रानी का नाम था लोना। हालाँकि वह बहुत रोयी कई मन्दिरों में गयी बहुत प्रार्थनाऐं कीं पर उसको खुशी देने वाला कोई बच्चा नहीं हुआ।

इसलिये एक बुरी और धोखेबाज स्त्री होने के नाते उसके दिल में जलन और गुस्सा घर कर गया। उसने राजा सालबाहन के दिमाग को उसके बच्चे छोटे पूरन के खिलाफ भड़काने वाले विचार भर दिये।

और जब छोटा पूरन बड़ा होने वाला था तो उसका पिता तो उससे बहुत बुरी तरीके से जलने लगा। एक दिन उसे इस गुस्से का दौरा सा पड़ा तो उसने उसके हाथ पैर काट डालने का हुक्म दे दिया।

---

[109] How Raja Rasalu Was Born (Tale No 32)

[110] King Saalbaahan

[111] Elder Queen Achhra had a son named Pooran

राजा सालबाहन अपनी इस बेरहमी से भी सन्तुष्ट नहीं था तो फिर उसने उसे एक कुॅए में फेंक देने का हुक्म दे दिया।[112] खैर फिर भी पूरन मरा नहीं जैसा कि उसके पिता ने उसके लिये चाहा था या आशा की थी क्योंकि भगवान ने उस भोलेभाले बच्चे की रक्षा की।

वह कुॅए की तली में आश्चर्यजनक रूप से ज़िन्दा रहा जब तक गुरू गोरखनाथ[113] जी उधर की तरफ आये। उन्होंने देखा कि पूरन ज़िन्दा है तो उन्होंने न केवल उस भयानक जेल से उसको निकाला बल्कि अपने जादू के ज़ोर से उसके हाथ पैर भी फिर से वापस ला दिये।

इस वरदान के लिये कृतज्ञ हो कर पूरन फ़कीर बन गया और अपने कानों में पवित्र कुंडल पहन कर गुरू गोरखनाथ जी का शिष्य बन कर घूमने लगा। तब से उसका नाम पूरन भगत पड़ गया।

पर जैसे जैसे समय गुजरता गया तो उसका मन अपनी मॉ को देखने के लिये करने लगा सो गुरू गोरखनाथ ने उसको वहॉ जाने की इजाज़त दे दी।

वह अपने घर की तरफ चल पड़ा और एक बहुत बड़ी दीवार से घिरे हुए बागीचे में आ कर ठहर गया जहॉ वह पहले कभी अपने बचपन में खेला करता था।

---

[112] This well can still be seen on the road between Sialkoat and Kallowaal Road.

[113] Guru Gorakhnath Ji was the Brahmanical opponent of reformers of 15th century and possessed most miraculous powers, especially over snakes. By any computation Puran Bhagat must have lived before him. Puran Bhagat was the brother of Raja Rasalu. Their many stories are popular like Vikramaditya and Bhartrihari, the saint and philosopher in Southern region

वहाँ आ कर उसने देखा कि उस बागीचे की तो कोई ठीक से देखभाल ही नहीं कर रहा है। वह उजाड़ और बंजर सा पड़ा था। उसमें पानी आने जाने वाले रास्ते टूटे हुए थे। उसके पेड़ों की पत्तियाँ सब झड़ चुकी थीं। यह सब देख कर वह बहुत दुखी हो गया।

उसने वहाँ की सूखी जमीन पर अपने पीने का पानी छिड़का और रात भर उसके हरे हो जाने की प्रार्थना की। लो जैसे ही उसने प्रार्थना शुरू की कि पेड़ों में से पत्ते निकलने लगे। घास दिखायी देने लगी फूल खिल गये और फिर वह बागीचा वैसा ही हो गया जैसा पहले कभी था।

इस आश्चर्यजनक घटना की खबर तो बिजली की तरह से सारे शहर में फैल गयी। बहुत सारे लोग ऐसे पवित्र संत को देखने के लिये वहाँ आये जिसने यह आश्चर्यजनक काम किया था।

राजा सालबाहन और उनकी दोनों रानियों ने भी महल में यह खबर सुनी तो वे भी उनको अपनी आँखों से देखने के लिये वहाँ गये।

पर पूरन भगत की माँ रानी अछरा अपने प्यारे बेटे के लिये इतना रोयी थी कि आँसुओं ने उसको अन्धा सा कर दिया था। वह भी वहाँ गयी तो पर उसको देखने के लिये नहीं बल्कि उस आश्चर्यजनक फ़कीर से अपनी आँखों की रोशनी माँगने के लिये।

इसलिये बिना यह जाने कि वह किससे यह वरदान माँग रही थी वह पूरन भगत के पैरों पर गिर पड़ी और उससे अपनी आँखों की रोशनी की वापसी की भीख माँगने लगी।

और लो इससे पहले कि वह अपनी आँखों की रोशनी माँगती उसकी आँखों की रोशनी तो वापस आ चुकी थी और वह देखने लग गयी थी।

धोखेबाज रानी लोना जो इन सारे सालों में एक बेटा माँग रही थी और वह उसको नहीं मिला था, जब उसने इस ताकतवर फ़कीर को देखा तो यह भी उस फ़कीर को पैरों में गिर पड़ी और उसने उससे राजा सालबाहन को खुश करने के लिये एक वारिस माँगा।

तब पूरन भगत बोला उसकी आवाज गम्भीर थी — "राजा सालबाहन के तो पहले से ही एक बेटा है। वह कहाँ है? अगर तुम्हें भगवान से अपनी इच्छा पूरी करानी है तो सच बोलना रानी लोना तुमने उसके साथ क्या किया।"

तब स्त्री की बेटा पाने की जो पुरानी इच्छा थी उसने उसके घमंड को जीत लिया और हालाँकि उसका पति फ़कीर के सामने उसके पास ही खड़ा था उसने सच बोल दिया कि कैसे उसने उसके पिता को धोखा दिया और बेटे को मरवा दिया।

सुन कर पूरन भगत खड़ा हो गया। उसने अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिये और मुस्कुरा कर धीमे से बोला — "यह ठीक है

रानी लोना यह ठीक है। देखो मैं राजकुमार पूरन हूँ जिसको तुमने मार दिया था पर भगवान ने उसको ज़िन्दा रखा।

मेरे पास तुम्हारे लिये एक सन्देश है। तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भूली नहीं जा सकती। तुम्हारे एक बेटा जरूर होगा जो बहुत अच्छा और बहादुर होगा। लेकिन वह तुम्हें वैसे ही रुलायेगा जैसे तुमने मेरी माँ को रुलाया है।

लो ये चावल के दाने लो इन्हें खा लेना और तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा पर वह बेटा तुम्हारा बेटा नहीं होगा। क्योंकि जैसे मैं अपनी माँ की आँखों से दूर रहा ऐसे ही वह भी तुम्हारी आँखों से दूर रहेगा। अब शान्ति से जाओ तुम्हारी गलती माफ की जाती है पर भुलायी नहीं जा सकती।"

रानी लोना अपने महल वापस आ गयी और जब बच्चे के जन्म का समय आया तो उसने तीन जोगियों से अपने बच्चे की किस्मत के बारे में पूछा जो उसके दरवाजे पर भीख माँगने आये थे।

उनमें से सबसे छोटे जोगी ने कहा — "वह एक लड़का होगा और वह एक बहुत बड़ा आदमी बनेगा। पर 12 साल तक तुम उसका मुँह मत देखना। क्योंकि अगर तुमने या उसके पिता ने 12 साल से पहले उसका चेहरा देखा तो तुम यकीनन मर जाओगी।

तुमको यह करना चाहिये कि जैसे ही बच्चा पैदा हो उसको नीचे तहखाने में भेज देना चाहिये और 12 साल तक उसको सूरज की रोशनी नहीं देखने देनी चाहिये।

जब **12** साल खत्म हो जायें तब तुम उसको बाहर ला सकती हो। फिर उसे नदी में नहलाना और नये कपड़े पहना कर अपने सामने मँगवाना। उसका नाम राजा रसालू होगा और उसकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैलेगी।"

सो जब राजकुमार पैदा हुआ तो उसको उसकी आयाओं और नौकरों आदि के साथ नीचे जमीन में बने तहखाने में भेज दिया गया। जो आराम एक राजकुमार की हैसियत से उसको मिलते वे सब उसको वहीं दे दिये गये।

उसके साथ साथ उसके लिये एक बच्चा घोड़ा भी भेज दिया गया जो उसी दिन पैदा हुआ था। एक तलवार एक भाला और एक ढाल भी उस दिन के लिये भेज दी गयी जब राजा रसालू दुनियाँ में राजा बन कर आयेगा।

सो वह बच्चा वही पलता रहा बड़ा होता रहा अपने तोते से बात करता रहा। उसकी आयाऐं और नौकर उसको वह सब सिखाते रहे जो एक राजकुमार को जानने की जरूरत थी।

# 33 राजा रसालू दुनियाँ में कैसे आया[114]

सो रसालू दुनियाँ से दूर सूरज की रोशनी से दूर महल के तहखाने में रहा। इस तरह रहते रहते उसको वहाँ 11 साल बीत गये। वह बड़ा हो रहा था लम्बा हो रहा था ताकतवर हो रहा था। लेकिन केवल अपने घोड़े के साथ खेल कर और अपने तोते से बात कर के।

लेकिन जब उसका 12वाँ साल शुरू हुआ तो उसके दिल में अपने माहौल को बदलने की इच्छा जागी। उसकी इच्छा हुई कि वह ज़िन्दगी की आवाजें सुने जो उसके पास महल की इस जेल में बाहर से आती रहती थीं।

एक दिन उसने सोचा "मुझे बाहर जा कर देखना चाहिये कि ये कहाँ से आती हैं और यह आवाजें कौन करता है। जब उसने अपनी आया से इस बारे में बात की तो उसकी आया ने उससे कहा कि उसको अभी एक साल और रुकना चाहिये। तो वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मैं किसी भी आदमी के लिये अब इससे ज़्यादा यहाँ बन्द नहीं रह सकता।"

सो उसने अपने घोड़े भौंर ईराकी[115] पर जीन कसी। खुद उसने अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहना और दुनियाँ देखने के लिये

---

[114] How Raja Rasalu Went Out in the World (Tale No 33)

[115] Bhaunr Iraqi was the name of the horse kept with Rasalu. But it may be "Bhaunri Raakhee" which means "kept underground", because Iraqi means Arabian and it might be an Arabian horse.

बाहर निकल पड़ा। पर उसने अपनी आया की बात मानी जो वह अक्सर उससे कहा करती थी।

सो जब वह नदी के पास आया तो वह अपने घोड़े से उतरा उसमें नहाया धोया नये कपड़े पहने। अपने नये कपड़े पहन कर वह अपने सुन्दर चेहरे और बहादुर दिल के साथ अपने पिता के राज्य में आ पहुँचा।

वहाँ जा कर वह एक कुँए के पास कुछ सुस्ताने के लिये बैठ गया। वहीं कुछ स्त्रियाँ अपने अपने मिट्टी के घड़ों में पानी भर रही थीं। जब वे उसके पास से जा रही थीं तो उनके भरे हुए घड़े उनके सिरों पर ठीक से रखे हुए थे।

यह देख कर नौजवान राजकुमार ने उन सब घड़ों पर पत्थर मारे और सबको तोड़ दिया। उनके घड़े टूट गये उनका पानी बिखर गया और स्त्रियाँ सारी की सारी भीग गयीं।

रोती चिल्लाती वे महल पहुँचीं और राजा से शिकायत की कि कोई ताकतवर राजकुमार चमकता जिरहबख्तर पहने तोते को अपनी कलाई पर बिठाये और साथ में एक घोड़ा लिये कुँए के पास बैठा है और उसने उनके घड़े फोड़ दिये हैं।

जैसे ही राजा ने यह सुना तो उसे पता चल गया कि वह जरूर ही राजकुमार रसालू होगा जो **12** साल से पहले ही बाहर निकल गया। जोगी की बात को याद करते हुए कि अगर उसने उसको **12** साल से पहले देखा तो वह मर जायेगा उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं

हुई कि वह अपने लोगों को भेज कर उसे पकड़वा ले क्योंकि उसको पकड़ कर फैसले के लिये तो वे उसी के पास ले कर आयेंगे।

इसलिये उसने उन स्त्रियों को समझा बुझा कर वापस भेज दिया। उनको लोहे और पीतल के घड़े इस्तेमाल करने की सलाह दी। जिस किसी के पास ऐसे घड़े नहीं थे उसको वैसे घड़े सरकारी खजाने से दिलवा दिये गये।

पर जब राजकुमार रसालू ने स्त्रियों को लोहे और पीतल के घड़े ले कर कुँए पर वापस आते देखा तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसने अपने तेज़ तीर और कमान निकाली और उन तेज़ तीरों से उनके घड़ों में छेद कर दिये मानो वे मिट्टी के बने हों।

उसके बाद भी राजा ने उसे नहीं बुलाया तो वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपनी जवानी और ताकत के घमंड में महल की तरफ चल दिया। वह दरबार में घुसा तो उसने वहाँ अपने पिता को काँपता हुआ बैठा पाया।

उसने इसे पूरी इज़्ज़त के साथ झुक कर नमस्ते की पर राजा सालबाहन ने उसको देखने से पहले ही उससे अपना मुँह फेर लिया और जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा।

तब राजकुमार रसालू ने डाँटने के अन्दाज में उससे कहा जो सारे दरबार में गूँज गया —

मैं तो यहाँ आपको नमस्ते करने आया था न कि कोई नुकसान पहुँचाने
मैंने ऐसा क्या किया है जिसकी वजह से आपने मुझसे मुँह फेर लिया

राज्य और दंड की कोई ताकत नहीं जो मुझे ललचा सकते
मैं तो इससे भी ज़्यादा अच्छा इनाम पाना चाहता हूँ

यह कह कर वह अपने दिल में कड़वाहट और गुस्सा लिये दरबार से बाहर चला गया। पर जैसे ही वह महल की खिड़कियों के नीचे से गुजरा तो उसने अपनी माँ के रोने की आवाज सुनी।

इस आवाज ने उसका दिल पिघला दिया। इससे उसका गुस्सा तो चला गया पर उसके दिल में एक अकेलापन छा गया क्योंकि उसके माता और पिता दोनों ही ने उसे छोड़ दिया था। वह बड़े दुख से रो पड़ा —

ओ महलों में रहने वाली तू मुझे रो रो कर मत सुना
अगर तू मेरी माता है तो मुझे कोई अच्छी सलाह दे
क्योंकि मेरी ज़िन्दगी तो अब शुरू होने वाली है

और रानी लोना ने उसको रोते रोते जवाब दिया —

माँ तुझे यह सलाह देती है बेटे और इस सलाह को तू हमेशा अपने साथ रखना
तू चारों तरफ राज करेगा पर तू अपने आपको ठीक और शुद्ध रखना

इस तरह राजा रसालू की माँ ने राजा रसालू को तसल्ली दी और उसने अपनी किस्मत बनानी शुरू की। वह अपना घोड़ा भौंर ईराकी और अपना तोता अपने साथ ले गया। दोनों ही उसके जन्म से ही उसके साथ रह रहे थे।

इन दोनों विश्वस्त दोस्तों के अलावा उसके दो दोस्त और भी थे – एक बढ़ई लड़का और एक सुनार लड़का, जिन्होंने यह कसम खा रखी थी कि वे राजकुमार का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे। इस तरह से उनका एक अच्छा साथ था।

जब रानी लोना ने उनको जाते देखा तो वह अपनी खिड़की से उनको तब तक जाते देखती रही जब तक कि वे ऑखों से ओझल नहीं हो गये और केवल धूल उड़ती नहीं दिखायी दी।

फिर उसने अपने हाथों में सिर रख लिया और रो पड़ी —

ओ बेटे तू मुझे अब बहुत थोड़ा दिखता है अब तो मुझे धूल ही ज़्यादा दिखायी देती है
क्योंकि जिस मॉ का बेटा उससे दूर हो वह तो खुद भी धूल जैसी ही है

# 34 राजा रसालू के दोस्तों ने उसे कैसे छोड़ा[116]

सो राजकुमार रसालू अपने पिता का राज्य छोड़ कर दुनियाँ देखने चल दिया। पहले दिन वह काफी दूर चला। वह एक अकेले जंगल में आ गया। फिर यह देख कर कि यह एक अकेली सी जगह है और रात कुछ ज़रा ज़्यादा ही अँधेरी है उन सबने यह तय किया कि वे लोग बारी बारी से पहरा देंगे।

उन्होंने अपने पहरे के समय को तीन हिस्सों में बाँट लिया। बढ़ई के हिस्से में पहला हिस्सा आया, सुनार ने दूसरा हिस्सा लिया और राजकुमार को तीसरे हिस्से में पहरा देना था।

तब सुनार ने अपने मालिक के लिये घास का एक बिछौना बनाया और इस बात से डरते हुए कि कहीं ऐसा न हो कि राजकुमार का दिल अपने पुराने माहौल को याद कर के खराब न हो जाये उसने उसको उत्साहित करने के लिये यह कहा —

अब तक तो तुम बहुत मुलायम बिस्तर में खेले हो
पर आज की रात घास ही तुम्हारा बिस्तर है
फिर भी तुम दुखी मत होना अगर तुम्हारी किस्मत तुम्हें खराब दिन दिखाये
बहादुर लोग उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते

जब राजकुमार रसालू और सुनार का बेटा सो गये और बढ़ई का बेटा पहरा दे रहा था तो पास की एक झाड़ी से एक साँप निकल

[116] How Raja Rasalu's Friends Forsook Him (Tale No 34)

आया और सोते हुए लोगों की तरफ बढ़ा तो बढ़ई के बेटे ने पूछा — "तुम कौन हो और तुम इधर क्यों आये हो?"

सॉप बोला — "मैंने अपने चारों तरफ के 12 मील के दायरे में सबको नष्ट कर दिया है। तुम कौन हो जिसने यहॉ आने की हिम्मत की है?"

कह कर सॉप ने बढ़ई के बेटे के ऊपर हमला किया तो बढ़ई का बेटा उससे लड़ा और उसे मार दिया। उसे मार कर बढ़ई के बेटे ने उसे अपनी ढाल के नीचे छिपा दिया और अपने दोनों साथियों को इस बारे में कुछ नहीं बताया कि कहीं वे डर न जायें। क्योंकि सुनार के बेटे ने भी यही सोचा कि कहीं राजकुमार हताश न हो जाये।

जब पहरा देने की राजकुमार रसालू की बारी आयी तो एक अनजानी आफत[117] झाड़ी में से निकल आयी। राजकुमार रसालू ने उसका बहादुरी से सामना किया और ज़ोर से चिल्लाया — "कौन हो तुम और यहॉ क्यों आये हो?"

तब उस आफत ने कहा — "मैंने अपने चारों तरफ के 36 मील के दायरे में सबको मार दिया है तुम कौन हो जिसने यहॉ आने की हिम्मत की है?"

इस पर राजकुमार रसालू ने अपने चमकती हुई तलवार खींच ली और उस आफत को उसने अपने तेज़ तीरों से छेद दिया जिससे वह अपनी गुफा में भाग गया। राजकुमार रसालू ने उसका गुफा तक

---

[117] Translated for the words "Unspeakable Terror" – Aafat is the original word.

पीछा किया और उसे मार कर फिर पहरा देने के लिये अपनी जगह शान्ति से आ गया।

सुबह होने पर राजकुमार रसालू ने अपने सोते हुए साथियों को उठाया तो बढ़ई के बेटे ने अपना इनाम यानी उस साँप का शरीर उसको दिखाया जो उसने उस रात मारा था।

राजकुमार बोला — "अरे यह तो एक छोटा सा साँप है। यहाँ गुफा में आ कर देखो मैंने क्या मारा।"

और जब सुनार और बढ़ई के बेटों ने उस आफत को देखा तो वे तो बहुत डर गये। वे उसके पैरों पर गिर गये और उन्होंने उससे शहर जाने की इजाज़त माँगी।

उन्होंने कहा — ओ ताकतवर राजकुमार रसालू। तुम तो एक राजकुमार हो एक हीरो हो तुम तो ऐसी आफतों से लड़ सकते हो। पर हम लोग तो केवल मामूली लोग हैं। हम अगर तुम्हारे साथ रहे तो तुम यकीनन ही मारे जाओगे। ये चीज़ें तुम्हारे लिये तो कुछ नहीं हैं पर हमारे लिये तो ये मौत हैं। मेहरबानी कर के हमें जाने दो।"

राजकुमार रसालू ने उनकी तरफ बड़े दुख से देखा और कहा कि जैसा वे चाहें वैसा करें।

वह बोला —

सदा न फूलें तोरियाँ ओ साथी सदा न सावन होय
सदा न जोबन थिर रहे सदा न जीवै कोय
सदा ना राजियाँ हाकिमीं सदा ना राजियाँ देस
सदा न होवे घर अपना ओ साथी जब बसें पिया परदेस

दर्शन की यह कविता दुनियाँ भर में मशहूर है। इसे अंग्रेजी में इस तरह कहा जा सकता है।[118]

[118] It is not always that Tori (a vegetable) flowers all the time, Rain doesn't always fall
Nor stays the youth and nor anybody lives
Kings do not always reign, Nor they have land always
People do not always live in their own homes, when the husband (dear people) is not near

# 35 राजा रसालू ने राक्षसों को कैसे मारा[119]

सो राजकुमार रसालू के दोस्त उसको छोड़ कर शहर चले गये। कुछ समय बाद राजकुमार रसालू नीला शहर में आया। जैसे ही वह शहर में घुसा तो उसको एक बुढ़िया मिली जो रोटियाँ बना रही थी।

जब वह उन्हें बना रही थी तो वह साथ में कभी रोती जाती थी तो कभी हँसती जाती थी। यह देख कर राजकुमार रसालू को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह ऐसा क्यों कर रही थी सो उसने उससे पूछा — "माँ जी आप क्यों तो हँसती हैं और फिर क्यों रोती हैं?"

बुढ़िया रोटी बेलने के लिये अपने आटे की गोली बनाते हुए बोली — "तुम क्यों पूछते हो बेटा? तुमको उससे क्या फायदा होगा?"

राजकुमार रसालू अपनी मीठी आवाज में बोला — "नहीं माँ जी। अगर आप मुझे सच सच बता देंगी तो शायद हम दोनों में से किसी एक का फायदा हो जाये।"

और जब बुढ़िया ने राजकुमार रसालू के चेहरे की तरफ देखा तो वह उसे किसी दयालु आदमी का चेहरा दिखायी दिया। वह आँखों में आँसू भर कर बोली — "ओ अजनबी। मेरे सात सुन्दर

---

[119] How Raja Rasalu Killed the Giants (Tale No 35)

बेटे थे। अब मेरे पास केवल एक बेटा ही रह गया है। बाकी के छह बेटे एक बहुत ही भयानक राक्षस ने खा लिये हैं। यह राक्षस रोज इस शहर में अपना टैक्स वसूल करने के लिये आता है – एक जवान आदमी, एक भैंस और एक टोकरी रोटी।

मेरे छह बेटे तो मारे जा चुके हैं और आज फिर यह टैक्स देने की मेरी बारी आयी है। सो आज मेरे सबसे छोटे सबसे प्यारे बेटे को भी वही भुगतना पड़ेगा जो उसके छह भाई भुगत चुके हैं। मैं इसी लिये रोती हूँ।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू को उस पर बहुत दया आयी। वह बोला —

> ना रो माता भोली ना अँसुवन ढलकाये, तेरे बेटे की इवाज में सिर देसान चला जाये
> नीले घोड़िये वालिया राजा मुँछधारी सिर पग, वह जो देखते औंदे जिन खाइयाँ सारा जग

इस पर भी बुढ़िया ने अविश्वास के साथ अपना सिर ना में हिलाया और बोली — "ओ मीठा बोल बोलने वाले। पर एक के लिये दूसरा अपनी ज़िन्दगी खतरे में क्यों डालेगा।"

यह सुन कर राजकुमार रसालू उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया अपने शानदार घोड़े भौंर ईराकी से नीचे उतरा और सुस्ताने के लिये लापरवाही से वहीं बैठ गया जैसे वह उसी घर का बेटा हो।

वह बोला — "माँ जी आप डरिये नहीं। मैं आपसे वायदा करता हूँ कि आपके बेटे को बचाने के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी भी खतरे में डालूँगा।"

उसी समय सरकार के ऊँचे औफीसर जिनका काम उस राक्षस का खाना इकट्ठा करना था वहाँ आ गये। बुढ़िया उनको देख कर यह कहते हुए एक बार फिर रो पड़ी —

ओ नीले घोड़े और ऊँची पगड़ी बाँधने वाले राजकुमार
अपने सुन्दर दाढ़ी वाले चेहरे से कहे गये शब्द याद रखना
मुझे दुख देना वाला पास ही है

राजकुमार रसालू अपना चमकीला जिरहबख्तर पहन कर उठा और हुक्म देने के लहज़े में उनको एक तरफ हट जाने के लिये कहा।

औफीसरों के सरदार ने कहा — "ओ मीठा बोलने वाले। अगर यह स्त्री आज उसका खाना अभी नहीं देती है तो राक्षस लोग यहाँ आ कर सारा शहर में हड़बड़ी मचा देंगे। हमको उसके बेटे को ले कर ही जाना है।"

राजकुमार बोला — "उसके बदले में मैं चलता हूँ। तुम मेरे रास्ते से हटो मुझे जाने के लिये रास्ता दो।"

औफीसरों के मना करने के बावजूद वह अपने घोड़े पर चढ़ गया और एक भैंस और बनी हुई रोटियाँ साथ ले कर उस राक्षस से

लड़ने के लिये चल दिया। उसने भैंस से सबसे छोटी सड़क से चलने के लिये कहा।

जब वह राक्षस के घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि उनमें से एक राक्षस एक बहुत बड़ी खाल में भर कर पानी ले कर जा रहा था।

जैसे ही पानी ले जाने वाले ने राजकुमार रसालू को उसके भौंर ईराकी घोड़े पर एक भैंस के साथ आता देखा तो वह मन में बहुत खुश हुआ — "आहा। आज तो एक घोड़ा और भी है साथ में। इससे पहले कि मेरे भाई लोग इसको देखें इसे पहले मैं खा लेता हूँ।"

सो उसने खाने के लिये उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया कि राजकुमार रसालू ने अपनी तेज़ तलवार से उसका हाथ काट दिया। बस वह तो डर के मारे वहाँ से भाग लिया।

जब वह भाग रहा था तो उसको उसकी एक बहिन मिल गयी तो वह बोली — "भैया तुम इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रहे हो?"

भागते भागते ही वह बोला — "लगता है कि राजकुमार रसालू आ गये। यह देख अपनी तलवार के एक ही झटके से उन्होंने मेरा हाथ काट दिया।"

यह देख कर राक्षसी को भी डर लगने लगा और वह भी अपने भाई के साथ ही भाग ली। और जब वे दोनों भाग रहे थे तो वे ज़ोर ज़ोर से गाते जा रहे थे —

भागो भाइयों भागो सबसे छोटे रास्ते से भाग लो
आग बहुत ज़ोर की लगी है वह हमारे सब प्यारों को जला देगी
हमने ज़िन्दगी की खुशियाँ देखी हैं अब हमको चारों तरफ भागना है
जो हो चुका वह हो चुका अब जल्दी से कोई उपाय सोचो

यह सुन कर सारे राक्षस पलटे और अपने ज्योतिषी भाई के पास पहुँचे और उससे उसकी किताब देख कर उन्हें बताने के लिये कहा कि क्या राजकुमार रसालू वाकई में दुनियाँ में पैदा हो चुके हैं।

और जब उन्होंने यह सुना कि "हाँ वह पैदा हो चुके हैं।" तो सबने इधर उधर भागना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि जब वे पलट कर भागे जा रहे थे तो राजकुमार रसालू ने उनसे अपने आप से लड़ने के लिये कहा — "आगे आओ। मैं राजकुमार रसालू हूँ राजा सालबाहन का बेटा और राक्षसों को मारने के लिये ही पैदा हुआ हूँ।"

तब उनमें से एक राक्षस ने आग में जैसे घी डालते हुए कहा — "तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली रसालू आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बाँध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।"

यह सुन कर राजकुमार ने अपने घोड़े की एड़ी की रस्सियाँ खोल दीं और अपनी तलवार जमीन पर फेंक दी। लो उन रस्सियों ने उन राक्षसों को बाँध लिया और तलवार ने उन सबको अपने आप ही काटना शुरू कर दिया।

फिर भी सात राक्षस जो बाकी बचे थे उन्होंने भी यह कहने की कोशिश की “तेरे जैसे न जाने कितने रसालू मैंने खा लिये हैं। जब कोई असली आदमी आयेगा तो उसके घोड़े की एड़ी की रस्सी हमें बॉध लेगी और उसकी तलवार हमें अपने आप ही काट देगी।”

उन्होंने रोटी पकाने वाले सात तवे लिये और उनसे ढाल का काम लेने लगे। तो लो राजकुमार रसालू ने अपने तेज़ तीर फेंक कर इन तवों को भेद दिया और साथ में मर गये वे राक्षस भी जो उनके पीछे खड़े थे। पर राक्षसी बच कर निकल गयी और गंडगरी पहाड़ की एक गुफा में जा कर छिप गयी।

तब राजकुमार रसालू ने अपनी एक मूर्ति बनवायी उसको चमकीला जिरहबख्तर पहनाया उसके हाथ में तलवार और ढाल और भाला दिया और उसको उस गुफा के दरवाजे पर रखवा दिया ताकि वह राक्षसी वहॉ से बाहर न निकल सके और भूखी ही अन्दर मर जाये।

इस तरह से उसने राक्षसों को मारा।

# 36 राजा रसालू जोगी कैसे बना[120]

राक्षसों को मारने के कुछ समय बाद राजा रसालू होदी नगरी चला गया। वहाँ जा कर जब वह अपनी सुन्दरता के लिये मशहूर रानी सुन्दराँ[121] के घर गया तो वहाँ जा कर उसने देखा कि महल के दरवाजे पर एक जोगी बैठा हुआ है और उसके पास ही होम[122] की आग जल रही है।

राजा रसालू ने उससे पूछा — "हे पिता आप यहाँ कब से बैठे हुए हैं?"

जोगी बोला — "मेरे बेटे मैं यहाँ 22 साल से रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार कर रहा हूँ फिर भी मैं अभी तक उसे देख नहीं पाया हूँ।"

राजा रसालू बोले — "आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिये। आपके साथ मैं भी उसको देखने का इन्तजार करूँगा।"

जोगी बोला — "मेरे बच्चे। तुम तो पहले से ही चमत्कार करते चले आ रहे हो तो फिर तुम हममें से एक क्यों बनना चाहते हो?"

राजा रसालू उसके लिये ना सुनने के लिये तैयार नहीं था सो जोगी ने उसके कान बिंधवा दिये और उनमें पवित्र कुंडल पहना दिये।

---

[120] How Raja Rasalu Became a Jogi (Tale No 36)

[121] Queen Sundaran was the daughter Raja Hari Chand

[122] Hom means Yagya

नये शिष्य ने अपना चमकता जिरहबख्तर एक तरफ उठा कर रख दिया और जोगी की तरह से एक लंगोटी पहन कर ही उसके पास बैठ गया और रानी सुन्दराँ को देखने का इन्तजार करने लगा।

रात को बूढ़ा जोगी भीख माँगने के लिये गया तो उसने चार घर से भीख माँगी। उसमें से आधी भीख उसने राजा रसालू को दे दी और बाकी आधी उसने खुद खा ली।

अब राजा रसालू तो एक बहुत ही संत आदमी था एक हीरो था। इसके अलावा उसको खाने की भी ज़्यादा चिन्ता नहीं थी सो वह तो अपने हिस्से से सन्तुष्ट था पर जोगी अपने हिस्से से बिल्कुल सन्तुष्ट नहीं था।

अगले दिन भी वैसा ही हुआ और राजा रसालू तभी भी रानी सुन्दराँ को देखने के इन्तजार में आग के पास बैठा रहा। अब जोगी का धीरज छूटने लगा।

वह बोला — "ओ मेरे शिष्य। मैंने तुम्हें अपना शिष्य इसलिये बनाया था ताकि तुम भी कुछ भीख माँग सको और मुझे खिला सको। और अब देखो यह मैं हूँ जो तुम्हें खाना खिलाने के लिये भूखा रह रहा हूँ।"

राजा रसालू हँसते हुए बोला — "इसका तो आपने मुझे कोई हुक्म नहीं दिया था। अब कोई शिष्य बिना अपने गुरू की इजाज़त के कैसे जायेगा।"

यह सुन कर जोगी बोला — "तो फिर मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम भीख माँगने जाओ और इतनी भीख माँग कर लाओ जो मेरे और तुम्हारे दोनों के लिये काफी हो।"

राजा रसालू उठा और अपनी जोगी की पोशाक में रानी सुन्दराँ के महल के दरवाजे पर जा कर खड़ा हो गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूँ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूँ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दराँ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

जब सुन्दरी सुन्दराँ ने महल के अन्दर से राजा रसालू की आवाज सुनी तो उसकी मिठास उसके दिल को छू गयी। उसने तुरन्त ही अपनी एक दासी को बुला कर उससे उसे भीख देने के लिये कहा।

पर जब दासी दरवाजे पर आयी और बाहर खड़े हुए राजा रसालू की सुन्दरता देखी – उसका गोरा चेहरा और सुडौल शरीर, तो वह तो बेहोश ही हो गयी। वह जो कुछ उसे देने आयी थी वह सब जमीन पर गिर पड़ा।

राजा रसालू ने एक बार फिर गाया तो एक बार फिर उसकी मीठी आवाज रानी सुन्दराँ के कानों में पड़ी तो उसने अपनी दूसरी दासी को बुला कर उससे उसको कुछ भीख देने के लिये कहा। पर वह भी राजा रसालू की सुन्दरता देख कर बेहोश हो कर गिर पड़ी।

तब रानी सुन्दराँ उठी और खुद बाहर गयी – सुन्दर और शाही ढंग से। उसने दासियों को होश में लाया, बिखरा हुआ खाना उठाया और उसको एक तरफ रख दिया। फिर उसने थाली में जवाहरात भरे और उन्हें खुद ही राजा रसालू के हाथ में गर्व से यह कहते हुए दे दिये —

तुमने ये कुंडल कब पहने और तुम कब से फ़कीर बन गये
तुमने प्यार के धनुष का ऐसा कौन सा तीर खाया और तुम क्या ढूँढते फिरते हो
क्या तुम सारी स्त्रियों से भीख माँगते हो या फिर केवल मुझसे ही माँगते हो

राजा रसालू ने अपनी जोगी के स्वभाव के अनुसार उसके सामने सिर झुकाया और बड़ी नम्रता से कहा —

अपने ये कुंडल मैंने कल ही पहने हैं और कल ही मैं फ़कीर बना हूँ
और कल ही मैंने प्रेम का तीर खाया है मुझे यहाँ से कुछ नहीं चाहिये
मैं जिस किसी को देखता हूँ उन सबसे भीख नहीं माँगता
पर ओ सुन्दर रानी सुन्दराँ मैं केवल तुझसे ही भीख माँगता हूँ।

जब रसालू थाली भर कर जवाहरात ले कर अपने गुरू के पास लौट कर आया तो उस बूढ़े जोगी को तो बहुत आश्चर्य हुआ। उसने उससे कहा कि वह उन्हें वापस ले जाये और उनकी बजाय केवल खाना ले कर आये।

सो राजा रसालू फिर से महल के दरवाजे पर वापस गया और गाया —

अलख मैं तेरी देहरी पर खड़ा हूँ तेरी सुन्दरता के चर्चे सुन कर बहुत दूर से आया हूँ
ओ बहुतायत से देने वाली सुन्दरी सुन्दराँ इस कुंडल पहने जोगी को भीख दे

रानी सुन्दराँ फिर उठी – गर्व से भरी हुई और सुन्दर। वह दरवाजे के पास आयी और बाली —

तू कोई भिखारी नहीं है
तेरे मुँह का तरकस मोतियों के तीरों से भरा है
तेरा धनुष लाल है जैसे लाल[123] होता है
राख ने तेरी जवानी को ढक रखा है पर
तेरी आँखें तेरा रंग चमक रहा है तू मुझे धोखा मत दे

राजा रसालू मुस्कुरा कर बोला —
ओ सुन्दर रानी इससे क्या हुआ
अगर मेरे मुँह का तरकस चमकते हुए मोतियों से और लाल से भरा है
मैं जवाहरातों का व्यापार नहीं करता चाहे वह पूर्व पश्चिम हो उत्तर हो या दक्षिण हो
आप अपने जवाहरात वापस ले लें और इनकी बजाय मुझे खाना दे दें
ये भेंटें कीमती है दुर्लभ हैं पर यह मँहगा जादू है ये जोगी की भीख के काबिल नहीं है

तब रानी सुन्दराँ ने वे जवाहरात वापस ले लिये और सुन्दर जोगी को एक घंटा इन्तजार करने के लिये कहा जब तक रसोई में खाना बनता है।

फिर भी वह उसके बारे में और कुछ जानकारी मालूम नहीं कर सकी क्योंकि वह दरवाजे पर बैठा रहा और एक शब्द भी नहीं

[123] This Laal means Ruby. Ruby is also red – see its picture above.

बोला। हॉ जब रानी सुन्दरॉ ने उसको एक थाल भर कर मिठाई दी और उसकी तरफ दुखी नजरों से देख कर कहा —

तुम किस राजा के बेटे हो और तुम यहॉ कब आये
तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा घर कहॉ है

राजा रसालू ने उससे भीख ली और बोला —

मैं सुन्दरी लोना का बेटा हूँ मेरे पिता का नाम सालबाहन है
मैं रसालू हूँ और तुम्हारी सुन्दरता के चर्चे सुन कर मैंने राख वाला यह जोगी का रूप रखा
मैं भीख मॉगता हूँ यह देखने के लिये
कि क्या तुम इतनी ही सुन्दर हो जितना लोग कहते हैं
अब मैंने देख लिया अब मैं अपने रास्ते जाता हूँ

उसके बाद राजा रसालू मिठाई ले कर अपने गुरू के पास चला आया। उसके बाद वह वहॉ से भी चला गया। क्योंकि उसको डर था कि उसके बारे में जानने के बाद रानी सुन्दरॉ कहीं उसको बन्दी न बना ले।

सुन्दरी सुन्दरॉ जोगी की पुकार का इन्तजार करती रही और फिर जब कोई नहीं आया तो वह बाहर उस बूढ़े जोगी से गर्व से और शाही तरीके से यह पूछने आयी कि उसका शिष्य कहॉ चला गया।

बूढ़े जोगी को यह देख कर अपना आपा बहुत छोटा लगा कि वह महलों की रानी एक अजनबी के बारे में पूछने के लिये उसके

पास आयी जबकि वह खुद **22** साल से वह वहॉ बैठा बिना कुछ बोले और इशारा किये उसके दर्शनों का इन्तजार कर रहा था।

वह बोला — “मेरा शिष्य? मैं भूखा था मैंने उसे खा लिया क्योंकि वह मेरे लिये भीख में काफी खाना नहीं लाया।”

रानी सुन्दरॉ चिल्लायी — “अरे ओ राक्षस। क्या मैंने तेरे लिये जवाहरात और खाना नहीं भेजा? क्या इस सबसे भी तुझे सन्तोष नहीं मिला जो तूने इतने सुन्दर राजकुमार को खा लिया।”

जोगी बोला — “मुझे नहीं मालूम। मैं तो केवल इतना जानता हूॅ कि मैंने उस नौजवान को एक सलॉख में घुसाया और उसे भून दिया और खा लिया। वह खाने में बहुत स्वादिष्ट था।”

रानी सुन्दरॉ से रहा नहीं गया वह बोली — “तब तू मुझे भी भून ले और खा ले।” और यह कहने के साथ ही उसने अपने आपको उसके सामने जलती हुई पवित्र आग में फेंक दिया। वह उस सुन्दर जोगी के प्रेम में उसके साथ ही सती हो गयी थी।

और जब वह वहॉ से गया तो उसने उसके बारे में नहीं सोचा बल्कि उसका मन हुआ कि काश वह भी एक राजा होता सो उसने राजा हरि चन्द की राज गद्दी ले ली और फिर वहॉ राज किया।

# 37 राजा रसालू की राजा सरकप के शहर की यात्रा[124]

कुछ साल होदी नगरी[125] में राज कर के राजा रसालू ने अपना राज्य छोड़ दिया और राजा सरकप[126] के साथ चौपड़[127] खेलने के लिये चल दिया।

पर जब वह वहाँ आया तो गरज और बिजली का एक ऐसा भारी तूफान आया कि उसको शरण लेने की जरूरत पड़ गयी। पर उसको कहीं शरण नहीं मिली सिवाय एक पुराने कब्रिस्तान के जहाँ एक सिरकटी लाश पड़ी हुई थी।

वह लाश इतनी अकेली थी कि लगता था कि उसको भी किसी के साथ की जरूरत थी। राजा रसालू उसके पास बैठ गया और बोला —

यहाँ कोई नहीं है न तो पास में न दूर, सिवाय इस बिना साँस वाली लाश के
क्या भगवान इसको ज़िन्दा कर देगा इससे बात कर के अकेलापन कुछ कम हो जायेगा

---

[124] Raja Rasalu Journeyed to the City of the King Sarkap (Tale No 37)
[125] Hodi Nagari
[126] King Sarkap (King Beheader) is a universal hero of fable who has left many places behind him connected with his memory, but who he was is not yet been ascertained.
[127] Chaupad – a kind of dice game. Long before this indoor game was very popular among kings. King Nal played it with his brother Pushkar and lost it. Paandav played it with their cousins Kaurav and lost it. See the picture of dice above.

और लो वह बिना सिर की लाश तो उठ गयी और राजा रसालू के पास ही बैठ गयी। राजा रसालू ने बिना किसी आश्चर्य के कहा —

तूफान बहुत भयानक और तेज़ है, बड़ा घना बादल पश्चिम में उठ रहा है
तुम्हारी कब्र को और तुम्हारे कफ़न को क्या तकलीफ है ओ लाश
जो तुम आराम नहीं कर सकते

बिना सिर वाली लाश बोली —
जब मैं धरती पर था तो मैं भी तुम जैसा ही था
मेरी पगड़ी एक राजा के जैसी थी मेरा सिर सबसे ऊँचा था
मैं इधर से उधर आनन्द करता घूमता था

मैं एक बहादुर की तरह अपने दुश्मनों से लड़ता था अपनी ज़िन्दगी मौज से जीता था
पर अब मैं मर गया हूँ मेरे पाप मेरे लिये लैड[128] की तरह से भारी हो गये हैं
वे मुझे कब्र में भी चैन से नहीं रहने देते

इसी तरीके से रात गुजर गयी ऍधेरी और भयानक। राजा रसालू उस बिना सिर वाली लाश से बातें करता रहा। जब सुबह हुई और राजा रसालू बोला कि अब उसे अपनी यात्रा पर जाना है तो लाश ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है।

राजा रसालू बोला कि वह राजा सरकप के साथ चौसर खेलने जा रहा है। तो लाश ने उससे विनती की कि वह अपने इस विचार को छोड़ दे।

---

[128] Lead is a metal heavier than it looks.

उसने कहा — “मैं राजा सरकप का भाई हूँ और मुझे उसके तौर तरीके मालूम हैं। रोज नाश्ते से पहले वह अपने आनन्द के लिये दो तीन आदमियों के सिर काटता है। एक दिन उसको और कोई नहीं मिला तो उसने मेरा ही सिर काट दिया और किसी न किसी बहाने मुझे पूरा यकीन है कि वह तुम्हारा भी सिर काट देगा।

फिर भी अगर तुमने वहाँ जाने का और उसके साथ चौपड़ खेलने का इरादा बना ही रखा है तो यहाँ इस कब्रिस्तान से थोड़ी सी हड्डियाँ अपने साथ ले जाओ और उनसे अपने पाँसे बना लो। इससे वे जादू वाले पाँसे जिनसे मेरा भाई खेलता है उनकी ताकत बेकार हो जायेगी नहीं तो वह हमेशा ही जीत जाता है।”

सो राजा रसालू ने वहाँ पड़ी हुई कुछ हड्डियाँ उठा लीं और उनके पाँसे बनवा लिये। उनको उसने अपनी जेब में रख लिया। फिर लाश को विदा कह कर वह राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने चल दिया।

# 38 राजा रसालू ने राजा की सत्तर बेटियों को कैसे झुलाया[129]

दयालु और ताकतवर राजा रसालू ने अपनी यात्रा शुरू की। चलते चलते वह एक जलते हुए जंगल के पास आ गया कि उसने आग में से आती हुई एक आवाज सुनी — "ओ यात्री। भगवान के लिये मुझे इस आग से बचाओ।"

राजा रसालू आग की तरफ मुड़ा तो लो यह तो एक छोटा सा क्रिकेट था जो उससे यह बोल रहा था। अव राजा क्योंकि बहुत दयालु और ताकतवर था सो उसने हाथ आग में डाल कर उसे निकाल लिया और उसे बाहर छोड़ दिया।

तब उस छोटे से प्राणी ने अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये अपने आगे के दो बालों में से एक बाल तोड़ा और अपनी रक्षा करने वाले को दिया और कहा — "तुम मेरा यह बाल लो और जब भी तुम किसी मुसीबत में पड़ जाओ तो तुम इसे आग में डाल देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजा रसालू मुस्कुराया और बोला — "तुम इतने छोटे से जानवर मेरी क्या सहायता करोगे?"

---

[129] How Raja Rasalu Swung the Seventy Fair Maidens, Daughters of the King (Tale No 38)

फिर भी उसने वह बाल रख लिया और अपने रास्ते चला गया। जब वह राजा सरकप के शहर पहुँचा तो राजा की 70 बेटियाँ उससे मिलने के लिये बाहर आयीं – 70 सुन्दर लड़कियाँ, खुश और लापरवाह, हँसती मुस्कुराती।

लेकिन उनमें से एक सबसे छोटी वाली बेटी ने भौंर ईराकी पर चढ़ने वाले शानदार राजा को देखा तो वह तुरन्त उसके पास चली गयी और बोली —

ओ नीले घोड़े वाले राजा यहाँ से वापस चले जाओ यहाँ से वापस चले जाओ
या फिर अपना भाला नीचे करके आओ आज तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा
क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से प्यार करते हो तब ओ अजनबी मैं तुमसे विनती करती हूँ
तुम वापस लौट जाओ तुम वापस लौट जाओ

पर राजा रसालू ने मुस्कुराते हुए धीमे से जवाब दिया —

ओ सुन्दरी मैं बहुत दूर से आया हूँ प्रेम और युद्ध में जीतने की कसम खा कर
राजा सरकप मेरे आने पर पछतायेगा मैं उसके सिर के चार हिस्से कर दूँगा
और फिर मैं उसके यहाँ दुलहे के रूप में आऊँगा
और तुम्हें अपनी दुलहिन बना कर ले जाऊँगा

जब राजा रसालू ने इतनी वीरता से जवाब दिया तो उस लड़की ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा। वह कितना सुन्दर था कितना बहादुर और कितना ताकतवर था। वह तो तुरन्त ही उससे प्यार करने लगी। अब वह उसके साथ दुनियाँ में कहीं भी जाने को तैयार थी। पर दूसरी 69 लड़कियाँ उससे जलने लगीं।

उसकी हँसी उड़ाते हुए उन्होंने राजा रसालू से कहा — "इतनी जल्दी नहीं ओ बहादुर योद्धा। अगर तुमको हमारी बहिन से शादी करनी है तो पहले तुम्हें वह करना होगा जो हम तुमसे करने के लिये कहेंगे क्योंकि तब तुम हमारे छोटे भाई होगे।"

राजा रसालू ने कहा — "ओ सुन्दर लड़कियों। मुझे मेरा काम बताओ मैं उसे जरूर करूँगा।"

सो उन 69 लड़कियों ने 100 मन[130] बाजरा 100 मन रेत में मिला कर राजा रसालू को दे दिया और उसमें से उससे बाजरे के दाने बीनने के लिये कहा।

तब उसे क्रिकेट की याद आयी। उसने उसका दिया हुआ बाल अपनी जेब से निकाला और आग में फेंक दिया। तुरन्त ही वहाँ हवा में एक ज़ज़ज़ज़ की आवाज हुई और बहुत सारे क्रिकेट वहाँ आ कर जमा हो गये। उनके साथ वह क्रिकेट भी था जिसकी उसने जान बचायी थी।

राजा रसालू बोला — "ये बाजरे के दाने इस रेत में से अलग कर दो।"

क्रिकेट बोला — "बस यही काम है अगर मुझे यही पता होता कि तुम मुझसे इतना छोटा काम लोगे तो मैं अपने इतने सारे भाइयों को ले कर नहीं आता।"

[130] One Man or Mound is 40 Seer or 39+ Kilograms.

कह कर वे अपने काम में लग गये। एक रात में ही उन्होंने बाजरे के सारे दाने रेत से अलग कर दिये।

पर जब राजा सरकप की **69** बेटियों ने देखा कि राजा रसालू ने उनका कहा काम कर दिया है तो उन्होंने एक और काम करने के लिये कहा कि वह एक एक कर के उन्हें तब तक झूला झुलाये जब तक वे थक न जायें।

इस पर वह हॅसते हुए बोला — "उस लड़की को भी गिनते हुए भी जो कि बाद में मेरी पत्नी बनने वाली है तुम लोग **70** हो। और मैं अपनी ज़िन्दगी लड़कियों को झुलाने में बर्बाद करना नहीं चाहता।

उस समय तक जब तक मैंने तुममें से हर एक को एक एक बार झूला भी झुलाया तो पहले वाली को फिर से झूला झूलने की इच्छा हो जायेगी। इसलिये अगर तुम सबको झूला झूलना है तो तुम सब एक झूले में बैठ जाओ तब मैं देखता हूॅ कि मैं क्या कर सकता हूॅ।"

सो सारी **70** लड़कियॉ, खुश और लापरवाह, मुस्कुराती हुई और हॅसती हुई एक झूले में चढ़ गयीं और राजा रसालू ने जो अपने चमकते हुए जिरहबख्तर में खड़ा था रस्सी का एक सिरा अपने तीर में बॉधा और उसको अपनी ताकत से पूरा खींच कर छोड़ दिया – झूला चल दिया, एक तीर के समान, हवा में भागता हुआ, **70** लड़कियों के बोझ को सॅभाले हुए जो खुश थीं लापरवाह थीं और मुस्कुराहटों और हॅसी से भरी थीं।

पर जब वह झूला वापस आने लगा तो राजा रसालू ने जो अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर पहने खड़ा था अपनी तलवार निकाली और उससे उसकी रस्सियॉ काट दीं। सारी **70** लड़कियॉ एक के ऊपर एक जमीन पर गिर पड़ीं। कुछ घायल हो गयीं कुछ की हड्डियॉ टूट गयीं।

पर उनमें से केवल एक लड़की बिल्कुल ठीक निकल आयी जिसको कोई चोट नहीं आयी थी और वह लड़की वह थी जिसको राजा रसालू प्यार करता था। वह सबसे बाद में गिरी तो वह बाकी सब लड़कियों के ऊपर थी इसलिये उसको कोई चोट भी नहीं आयी।

इसके बाद राजा रसालू **15** कदम आगे बढ़ा और उन **70** ढोलों के पास आ गया जिनको उन्हें हर एक को बजाना था जो भी राजा के साथ चौसर खेलने के लिये आते थे। उसने उन सबको इतनी ज़ोर से बजाया कि उसने वे सारे ढोल तोड़ डाले।

उसके बाद वह **70** लोहे की प्लेटों के पास आया जिनको राजा के पास जाने से पहले हथौड़े से मारना पड़ता था। उसने उनमें भी इतने ज़ोर से हथौड़ा मारा कि उसने उन सबको भी तोड़ दिया।

यह देख कर सबसे छोटी राजकुमारी, क्योंकि केवल वही भाग सकती थी डर के मारे राजा के पास भागी गयी और बोली —

सरकप, एक ताकतवर राजकुमार तोड़ फोड़ करता घोड़े पर सवार आया है
उसने हमें झुलाया, **70** सुन्दर लड़कियों को और सबको सिर के बल फेंक दिया

उसने अपने घमंड में वे ढोल भी तोड़ दिये जो आपने रखे थे वे प्लेटें भी तोड़ दीं
यकीनन वह आपको भी मार देगा ओ मेरे पिता, और मुझे अपनी दुलहिन बना लेगा

राजा सरकप उसको डॉटते हुए बोला —
बेवकूफ लड़की तेरे शब्द मुझे मेरी किस्मत बता रहे हैं जो कि बहुत छोटी से चीज़ है
अपनी शान को बचाने के लिये मैं उससे लडूँगा मैं उसका जिरहबख्तर तोड़ दूँगा
जैसे ही मैंने अपना खाना खा लिया मैं बाहर आ कर उसका सिर काटता हूँ

हालाँकि उसने ये शब्द बहादुरी और निडरता से बोले तो पर अन्दर ही अन्दर वह बहुत डर रहा था। उसने राजा रसालू की बहादुरी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।

और यह जान कर कि वह एक बुढ़िया के दरवाजे पर रुका था और तब से जब तक चौपड़ खेलने का समय आया राजा सरकप ने अपने नौकरों के हाथ कई थाल भर कर फल मिठाई भेजे जैसे किसी इज़्ज़तदार मेहमान को दिये जाते हैं। पर वह सब खाना जहर से भरा हुआ था।

राजा सरकप के नौकर जब यह खाना ले कर राजा रसालू के पास गये तो वह बड़े गुस्से में भर कर उनसे बोला — "जाओ और अपने मालिक को बोलना कि हमारा और उसका कोई दोस्ती का रिश्ता नहीं है। मैं तो उसका पक्का दुश्मन हूॅ। मैं तो उसका नमक भी खाना नहीं चाहता।"

ऐसा कहते हुए उसने उनकी लायी हुई मिठाई राजा सरकप के कुत्ते को फेंक दी जो राजा के नौकरों के साथ आया था और लो वह तो उसे खाते ही मर गया।

इस पर राजा रसालू को बहुत गुस्सा आया। उसने बड़ी कड़वाहट के साथ कहा — “जाओ ओ नौकरों सरकप के पास वापस चले जाओ और उससे कहना कि राजा रसालू इस बात में कोई बहादुरी नहीं समझता कि वह अपने दुश्मन को भी छल से मारे।”

# 39 राजा रसालू ने राजा सरकप के साथ चौपड़ कैसे खेली[131]

जब शाम हुई तो राजा रसालू राजा सरकप के साथ चौपड़ खेलने के लिये चला। जब वह जा रहा था तो उसे रास्ते में कुम्हार के कई भट्टे दिखायी दिये तो उसने देखा कि एक बिल्ली बड़ी बेचैनी से इधर उधर घूम रही थी।

सो उसने उससे पूछ ही लिया कि उसको क्या तकलीफ है जो वह ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही। इतनी बेचैनी से इधर उधर चक्कर काट रही है।

वह बोली — "मेरे बच्चे एक कच्चे बर्तन में हैं जो यहीं पास वाले भट्टे में रखा है। कुम्हार ने उसमें अभी अभी आग लगायी है। मेरे बच्चे तो बेचारे उस आग में ज़िन्दा ही भुन जायेंगे। मुझे यही बेचैनी है।"

उसके शब्दों ने राजा रसालू का दिल पिघला दिया। वह तुरन्त ही कुम्हार के पास गया और उससे वह भट्टा जैसा था वैसा ही उसे बेचने के लिये कहा।

पर कुम्हार ने जवाब दिया कि वह उसकी ठीक कीमत नहीं बता सकता जब तक कि उसके बर्तन उसमें पक न जायें। क्योंकि वह

---

[131] How Raja Rasalu Played Chaupur With King Sarkap (Tale No 39)

यह नहीं बता सकता था कि उसमें से कितने साबुत निकलेंगे और कितने टूटे हुए।

किसी तरह कुछ सौदेबाजी करने पर कुम्हार उस भट्ठे को बेचने के लिये राजी हो गया। राजा रसालू ने तुरन्त ही सारे बर्तन देखे और उसमें से बिल्ली के बच्चे निकाल कर उसकी माँ को सौंप दिये।

बिल्ली ने भी उसकी दया के बदले में अपना एक बच्चा उसको दिया और कहा कि "इसको तुम अपनी जेब में रख लो तुम्हारी मुसीबत में तुम्हारी सहायता करेगा।"

सो राजा रसालू ने उस बिल्ली के बच्चे को अपनी जेब में रख लिया और राजा के साथ चौपड़ खेलने चला गया।

खेलने के लिये बैठने से पहले राजा सरकप ने अपने दाँव बताये – पहले खेल में अपना राज्य, दूसरे खेल में दुनियाँ की सारी सम्पत्ति और तीसरे खेल में अपना सिर।

इसी तरह से राजा रसालू ने पहले खेल में अपने हथियार दूसरे खेल में अपना घोड़ा और तीसरे खेल में अपना सिर दाँव पर लगाया।

इसके बाद दोनों ने खेलना शुरू किया तो राजा रसालू की पहली चाल आयी। इस समय वह उस लाश की चेतावनी को भूल गया कि उसको कब्रिस्तान से लायी गयी हड्डियों से बने पाँसों से खेलना चाहिये नहीं तो वह सरकप के जादुई पाँसों से हार जायेगा। और वह उन्हीं पाँसों से खेला जो राजा सरकप ने उसे दिये।

इसके अलावा राजा सरकप ने अपना धौल[132] राजा नाम का चूहा भी छोड़ दिया था। वह बोर्ड के चारों तरफ भाग रहा था और चौपड़ की गोटियॉ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू पहला खेल हार गया। उसको अपना चमकता हुआ जिरहबख्तर राजा सरकप को दे देना पड़ा।

अब दूसरा खेल शुरू हुआ और एक बार फिर धौल राजा चौपड़ के बोर्ड के चारों तरफ भाग भाग कर चौपड़ की गोटियॉ इधर उधर कर रहा था। सो राजा रसालू यह दूसरा खेल भी हार गया और उसे अपना भौंर ईराकी घोड़ा हारना पड़ गया।

तभी भौंर ईराकी को जो वहीं खड़ा था आवाज मिल गयी और वह चिल्लाया —

मालिक मैं समुद्र और सोने से पैदा हुआ हूॅ
प्यारे राजकुमार बूढ़ा होने की वजह से मेरे ऊपर विश्वास रखो
मैं आपको इन सब बुराइयों से दूर ले चलूॅगा
मेरी उड़ान बहुत ही सधी हुई होगी और चिड़िया जैसी तेज़ होगी हजारों हजारों मील तक
और आपको जरूरत हो तो आप यहॉ ठहरें
क्योंकि आपको अभी अगला खेल भी तो खेलना है
मैं आपसे विनती करता हूॅ कि आप अपनी जेब में हाथ डालें

यह सुन कर राजा सरकप बहुत गुस्सा हो गया उसने अपने नौकरों से कहा कि वे भौंर ईराकी को वहॉ से हटा ले जायें क्योंकि उसने अपने मालिक को खेल में सलाह दे रहा था।

---

[132] Dhol or Dhaul or Dhawal (in Sanskrit) meaning white

जब नौकर घोड़े को वहाँ से हटाने के लिये आया तो राजा रसालू की आँखों में यह याद कर के आँसू आ गये कि कितने सालों से वह उसके साथ था और अब... । पर घोड़ा फिर चिल्लाया —

प्यारे राजकुमार तुम रोओ नहीं मैं अजनबियों के हाथ से खाना नहीं खाऊँगा
और न ही अजनबी के घर में रहूँगा
तुम अपना दाँया हाथ लो और उसको वहीं रखो जहाँ मैंने कहा है

उसके इन शब्दों ने राजा रसालू को कुछ याद दिलाया और इसी समय जब बिल्ली के बच्चे ने कुलमुलाना शुरू किया तो उसको लाश की चेतावनी याद आयी कि उसको कब्रिस्तान से इकट्ठी की गयी हड्डियों के बने पाँसे से खेल खेलना है वरना राजा सरकप ही जीतता रहेगा।

उसका दिल फिर एक बार उछला और उसने राजा सरकप से बड़ी बहादुरी से कहा — "मेरे हथियार और घोड़े दोनों को तुम अभी छोड़ दो। इनको ले जाने के लिये अभी बहुत समय है यह तभी होगा जब तुम मेरा सिर जीत लोगे।"

राजा रसालू का विश्वास देख कर राजा सरकप डर गया। उसने महल की अपनी सारी स्त्रियों को अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहनों में सज कर आने और राजा रसालू के सामने खड़े होने का हुक्म दिया। ताकि वे राजा रसालू का खेल से ध्यान हटा सकें।

वे आयीं पर उसने तो उनकी तरफ देखा भी नहीं। उसने तुरन्त ही अपनी जेब से पाँसे निकाले और राजा सरकप से कहा — "अब

तक मैं तुम्हारे पॉसों से खेलता रहा अबकी बार मैं अपने पॉसों से खेलूॅगा।"

इसके बाद बिल्ली का बच्चा उस खिड़की पर जा कर बैठ गया जहॉ से राजा सरकप का चूहा आता था। और खेल शुरू हुआ।

कुछ देर बाद राजा सरकप ने देखा कि राजा रसालू तो बराबर जीतता जा रहा है तो उसने अपने चूहे को पुकारा पर जब धौल राजा ने बिल्ली के बच्चे को देखा तो वह तो बहुत डर गया। वह तो आगे ही न बढ़े।

इस तरह से राजा रसालू दूसरा दॉव जीत गया और उसने अपने हथियार और घोड़ा वापस ले लिये। राजा सरकप ने यह कहते हुए अपनी सारी होशियारी लगा ली —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूॅ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे सरकप करता है वैसे ही इस बार सरकप के लिये

पर रसालू ने वापस जवाब दिया —

ए मेरे बनायी हुए गोटियों आज मेरी लाज रखना
इस आदमी को शान्त रखने के लिये जिसके साथ मैं आज खेल रहा हूॅ
आज मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल है
जैसे भगवान करता है वैसे ही करना, भगवान के लिये

दोनों ने खेलना शुरू किया। सरकप के महल की स्त्रियाँ गोला बनाये खड़ी थीं। बिल्ली का बच्चा धौल राजा की पहरेदारी कर रहा था।

राजा सरकप हार गया – पहले अपना राज्य, फिर अपनी सम्पत्ति और आखीर में अपना सिर।

उसी समय एक नौकर आया जिसने राजा सरकप को उसके एक बेटी के जन्म की खबर दी। बुरे समय ने उसके ऊपर अपना जाल फेंका और उसने तुरन्त ही उसको हुक्म दिया कि उसको मार दिया जाये क्योंकि वह एक बुरे समय में पैदा हुई है और अपने पिता के लिये बदकिस्मती ले कर आयी है।

उसी समय दयालु और ताकतवर राजा रसालू अपना चमकता जिरहबख्तर पहने उठा और बोला — "ओ राजा ऐसा नहीं करो। वह बिल्कुल बुरी नहीं है। इस बच्ची को मेरी पत्नी बना कर मुझे दे दो।

और अगर तुम अपने सब पुन्यों की कसम खा कर वायदा करो कि तुम दूसरे का सिर काटने के लिये फिर कभी चौपड़ नहीं खेलोगे तो मैं अभी तुम्हारा सिर बख्श देता हूँ।"

राजा सरकप ने गम्भीरता से कसम खायी कि वह फिर कभी दूसरे के सिर के लिये चौपड़ नहीं खेलेगा। उसके बाद उसने आम के पेड़ की एक ताजा शाख उठायी और नयी जन्मी बच्ची को लिया दोनों को एक सोने की थाली में रख कर राजा रसालू को दे दिया।

जब राजा रसालू महल से आम के पेड़ की ताजा शाख और उस बच्ची को ले कर गया तो रास्ते में उसको कुछ कैदी मिले। उन्होंने उससे कहा —

ओ राजा क्या तुम एक शाही बाज़ हो मेहरबानी कर के हमारी विनती सुनो
हमारी ये जंजीरें खोल दो और हमेशा सुखी रहो

राजा रसालू ने उनकी बात सुनी और राजा सरकप से कह कर उनको आजाद करा दिया। उसके बाद वह वहॉ से मूर्ति पहाड़ी[133] पर गया कोकिलॉ[134] को वहॉ एक तहखाने में रखा और वह आम की शाख उसके दरवाजे पर गाड़ दी और कहा — "बारह साल बाद कोकिला बड़ी हो जायेगी तब मैं यहॉ आ कर उससे शादी कर लूॅगा।" बारह साल के बाद आम के पेड़ पर फूल आने लगे।

बारह साल राजा रसालू वहॉ आया और उसने कोकिला से शादी कर ली जिसको उसने सरकप से उसके साथ चौपड़ खेल कर जीता था।

[133] Near Rawal Pindi to the south-east
[134] Kokilan means "a Darling". She was unfaithful and most dreadfully punished by being made to eat her lover's heart.

# 40 राजा जो तला गया[135]

यह आज की नहीं बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था। उसने यह कसम खायी थी कि जब तक वह 125 सेर सोना दान नहीं कर देगा खाना नहीं खायेगा।

सो रोज राजा कर्ण[136] के नाश्ता करने से पहले उसके नौकर टोकरियाँ भर भर कर सोना उसके महल के दरवाजे पर गरीबों की भीड़ को बाँटने के लिये ला कर रख देते। और गरीब लोग भी रोज वह सोना लेने के लिये वहाँ आना नहीं भूलते थे।

वे उस सोने के लिये लड़ते झगड़ते, इधर उधर एक दूसरे को मारते, धक्का देते। और जब आखिरी सोने का टुकड़ा भी दे दिया जाता तब वह अपना नाश्ता करने बैठता और उसे इस सन्तोष के साथ खाता जैसे जब कोई आदमी अपना वायदा पूरा करने पर सन्तोष पाता है।

जब लोगों ने देखा कि यह राजा इतनी बेदर्दी से पैसा लुटा रहा है तो उन्होंने अपने मन में सोचा कि आज नहीं तो कल इसका

[135] The King Who Was Fried (Tale No 40)

[136] The author of this story says that he is the brother of Paandav. It is correct that there was Karn named brother of Paandav; but at the same time he quotes this incident in which the name of Raja Vikramaditya has been mentioned. Now these two time periods do not match. Mahabharat's period is said to be about 5,000 years ago, while Rajaa Vikramaditya's ruling period was during the 2nd or 3rd century AD. Thus the King Karn might be somebody else than the brother of Paandav.

खजाना खाली हो ही जायेगा। सोना खत्म हो जायेगा और यह अपना वायदा निभाने के लिये भूख से मर जायेगा।

पर महीनों गुजर गये सालों गुजर गये। अपने नाश्ते से केवल 15 मिनट पहले उसके नौकर टोकरे के टोकरे सोना ले कर महल से बाहर आते सोना बाँटते और जब भीड़ चली जाती तो राजा को अपने शाही खाने के कमरे में खुशी से नाश्ता करते देखते।

पर यह सब ऐसे ही नहीं था। इतना सारा पैसा कहाँ से आता था इस सब में एक भेद था जो आज हम तुम्हें बताने जा रहे हैं।

राजा कर्ण ने एक सन्त और भूखे फ़कीर से जो एक पहाड़ी के ऊपर रहता था यह सौदा कर रखा था कि राजा कर्ण अपने आपको तलने देगा और उसे नाश्ते में खाने देगा और फ़कीर बदले में उसको 125 सेर सोना रोज देता रहेगा।

अब अगर वह फ़कीर कोई मामूली फ़कीर होता तो यह सौदा हमेशा के लिये नहीं चल सकता था क्योंकि अगर एक बार वह राजा को खा लेता तो यह किस्सा हमेशा के लिये खत्म हो जाता।

पर यह फ़कीर तो एक बहुत ही गैरमामूली फ़कीर था जो जब तले हुए राजा को खा लेता और उसकी हड्डियाँ तक साफ कर देता तब उसकी सब हड्डियों को जोड़ता उन पर कुछ जादू के मन्त्र पढ़ता और लो वहाँ तो राजा जीता जागता तन्दुरुस्त और खुश राजा खड़ा हो जाता था – अगले दिन के नाश्ते के लिये तैयार।

असल में फ़कीर ने कोई हड्डी नहीं बनायी थी और सच कहा जाये तो यह सौदा दोनों के लिये फायदेमन्द था – नाश्ते के लिये भी और नाश्ता खाने वाले के लिये भी।

अब हालाँकि यह कोई बहुत खुशी की बात नहीं थी कि रोज सुबह सुबह ज़िन्दा आदमी को किसी बड़ी कड़ाही में तला जाये और बाद में उसे ज़िन्दा कर लिया जाये पर मेरे विचार से राजा कर्ण का यह सौदा बहुत अच्छा था।

कुछ समय बाद उसको इसकी आदत पड़ गयी। अब वह उस भूखे सन्त के घर खुशी खुशी चला जाता जहाँ सन्त की पवित्र आग पर एक बड़ी सी कड़ाही में पटर पटर की आवाज होती रहती।

वहाँ वह अपना दिन का समय उस फ़कीर के पास गुजारता ताकि वह अपने आपको यह साबित कर सके कि वह अपने कहे का पक्का था। फिर वह उसकी गर्म तेल भरी कड़ाही में घुस जाता।

उफ़। वह कैसे उस तेल में छटपटाता रहता। जब वह भुन कर कत्थई और कड़क हो जाता वह फ़कीर उसे खा लेता। फिर वह उसकी हड्डियाँ चुनता उनको ठीक से लगाता उन पर मन्त्र पढ़ता।

फिर अपना काम खत्म करने के लिये वह अपना मैला फटा पुराना कोट ले कर आता उसको हिलाता रहता हिलाता रहता जब तक कि सोने के सुनहरे सिक्के उसकी जेब से खनखन कर गिरते रहते। सो इस तरह से राजा कर्ण अपना सोना पाता था।

सो तुम क्या समझते हो कि क्या यह सब गैरमामूली बात थी? क्योंकि मैं तो यही समझता हूँ कि थी।

अब मानसरोवर झील[137] में तो जैसा कि तुम जानते ही हो जिसमें बहुत सारे हंस[138] रहते हैं और वहाँ वे मोती चुगते है।

एक बार अकाल पड़ा तो वहाँ मोतियों की बहुत कमी हो गयी और इतनी कमी हो गयी कि हंसों के एक जोड़े ने खाना ढूँढने के लिये वह झील छोड़ कर बाहर दुनियाँ में जाने का निश्चय किया।

सो वे उड़ कर राजा विक्रमदित्य के राज्य उज्जैन[139] में आ गये। उनके माली ने जब उन सुन्दर चिड़ियों को देखा तो उसने उनके खाने के लिये दाना फेंका पर वे तो दाना न खायें। वे तो उनको छुऐं भी नहीं। उसने उनको और दूसरा खाना खाने के लिये दिया पर वे उसको भी न खायें।

तो वह भागा भागा राजा विक्रमदित्य के पास गया और उनसे कहा — "सरकार अपने बागीचे में हंसों का एक जोड़ा आया है। हमने उनको बहुत सारी चीज़ें खाने के लिये दीं पर वे तो कुछ खाते ही नहीं।"

---

[137] Mansarovar Lake, now in Tibet, near Kailash mountain range

[138] These swans live on pearls only.

[139] The Great Raja Vikramaditya of Ujjayani. He is popularly known as Vikram. He is the same king whose "Stories of Vikram Betal" or "Betal Pachchisi" is very common among children of India.

यह सुन कर राजा विक्रमदित्य खुद उनके पास गये। उनको चिड़ियों और जानवरों की भाषा आती थी सो उन्होंने हंसों की भाषा में उनसे पूछा कि ऐसा क्यों था कि वे कुछ नहीं खा रहे थे।

वे बोले — "राजन। हम न तो दाना खाते हैं। न फल खाते हैं। हम तो केवल ताजा अनबिंधा मोती खाते हैं।"

राजा विक्रमदित्य बहुत ही दयालु थे। उन्होंने उनके लिये रोज का एक टोकरी भर कर ताजे अनबिंधे मोतियों का इन्तजाम कर दिया। जब वह उस बागीचे में आते थे तो वे उन्हें अपने हाथों से मोती खिलाते थे।

पर एक दिन जब रोज की तरह वह उनको मोती खिला रहे थे तो उनमें से एक मोती बिंधा हुआ निकल आया। उन हंसों को इस बात का तुरन्त ही पता चल गया और वे इस नतीजे पर पहुँचे कि लगता है कि राजा विक्रमदित्य के खजाने में कोई कमी हो गयी है सो उन्होंने वहाँ से किसी और जगह जाने का सोचा।

उसकी अच्छी खातिरदारी के बावजूद उन्होंने अपने चौड़े सफेद पंख फैलाये और नीले आसमान में अपने घर मानसरोवर झील की तरफ उड़ गये।

लेकिन फिर भी वह राजा विक्रमदित्य के ऐहसान फ़रामोश नहीं थे। जब वे उड़े जा रहे तो वे राजा विक्रमदित्य की बड़ाई ही गाते गाते उड़े जा रहे थे।

इधर कर्ण सोना लाने के लिये अपने नौकरों का इन्तजार कर रहा था सो जब वे हंस उसके ऊपर से उड़े तो उसने राजा विक्रमदित्य की शान में उनको गाते हुए सुना

तो यह सुन कर उसने अपने मन में सोचा "यह कौन है जिसकी शान ये चिड़ियें भी बखान कर रही हैं। मैं भी तो अपने आपको रोज तलवाता हूँ ताकि मैं भी सवा सौ सेर सोना रोज दान में दे सकूँ। पर मेरी तारीफ में तो कोई चिड़िया नहीं गाती।"

यह सोच कर वह जलन से भर गया और उसने एक चिड़िया पकड़ने वाला उनके पीछे भेजा। उसने उन बेचारे हंसों को नीबू के जाल में पकड़ लिया और उनको एक पिंजरे में बन्द कर दिया।

कर्ण ने वह पिंजरा अपने महल में टॉग दिया और अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उनको हर तरीके का चिड़िया का खाना दें। लेकिन उन गर्वीले हंसों ने उनमें से किसी भी खाने को छुआ तक नहीं बल्कि अपनी गर्दन और नीचे की तरफ कर ली।

उन्होंने फिर गाया — "विक्रमादित्य की जय हो। उन्होंने हमें मोती खाने के लिये दिये।"

कर्ण ने सोचा कि वह भी राजा विक्रमदित्य से पीछे नहीं रहेगा। उसने बहुत सारे मोती मॅगवाये पर उन जिद्दी हंसों ने उनमें से एक भी मोती नहीं खाया।

कर्ण ने कुछ गुस्से में भर कर कहा — "अरे तुम इन्हें खाते क्यों नहीं? क्या मैं राजा विक्रमादित्य की तरह से दानी नहीं हूँ?"

हंस की पत्नी ने जवाब दिया — "राजा भोलेभालों को बन्दी नहीं बनाते। राजा लोग स्त्रियों से भी नहीं लड़ते। अगर राजा विक्रमादित्य यहाँ होते तो वह किसी भी कीमत पर मुझे छोड़ देते।"

सो कर्ण ने सोचा कि वह अपने दान को बेकार नहीं करेगा इसलिये उसने हंसिनी को जाने दिया। उसने भी अपने सफेद चौड़े पंख फैलाये और दक्षिण की तरफ राजा विक्रमदित्य के राज्य की तरफ उड़ गयी।

वहाँ जा कर उसने राजा विक्रमदित्य को बताया कि किस तरह राजा कर्ण ने उसके पति को बन्दी बनाया हुआ है।

अब राजा विक्रमदित्य ने जिसको हर कोई जानता था कि वह कितना दानी राजा था यह पक्का इरादा कर लिया कि वह उसके पति को किसी भी तरह छुड़ा कर रहेगा।

उसने हंसिनी से कहा कि वह वापस अपने पति के पास जाये वह आता है। उसने खुद ने एक नौकर जैसे कपड़े पहने और विक्रमादित्य का नाम ले कर उत्तर की तरफ चल दिया जब तक वह राजा कर्ण के राज्य में आया।

उसने राजा के महल में नौकरी की और रोज उसकी सोने की टोकरियाँ बाहर ले जाने का काम करता रहा।

बहुत जल्दी ही उसने भाँप लिया कि राजा कर्ण के पास इतना सारा सोना होने में कोई भेद है। जब तक उसने यह भेद पता नहीं कर लिया तब तक वह आराम से नहीं बैठा।

सो एक दिन वह पास में ही कहीं छिप गया। उसने देखा कि कर्ण एक फ़कीर के घर में घुसा और उबलते हुए तेल में कूद गया। उसमें उसने उसको तले जाते देखा।

उसने यह भी देखा कि तलने पर उसको कत्थई और कड़क हो जाने पर निकाल लिया गया। तब उसने देखा कि उस फ़कीर ने उसे हड्डियों तक खाया हड्डियॉ बटोर कर उन पर मन्त्र पढ़े और लो तुरन्त ही राजा कर्ण पहले जैसा ज़िन्दा और पूरा तन्दुरुस्त निकल आया फ़कीर के अगले दिन के नाश्ते के लिये।

उसने अपना सवा मन सोना लिया और पहाड़ी से नीचे उतर आया।

अब राजा विक्रमदित्य को पता चल गया था कि उसे क्या करना है। सो अगले दिन वह सुबह सवेरे बहुत जल्दी उठा और एक चाकू से अपने शरीर पर इधर उधर घाव बना लिये।

उसके बाद उसने थोड़ा सा नमक मिर्च और मसाले अनार के दानों के साथ कूट लिये। इसमें थोड़ा सा बेसन[140] मिलाया और उस सबकी लेही सी बना ली। उस लेही को उसने अपने शरीर पर लपेट लिया हालॉकि वह लेही उसके घावों में बहुत दर्द कर रही थी।

जब उसने देखा कि अब वह तले जाने के लिये तैयार था तो वह पहाड़ी के ऊपर रहने वाले फ़कीर के पास चला गया और वहॉ जा कर उसकी कड़ाही में गिर गया।

---

[140] Besan is Pea-flour or Chana Dal's flour which Indians use to make Pakoda (fritters).

फ़कीर अभी भी सोया हुआ था पर जैसे ही उसने किसी तले जाने की आवाज सुनी तो वह जाग गया। उसको राजा के शरीर में से कुछ अलग तरह की खुशबू आयी तो उसने सोचा “अरे आज तो राजा के अन्दर से बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है।”

अब यह खुशबू तो उसकी भूख बढ़ा रही थी कि वह राजा के कत्थई और कड़क होने का बड़ी मुश्किल से इन्तजार कर सका। पर ओह मेरे भगवान। वह तो कितने लालची ढंग से उसे खा गया।

वह अब तक राजा को सादा सा तला हुआ खा रहा था कि यह मसालेदार राजा तो उसके लिये एक बहुत ही अच्छा बदला हुआ नाश्ता था। उसने उसकी सारी हड्डियाँ साफ कर डालीं।

और मेरा विश्वास है कि उसने उसमें से कुछ को खा भी लिया होता अगर उसको उस बतख के मार देने का डर न होता जो उसको रोज सोने के अंडे देती थी।

जब सब कुछ खत्म हो गया तो उसने राजा को फिर से ज़िन्दा कर दिया और रो कर कहा — “ओह क्या ही बढ़िया नाश्ता था। तुम मुझे सच सच बताओ कि तुमने अपने आपको इतना स्वादिष्ट कैसे बनाया। मैं तुम्हें वही दूँगा जो तुम चाहोगे।”

इस पर राजा विक्रमदित्य ने उसे बता दिया कि उसने क्या किया था और साथ में यह भी वायदा किया कि वह हर रोज ऐसा ही करेगा अगर वह अपना पुराना मैला फटा कोट उसको दे दे तो।

वह आगे बोला — "रोज रोज इस तरह से तले जाने में कोई मजा नहीं है। और मुझे यह भी अच्छा नहीं लगता कि मैं रोज रोज सवा सौ सेर सोना इस पहाड़ी से अपने महल तक नीचे ले कर जाऊॅ। सो अगर मैं यह कोट वहॉ ले जाऊॅगा तो मैं खुद भी इसे रोज हिला सकता हूॅ।"

फ़कीर इस बात पर राजी हो गया और राजा विक्रमादित्य उससे कोट ले कर वहॉ से चला गया।

इस बीच राजा कर्ण पहाड़ी चढ़ता हुआ फ़कीर की झोंपड़ी तक आया और जब फ़कीर के घर में घुसा तो आश्चर्यचकित रह गया। आग बुझी पड़ी थी और फ़कीर तो वहॉ था पर वह भूखा बिल्कुल भी नहीं था।

राजा कर्ण ने पूछा — "क्या बात है?"

फ़कीर ने पूछा — "तुम कौन हो?"

असल में फ़कीर को कुछ कम दिखायी देता था सो वह तो दोनों में से किसी को भी नहीं पहचान पाया। और इतना भारी नाश्ता कर के उसे कुछ नींद भी आ रही थी।

राजा कर्ण बोला — "क्या बात है मैं राजा कर्ण हूॅ और तले जाने के लिये आया हूॅ। क्या तुम अपना नाश्ता नहीं करोगे?"

फ़कीर ने दुख से कहा — "मेरा नाश्ता तो हो गया। जब तुम मसालेदार थे तो तुम तो तलने पर इतने स्वादिष्ट लग रहे थे कि बस मैं बता नहीं सकता।"

राजा कर्ण बोला — "पर मैंने तो ज़िन्दगी में कभी अपने ऊपर कोई मसाला लगाया ही नहीं। तुमने जरूर ही किसी दूसरे को खा लिया है।"

फ़कीर कुछ ऊँघते हुए बोला — "मैं भी यही सोच रहा हूँ। मैंने एक बार सोचा भी कि वह सब केवल मसाले का ही स्वाद नहीं था जो... ।" और वह खर्राटे मारने लगा।

अब राजा कर्ण को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में भर कर फ़कीर को हिलाया और बोला — "अब तुम्हें मुझे और खाना चाहिये।"

सन्तुष्ट फ़कीर ने ना में सिर हिलाया और बोला — "मैं अब और नहीं खा सकता। मैं तो अब एक कौर भी और नहीं खा सकता। धन्यवाद।"

इस पर राजा कर्ण बोला — "तब तुम मुझे मेरा सोना तो दो। वह तो तुम्हें देना ही पड़ेगा क्योंकि मैं अपना वायदा पूरा करने को तैयार हूँ।"

फ़कीर बोला — "अफसोस है कि मैं अब वह भी नहीं कर सकता। क्योंकि वह शैतान, मेरा मतलब है वह दूसरा आदमी तो उस कोट को ही ले गया है।"

यह सुन कर राजा कर्ण को बहुत निराशा हुई। वह अपने घर लौट आया। आ कर उसने अपने शाही खजांची को सोना लाने का हुक्म दिया। कम से कम उसने उस दिन तो नाश्ता किया।

अगले दिन उसने अपना सारा खजाना समेटा और साथ में अपना भी धन लिया और किसी तरह से सवा सौ सेर सोना इकट्ठा कर लिया। उस दिन भी राजा कर्ण ने शान्ति से नाश्ता कर लिया।

पर तीसरे दिन शाही खजांची खाली हाथ लौट आया और जमीन पर गिर कर बोला — "योर मैजेस्टी आप खुश रहें। अब आपके खजाने में कोई सोना नहीं है।"

बड़े दुख के साथ राजा कर्ण बिना कुछ खाये ही जा कर अपने बिस्तर पर लेट गया। चार घंटे के इन्तजार के बाद भीड़ भी छॅट गयी।

वे सब यह कहते चले गये एक राजा के लिये यह बड़ी शर्मनाक बात है कि राजा इस तरह से वायदा कर के अपना वायदा पूरा नहीं कर रहा। क्योंकि राजा का कोई नौकर सोने से भरी टोकरी ले कर नहीं आ रहा था।

शाम के खाने के समय तक राजा कर्ण बहुत दुबला दिखायी देने लगा था पर वह अपने कहे का पक्का था। हालॉकि राजा विक्रमादित्य आया और यह कह कर उससे खाने की विनती की कि इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी पर उसने अपना सिर ना में हिलाया और दीवार की तरफ मुॅह कर के लेट गया।

तब राजा विक्रमादित्य फ़कीर का वह पुराना मैला फटा कोट लाया और उसको हिला कर राजा कर्ण को सोना दिया और बोला — "लो मेरे दोस्त तुम यह सोना लो। और तुम्हें क्या चाहिये।

अगर तुम वे हंस जो तुमने बन्दी बना रखे हैं तुम उन्हें छोड़ दोगे तो इस सौदे में मैं यह कोट तुम्हें दे दूॅगा।”

यह सुन कर राजा कर्ण ने उन हंसों को आजाद कर दिया और जब वह जोड़ा वहॉ से अपनी मानसरोवर झील की तरफ उड़ा तो फिर वे यही गाते चले गये “राजा विक्रमादित्य की जय हो। दानी विक्रमादित्य की जय हो।”

राजा कर्ण का सिर नीचे लटक गया। वह सोचने लगा “हंस ठीक ही गा रहे थे क्योंकि मैं तो केवल सवा सौ सेर सोने और नाश्ते के लिये रोज तला जाता रहा इसने तो केवल एक चिड़िया को छुड़ाने के लिये अपने आपको मसाले लगा कर तलवा लिया।”

# 41 राजकुमार आधा बेटा[141]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके कोई बेटा नहीं था। इस बात का बोझ उसके दिमाग पर इतना ज़्यादा था कि उसने अपने सोने के लिये सबसे गन्दा और टूटा पलंग चुना। वह अपने सुन्दर बागीचे में उसी पर लेटता।

वह वहाँ पर फूलों और फलों के पेड़ों तितलियों और चिड़ियों के बीच लेटता और उसके महल में जो उसके चारों तरफ जो सुन्दरता थी उससे उसको कोई मतलब नहीं था। यह उसका अपना दुख दिखाने का अपना तरीका था।

एक बार जब वह ऐसे लेटा हुआ था एक फ़कीर उसके बागीचे से हो कर गुजरा। उसने राजा को इस हाल में देखा तो उससे पूछा कि उसको क्या दुख था जिसने उसको इतने गन्दे पलंग पर लेटने के लिये मजबूर किया हुआ था।

राजा बोला — "पूछने से क्या फायदा।ः

पर जब फ़कीर ने तीसरी बार उससे यही सवाल पूछा तब राजा ने अपना दिल सॅभाल कर उसको बड़े दुख से जवाब दिया — "मेरे कोई बच्चा नहीं है।"

फ़कीर बोला — "बस इतनी सी बात। यह तो बड़ी आसानी से दूर की जा सकती है। आप मेरी यह डंडी ले लीजिये और इसे दो

---

[141] Prince Half-a-Son (Tale No 41)

बार आम के पेड़ के पास फेंकिये। पहली बार में पॉच आम गिरेंगे और दूसरी बार में दो आम गिरेंगे। अगर आप ये सात आम अपनी सातों पत्नियों को खिला देंगे तो आपके इतने ही बेटे होंगे।"

राजा फ़कीर की यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने फ़कीर से उसकी डंडी ले ली और एक आम के पेड़ के पास चला गया। उसने पहली बार डंडी फेंक कर मारी तो यकीनन पॉच आम गिरे और फिर उसने दोबारा डंडी फेंक कर मारी तो दो आम गिरे।

पर राजा अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने सोचा कि जब तक उसके पास मौका था वह उसका सबसे अच्छा इस्तेमाल कर ले। उसने तीसरी बार डंडी फेंकी ताकि उसके फेंकने से कुछ आम और गिर जायें और उसके और बेटे हो जायें।

पर यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी डंडी तो पेड़ में ही अटक कर रह गयी और जो सात आम नीचे गिरे थे वे भी उड़ कर अपनी अपनी जगह पर जा कर लग गये। बल्कि अब तो वे ऐसी जगह लगे थे जहॉ उसका हाथ भी नहीं पहुँच सकता था।

अब तो कुछ नहीं हो सकता था सिवाय इसके कि वह फ़कीर के पास वापस जाता और उसको बताता कि उसके साथ क्या हुआ था।

फ़कीर उसकी कहानी सुन कर बोला — "राजन। यह आपके लालच का फल है। सात बेटे तो किसी भी आदमी के लिये यकीनन

काफी हैं और उसके बाद भी आप सन्तुष्ट नहीं थे। आपने तीसरी बार भी डंडी मारी।

कोई बात नहीं मैं आपको एक मौका और देता हूँ। आप उस पेड़ के पास फिर जाइये। वह डंडी आपको वहीं नीचे पड़ी मिल जायेगी। उसको फिर से उसी तरह फेंकिये जैसे मैंने आपको पहले फेंकने के लिये कहा था।

इस बार आप मेरे कहे का उल्लंघन नहीं करेंगे क्योंकि अगर इस बार आपने मेरा कहा नहीं माना तो आप अपने उस गन्दे टूटे हुए पलंग पर ज़िन्दगी भर के लिये पड़े रहेंगे और फिर मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।"

राजा आम के पेड़ के पास पहुँचा तो वह डंडी उसको वहीं पेड़ के नीचे पड़ी मिल गयी। उसने उसे दो बार पेड़ की तरफ फेंका तो दो बार में सात आम नीचे गिर पड़े – पाँच पहले और दो बाद में। वह सीधे उनको महल ले गया और उन्हें अपनी रानियों को दे दिये ताकि वह लालच से बच जाये।

अब जैसा किस्मत में लिखा होता है होता तो वैसा ही है न। उस समय राजा की सबसे छोटी रानी घर में नहीं थी सो राजा ने उसका आम दीवार में बनी एक छोटी सी आलमारी में रख दिया कि रानी जब आयेगी तब उसे खा लेगी। पर तभी एक लालची चूहा वहाँ आया और उस आम को आधा कुतर गया।

कुछ देर बाद छोटी रानी आयी तो उसने देखा कि दूसरी रानियॉ आम खा खा कर अपना मुॅह पोंछ रही थीं। तो उसने उनसे पूछा कि वे क्या खा रही थीं।

उनमें से हर एक ने यही कहा कि राजा ने उन सबको खाने के लिये एक एक आम दिया था और क्योंकि वह वहॉ थी नहीं सो उसका आम दीवार में बनी आलमारी में रख दिया है।

पर लो जब सबसे छोटी रानी अपना आम लेने के लिये दौड़ी गयी तो उसने देखा कि उसका आधा आम तो कोई पहले ही खा गया था। फिर भी उसने अपना बचा हुआ आधा आम बहुत स्वाद ले ले कर खाया।

अब इसका नतीजा क्या निकला कि जब सब रानियों ने समय आने पर एक एक बेटे को जन्म दिया तो सबसे छोटी रानी ने केवल एक आधे बेटे को जन्म दिया।

उसके केवल एक ऑख थी एक कान था एक टॉग थी पर अगर उसको एक तरफ से देखा जाये तो वह बिल्कुल पूरा सुन्दर बच्चा राजकुमार था जैसा कि किसी राजकुमार को होना चाहिये। और अगर उसको सामने से देखा जाये तो वह केवल आधा राजकुमार ही नजर आता था।

फिर भी वह बड़ा होने लगा बढ़ने लगा। जब उसके भाई तीर चलाना सीखने लिये जाते तो वह भी अपनी मॉ से जाने के लिये जिद करता।

तो उसकी माँ कहती — "बेटा तुम तो केवल आधे बच्चे हो तुम धनुष कैसे पकड़ोगे।"

बेटा निडर हो कर कहता — "तो फिर मुझे उस जगह जा कर खेलने दो। बस मुझे थोड़ी सी मिठाई दे दो जैसे और बच्चे ले जाते हैं। बस मैं ठीक रहूँगा।"

माँ फिर रो कर कहती — "मैं अपने आधे बेटे के लिये मिठाई कैसे बना सकती हूँ। जा तू दूसरी रानियों के पास जा और उनसे जा कर ले ले।"

तो फिर वह दूसरी रानियों के पास जाता और वे रानियाँ उसका मजाक बनाने के लिये उसको राख से बनी मिठाई दे देतीं। छहों पूरे राजकुमार और यह आधा राजकुमार सब तीर चलाने जाते।

जब उनको भूख लगती तो वे अपनी अपनी मिठाइयाँ खाने बैठते जो वे अपने साथ ले कर आये थे। जब आधा बेटा अपनी मिठाई खाता तो उसके मुँह में राख भर जाती क्योंकि वे मिठाइयाँ ऊपर से तो मीठी लगतीं पर उनके अन्दर राख भरी होती।

वह एक सादे दिल वाला राजकुमार था। वह सोचता कि यह शायद गलती से आ गयी होगी तो वह अपने भाइयों के पास जाता और उनसे उनकी मिठाइयों में से कुछ मिठाई माँगता तो वे उसका मजाक बनाते और उस पर हँसते रहते।

फिर वे तरबूज के एक खेत पर आते जिसके चारों तरफ कॉटों की बाड़ लगी होती। उसमें केवल एक कोने में ही एक छोटी से जगह खाली पड़ी रहती।

वह जगह इतनी छोटी थी कि उसमें से केवल आधा बेटा ही अन्दर जा कर मीठे मीठे तरबूज खा पाता बाकी के छह पूरे राजकुमार बाहर ही रह जाते।

हालॉकि वे उससे कोई तरबूज बाड़ के ऊपर से बाहर फेंकने के लिये कहते तो वह हॅस कर जवाब देता — "तुम्हें मिठाई वाली बात याद है न। अब मेरी बारी है।"

जब वे उससे तरबूज बाहर फेंकने के लिये बहुत जिद करते तो वह कुछ हरे कच्चे खट्टे तरबूज उनकी तरफ फेंक देता। इस पर उसके भाई इतने नाराज हो जाते कि वे खेत के मालिक के पास जा कर कहते कि आधा बेटा उसके फलों के खेत में ऊधम मचा रहा है।

फिर वे आधे बेटे के ऊपर निगरानी रखते और देखते कि उसे खेत के मालिक ने पकड़ लिया है। क्योंकि अपनी एक टॉग की वजह से वह तेज़ तो भाग नहीं पाता था सो वही पकड़ा जाता। खेत का मालिक उसको पेड़ से बॉध देता और बाकी के छह भाई हॅसते हुए फिर घर चले जाते।

राजकुमार आधा बेटा के पास अपनी खराबी के छिपाने के लिये कुछ अच्छी बातें भी थी। उसके पास एक ऐसी जादू की ताकत थी

जिससे वह किसी भी रस्सी से कुछ भी करा सकता था जो भी वह चाहता।

सो जब उसके भाई उसको खेत में रस्सी से बँधा छोड़ जाते तब वह रस्सी से कहता — "खुल जा खुल जा। मेरे साथी तो चले गये हैं।" रस्सी तुरन्त ही उसका कहा मानती और खुल जाती और तब वह भी भाग कर अपने साथियों को पकड़ लेता।

फिर वे एक अलूचे के पेड़ के पास आते जिस पर उसकी पतली पतली डालों पर पके अलूचे लगे रहते। वे डालियाँ भी केवल आधे बेटे का ही बोझ उठा सकती थीं। सो अलूचे तोड़ने के लिये भी आधे बेटे को ही चढ़ना पड़ता।

जब वह पेड़ पर चढ़ जाता तो वह वहाँ अलूचे खाता तो उसके भाई नीचे से उससे कुछ मीठे अलूचे फेंकने के लिये कहते तो वह फिर इन्हें याद दिलाता — "तुम्हें मिठाई की याद है न?"

इससे उसके भाई फिर से इतना गुस्सा हो जाते कि वे उस पेड़ के मालिक के पास भागे जाते और उसे बताते कि कैसे आधा बेटा उसके पेड़ के अलूचे खा रहा है। तो इस पेड़ का मालिक भी दौड़ा दौड़ा यहाँ आता और उसे पेड़ से रस्सी से बाँध देता।

उसके साथ राजकुमार भी उसकी निगरानी करते रहते और जब वह मालिक उसको बाँध कर वहाँ से चला जाता तो वे वहाँ से हँसते

हुए भाग जाते। आधा बेटा फिर से अपना रस्सी वाला जादू इस्तेमाल करता और आजाद हो कर वहॉ से भाग जाता।

जब वह आ कर इनसे मिल जाता तो उनकी यही समझ में नहीं आता कि वह कैसे उन्हें धोखा दे कर उनके पास आ जाता था।

उससे इसका बदला लेने के लिये वे पानी खींचने के लिये उसका कुँए पर इन्तजार करते जहॉ उनको पानी पीना होता था। वह बेचारा पानी खींचता और वे पानी पीने के बाद उसको कुँए में धक्का दे देते।

धक्का दे देने के बाद वे सोचते कि बस अब आधे बेटे का अन्त हो गया और वे हॅसते हुए भाग जाते।

अब उस कुँए में एक एक ऑख वाला राक्षस, एक कबूतर और एक सॉप रहते थे। जब ॲधेरा हो गया तब वे तीनों अपने घर वापस आये और आपस में बातें करने लगे।

आधा बेटा छिपकली की तरह दीवार से चिपका हुआ सॉस रोके उनकी बातें सुनने लगा।

राक्षस ने सॉप से पूछा — "दोस्त सॉप तुम्हारी क्या ताकत है?"

इस पर सॉप बोला — "मेरे पास सात राजाओं का खजाना है जो मेरे नीचे है। और तुम दोस्त। तुम्हारे पास क्या ताकत है?"

राक्षस बोला — "मैंने राजा की बेटी को अपने कब्जे में कर रखा है। वह हमेशा बीमार रहती है। एक दिन मैं उसे मार दूँगा।"

कबूतर बोला — "ओह मैं उसे ठीक कर सकता हूँ। क्योंकि कोई भी बीमारी क्यों न हों जो कोई भी मेरी बीट खायेगा वह उस बीमारी से तुरन्त ही ठीक हो जायेगा।"

जब सुबह हुई तो राक्षस सॉप और कबूतर सब अपने अपने शिकार पर चले गये। उनको पता ही नहीं चला कि आधा बेटा छिप कर उनकी बातें सुन रहा था।

उनके जाने के कुछ देर बाद एक ऊँट वाला वहाँ पानी पीने आया। उसने पानी भरने के लिये अपनी बालटी कुँए में डाली और पानी भर कर ऊपर खींचनी चाही तो आधे बेटे ने उसकी बालटी पकड़ ली और उससे लटक गया।

ऊँट वाले ने जब पानी की बालटी ऊपर खींची तो वह उसे भारी लगी तो उसने कुँए में नीचे झाँक कर देखा तब उसको पता चला कि उसकी बालटी भारी क्यों हो रही थी। नीचे देखते ही वह डर गया और वह बालटी कुँए में छोड़ कर भाग खड़ा हुआ।

अब यह तो तुम्हें पता है कि आधे बेटे को रस्सी के ऊपर ताकत थी सो उसको तो बस यह कहना था कि "रस्सी लिपट जाओ रस्सी लिपट जाओ।" और रस्सी लिपट कर ऊपर आ गयी। आधा बेटा भी उस रस्सी के साथ साथ ऊपर खिंचा चला आया।

जैसे ही उसने जमीन पर कदम रखा वह पास के शहर में भागा चला गया। वहाँ जा कर उसने कहा कि वह एक डाक्टर है और राजा की बेटी को ठीक कर सकता है।

दरवाजे पर खड़ा चौकीदार चिल्लाया — "सोच समझ कर बोलो सोच समझ कर बोलो। अगर तुम किसी तरह से राजकुमारी को ठीक नहीं कर सके तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।

बहुत लोगों ने उसको ठीक करने की कोशिश की है पर ठीक नहीं कर पाये तो उनको अपनी जान गॅवानी पड़ी। तुम तो वैसे भी आधे आदमी हो तुम यह कैसे करोगे।"

राजकुमार आधे आदमी की जेब में अभी भी कबूतर की बीट पड़ी थी सो उसे कोई डर नहीं था। वह बिल्कुल निडर था। उसने कहा कि वह राजा की शर्त मानने के लिये तैयार है।

यानी कि वह यह शर्त मानने को तैयार है कि अगर वह उसे ठीक नहीं कर पाया तो वह मरने के लिये तैयार है। पर अगर उसने उसे ठीक कर दिया तो... ।

राजा बोला तो उसकी राजकुमारी से शादी कर दी जायेगी और उसको आधा राज्य दे दिया जायेगा। आधे बेटे ने कहा कि आधा राज्य उसके लिये काफी है क्योंकि वह तो खुद भी आधा ही आदमी है।

यकीनन जैसे ही राजकुमारी ने अपनी दवा की पहली खुराक ली तो लो वह तो बिल्कुल ठीक हो गयी। उसके गाल गुलाबी हो गये उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

राजा तो यह देख कर इतना खुश हो गया कि उसने तुरन्त ही अपनी बेटी की शादी उससे करने का हुक्म जारी कर दिया।

राजकुमार आधे बेटे की शादी में उसके सब नीच सौतेले भाइयों को बुलाया गया था। जब उन्होंने यह सुना कि दुलहा और कोई नहीं उनका अपना सौतेला भाई आधा बेटा था तो वे तो उससे जलन के मारे मर ही गये।

सो वे राजा के पास गये और उससे कहा — "हम इस लड़के को जानते हैं। यह तो किसी भंगी का बेटा है यह इतनी सुन्दर राजकुमारी से शादी करने के लायक नहीं है।"

पहले तो राजा को इस नीच कहानी पर विश्वास हो गया तो उसने उस राजकुमार को अपने राज्य से निकाले जाने का हुक्म दे दिया। पर आधे बेटे ने बहुत सारे खच्चर लाने का हुक्म दिया और कहा कि राजा उसको एक दिन की मोहलत दे कि वह यह साबित कर सके कि वह क्या है।

उसके बाद वह कुँए पर गया और सॉप की गैरहाजिरी में उसे खोद कर सात राजाओं का खजाना निकाला गधों पर लादा और सोने और जवाहरातों से सजा हुआ राजा के पास आ कर उसने सारा खजाना राजा के पैरों में रख दिया।

फिर उसने राजा को सारी कहानी बतायी कि इस तरह से आधा बेटा पैदा होने में उसकी कोई गलती नहीं है। और फिर उसके बेरहम भाइयों ने कैसे उसके साथ बुरा व्यवहार किया।

उसके बाद तो उसकी शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं और नीच भाई अपना सा मुँह ले कर वहॉ से चले गये।

वे लालच और जलन से भर कर उसी कुँए के पास गये जहाँ उन्होंने उसे धक्का दिया था और बोले — "उसने यह सब इसी कुँए में गिर कर पाया था। हमको भी कोशिश करनी चाहिये कि हमको भी इसमें से कुछ मिल सकता है या नहीं।" सो वे सब उस कुँए में कूद पड़े।

जब अँधेरा हुआ तो वह एक आँख वाला राक्षस साँप और कबूतर सब अपने घर वापस लौटे। कबूतर आते ही चिल्लाया — "लगता है कि पिछली बार यहाँ कोई चोर आया था क्योंकि मेरी बीट यहाँ से चली गयी है। हमको देखना चाहिये कि वह चोर अभी भी यहाँ है कि नहीं।"

सो वे महसूस करते हुए इधर उधर घूमने लगे कि शायद उन्हें कोई मिल जाये। ढूँढते ढूँढते उनको छहों भाई मिल गये तो राक्षस ने एक एक कर के उन छहों को खा लिया।

यही उनका अन्त था। और राजकुमार आधा बेटा को ही सबसे अच्छी चीज़ें मिली हालाँकि वह केवल आधा ही था।

# 42 मॉ बेटी जिन्होंने सूरज की पूजा की[142]

एक बार की बात है कि एक मॉ और एक बेटी थीं जो रोज सूरज की पूजा किया करती थीं। हालॉकि वे बहुत गरीब थीं पर फिर भी जो कुछ भी वे कमाती थीं उसमें से अपने लिये दो वक्त का खाना बचा कर सब सूरज भगवान को दे देती थीं।

उनमें से एक वक्त का खाना मॉ खा लेती थी और दूसरा बचा हुआ हिस्सा बेटी खा लेती थी। सो रोज वे एक एक रोटी ही खाती थीं।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि जब मॉ बाहर काम करने गयी हुई थी तो बेटी को बहुत भूख लगी। उसने अपने हिस्से की रोटी शाम के खाना खाने के समय से पहले ही खा ली।

जैसे ही उसने अपना खाना खत्म किया एक पंडित जी उनके घर आये और उससे खाने के लिये रोटी मॉगी। अब घर में मॉ की रोटी के सिवाय और कुछ नहीं था सो बेटी ने उसमें से आधी रोटी तोड़ कर भगवान सूरज के नाम पर पंडित जी को दे दी।

कुछ देर बाद उसकी मॉ लौट आयी। वह बहुत भूखी थी। जब शाम के खाने का समय हुआ तो लो उसने देखा कि घर में तो केवल आधी रोटी ही थी।

उसने पूछा — "बाकी की बची हुई आधी रोटी कहॉ है।"

---

[142] Mother and Daughter Who Worshipped the Sun (Tale No 42)

बेटी बोली — "माँ मुझे भूख लगी थी सो मैंने अपना हिस्सा खा लिया था। और जैसे ही मैंने अपना खाना खत्म किया कि एक पंडित जी खाना माँगने के लिये आ गये सो मुझे तुम्हारी रोटी में से आधी रोटी उनको दे देनी पड़ी।"

माँ गुस्से में भर कर बोली — "बड़ी सुन्दर कहानी है। दूसरे की चीज़ में से दान देना बहुत आसान है। मुझे यह कैसे पता चले कि तूने अपनी रोटी मेरे हिस्से की रोटी देने से पहले ही खा ली थी। मुझे लगता है कि अपनी रोटी बचाने के लिये तूने मेरी रोटी दे दी है।"

बेटी बेचारी ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की ऐसा नहीं है। उसने अपनी रोटी वाकई पहले खा ली थी। बाद में पंडित जी आये और उनको उसने उसकी रोटी में से आधी रोटी दी पर सब बेकार।

उसने सूरज भगवान के नाम पर माफी भी माँगी पर वह भी बेकार। उसने अगले दिन अपनी माँ को अपनी रोटी में से आधी रोटी देने का वायदा भी किया पर वह भी बेकार।

तब माँ ने गुस्से में भर कर कहा कि वह वहाँ से जाये और अपना काम देखे। वह फिर बोली — "मैं रोटी नहीं खाऊँगी जहाँ मेरे घर में अपना खाना बचाने के लिये लोग सूरज भगवान को देने के लिये आना कानी करते हैं।"

बेटी वहाँ से चली गयी और जंगल में इधर उधर अकेली बिना घर के घूमती रही। उसको रोना आ गया वह बहुत देर तक रोती भी रही। जब वह बहुत दूर चल ली तो वह इतनी थक गयी कि वह वहाँ से और आगे नहीं चल सकी।

जंगली जानवरों से बचने के लिये वह एक बड़े से पीपल के पेड़ पर चढ़ गयी और एक शाख पर जा कर बैठ गयी।

कुछ देर बाद ही वहाँ पर एक बहुत सुन्दर राजकुमार आया जो एक हिरन का पीछा करता उधर आ निकल था। वह पीपल के पेड़ के पास आया और उसकी सुन्दर छाया देख कर अपनी थकान मिटाने के लिये उसके नीचे लेट गया।

वह वहाँ चित्त लेटा हुआ था। वह इतना सुन्दर था कि बेटी अपने आपको रोक नहीं सकी और उसकी तरफ टकटकी लगा कर देखती रही। उसकी आँखों से जो गर्म आँसू बहे तो वे उसके मुलायम चेहरे पर गिर पड़े। उससे राजकुमार की आँख खुल गयी।

यह सोचते हुए कि कहीं बारिश तो नहीं आ गयी वह उठ कर आसमान की तरफ देखने लगा कि अचानक यह तूफान कहाँ से आ गया पर दूर और पास कहीं कोई बादल नहीं था।

वह अपनी जगह वापस आया तो वे बूँदें और तेज़ हो गयीं। उनमें से एक बूँद उसके होठों के पास पड़ी तो वह उसको नमकीन लगी।

वह यह देखने के लिये पेड़ के ऊपर चढ़ गया कि देखूँ तो यह नमकीन बारिश कहाँ से आ रही है। लो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की बैठी रो रही थी।

वह बोला — "ओ सुन्दर अजनबी तुम कहाँ से आयी हो।"

तब उसने उसे बताया कि वह बेघरबार की है। राजकुमार को उसके भोलेभाले चेहरे से प्यार हो गया। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसकी दुलहिन बनेगी।

वह उसके साथ उसके महल चली गयी। मन ही मन उसने सूरज भगवान को धन्यवाद दिया जिन्होंने उसके लिये इतनी खुशकिस्मती भेजी।

जो कुछ भी वह चाहती थी वह उसके पास था। पर जब दूसरी स्त्रियाँ अपने अपने घरों की अपनी माओं की बात करतीं तो वह चुप रह जाती क्योंकि वह अपने घर से शर्मिन्दा थी।

वह इतनी सुन्दर और शानदार थी कि हर कोई उसके बारे में यह सोचता था कि वह कोई राजकुमारी है।पर अपने दिल ही दिल में वह जानती थी कि इस तरह की तो वह कुछ भी नहीं है। सो वह रोज सूरज भगवान से प्रार्थना करती कि उसकी माँ कहीं उसको ढूँढ न ले।

पर एक दिन जब वह अकेली अपने महल में बैठी हुई थी उसकी माँ वहाँ फटे और पुराने कपड़े पहने आयी। उसको अपनी

बेटी की खुशकिस्मती के बारे में पता चल गया था और वह अब उसमें से अपना हिस्सा बॉटने आयी थी।

उसकी बेटी ने कहा — "तुमको तुम्हारा हिस्सा मिलेगा। मैं तुम्हें उससे भी कहीं ज़्यादा दूँगी जितना मैंने तुमसे सारी ज़िन्दगी में लिया है अगर तुम मेरे राजकुमार के सामने मेरी बेइज़्ज़ती न करो तो।"

उसकी मॉ चिल्लायी — "ओ लड़की। क्या तू इतनी जल्दी भूल गयी कि मेरा वह काम किस तरीके से तेरे लिये यह खुशकिस्मती ले कर आया। अगर मैं तुझे बाहर न निकालती तो तुझे इतना अच्छा पति कहॉ से मिलता।"

बेटी रो कर बोली — "पर मॉ मैं भूखी भी तो मर सकती थी और तुम मुझे बर्बाद करने के लिये फिर आ गयीं। हे सूरज भगवान मेरी रक्षा करो।"

उसी समय राजकुमार अन्दर घुसा। बेचारी लड़की तो शर्म के मारे मरी सी हो गयी। पर जब उसने उस तरफ मुड़ कर देखा जहॉ उसकी मॉ बैठी हुई थी तो उसने देखा कि वहॉ तो कोई नहीं था। वहॉ केवल एक सोने का स्टूल रखा हुआ था। उसने वैसा स्टूल धरती पर इससे पहले कभी नहीं देखा था।

राजकुमार ने आते ही पूछा — "मेरी राजकुमारी। यह सोने का स्टूल कहॉ से आया।"

बेटी सूरज भगवान की जिन्होंने अपनी बेटी को बेइज़्ज़ती से बचा लिया बहुत ही कृतज्ञ हो कर बोली — "मेरी मॉ के घर से।"

राजकुमार खुश हो कर बोला — "अगर तुम्हारी मॉ के घर में इतनी सुन्दर चीज़ें हैं तो मुझे कल ही तुम्हारी मॉ के घर जाना चाहिये और जा कर उन्हें देखना चाहिये।"

बेटी ने कई बहाने बनाये पर सब बेकार। राजकुमार की तो उस सोने के उस अद्भुत स्टूल को देख कर उसकी मॉ का घर देखने की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी। वह उसका कोई बहाना सुनने के लिये तैयार नहीं था।

यह देख कर बेटी एक बार सूरज भगवान के सामने और चिल्लायी — "हे सूरज भगवान। मेहरबानी कर के मेरी रक्षा करो। मेरी सहायता करो।"

कोई जवाब नहीं आया तो अगले दिन बेटी राजकुमार को अपनी मॉ का घर दिखाने के लिये पालकी में बैठ कर चली। अच्छा खासा जुलूस जा रहा था। राजकुमार के शाही नौकर उसकी पालकी को घेरे हुए थे। पर हर कदम पर उसका दिल डूबता जा रहा था।

जब वह अपने घर आयी जहॉ उसका घर हुआ करता था तो वहॉ तो एक बहुत चमकता सोने का महल खड़ा हुआ था जो धूप में बहुत चमक रहा था। उसके अन्दर बाहर सब जगह सोना ही सोना ही लगा हुआ था। सुनहरे नौकर सुनहरी मॉ।

वहाँ आ कर वे लोग रुक गये और उस सोने के महल के बहुत सारे आश्चर्यों की तारीफ करने लगे। वे लोग वहाँ तीन दिन रहे। तीसरे दिन तो राजकुमार तो अपनी पत्नी की तारीफ करते नहीं थकता था।

फिर वे लोग अपने घर लौटे। जब राजकुमार उस जगह आया जहाँ से उसने सबसे पहले सोने के महल की चमक को देखा था तो उसने सोचा कि वह एक बार पीछे मुड़ कर उसकी एक झलक और देख लेता है सो उसने जो पीछे मुड़ कर देखा तो उसे वहाँ कुछ झोंपड़ियों के अलावा और कुछ दिखाायी नहीं दिया।

यह देख कर उसने अपनी पत्नी की तरफ गुस्से से देखा और बोला — "लगता है कि तुम कोई जादूगरनी हो और तुमने अपनी जादू की कला से मुझे धोखा दिया है। अगर तुम अपनी जान बचाना चाहती हो तो मान लो कि तुम जादूगरनी हो।"

बेटी तुरन्त ही राजकुमार के पैरों पर गिर पड़ी — "मेरे राजकुमार। मैंने कुछ नहीं किया। मैं तो एक गरीब बिना घरबार की लड़की हूँ। जो कुछ भी किया है वह सूरज भगवान का किया हुआ है।"

तब उसने शुरू से ले कर आखीर तक अपनी कहानी राजकुमार को सुना दी। राजकुमार उससे इतना सन्तुष्ट हुआ कि फिर उसने भी सूरज भगवान की पूजा करनी शुरू कर दी।

# 43 राजकुमार लालजी[143]

एक समय की बात है कि एक ब्राह्मण रेत से भरी एक सड़क पर चला जा रहा था कि उसको जमीन पर पड़ा हुआ कुछ चमकीला सा दिखायी दिया।

उसने उसे उठाया तो वह एक लाल रंग का पत्थर था। उसने वैसा पत्थर कभी नहीं देखा था तो उत्सुकतावश उसने उसे अपनी जेब में रख लिया और अपने रास्ते चला गया।

चलते चलते वह सड़क के किनारे लगी हुई एक मक्का बेचने वाले की दूकान पर आया। अब क्योंकि वह भूखा था तो उसको लाल पत्थर का ध्यान आया। उसने उसे अपनी जेब से निकाला और उस दूकानदार को देते हुए कहा कि वह उसको उसके बदले कुछ खाना दे दे। ब्राह्मण के पास और कोई पैसा नहीं था।

इत्तफाक से मक्का बेचने वाला बहुत ही ईमानदार आदमी था। उसने उस पत्थर को उलट पलट कर इधर से देखा उधर से देखा और फिर बोला — "इसको तुम राजा के पास ले जाओ। मेरी दूकान में तो जितनी चीज़ें हैं वे सारी मिला कर भी इसकी कीमत के बराबर नहीं हैं।"

सो ब्राह्मण उस पत्थर को राजा के पास ले गया।

---

[143] The Ruby Prince (Tale No 43)

दरवाजे पर पहुँच कर उसने दरबान से राजा से मिलने की इजाज़त माँगी। राजा के मन्त्री ने पहले तो उसे अन्दर घुसने से इनकार कर दिया पर जब ब्राह्मण ने बहुत ज़िद की कि वह कोई कीमती चीज़ राजा को दिखाना चाहता है तो उसको अन्दर बुला लिया गया।

अब नागमणि तो लाल जैसी होती है – लाल और आग जैसी। सो जैसे ही राजा ने उसे देखा तो ब्राह्मण से पूछा कि उसे उसकी क्या कीमत चाहिये।

ब्राह्मण बोला — "बस एक पौंड आटा जिससे मैं दो रोटी बना सकूँ क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है।"

राजा बोला — "नहीं। इसकी कीमत तो इससे बहुत ज़्यादा है।" कह कर उसने अपने खजाने से एक लाख रुपये मँगवाये और ब्राह्मण के सामने गिन दिये। ब्राह्मण उन रुपयों को ले कर खुशी खुशी घर चला गया।

ब्राह्मण के जाने के बाद राजा ने अपनी रानी को बुलवाया और वह मणि उसको सौंप दी और उसको ठीक से रखने के लिये बहुत सारी हिदायतें दे दीं। उसने कहा कि वैसी मणि दुनियाँ में मिलनी मुश्किल थी।

रानी ने सोच लिया कि वह उसके बारे में सावधान रहेगी। उसने उसको रुई में लपेट कर एक सन्दूकची में रख दिया और उसको दो ताले लगा कर अपनी आलमारी में रख दिया।

अब वह नाग लाल मणि वहाँ **12** साल तक रखी रही। बारह साल के बाद राजा को याद आया तो उसने रानी को बुलाया और कहा कि वह उसको वह लाल ला कर दिखाये जो उसने उसे कई साल पहले दिया था कि वह वहाँ सुरक्षित रखा था।

रानी ने अपनी चाभियाँ लीं और अपने कमरे में जा कर वह सन्दूकची खोली जिसमें उसने वह लाल रखा हुआ था। उसने उसे खोला तो वह तो आश्चर्य से दंग रह गयी। वहाँ कोई लाल नहीं था बल्कि वहाँ तो एक सुन्दर सा बच्चा था।

वह इतनी चौंकी कि उसने तुरन्त ही वह सन्दूकची बन्द कर दी और सोचती रही कि वह क्या करे। कुछ देर में जब वह सँभली तो उसने सोचा कि यह खबर राजा को पहले मिलनी चाहिये।

उसने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। जब रानी को लाल लाने में देर हुई तो राजा को लगा कि रानी को लाल लाने में इतनी देर क्यों हो रही है सो उसने अपना एक नौकर यह देखने के लिये भेजा कि रानी को लाल लाने में इतनी देर क्यों हो रही है।

रानी ने वह सन्दूकची राजा के नौकर को दे दी और उसे राजा को देने के लिये कहा और खुद वह चाभियाँ ले कर राजा के सामने पहुँची और राजा के सामने ही उस सन्दूकची को खोला। तुरन्त ही एक सुन्दर सा बच्चा उस सन्दूकची में से बाहर निकल आया।

राजा ने पूछा — "तुम कौन हो और मेरा लाल कहाँ है?"

बच्चे ने कहा — मैं राजकुमार लालजी हूँ। और इससे ज़्यादा आप नहीं जान सकते।"

इस पर राजा बहुत नाराज हुआ और उसको महल से बाहर निकाल दिया। पर क्योंकि राजा न्यायप्रिय था सो बाहर भेजने से पहले उसने उसको एक घोड़ा और हथियार दिये ताकि वह दुनियाँ से लड़ सके।

राजकुमार लालजी ने अपना घोड़ा उठाया हथियार लटकाये और दुनियाँ देखने चल दिया। चलते चलते वह शहर के बाहर आया तो उसने देखा कि एक बुढ़िया रोटी बना रही है। जैसे जैसे वह रोटी का आटा मलती जा रही थी वैसे वैसे वह हँसती जा रही थी और रोती जा रही थी।

राजकुमार लाल जी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रही थी कि एक बार हँस रही थी और एक बार रो रही थी।

बुढ़िया बोली — "आज मेरे बेटे को मरना है। इस शहर में एक राक्षस रहता है जो रोज एक नौजवान आदमी खाता है। आज उसको खाना देने की मेरे बेटे की बारी है। इसी लिये मैं रोती हूँ।"

राजकुमार उसके डर पर हँसा और उसे विश्वास दिलाया कि वह उस राक्षस को मार कर उस गाँव को उस राक्षस से हमेशा के लिये छुटकारा दिला देगा।

बस वह स्त्री उसको अपने घर में कुछ देर के लिये सोने दे और जब उसके बेटे का राक्षस के पास जाने का समय आये तो वह उसे जगा दे।

बुढ़िया बोली — "पर इससे मेरा क्या भला होगा। वह राक्षस तुम्हें मार देगा और फिर कल मेरे बेटे को उसके पास जाना पड़ेगा। अगर तुम्हारी इच्छा है तो ओ अजनबी तुम सो जाओ पर मैं तुम्हें नहीं जगाऊँगी।"

राजकुमार लाल जी फिर बड़े ज़ोर से हँसा — "माँ जी इससे कोई फायदा नहीं है। मेरी इच्छा हे कि मैं राक्षस से लड़ूँ और मैं उससे लड़ूँगा। और अगर आप मुझे नहीं जगायेंगी तो मैं उससे मिलने की जगह चला जाऊँगा और वहीं जा कर सो जाऊँगा।"

सो उसने घोड़ा उठाया और शहर से बाहर निकल गया। जहाँ उसे राक्षस से मिलना था वहाँ पहुँच कर उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँध दिया और खुद उसी पेड़ के नीचे लेट कर सो गया।

समय पर राक्षस खाना खाने के लिये आया पर वहाँ उसने कोई शोर भी नहीं सुना और उसे कोई दिखायी भी नहीं दिया तो उसको लगा कि शायद गाँव वालों ने अपना वायदा नहीं निभाया सो वह उनसे बदला लेने के लिये तैयार हो गया।

इतने में ही राजकुमार लाल जी जाग गया। सो कर वह ताजादम हो गया था। बस वह राक्षस पर टूट पड़ा। जल्दी ही उसने उसका सिर और हाथ काट कर फेंक दिये। वे ला कर उसने शहर

के दरवाजे पर लगा दिये। फिर वह बुढ़िया के घर गया और उसे बताया कि उसने राक्षस को मार दिया है। और फिर वहीं सोने के लिये लेट गया।

शहर के लोगों ने जब राक्षस का सिर और हाथ शहर के दरवाजे से अन्दर झॉकते हुए देखे तो वह डर गये। उन्होंने सोचा कि शायद वह उनसे बदला लेने के लिये यहॉ तक आ पहुॅचा है।

डर के मारे वे राजा के पास भागे गये। और राजा ने उस बुढ़िया के बारे में सोचा जिसके बेटे को उस दिन राक्षस का खाना बनना था कि लगता है कि उसने कोई चाल खेली है।

वह तुरन्त ही अपने कुछ औफीसरों को साथ ले कर उस बुढ़िया के घर गया तो उसने देखा कि वह बुढ़िया तो नाच गा रही थी। उसने गुस्से में भर कर पूछा कि वह क्यों नाच गा रही थी।

बुढ़िया बोली — “मैं इसलिये नाच गा रही हूॅ क्योंकि आज राक्षस मर गया। और जिस राजकुमार ने उसे मारा है वह मेरे घर में सो रहा है।”

राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ फिर भी उसकी बात पर यकीन करते हुए जब वह शहर के दरवाजे पर आया और उसका सिर और हाथ पास से देखे तो उसको विश्वास हो गया कि वे वाकई मरे हुए राक्षस के सिर और हाथ थे।

वह वापस बुढ़िया के घर गया और उससे कहा कि वह उस बहादुर राजकुमार को देखना चाहता है जिसने राक्षस को मारा था और अब वह उसके मकान में सो रहा है।

बुढ़िया ने उसको दिखाया तो उसने देखा कि वह तो वही लड़का था जिसे उसने महल से निकाल दिया था।

तो वह अपने मन्त्री की तरफ पलटा और उससे पूछा कि इस बहादुर राजकुमार को क्या इनाम दिया जाये। मन्त्री ने तुरन्त ही जवाब दिया — "आपकी बेटी की इससे शादी और आपका आधा राज्य इस काम के लिये कोई खास ज़्यादा नहीं हैं।"

सो राजकुमार लाल जी की शादी राजा की बेटी से कर दी गयी और उसको आधा राज्य दे दिया गया। पर दुलहिन हालाँकि अपने बहादुर पति को बहुत चाहती थी पर फिर भी वह यह नहीं जानती थी कि वह कौन है।

इसके अलावा महल की दूसरी स्त्रियाँ भी उसको छेड़ती रहतीं कि उसने तो एक अजनबी से शादी कर ली है – एक ऐसा आदमी जो पता नहीं कहाँ से आया है। जिसको कोई भाई बोलने वाला भी नहीं है।

हर रोज वह राजकुमार से पूछती कि वह कौन है कहाँ से आया है और हर रोज राजकुमार लाल जी उसे जवाब देता — "प्रिये। सिवाय इसके तुम मुझसे कुछ भी पूछ लो क्योंकि यह बात तुमको मालूम नहीं होनी चाहिये।"

फिर भी राजकुमारी उससे यह बताने के लिये विनती करती रही जिद करती रही उसके सामने रोती रही उसे कोंचती रही।

तब एक दिन जब वे एक नदी के किनारे खड़े हुए थे तो उसने उससे फिर कहा — "अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मुझे बताओ कि तुम किस जाति के हो।"

राजकुमार लाल जी ने उसे जवाब दिया तो पानी उसके पैरों को छू गया — "मैंने कहा न कि इसे छोड़ कर बाकी तुम जो चाहे पूछ लो क्योंकि यह बात तुम्हें किसी हालत में नहीं जाननी चाहिये।"

लेकिन उसकी समझ में कोई बात नहीं आ रही थी। उस बदकिस्मत ने जब राजकुमार के चेहरे पर हॉ के चिन्ह देखे तो उससे फिर पूछा — "अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मुझे बताओ कि तुम किस जाति के हो।"

अब राजकुमार लाल जी घुटनों ऊँचे पानी में खड़ा था और वह बहुत दुखी था फिर भी वह बोला — "मैंने कहा न कि इसे छोड़ कर बाकी तुम जो चाहे पूछ लो क्योंकि यह बात तुम्हें किसी हालत में नहीं जाननी चाहिये।"

एक बार फिर राजकुमारी ने उससे वही सवाल पूछा और राजकुमार लाल जी ने उसे वही जवाब दिया। अब वह कमर तक पानी में डूबा खड़ा था।

अबकी बार राजकुमारी बहुत ज़ोर से चिल्लायी — "बताओ मुझे बताओ कि तुम कौन हो।"

और लो उसके सामने नदी में से सोने का ताज पहने एक मणि जड़ा साँप बाहर आ गया। दुखी आँखों से उसकी तरफ देखता हुआ लहरों में डूब गया। यह देख कर राजकुमारी अपनी उत्सुकता को दोष देती हुई रोती हुई घर चली गयी कि उसने उसके बहादुर पति को उससे छीन लिया।

उसने एक बुशैल[144] सोने का इनाम देने की घोषणा की जो उसके बारे में कुछ भी खबर ले कर आयेगा।

दिन पर दिन गुजरते गये पर कोई उसकी कोई खबर ले कर नहीं आया। अब राजकुमारी सारा सारा दिन रोती रहती। रोते रोते वह पीली पड़ने लगी।

कि एक दिन अचानक एक नाचने वाली लड़की जो उसके साथ स्त्रियों के त्यौहारों में शामिल होती थी उसके पास आयी और बोली — "कल मैंने एक अजीब सी चीज़ देखी। मैं जब लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही थी तो मैं आराम करने के लिये एक पेड़ के नीचे लेट गयी और सो गयी।

जब मैं उठी तो रोशनी थी पर न तो वह दिन की रोशनी थी और न वह चाँद की रोशनी थी। मैं उठ कर वहाँ से घर के लिये चल पड़ी तो मैंने देखा कि पेड़ की जड़ में बने साँप के बिल में से

[144] Bushel is a unit of dry measure containing 4 pecks, equivalent in the US for 35.24 liters and in Great Britain for 36.38 liters (Imperial bushel). See its picture above.

एक झाड़ू लगाने वाला निकला और उसने आसपास की जमीन बुहार कर साफ की। उस पर पानी छिड़का।

फिर दो लोग कालीन ले कर आये और वहाँ कीमती कालीन बिछाये और उसके बाद गायब हो गये। मुझे ये तैयारियाँ देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं सोचने लगी कि इनका क्या मतलब हो सकता है।

मैं यह सब सोच ही रही थी मेरे कानों में संगीत की आवाज पड़ी तो मैंने देखा कि उसी बिल में से बहुत सारे नौजवान निकल कर आ रहे थे। वे सब सजे हुए थे। सबने चमकते जवाहरात पहन रखे थे। उनके बीच में एक आदमी था जो उनका राजा लगता था।

जब संगीतज्ञ संगीत बजा रहे थे तो उन नौजवानों में से हर नौजवान राजा के सामने बारी बारी से नाच रहा था।

लेकिन एक नौजवान जिसने अपने सिर पर एक लाल सितारा लगाया हुआ था नाचा तो पर वह बीमार पड़ गया और पीला सा दिखायी देने लगा। बस मुझे आपसे इतना ही कहना है।"

अगली रात राजकुमारी उस नाचने वाली लड़की के साथ वहाँ गयी जहाँ उसने वह तमाशा देखा था। वे दोनों एक पेड़ के तने के पीछे छिप गयीं और वहाँ इन्तजार करने लगीं कि देखें अब आगे क्या होने वाला है।

कुछ देर बाद सच में एक रोशनी हो गयी जो न दिन की रोशनी थी और न चाँद की रोशनी थी। एक झाड़ू लगाने वाला उसी बिल

में से बाहर निकल कर आया। उसने झाड़ू लगायी जमीन साफ की फिर उस पर पानी छिड़का और गायब हो गया।

उसके बाद कालीन बिछाने वाले आये और कालीन बिछा कर चले गये। फिर नौजवानों का जुलूस बाहर आया तो राजकुमारी का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा क्योंकि उसने उनमें जो लाल सितारे वाला नौजवान देखा तो वह तो उसका अपना प्यारा पति था।

उसने उसको तुरन्त ही पहचान लिया। पर वह उसको बहुत ही पीला दिखायी दिया तो उसको बहुत दुख हुआ।

जब सबने राजा के सामने नाच कर लिया तो रोशनी भी चली गयी राजकुमारी घर लौट आयी। अब वह हर रात उस पेड़ के पास जाती और वह तमाशा देखती और फिर सारा दिन रोती क्योंकि उसको अपने पति के पास पहुँचने का कोई रास्ता नजर नहीं आता।

आखिर एक दिन उस नाचने वाली लड़की ने राजकुमारी से कहा — "राजकुमारी जी। मेरे दिमाग में एक तरकीब आयी है। यह साँपों का राजा लगता है नाच का बहुत शौकीन है पर अभी उसके सामने केवल आदमी लोग ही नाचते हैं।

अगर कोई लड़की उसके सामने नाचे तो हो सकता है कि वह बहुत खुश हो जाये। और खुश हो कर वह उसे कुछ भी दे दे। आप इजाज़त दें तो मैं कोशिश करूँ।"

राजकुमारी बोली — "नहीं। मैं तुमसे नाच सीखूँगी और फिर मैं कोशिश करूँगी।"

सो राजकुमारी ने नाचना सीखा और बहुत ही जल्दी वह अपनी गुरू से ज़्यादा अच्छा नाच करना सीख गयी। इससे पहले इतनी बढ़िया नाचने वाली कहीं नहीं देखी गयी थी। उसकी कला सम्पूर्ण थी।

फिर उसने सबसे बढ़िया मुसलिन और ब्रोकेड के कपड़े पहने। उसका चेहरा हीरे जड़े परदे से ढका हुआ था। वह वहीं एक पेड़ के तने के पीछे खड़े हो कर उस नाच का इन्तजार करने लगी।

पहले झाड़ू लगाने वाला आया उसने सफाई की। फिर पानी छिड़का गया और फिर कालीन बिछाये गये।

उसके बाद बिल में से नौजवान निकलने शुरू हो गये। लाल सितारे वाला नौजवान और दिनों से कुछ ज़्यादा ही पीला दिखायी दे रहा था। जब नाचने की उसकी बारी आयी तो वह कुछ हिचकिचा रहा था जैसे वह बीमार हो।

कि तभी एक पेड़ के पीछे से एक परदे वाली स्त्री आयी जिसने सफेद कपड़े पहन रखे थे जिसके जवाहरात चमचमा रहे थे और उसने आ कर राजा के सामने नाचना शुरू कर दिया।

पहले ऐसा नाच कभी नहीं हुआ था। जब तक वह नाच खत्म हुआ तब तक हर आदमी दम साधे बैठा रहा।

नाच खत्म हो जाने पर राजा ज़ोर से चिल्लाया — “ओ अनजान नाचने वाली। बता तेरी क्या इच्छा है। जो तू माँगेगी वह तेरा है।”

राजकुमारी बोली — "मुझे वह आदमी चाहिये जिसके लिये मैं नाची थी।"

साँपों का राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हो गया। उसकी आँखें चमकने लगीं। वह बोला — "लड़की तूने वह माँग लिया है जिसको तुझे माँगने का कोई अधिकार नहीं है। अगर मैं तुझसे अपने वायदे से न बँधा होता तो मैं तुझे अभी मार देता। इसे ले जा और मेरी आँखों से दूर हो जा।"

तुरन्त ही राजकुमारी ने राजकुमार लाल जी को हाथ से पकड़ा और उसको अपने साथ ले कर वहाँ से भाग गयी।

उसके बाद तो वे खुशी खुशी रहे। हालाँकि उसके बाद भी कुछ स्त्रियाँ उसे ताने मारती रहतीं पर राजकुमारी कुछ नहीं बोलती। न उसने अपने पति से ही फिर कभी यह पूछा कि वह कहाँ से आया है और उसकी जाति क्या है।

## List of Tales of Tales of Punjab


1. Sir Buzz
2. The Rat's Wedding
3. The Faithful Prince
4. Bear's Bad Bargain
5. Prince Lionheart and His Three Friends
6, The Lambikin
7. Bopoluchi
8. Princess Aubergine
9. Valiant Vicky the Brvae Weaver
10. The Son of Seven Mothers
11. The Sparrow and the Crow
12. The Tiger the Brahman and the Jackal
13. The King of the Crocodiles
14. Little Anklebone
15. The Close Alliance
16. The Two Brothers
17. The Jackal and the Iguana
18. The Death and Burial of Poor Hen-sparrow
19. The Princess Papperina
20. Peasie and Beansie
21. The Jacka and the Partridge
22. The Snake Woman and Ali Mardaan Khan
23. The Wonderful Ring
24. The Jackal and the Peahen
25. The Grain of Corn
26. The Farmaer and the Money-lender
27. The Lord of Death
28. The Wrestlers
29. The Legend of Gwashbrari the Legend of Glacier-hearted Queen
30. The Barbar's Clever Wife
31. The Jackal and the Crocodile
32. How Raja Rasalu Was Born
33. How Raja Rasalu Went Out in the World
34. How Raja Rasalu's Friends Forsook Him
35. How Raja Sasalu Killed the Giants
36. How Raja Rasalu Became a Jogi
37. Raja Rasalu Journeyed to the King of the King of Sarkap
38. How Raja Rasalu Swung the Seventy Fair Maidens

39. How Raja Rasalu Played Chaupad With Sarkap
40. The King Who Was Fried
41. Prince Half-a-Son
42. Mother and Daughter Worshipped the Sun
43. The Ruby Prince

## Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
## by Sushma Gupta

**12th Cen** **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

**c1323** **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

**1868** **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ

**1872** **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

**1880** **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

**1884** **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

**1887** **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

**1889** **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
बंगाल की लोक कथाऐं

**1890** **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

**1892** **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

**1894** **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

**1903** **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

**1912** **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

**1914** **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

# देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

**Facebook Group**
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

# लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
# हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

**1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.**
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

**2. Serbian Folklore.**
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**
----------------------
**"Hero Tales and Legends of the Serbians"**. By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

**3. The King Solomon: Solomon and Saturn**
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

**4. Folktales of Bengal.**
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

**5. Russian Folk-Tales.**
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

**6. Folk Tales from the Russian.**
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

**7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.**
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

**8. Fourteen Hundred Cowries.**
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

**9. Il Pentamerone.**
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

**10. Tales of the Punjab.**
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

**11. Folk-tales of Kashmir.**
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

**12. African Folktales.**
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

**13. Orphan Girl and Other Stories.**
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॅा – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

**14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.**
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

**15. Folktales of Southern Nigeria.**
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

**16. Folk-lore and Legends : Oriental**.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

**17. The Oriental Story Book**.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

**18. Georgian Folk Tales**.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

**19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.**
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

**20. West African Tales.**
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

**21. Nights of Straparola**.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

**22. Deccan Nursery Tales.**
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

**23. Old Deccan Days.**
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

**24. Tales of Four Dervesh.**
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

**25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).**
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

**26. Russian Garland : being Russian folktales.**
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

**27. Italian Popular Tales.**
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक क्रेन। **2022**

**28. Indian Fairy Tales**
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

**29.  Shuk Saptati.**
By Unknown.  c 12th century.  Tr in English by B Hale Wortham.  London : Luzac & Co.  1911.  Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।   **2022**

**30.  Indian Fairy Tales**
By MSH Stokes.  London : Ellis & White.  **1880.**  30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॅा — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स।   **2022**

**31.  Romantic Tales of the Panjab**
By Charles Swynnerton.   Westminster : Archibald.  **1903**.  422 p.  7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॅा — चार्ल्स स्विनरटन।   **2022**

**32.  Indian Nights' Entertainment**
By Charles Swynnerton.  London : Elliot Stock.  **1892**.  426 p.  52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन।   **2022**

**34.  Indian Antiquary 1872**
A collection of scattered folktales in this journal.  **1872**.

**35.  Short Tales of Panjab**
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32.  **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in  2022

# लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

**1998** में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
**2022**